।। पूर्ण परमात्मने नमः ।।

यथार्थ भक्ति बोध

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

लेखक :-
संत रामपाल दास महाराज

प्रकाशक :-
प्रचार प्रसार समीति सतलोक आश्रम बरवाला
जिला-हिसार, हरियाणा (भारत)

सतलोक आश्रम

सतलोक आश्रम, हिसार-टोहाना रोड़ बरवाला, जिला-हिसार (हरियाणा)

☎ **8222880541, 8222880542, 8222880543, 8222880544, 8222880545**

Visit us at: www.jagatgururampalji.org
e-mail: jagatgururampalji@yahoo.com

विषय सूची

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ सँख्या
1.	भूमिका	I-III
2.	दो शब्द	1
3.	भक्ति बोध की वाणी नित्य-नियम का सरलार्थ	9
	● मंगलाचरण	9
	● मंत्र	14
	● गुरूदेव का अंग	18
	● 'साहेब कबीर की वाणी गुरूदेव के अंग से' का सरलार्थ	46
	● सतगुरू महिमा (संत गरीबदास जी की वाणी)	52
	● साहेब कबीर जी की वाणी से सतगुरू महिमा	56
	● शिष्य की आधीनता	64
	● गुरू सेवा का महात्मय (परमेश्वर कबीर जी की वाणी से)	67
	● गुरू चरणामृत का महात्मय	68
	● 'साहिब कबीर के उपदेश' का सरलार्थ	71
	● 'सुमिरन का अंग' का सरलार्थ	76
	● सुमिरन के अंग से	78
	● 'सातों वार की रमैणी' का सरलार्थ	91
	● सर्व लक्षणा ग्रन्थ का सरलार्थ	92
	● ब्रह्म बेदी का सरलार्थ	100
	● जगन्नाथ मंदिर के पांडे के पैर को जलन से बचाया	125
4.	असुर निकंदन रमैणी का सरलार्थ	129
	● रक्षा मंत्र का सरलार्थ	155
5.	संध्या आरती का सरलार्थ	156
	● काशी के भण्डारे में हुआ करिश्मा	186
6.	अन्नदेव की छोटी आरती का सरलार्थ	189
	● खाना खाने से पहले बोली जाने वाली वाणी का सरलार्थ	190
	● राबिया की कथा	191
	● खाना खाने के बाद बोली जाने वाली वाणी का सरलार्थ	193

भूमिका

परमात्मा से सब होत है, बन्दे से कुछ नाहीं।
राई से पर्वत करें, पर्वत से फिर राई।।
रामनाम की लूट है, लूटि जा तो लूट।
पीछे फिर पछताएगा, प्राण जाहिंगे छूट।।
भक्ति बिना क्या होत है, भ्रम रहा संसार।
रति कंचन पाया नहीं, रावण चलती बार।।
कबीर, सब जग निर्धना, धनवन्ता ना कोए।
धनवन्ता सोई जानिए, जा पै राम नाम धन होय।।

''भक्ति बोध'' नामक पुस्तिका के अन्दर परमेश्वर कबीर जी की अमृतवाणी तथा परमेश्वर कबीर जी से ही प्राप्त तत्वज्ञान सन्त गरीबदास जी की अमृतवाणी है। जिस वाणी का पाठ प्रतिदिन नियमित करना होता है। जिस कारण से इसको ''नित्य-नियम'' पुस्तिका भी कहा जाता है। इस पुस्तक में लिखी अमृत वाणी का पाठ उपदेशी को तीन समय करना पड़ता है।

सुबह पढ़ी जाने वाली अमृतवाणी को (1) 'सुबह का नित्य नियम' कहते हैं। यह रात्रि के 12 बजे से दिन के 12 बजे तक कर सकते हैं। वैसे इसको सुबह सूर्योदय के समय कर लें।

(2) 'असुर निकंदन रमैणी' दिन के 12 बजे के बाद रात्रि के 12 बजे से पहले (जब भी समय लगे) किया जाने वाला पाठ है। वैसे इस पाठ को दिन के 12 बजे से 2 बजे तक किया जाने का विधान है। फिर भी कार्य की अधिकता से समय के अभाव में ऊपर लिखे समय में भी कर सकते है। लाभ समान मिलता है।

(3) ''संध्या आरती'' यह पाठ शाम को सूर्यास्त के समय करना चाहिए। विशेष परिस्थितियों में रात्रि के 12 बजे तक भी कर सकते हैं। लाभ समान मिलता है।

यह वाणी दोहों, चौपाइयों, शब्दों के रुप में बोली गई हैं। इसमें 'पद्य' भाग में राग तथा पद के अनुसार वाणी बोली जाती है। यह अमृतवाणी क्षेत्रीय भाषा में है जिससे भावार्थ को समझना जन साधारण के वश की बात नहीं है। इस अमृतवाणी की भाषा साधारण है, परन्तु रहस्य गहरा है। तत्वदर्शी सन्त ही इस अमृतवाणी का यथार्थ अनुवाद कर सकता है। जैसे श्री मद्भगवत गीता के श्लोक हैं, ऐसे ही भक्ति बोध में लिखी अमृतवाणी के दोहे (श्लोक) हैं। श्री मद्भगवत गीता को लिखे लगभग 5500 वर्ष हो चुके हैं। सैंकड़ों अनुवादकों ने वर्षों पूर्व हिन्दी या अन्य भाषाओं में अनुवाद भी कर रखा है। परन्तु किसी का अनुवाद भी प्रकरण के अनुरुप नहीं है। जिस कारण से अर्थों के अनर्थ कर रखे हैं। उदाहरण : गीता अध्याय 7 श्लोक 18 तथा 21 में ''अनुत्तम'' शब्द है जिसका अर्थ अतिउत्तम किया है जबकि ''अनुत्तम'' का अर्थ अश्रेष्ठ (घटिया) होता है। उत्तम का अर्थ श्रेष्ठ होता है। इसके विपरित ''अनुत्तम'' का अर्थ अश्रेष्ठ है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में 'व्रज' शब्द है जिसका अर्थ 'जाना' होता है। सर्व गीता अनुवादकों ने 'व्रज' का अर्थ आना किया है। उदाहरण के लिए जैसे अंग्रेजी के शब्द Go का अर्थ जाना होता है। यदि कोई Go का अर्थ आना करता है तो वह अनर्थ कह रहा है।

इसी प्रकार परमेश्वर कबीर जी की वाणी तथा सन्त गरीबदास जी की वाणी का यथार्थ अनुवाद तत्वदर्शी सन्त ही कर सकता है। इस 'भक्ति-बोध' का हिन्दी अनुवाद किया जाएगा क्योंकि वर्तमान में सर्व बच्चे हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषी हो गए हैं। आने वाले समय में सन्तों की वाणी जो अधिकतर क्षेत्रीय भाषा में बोली गई है, इसको यथार्थ रुप में जानना बहुत कठिन हो जाएगा। अनुवादकर्ता दोनों जुबानों का अनुभव रखता है। वर्तमान में विश्व में एकमात्र तत्वदर्शी सन्त है। अनुवादकर्ता का जन्म दिनाँक 08 सितंबर 1951 में हुआ था। इस कारण से आज सन् 2013 में अनुवाद करने जा रहा हूँ तो सर्व क्षेत्रीय भाषा के शब्द जो अमृतवाणी में है, उनके अर्थ अच्छी तरह जानता हूँ। फिर भी अनुवाद में कोई त्रुटि रह जाये तो क्षमा चाहूँगा। वैसे त्रुटि की तो गुंजाइश ही नहीं है।

संत रामपाल जी महाराज (लेखक-अनुवादक)

भक्ति बोध का अर्थ ''परमात्मा की पूजा का ज्ञान'' (भक्ति, पूजा, अर्चना) प्रेम भक्ति से मोक्ष होता है। आध्यात्म मार्ग में 'पूजा' के साथ 'साधना' शब्द भी मुख्य रुप से सुना जाता है।

❖ प्रश्न उठेगा : क्या 'पूजा' और 'साधना' भिन्न है?

उत्तर : हाँ, पूजा और साधना भिन्न होते हुए भी दामन-चोली का साथ है। उदाहरण : जैसे हमें जल की अति आवश्यकता है। जब प्यास सताती है तो जल के अतिरिक्त कुछ भी याद नहीं आता। उसकी प्राप्ति कैसे हो? या तो जल की दरिया हो या सरोवर हो जो जल का स्त्रोत है। दरिया हमारे निवास स्थान से दूर होने के कारण हम प्रतिदिन वहाँ से जल नहीं ला सकते। सरोवर भी दूर ही होता है। फिर आवश्यकता पड़ी कि कुआं खोदा जाए। अब वर्तमान में नल (हैंडपम्प) अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है।

प्यासा व्यक्ति 'जल' प्राप्ति की इच्छा करता है। उसके लिए कुआँ खोदने या नल लगाने का कार्य करता है तब इच्छित वस्तु (जल) प्राप्त होती है। पूजा तथा साधना का भेद-अभेद जानने के लिए उपरोक्त विवरण से प्रमाण लेते हैं :- जल प्राप्ति की इच्छा तो 'पूजा' जानें तथा कुआं खोदने तथा नल लगाने के लिए की गई क्रिया को साधना जानें।

इसी प्रकार प्रभु प्यासे भक्त की परमात्मा प्राप्ति की प्रबल इच्छा को पूजा कहते हैं। परमात्मा प्राप्ति के लिए की जाने वाली आध्यात्मिक क्रियाओं को साधना कहते हैं।

प्रश्न : साधना में कौन-सी आध्यात्मिक क्रियाएं करनी होती हैं?

उत्तर : (क) पाठ (ख) यज्ञ (ग) तप (घ) जप

(क) पाठ : सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय पाठ कहलाता है। जैसे श्री मद्भगवत गीता के श्लोकों को प्रतिदिन पढ़ना। कुछ भक्त कहते हैं कि हम प्रतिदिन गीता के एक अध्याय का पाठ करते है। कुछ भक्त (साधक) वेद मन्त्रों का नित्य पाठ करते हैं। कुछ भक्त किसी सन्त की अमृतवाणी से कुछ पाठ या शब्दों का नित्य पठन-पाठन करते हैं।

मुसलमान भक्त कुरान शरीफ से कुछ वाणी (आयतें) पढ़ते हैं या पाँच समय निमाज (प्रभु स्तुति) करते हैं। यह सब पाठ कहलाता है। किसी ग्रन्थ का अखण्ड पाठ करना या वैसे आदर से किसी समय ग्रन्थ को पढ़ना, वेदों या गीता को पढ़ना यह सब भी पाठ साधना ही कहलाती है। ज्ञान ग्रहण के उद्देश्य से ग्रन्थों को पढ़ना भी पाठ साधना ही कही जाती है। इसे ज्ञान यज्ञ भी कहा जाता है।

यज्ञ : यज्ञ का अर्थ है धार्मिक अनुष्ठान। मुख्यतः यज्ञ पाँच हैं :-

1. धर्म यज्ञ 2. ध्यान यज्ञ 3. हवन यज्ञ 4. प्रणाम यज्ञ 5. ज्ञान यज्ञ।

1. धर्म यज्ञ :

धर्म यज्ञ कई प्रकार से की जाती है। जैसे भूखे को भोजन कराना, पक्षियों को दाना-पानी डालना, पशुओं के लिए पीने के पानी की व्यवस्था करना, पशुशालाएं बनवाना, मनुष्यों के लिए प्याऊ (पीने के पानी की व्यवस्था करना) बनवाना, धर्मशाला बनवाना, निर्धनों को कम्बल दान करना या अन्य वस्त्र दान करना, धार्मिक भोजन भण्डारे करना। प्राकृतिक आपदाओं (अकाल गिरना, बाढ़ आना) में खाद्य पदार्थों और दवाईयों के लिए दान करना, दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करना आदि-आदि अनेकों प्रकार से धर्मयज्ञ की जाती है। परन्तु आध्यात्म मार्ग में धर्म यज्ञ पूर्ण गुरु के द्वारा की जाती है। वह वास्तव में धर्म यज्ञ होती है।

कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दोनों निष्फल है, पूछो वेद पुराण।।

प्रश्न : क्या गुरु धारण किए बिना धर्म यज्ञ का कोई लाभ नहीं है? पहले तो बताया है कि उपरोक्त सर्व धर्मयज्ञ कहलाती हैं। अब कहा कि गुरु बिन धर्म (दान) यज्ञ वास्तविक नहीं होती अर्थात् वास्तविक नहीं है तो लाभ भी वास्तविक नहीं होगा। कृप्या स्पष्ट करें।

उत्तर : गुरु धारण करने के पश्चात् धर्म (दान) यज्ञ का पूर्ण लाभ मिलता है क्योंकि पूर्ण गुरु शास्त्रोक्त विधि से भक्ति कर्म (साधना) करता है। उसमें एक नाम जाप यज्ञ भी करता है। जिस का विस्तारपूर्वक विवरण आगे लिखा जाएगा। यदि गुरु धारण किए बिना मनमर्जी से कुछ धर्म किया तो उसका फल भी मिलेगा क्योंकि जैसा कर्म मानव करता है, उसका फल परमात्मा अवश्य देता है, परन्तु न तो मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है और न ही मानव जन्म मिलना सम्भव है।

बिना गुरु (निगुर) धार्मिक व्यक्ति को किये गये धर्म का फल पशु-पक्षी आदि की योनियों में प्राप्त होगा। जैसे हम देखते हैं कि कई कुत्ते कार-गाड़ियों में चलते

हैं। मनुष्य उस कुत्ते का ड्राईवर होता है। वातानुकुल कक्ष में रहता है। विश्व के 80 प्रतिशत मनुष्यों को ऐसा पौष्टिक भोजन प्राप्त नहीं होता जो उस पूर्व जन्म के धर्म के कारण कुत्ते को प्राप्त होता है। मनुष्य जन्म में किए धर्म (पुण्य-दान) को कुत्ते के जन्म में प्राप्त करके वह प्राणी फिर अन्य पशुओं या अन्य प्राणियों का जन्म प्राप्त करता है। इस प्रकार 84 लाख प्रकार की योनियों को भोगता है। कष्ट पर कष्ट उठाता है। यदि वह मनमुखी धर्म करने वाला धार्मिक व्यक्ति कुत्ते के जीवन में धर्म का फल पूरा करके सूअर का जन्म प्राप्त कर लेता है तो उसको अब कौन-सी सुविधा प्राप्त हो सकती है। यदि उस प्राणी ने मानव शरीर में गुरु बनाकर धर्म (दान-पुण्य) यज्ञ की होती तो वह या तो मोक्ष प्राप्त कर लेता। यदि भक्ति पूरी नहीं हो पाती तो मानव जन्म अवश्य प्राप्त होता तथा मानव शरीर में वे सर्व सुविधाऐं भी प्राप्त होती जो कुत्ते के जन्म में प्राप्त थी। मानव जन्म में फिर कोई साधु सन्त-गुरु मिल जाता और वह अपनी भक्ति पूरी करके मोक्ष का अधिकारी बनता। इसलिए कहा है कि यज्ञों का वास्तविक लाभ प्राप्त करने के लिए पूर्ण गुरु को धारण करना अनिवार्य है।

कबीर, सतगुरु (पूर्ण गुरु) के उपदेश का, लाया एक विचार।
जै सतगुरु मिलता नहीं, तो जाते यम द्वार।।
कबीर, यम द्वार में दूत सब, करते खैंचातान।
उनसे कबहु ना छूटता, फिरता चारों खान।।
कबीर, चार खान में भ्रमता, कबहु न लगता पार।
सो फेरा (चक्र) सब मिट गया, मेरे सतगुरु के उपकार।।
कबीर, राम कृष्ण से कौन बड़ा, तिनहुं भी गुरु कीन्ह।
तीन लोक के वे धनी, गुरु आगे आधीन।।

2. ''ध्यान यज्ञ''

ध्यान के विषय में आम धारणा है कि एक स्थान पर बैठकर हठपूर्वक मन को रोकने का प्रयत्न करने का नाम ध्यान है।

पूर्व के ऋषियों ने लम्बे समय तक हठयोग के माध्यम से ध्यान यज्ञ किया। उन्होंने शरीर में परमात्मा को खोजने, परमात्मा के दर्शन के लिए ध्यान यज्ञ किया। शरीर में प्रकाश देखा जिसको ईश्वरीय प्रकाश (Divine Light) कहते हैं। अन्त में ऋषियों ने अपना अनुभव बताया कि परमात्मा निराकार है। ध्यान अवस्था में परमात्मा का प्रकाश ही देखा जा सकता है। विचार करने की बात है कि कोई कहे कि सूर्य निराकार है। केवल सूर्य का प्रकाश देखा जा सकता है। यह बात कितनी सत्य है। इसी प्रकार आज तक सर्व ध्यानियों का अनुभव है। कुछ वर्षों तक ध्यान-समाधि करने के पश्चात् फिर सामान्य जीवन जीते थे तथा परमात्मा की अन्य साधना भी ऋषि लोग किया करते थे। यह ध्यान नहीं हठ योग के द्वारा कठिन तप होता है। जो श्री मद्भगवत गीता अध्याय 17 श्लोक 5-6 में बताया है कि जो मनुष्य शास्त्रविधि रहित घोर तप को तपते हैं। अहंकार और दम्भ (पाखण्ड) से

युक्त कामना, आसक्ति और बल के अभिमान से युक्त हैं। (17/5) वे शरीर रुप में स्थित कमलों में स्थित प्राणियों के प्रधान देवताओं को और शरीर के अन्दर अन्तःकरण में स्थित मुझ ब्रह्म को भी कृश करने वाले हैं। उन अज्ञानियों को तू आसुर (राक्षस) स्वभाव वाले जान। (17/6) भावार्थ है कि जो ध्यान हठ योग के माध्यम से ऋषि लोग क्रिया करते थे, वह किसी वेद या चारों वेदों के सारांश श्री मद्भगवत गीता में करने को नहीं कहा है। यह ऋषियों का सिद्धियाँ प्राप्त करने मनमाना आचरण है। इससे परमात्मा प्राप्ति नहीं है क्योंकि गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्र विधि को त्यागकर जो मनमाना आचरण करते हैं उनको न तो सुख प्राप्त होता है, न कोई कार्य की सिद्धि होती है, न उनकी गति (मोक्ष) होती है अर्थात् व्यर्थ। (16/23) इससे तेरे लिये अर्जुन कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। उपरोक्त उल्लेख से स्पष्ट हुआ है कि ऋषियों द्वारा किया गया ध्यान शास्त्रविधि रहित होने से व्यर्थ है।

❖ प्रश्न उठता है कि वे ऋषि जन तो वेदों के पूर्व विद्वान थे। उन्होंने यह गलती क्यों की?

उत्तर है : श्री देवीपुराण (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित केवल हिन्दी, सचित्र मोटा टाईप) में चौथे स्कंद पृष्ठ 414 पर लिखा है कि ''सत्य युग' के ब्राह्मण वेद के पूर्ण विद्वान थे और देवी आराधना किया करते थे। प्रिय पाठको! यह उल्लेख देवी पुराण का है। आप जी को बता दें कि ''गीता शास्त्र चारों वेदों का सारांश है। आप जी गीता को तो आसानी से पढ़ तथा जाँच सकते हो। गीता में कहीं पर भी श्री देवी की पूजा करने का आदेश नहीं है। इससे सिद्ध हुआ कि चारों वेदों में भी श्री देवी (दुर्गा जी) की पूजा का विधान नहीं है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि सत्ययुग के ब्राह्मण (ऋषि) वेद के विद्वान नहीं थे। फिर त्रेतायुग, द्वापर युग तथा कलयुग के ऋषियों ब्राह्मणों का क्या कहना? इनका ज्ञान तो सत्ययुग के ब्राह्मणों से न्यून ही है। इसी प्रकरण में पृष्ठ 414 पर श्री देवी पुराण में यह भी स्पष्ट किया है कि ''सत्य युग में जो राक्षस माने जाते थे, कलयुग में ब्राह्मण उन राक्षसों जैसे हैं। यह भी लिखा है कि सत्ययुग की अपेक्षा त्रेता के ब्राह्मणों को कम ज्ञान था। इसी प्रकार प्रत्येक युग में ज्ञान की हानि होती आई है।

श्री देवी पुराण के सातवें स्कंद के पृष्ठ 562-563 पर ''राजा हिमालय को ज्ञानोपदेश करते समय स्वयं श्री देवी जी (दुर्गाजी) ने कहा है कि राजन! और सब बातों को छोड़ दे, (मेरी भक्ति भी त्यागकर) केवल 'ब्रह्म' की भक्ति कर जिसका ओम् (ॐ) नाम है। इससे उस ब्रह्म को प्राप्त हो जाओगे जो दिव्य आकाश रुपी ब्रह्मलोक में रहता है''। उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि सत्ययुग से लेकर कलयुग तक के ऋषि (ब्राह्मण) वेद ज्ञानहीन थे। पूर्ण अज्ञानी थे।

जिस प्रकार ऋषिजन श्री देवीपूजा करते थे जो शास्त्र विरुद्ध पूजा थी। इसी प्रकार ध्यान जो हठ योग से करते थे वह भी शास्त्र विधि रहित होने से व्यर्थ साधना थी।

❖ प्रश्न : यह हठ तप करके ध्यान का प्रचलन कैसे हुआ?

उत्तर : श्री देवी पुराण (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी) के तीसरे स्कंद में पृष्ठ 113-116 पर लिखा है कि ''अपने पुत्र नारद के सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर देते समय श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि जिस समय मेरी उत्पत्ति हुई, मैं कमल के फूल पर बैठा था। चारों और केवल समुद्र का जल था, और कोई वस्तु दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी। आकाशवाणी हुई कि तप करो, मैंने एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर आकाशवाणी हुई कि सृष्टि करो।''

❖ विचार करें :- जिस समय ब्रह्मा जी को उपरोक्त आकाशवाणी हुई, उस समय तक ब्रह्मा जी को वेदों की प्राप्ति नहीं हुई थी। वेद तो बाद में सागर मंथन में प्राप्त हुए थे। वेदों में उपरोक्त आकाशवाणी वाला तप करने को नहीं कहा है, यह ऊपर प्रमाणित हो चुका है। जो तप ब्रह्माजी ने स्वयं (एक हजार वर्ष तक) किया, वह शास्त्रानुकुल साधना नहीं है। यह मनमाना आचरण है जो भ्रमित करने के लिए काल ब्रह्म ने गुप्त रुप से उच्चारण करके ब्रह्माजी को करने के लिए कहा था। श्री ब्रह्मा जी को वेद प्राप्त हुए। वेदों से ओम् (ॐ) नाम जाप के लिए चुन लिया। (यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 से ओम् मन्त्र लिया गया है) वेदों में वर्णित यज्ञों से एक हवन यज्ञ चुन ली। इसी का अनुष्ठान अधिक करने लगे। जबकि पाँचों यज्ञ करने से पूर्ण लाभ होता है। जैसे कार चारों पहियों से चलती है। एक पहिया निकाल कर लिये फिरने वाला यह कहे कि यह कार-गाड़ी है तो उसकी बुद्धि के स्तर को आसानी से समझा जा सकता है। इसी प्रकार उन ऋषियों के ज्ञान को जानकर उनके द्वारा की गई साधना को जाना जा सकता है। सत्ययुग से लेकर आज तक के ऋषिजन ब्रह्मा जी द्वारा बताया हठ योग द्वारा ध्यान दूसरे शब्दों में मनमाना घोर तप करते रहे। जिस कारण से उनको परमात्मा प्राप्ति नहीं हुई। उनके द्वारा किया गया हठपूर्वक घोर तप आज तक ''ध्यान यज्ञ'' नहीं है।

कुछ साधक कहते हैं कि एकान्त स्थान पर बैठकर आँखें बन्द करके या खुली रखकर मन को सिर के ऊपर के भाग के नीचे केन्द्रित करने की कोशिश करें और अन्त में विचार शुन्य हो जाओ। मन किसी भी वस्तु या विचार पर केन्द्रित न रहे। कोई संकल्प-विकल्प न उठे। अन्त में यह विचार करें कि मैं आत्मा हूं, यह शरीर मैं नहीं हूँ, मन भी मैं नहीं हूँ। सिर के ऊपर के भाग में सिमट जाओ जिसको ब्रह्माण्ड कहते हैं। कुछ कहते हैं कि ध्यान की अन्तिम अवस्था में केवल एक ही विचार रह जाता है कि मैं ब्रह्म हूँ ''अहम् ब्रह्मास्मि।''

विचार करें :- ध्यान का अर्थ है कि अपने मन को किसी वस्तु पर केन्द्रीत करना। जैसे कभी-कभी हम कहीं दूर स्थान पर खड़े अपने प्रिय मित्र को देख रहे होते हैं, यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि लगता है वह मेरा मित्र ही है। उस समय उसके आगे से कई व्यक्ति तथा मोटरसाईकिल आदि चले जाते हैं, परंतु उसका ध्यान केवल अपने मित्र की पड़ताल करने में लगा होने के कारण अन्य को नहीं देख रहा था। यह ध्यान की वास्तविक स्थिति है। जैसे कभी-कभी हम किसी

बात का चिन्तन कर रहे होते हैं और सड़क पर खड़े होते हैं। बस ने आकर वहीं रुकना होता है जहाँ हम खड़े चिन्तन कर रहे थे। गाड़ी हॉर्न भी देती है लेकिन हम सुन नहीं पाते हैं। अन्य व्यक्ति हाथ पकड़कर सचेत करता है कि एक तरफ हो जा, गाड़ी के लिए रास्ता छोड़ दे। यह ध्यान की वास्तविक स्थिति है।

जैसे पतिव्रता पति से राती, आन पुरुष नहीं भावै।
बसै पीहर में सुरति प्रीत में, ऐसे ध्यान लगावै।।

जैसे पतिव्रता स्त्री अपने मायके चली जाती है तो उसका ध्यान अपने पति में ही रहता है। उससे प्राप्त सुख को रह-रहकर चिन्तन करती रहती है। सोचती रहती है कि कभी क्रोध नहीं करता, मेरा कितना ध्यान रखता है, कहते ही सर्व वस्तु ला देता है, कितना सुन्दर है, अब क्या कर रहा होगा आदि-आदि अपने पति के गुणों का चिन्तन करके मस्त रहती है। उस लड़की के उस चिन्तन को ही ध्यान कहा जाता है।

अन्य उदाहरण : एक समय एक युवती अपने पति का चिन्तन करती हुई जा रही थी। एक स्थान पर एक मौलवी साहब चद्दर बिछाकर नमाज कर रहा था। लड़की अपने होने वाले पति-प्रेमी से मिलने जा रही थी। वह रास्ता त्यागकर सीधी शीघ्र जाने के लिए जंगल से गुजर रही थी। उस लड़की का पैर मौलवी जी की चद्दर पर रखा गया। मौलवी जी ने नमाज छोड़कर लड़की को धमकाया कि तुझे दिखाई नहीं देता, मेरी चद्दर पर पैर रखकर अपवित्र कर दिया। लड़की ने उत्तर दिया कि मौलवी जी मैं अपने प्रेमी-पति के ध्यान में खोई थी। मुझे तो पता ही नहीं चला कि मेरा पैर आपकी चद्दर पर टिक गया। आप अपने अल्लाह से सच्चा प्यार नहीं करते। आपका ध्यान अल्लाह में नहीं, चद्दर में था। आपका ध्यान सही होता तो मेरे पैर का पता ही नहीं चलता।

ध्यान यज्ञ का अन्य प्रमाण :

जैसे नटनी चढ़ै बांस पे, नटवा ढोल बजावै।
इधर उधर से निगाह बचाकै, सुरति बांस पै लावै

भावार्थ है कि कौतुक दिखाने वाला नट तथा उसकी पत्नी (नटनी) खेल करते हैं। एक लगभग 8-9 फुट लम्बा बाँस नटनी हाथ में लेकर एक सिरा जमीन पर रखकर खड़ी हो जाती है। उसका पति ढ़ोल बजाता है। नटनी बाँस के ऊपर चढ़ने लगती है। नटनी का ध्यान ढ़ोल की आवाज पर नहीं होता और न ही आसपास खड़े खेल देखने वालों पर। इसका पूरा ध्यान बाँस पर लगा होता है। यदि नटनी का ध्यान जरा-सा भी बाँस से हट जाए तो धड़ाम से पृथ्वी पर बाँस सहित गिरे। अपने कौतुक में सफलता प्राप्त नहीं कर पाएगी। खेल देखने वाले लोग तालियाँ बजा रहे होते हैं, फिर भी नटन इनके शोर को नहीं सुनती। उसका ध्यान केवल बाँस पर ही रहता है। इसी प्रकार परमात्मा के गुणों का चिन्तन ध्यान यज्ञ कहलाता है। यह वास्तविक ''ध्यान यज्ञ'' है।

परमात्मा के गुण :-

कबीर पौ फाटी पगड़ा भया, जागी जीया जून।
सब काहु कूं देत हैं, प्रभु चौंच समाना चून।।
मर्द गर्द में मिल गए, रावण से रणधीर।
कंश केशो चाणूर से, हिरणाकुश बलबीर।।
तेरी क्या बुनियाद है, जीव जन्म धर लेत।
गरीब दास हरि नाम बिना, खाली रह जा खेत।।
कबीर, साहिब से सब होत है, बन्दे से कुछ नाहीं।
राई से पर्वत करें, पर्वत से फिर राई।।
कबीर हरि के नाम बिना, नारि कुतिया होय।
गली–गली भौंकत फिरे, टूक ना डाले कोय।।

परमात्मा सर्व सुख दाता है। सर्व संकट मोचनहार है। निर्धन को धन, बांझ को पुत्र, कोढ़ी को सुन्दर काया, अन्धे को आँख, बहरे को कान, गूंगे को जुबान परमात्मा प्रदान कर देता है।

गरीब भक्ति बिन क्या होत है, भ्रम रहा संसार।
रति कंचन पाया नहीं, रावण चलती बार।।

उपरोक्त परमात्मा के गुणों पर विचार करते रहना ''ध्यान यज्ञ'' कहलाता है। जो पूर्व में अन्य द्वारा बताया तथा किया जाने वाला हठ योग ध्यान नहीं है, ध्यान की परिभाषा ही नहीं है। किसी वस्तु पर मन को केन्द्रित करना ध्यान कहलाता है। यह ध्यान की परिभाषा है। जो कहते हैं कि संकल्प-विकल्प सब समाप्त हो जाए और सोचना भी समाप्त हो जाए, विचार शुन्य हो जाना ध्यान की अन्तिम स्थिति है।

❖ विचारण विषय है : जब चिन्तन ही समाप्त हो गया तो फिर 'ध्यान' कहाँ रहा? जिस समय विचार शुन्य हो जाएगा तो मन को किस पर केन्द्रित किया। विचार शुन्य हो ही नहीं सकता। मन को केवल प्रभु के गुणों के चिन्तन में केन्द्रित करने को ध्यान कहा जाता है।

वर्तमान में शिक्षित वर्ग ने एक मैडिटेसन (Meditation) शब्द पकड़ रखा है। कहते हैं कि कुछ समय योगा करता हूँ, मैडिटेन करता हूँ, विचार रोककर मन को शान्त करता हूँ, मन को शक्ति मिलती है। यह केवल अपने मन को संतोष देने के लिए है। मन को रोका नहीं जा सकता। मन को अन्य विचारों से हटाकर कुछ देर अच्छे विचारों पर लगाया जा सकता है। मन के चिन्तन की गति को धीमा किया जाता है। उसी से मन को कुछ आराम मिल जाता है। लेकिन जो केवल योगा (योग-आसन) करते हैं, उनका समय व्यर्थ जाता है और जो परमात्मा के गुणों का चिन्तन करते हैं, उनको ध्यान यज्ञ का फल भी मिलता है और योग भी हो जाता है।

यह कहना कि योगा में मैडिटेसन (ध्यान) करके मन को रोकता हूँ। यह भ्रम है। वह ध्यान भी व्यर्थ है। इसलिए गुरु से दीक्षा लेकर फिर परमात्मा के गुणों का

चिन्तन करना ही ध्यान (Meditation) है। इसी में मानव जीवन की सफलता है।

3. ''हवन यज्ञ''

❖ गाय या भैंस के घी को अग्नि में स्वाह करना ''हवन यज्ञ'' कहलाता है।

❖ पूर्व के ऋषि तथा वर्तमान में आचार्य तथा ऋषि व सन्त साधक हवन करने के लिए लकड़ी का प्रयोग करते हैं। यह शास्त्रोक्त विधि नहीं है।

❖ शास्त्रविधि अनुसार हवन करने के लिए रुई की बाती बनाकर मिट्टी या धातु के बर्तन (कटोरे) में रखकर भैंस या गाय का घी जलाकर मंगलाचरण पढ़कर अग्नि प्रज्वलित की जाती है। यह 'हवन यज्ञ' है। इसके साथ वेद मन्त्र या अमृतवाणी का उच्चारण भी किया जा सकता है। वैसे बिना वाणी या मन्त्रोच्चारण के भी शास्त्रविधि अनुसार रुई ज्योति में घी डालकर जलाने से 'हवन यज्ञ' हो जाता है क्योंकि घी के जलने से लाभ होता है।

❖ लकड़ी जलाकर यदि हवन किया जाता है तो कार्बन डाई ऑक्साईड अधिक निकलती है। एक क्विन्टल घी को हवन करने के लिए 10 कि.ग्राम लकड़ी जलती है। रुई 100 ग्राम एक क्विन्टल घी को हवन कर देती है। इसमें कार्बन डाई ऑक्साईड नाम मात्र ही बनती है। ज्योति यज्ञ करने का प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त 46 मन्त्र 10 में है।

रुई की बाती बनाकर कटोरे में खड़ा कर दिया जाता है। फिर घी डालकर मंगलाचरण पढ़ते-पढ़ते ज्योति प्रज्वलित की जाती है। यह दो प्रकार की होती है। देवी-देवताओं के उपासक टेढ़ी ज्योति जलाते हैं। गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 में अन्य देवताओं की पूजा करना व्यर्थ कहा है। यह टेढ़ी ज्योति यज्ञ की परम्परा प्राचीन है। प्रत्येक हिन्दु के घर में दोनों समय (सुबह और शाम) ज्योति यज्ञ किया जाता, यह हवन यज्ञ प्रत्येक के घर में होता था।

वर्तमान में बीसवीं सदी में कुछ पंथों का उत्थान हुआ है। 1. राधास्वामी पंथ आगरा (UP) से चला है जिसके प्रवर्तक थे श्री शिवदयाल सिंह सेठ जी निवासी पन्नी गली आगरा शहर। (उत्तर प्रदेश भारत) इसी पंथ की एक शाखा ब्यास नदी के किनारे पंजाब प्रान्त में चली है जिसके संस्थापक थे जयमल सिंह रिटायर्ड फौजी। राधास्वामी डेरा बाबा जयमल सिंह ब्यास से एक शाखा सिरसा शहर (हरियाणा) में बेगु रोड़ पर चली। जिसके संस्थापक थे श्री खेमामल जी उर्फ श्री शाह मस्ताना जी महाराज जिन्होंने पंथ का नाम बदलकर ''सच्चा सौदा'' रख दिया तथा ''धन धन सतगुरु तेरा ही आसरा'' का नारा प्रचलित किया। इसकी स्थापना सन् 1948 में श्री शाहमस्ताना जी के कर कमलों द्वारा की गई थी। इसी की अन्य शाखाएं गंगवा (जिला-हिसार) तथा जगमाल वाली (जि. सिरसा) हरियाणा प्रान्त में चल रही हैं। राधास्वामी पंथ की अन्य शाखाएं 1. जय गुरुदेव पंथ मथुरा में श्री तुलसी दास जी द्वारा चलाया गया।

2. गाँव दिनौद जिला भिवानी में श्री ताराचन्द जी द्वारा चलाया गया।

ये सब 20वीं शताब्दी में पनपे हैं। लगभग पूरे भारत वर्ष में फैल चुके हैं।

इनके अतिरिक्त निरंकारी पंथ, ब्रह्मा कुमारी पंथ, हंसा देश पंथ (1. सन्त श्री सतपाल जी, 2. संत श्री प्रेम रावत उर्फ बालयोगेश्वर का पंथ) ये भी उपरोक्त पंथों की तरह भारत वर्ष के साथ-साथ अन्य देशों में भी फैल चुके हैं।

उपरोक्त पंथों ने सत्य भक्ति अर्थात् शास्त्रोक्त साधना का नामोनिशान मिटा दिया है। इन पंथों ने ज्योति यज्ञ (हवन यज्ञ) को मना कर रखा है। कहते हैं कि बाहर की ज्योति से मोक्ष नहीं है। शरीर के अन्दर की ज्योति को जगाना है। राधास्वामी पंथ व इसकी शाखाओं का मानना है कि वेद तथा गीता को हम नहीं मानते। हम तो संतों की वाणी को सत्य मानते हैं। वेद व गीता भी तो ऋषियों ने लिखे हैं। उन ऋषियों को ऊपर के मण्डलों का ज्ञान नहीं था। इसलिए वेदों तथा गीता में ऊपर के मण्डलों का ज्ञान नहीं है। हमारी भक्ति साधना तो त्रिकुटी स्थान से प्रारम्भ होती है। हमारे सन्त श्री शिवदयाल से पहले किसी को भी ऊपर के रुहानी मण्डलों की चढ़ाई व साधना का ज्ञान नहीं था। श्री शिवदयाल सिंह सेठ महाराज राधास्वामी का ज्ञान व सत्संग वचनों का संग्रह पुस्तक ''सार वचन कार्तिक राधास्वामी'' नाम की पुस्तक में लिखे हैं। ज्ञान इस प्रकार है :- सब से ऊपर राधास्वामी धाम है, यही सच्चे साहिब का नाम है। इससे दो स्थान नीचे सतनाम का स्थान है। इसी ''सतनाम'' को सन्तों ने सतलोक, सारनाम, सत्पुरुष, सारशब्द, सतनाम कहा है।''

प्रिय पाठकों से निवेदन है कि यह ज्ञान श्री शिवदयाल सिंह जी राधास्वामी का है। जिससे पूर्वोक्त सर्व पंथ निकले हैं। यह ऐसा ज्ञान है जैसे कोई कहे कि कार को पैट्रोल, सड़क, ड्राईवर, शहर तथा कार कहा जाता है।

यह व्याख्या मूर्ख व्यक्ति कर सकता है जिसने कभी कार सड़क, शहर तथा पैट्रोल व ड्राईवर न देखा हो और अन्त में डींग मारता हो कि मैं शहर में जाता हूँ, वहाँ कार में घूमता हूँ। कार सड़क पर पैट्रोल से चलती है, ड्राईवर चलाता है। यह किसी से सुन कर बताता है। जब उससे पूछो कि कार कैसी है, पैट्रोल, सड़क, पेट्रोल कैसा है, ड्राईवर कैसा है जिसने कभी कुछ देखा ही न हो, केवल सुना हो वह भी अधूरा। ऐसे ही अज्ञानी से सुना अज्ञान तो वह ऐसी ही व्याख्या करेगा जैसे उपर बताई है। कार को शहर, सड़क, पैट्रोल, ड्राईवर भी कहते हैं।

ऐसा ही अनुभव है श्री शिवदयाल सिंह सेठ महाराज जी राधास्वामी का जिसने कहा है कि ''राधास्वामी मुकाम'' से दो स्थान नीचे 'सतनाम' का स्थान है। इसी सतनाम को सतलोक, सारनाम, सार शब्द, सत पुरुष और सतनाम कहा जाता है। वास्तव में 'सतनाम' तो साधना का मन्त्र है जिसमें दो अक्षर हैं (ओम् + तत् जो सांकेतिक है) सारनाम व सार शब्द ये भी साधना के मन्त्र हैं। सतलोक वह स्थान है जहाँ पर परमात्मा रहते हैं। 'सत्पुरुष' यह परमात्मा का विशेषणात्मक नाम है, सत् पुरुष का अर्थ है 'अविनाशी परमात्मा'। अब पाठकजन आसानी से समझ सकते हैं कि राधास्वामी पंथ तथा उसकी शाखाओं का ज्ञान कैसा है? फिर उनकी भक्ति की साधना कैसी होगी? उनको क्या उपलब्धि हुई होगी? राधास्वामी

कोई धाम नहीं है और न साहेब अर्थात् परमात्मा का नाम है। इससे सिद्ध हुआ कि इन उपरोक्त व पूर्वोक्त पंथो ने शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचारण (मनमानी साधनायें) प्रारम्भ कर रखा है जो व्यर्थ है।

प्रमाण : श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण (मनमानी साधना) करते हैं, उनको न तो सुख प्राप्त होता है, न कोई कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है और न उनकी गति (मोक्ष प्राप्ति) होती है अर्थात् व्यर्थ साधना है।(गीता अध्याय 16 श्लोक 23)

इससे तेरे लिए हे अर्जुन! कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। कौन-सी साधना करनी चाहिए, कौन-सी नहीं करनी चाहिए, वह शास्त्रों से ही जानें। किसी के शास्त्र विरुद्ध ज्ञान के आधार से मनमाना आचरण करना व्यर्थ है। (गीता अध्याय 16 श्लोक 24)

शाखा जिनको भक्ति के लिए आधार माना जाना चाहिए :- 1. चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद), 2. श्री मद्भगवत गीता, 3. सूक्ष्म वेद अर्थात् तत्वज्ञान जिसके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक 32 व 34 में कहा है। वह परम अक्षर ब्रह्म द्वारा अपने मुख कमल से कहा ज्ञान है जिसे सचिदानन्द ब्रह्म की वाणी (कबीर वाणी) भी कहा जाता है। ये शास्त्र हैं भक्ति के लिए की जाने वाली साधना तथा आध्यात्म ज्ञान के लिए। इनके अतिरिक्त अन्य 18 पुराण हैं जो ज्ञान प्राप्ति व सूक्ष्म वेद के ज्ञान की पुष्टि में सहयोगी हैं। इनमें सम्पूर्ण शास्त्रानुकुल ज्ञान नहीं है। उपरोक्त सर्व पंथों में 'हवन यज्ञ' करने को मना किया जाता है तो यह शास्त्र विरुद्ध मनमाना आचरण है। गलत साधना है। इन पंथों में साधना के नाम जाप के मन्त्र भी शास्त्रों के विपरीत हैं। इनका ज्ञान आगे जाप यज्ञ में किया जाएगा। हवन यज्ञ जो शास्त्रविधि त्यागकर किया जाता है, उससे हानि अधिक लाभ कम होता है।

❖ प्रमाण :-

1. हवन यज्ञ जो शास्त्रविधि त्यागकर किया जाता है, वह हवन कुण्ड बनाकर लकड़ियां जलाकर ही घी डालकर किया जाता है। जिससे कार्बन डाई ऑक्साइड अधिक निकली है। जबकि ज्योति यज्ञ में नाम मात्र दूषित वायु निकलती है। पूर्व समय में ऋषि (ब्राह्मण) लोग राजाओं के घर पर हवन यज्ञ का अनुष्ठान किया करते थे। लगभग 10 फुट गहरा और 10 फुट चौड़ा व लम्बा पक्का हवन कुण्ड तैयार करते थे। उसमें एक मन (लगभग 40 कि.ग्रा.) लकड़ी डालकर चारों और बैठकर ब्राह्मण घी डालते रहते थे। अग्नि प्रज्वलित होती रहती थी। यह शास्त्रविधि रहित साधना इसलिए करते थे कि राजाओं के घर किसी वस्तु का अभाव नहीं होता था। राजा लोक भी धार्मिक होते थे। वे अधिक धर्म करने में विश्वास रखते थे। ऋषिजन राजाओं को खुश करने के लिए शास्त्रविधि से हवन यज्ञ (ज्योति यज्ञ जो ऋग्वेद 8 सूक्त 46 मन्त्र 10 में है उसको) को त्यागकर मन की योजना अनुसार हवन कुण्ड बनाकर हवन यज्ञ करने लगे। फिर यह परम्परा

बन गई जो अब सत्य लग रही है, परंतु जन साधारण में शास्त्रविधि अनुसार ज्योति यज्ञ से हवन परम्परा अभी तक जीवित थी जो वर्तमान में पूर्वोक्त पंथों ने उससे भी वंचित कर दिया है।

❖ पौराणिक सत्य कथा : एक समय राजा दक्ष ने हवन यज्ञ का अनुष्ठान कराया। उस समय बहुत बड़ा हवन कुण्ड तैयार किया गया। उस यज्ञ में श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु सहित अनेकों देवता व ब्राह्मण तथा ऋषिजन आए थे, परंतु श्री शिवजी नहीं बुलाए गए थे क्योंकि राजा दक्ष की पुत्री पार्वती जी ने अपने पिता की इच्छा के विपरीत भगवान शिव से विवाह किया था। जिस कारण से राजा दक्ष ने पार्वती से कहा था कि कभी मेरे घर पर न आना। जिस कारण से पार्वती विवाह के पश्चात् अपने पिता के घर नहीं आई थी। इसीलिए राजा दक्ष ने अपनी पुत्री पार्वती तथा दामाद शिव को आमन्त्रित नहीं किया था।

किसी बात पर भगवान शिव अपनी धर्मपत्नी पार्वती जी से नाराज हो गए और उससे बातें करना तथा पत्नी व्यवहार करना बन्द कर दिया। पार्वती जी को निश्चय हो गया कि अब शिवजी मेरे से कभी प्रसन्न नहीं होंगे। लड़की को ऐसे समय में अपने पिता का ही घर नजर आता है। इसलिए शेष जीवन बिताने के लिए अपने पिता दक्ष के घर आ गई। वहाँ पर हवन यज्ञ चल रहा था। पिता ने अपनी पुत्री पार्वती का अपमान किया, कहा कि तुझे किसने बुलाया है, क्यों आई? इस बात से क्षुब्ध होकर पार्वती जी ने हवन कुण्ड में छलाँग लगा कर आत्महत्या कर ली। लाभ के स्थान पर हानि हो गई। यदि ज्योति यज्ञ (बाती बनाकर रुई पर घी डालकर यज्ञ) किया होता तो पुत्री नहीं मरती क्योंकि कुछ समय उपरान्त पिता तथा पुत्री का क्रोध समाप्त हो जाता तथा बहुत बड़ा अनर्थ बच जाता। इसलिए शास्त्रविधि अनुसार साधना करना ही श्रेयकर है। यह हवन यज्ञ करना भी अनिवार्य है।

4. ''प्रणाम यज्ञ''

भक्ति व साधना उसी साधक की सफल होती है जिसमें नम्रता (आधीनी) होती है, दास भाव होता है।

गरीब, आधीनी के पास है पूर्ण ब्रह्म दयाल।
मान बड़ाई मारिए बे अदबी सिरकाल।।
दासा तन में दर्श है सब का होजा दास।
हनुमान का हेत ले रामचन्द्र के पास।।
विभिषण का भाग बड़ेरा, दास भाव आया तिस नेड़ा।।
दास भाव आया बिसवे बीसा, जाकूं लंक देई बकशीशा।।
दास भाव बिन रावण रोया, लंक गंवाई कुल बिगोया।।
भक्ति करी किया अभिमाना, रावण समूल गया जग जाना।।
ऐसा दास भाव है भाई। लंक बखसते बार ना लाई।।
तातें दास भाव कर भक्ति कीजै, सबही लाभ प्राप्त कीजै।।

गरीब बेअदबी भावै नहीं साहब के तांही,
अजाजील की बन्दगी पल मांहे बहाई।।

उपरोक्त अमृतवाणी सूक्ष्मवेद की है। इनका भावार्थ है कि भक्त में विनम्रता होनी चाहिए। जिस कारण से भक्त की भक्ति सफल होती है। यदि भक्त साधना भी करता है और अहंकार भी रखता है तो उसकी साधना व्यर्थ हो जाती है। उदाहरण दिए हैं कि :-

❖ हनुमान जी भगवान भक्त थे। श्री रामचन्द्र जी के साथ अति आधीन होकर रहते थे। जिस कारण से श्री रामचन्द्र जी अपने प्रिय विनम्र भक्त से विशेष प्यार करते थे। रावण लंका देश का राजा था। उसने श्री शिव जी (तमगुण) की भक्ति भी की और अहंकार भी अत्यधिक रखा। जिस कारण से श्रीलंका का राज्य भी गँवाया तथा कुल का नाश भी कराया। इसके विपरीत रावण का भाई विभिषण था जो विनम्र था तथा मुनीन्द्र ऋषि से दीक्षित भी था। जिस कारण से श्री रामचन्द्र जी ने लंका का राज्य विभिषण नम्र भक्त को बखशीश कर दिया, मुफ्त में दे दिया। इसलिए परमात्मा से सर्व लाभ लेने के लिए दासभाव अर्थात नम्रतापूर्वक भक्ति करनी चाहिए।

❖ एक अजाजील नाम का साधक था। वह केवल प्रणाम यज्ञ किया करता था। उसने अपने जीवन में ग्यारह अरब बन्दगी (प्रणाम) किये। जब भगवान के लोक में गया, तब भगवान विष्णु ने उसकी परिक्षा ली तो उसका अभिमान समाप्त नहीं था। उसने भगवान की आज्ञा का पालन अहंकारवश नहीं किया। जिस कारण से उसकी सर्व प्रणाम यज्ञ का फल नष्ट हो गया तथा पुनः पृथ्वी पर जन्म लेकर पशु-पक्षियों की योनियों में भटकने लगा। आधीनी भक्त का गहना होता है। आधीन बनने के लिए 'प्रणाम यज्ञ' करना अति अनिवार्य है। सूक्ष्मवेद में तथा गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि पूर्ण मोक्ष मार्ग तत्व ज्ञान (सूक्ष्मवेद) में सम्पूर्ण लिखा है। सूक्ष्मवेद स्वयं सच्चिदानन्द घन ब्रह्म (परम अक्षर ब्रह्म) अपने मुख कमल से बोलता है। वह तत्वज्ञान तत्वदर्शी सन्तों को ज्ञात होता है। इसलिए उस तत्वज्ञान की प्राप्ति के लिए तत्वदर्शी सन्तों को दण्डवत प्रणाम करके नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से तत्वदर्शी सन्त तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे। गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 65 में कहा है कि अर्जुन! मुझ में मतवाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करने वाला हो, मुझको प्रणाम कर, ऐसा करने से तू मुझे ही प्राप्त होगा। इस प्रकरण से स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने के लिए दण्डवत् प्रणाम करना होता है तथा ब्रह्म तक की भक्ति करने वाले केवल करबद्ध होकर नमस्कार (प्रणाम) करते हैं।

हमने पूर्ण ब्रह्म की भक्ति करनी है। इसलिए हम दण्डवत् प्रणाम करते हैं। यह प्रणाम यज्ञ है। तत्वज्ञान (सूक्ष्मवेद) में कहा गया है इस दण्डवत् प्रणाम से अहंकार नष्ट होता है। पृथ्वी पर पेट के बल लेटकर दोनों हाथों को सामने सिर के ऊपर को फैलाकर पैर आपस में मिलाकर पैर के पंजे पर थोड़ा सा पंजा चढ़ाकर

पैर तथा हाथ जोड़कर प्रभु को दण्डवत् प्रणाम करके प्रणाम यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं जो अहंकार को समाप्त करता है और प्रणाम यज्ञ का लाभ मिलता है। सूक्ष्मवेद में कहा है :-

कबीर, गुरु को कीजिए दण्डवतम्, कोटि कोटि प्रणाम।
कीट न जाने भृंग कूं, करले आप समान।।
कबीर गुरु गोविन्द कर जानिए, रहिए शब्द समाय।
मिले तो दण्डत बन्दगी, नहीं पल–पल ध्यान लगाय।।
कबीर, दण्डवत गोविन्द गुरु, बन्दू अविजन सोय।
पहले भये प्रणाम तिन, नमो जो आगे होय।।
गरीब सतगुरु साहेब सन्त सब, दण्डवत्म प्रणाम।
आगे पीछे मध्य भए, तिनकूं जा कुर्बान।।

इस प्रकार सूक्ष्मवेद में (ऊपर लिखी अमृतवाणी में) दण्डवत् प्रणाम करने का विधान है। प्रणाम (दण्डवत् प्रणाम) करते समय मन का अहंकार बाधक बनता है। यह सोचता है कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा हैं कि मैं जमीन पर लेटकर दण्डवत् प्रणाम कर रहा हूँ। कहीं मेरी बेईज्जती (Insult) तो नहीं हो जाएगी। उस समय याद करें कि यदि परमात्मा की भक्ति नहीं की तो पाप कर्म के कारण अधरंग हो गया तो मुँह आधा खुला रहेगा, टेढ़ा हो जाएगा, मक्खियाँ निकलेंगी और अंदर जाएंगी। पैर-हाथ लटक जाएंगे, तब यह अकड़ व शर्म कहाँ जाएगी? यह शरीर पाँच तत्व का पुतला है। मृत्यु उपरान्त इसको फूँक दिया जाएगा। इसकी राख पर गधे लेटेंगे। फिर गधा-कुत्ता बनकर सदा पेट के बल ही रहेगा। इसलिए दण्डवत् प्रणाम करते समय ध्यान रखें फिर क्या बनेगी, कहाँ जाएगी यह शर्म?

सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

लोक लाज न कीजिए, निर्भय हो रहिए।
जे मन चाहे राम को, दासा तन करिए।।
लोक लाज मर्याद जगत की, तृण ज्यूं तोड़ बगावै।
तब कोई राम भक्त गति पावै।।

इस प्रकार विचार करके दण्डवत् प्रणाम करें। मन में किसी प्रकार का संकोच न रखें, संसार की बातों पर ध्यान न दें। सतगुरु ज्ञान को आधार बनाकर भक्ति करें और अपने जीवन का कल्याण करायें।

5. ज्ञान यज्ञ :-

सद्ग्रन्थों का अध्ययन तथा तत्वदर्शी संत का सत्संग 'ज्ञान यज्ञ' कहलाता है। गीता अध्याय 4 श्लोक 33 में कहा है कि हे परंतप अर्जुन! द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ''ज्ञान यज्ञ'' श्रेष्ठ है। सारे के सारे कर्म अर्थात् सर्व सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 33)

गीता अध्याय 4 श्लोक 32 से 41 तक यही बताया है कि :-

❖ भावार्थ है कि :- मनमाना आचरण करके जो द्रव्यमय यज्ञ करते हैं। जैसे

कहीं पर मंदिर बनवा दिया। कहीं कम्बल बाँट दिए, कहीं भोजन-भण्डारा कर दिया। इस तरह से किए जाने वाले धन से धार्मिक कर्म द्रव्यमय यज्ञ अर्थात् धर्मयज्ञ कहलाते हैं। इस प्रकार परंपरागत किए जाने वाले धर्मखर्च से पहले तत्वज्ञान को जानना चाहिए। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 से 41 तक यही बताया है कि सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान तत्वज्ञान (सूक्ष्मवेद) स्वयं परम अक्षर ब्रह्म ही अपनी वाणी से बोल कर बताता है। उस को तत्वदर्शी सन्त जानते हैं। उन से जानों। उस ज्ञान को जानकर साधक फिर कर्मों में नहीं बँधता। सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं। उस तत्वज्ञान के आधार से भक्ति कार्य करने से साधक को परम गति (पूर्ण मोक्ष) प्राप्त होता है। अधिक प्रमाण इसी यज्ञ प्रकरण में 'धर्म यज्ञ' में पृष्ठ III पर पढ़ें जो पहले लिख दिया है। यह स्पष्ट किया गया है कि देखा-देखी लोकवेद के आधार से धर्म के नाम पर खर्च करने की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ अर्थात् तत्वदर्शी सन्त से सत्संग सुनना श्रेष्ठ है। फिर गुरुदीक्षा लेकर उनके मार्गदर्शन अनुसार धर्म के नाम पर दान करना शास्त्रानुकूल साधना होने से श्रेयकर है। ज्ञान यज्ञ समझने के लिए पढ़ें पुस्तक 'आध्यात्मिक ज्ञान गंगा' ज्ञान यज्ञ का कुछ अंश आप जी को इस 'भक्ति बोध' के अनुवाद में भी पढ़ने को मिलेगा।

(ग) ''तप''

भक्ति के लिए की जाने वाली साधना में ''तप'' की भी भूमिका है, परंतु यह तप वह नहीं है जो एक स्थान पर बैठकर हठपूर्वक किया जाता है जो शास्त्र विरुद्ध होने से हानिकारक है। यह वह तप नहीं है जो गीता अध्याय 17 श्लोक 5-6 में कहा है कि जो शास्त्रविधि रहित मनमाना घोर तप को तपते हैं, वे शरीर के कमलों में बैठे देवताओं और मुझे क्रश (दुःखी) करने वाले हैं, उनको राक्षस स्वभाव के जान। यह तप वह तप है जो गीता अध्याय 17 श्लोक 14, 15, 16 में कहा गया है, उस ''तप'' को करने का विधान है। जैसे गीता अध्याय 17 श्लोक 14 में कहा है कि (देवद्विज) देवताओं जैसे अच्छे स्वभाव से विद्वानों और तत्वज्ञानी गुरु जी के सत्कार सम्बन्धी जो पवित्रता अर्थात् आत्मा शुद्ध निष्कपट रखना, नम्रता, शुद्धाचरण और अहिंसा यह शरीर से किया जाने वाला तप है। (गीता अध्याय 17 श्लोक 14)

भावार्थ है कि सत्संग में आने वाले भक्तों की सेवा करना शरीर सम्बन्धी तप है। (गीता अध्याय 17 श्लोक 14)

उद्वेग न करने वाला अर्थात् जोश पैदा न करने वाला सरल, प्रिय, हितकारक यथार्थ सत्संग वचन और जो प्रतिदिन किया जाने वाला स्वाध्याय का अभ्यास यह वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है। (गीता अध्याय 17 श्लोक 15)

भावार्थ :- सरलतापूर्वक यथार्थ ज्ञान कहना जो सर्व के हित के लिए है तथा प्रिय भी है। इसके कहने में यदि कोई उत्पीड़न भी करता है, वह भी भक्त का तप है और जो प्रतिदिन नित्य पाठ तीनों समय (सुबह, दिन तथा शाम) किया जाने वाला है, उसमें बैठकर या चलते-चलते करना यह वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है। (गीता अध्याय 17 श्लोक 15)

गीता अध्याय 17 श्लोक 16 में कहा है मानसिक साधना करना, अपने भाव को शुद्ध करने के लिए ज्ञान का मनन-चिन्तन यह मान सम्बन्धी तप कहा जाता है। (गीता अध्याय 17 श्लोक 16)

भावार्थ : भक्ति साधना में मन का बहुत योगदान है। इसमें उत्पन्न विकार भगवत चिन्तन में बाधा करते हैं। ज्ञान का मनन करके मन को शुद्ध करना यह मन सम्बन्धी तप है। (गीता अध्याय 17 श्लोक 16)

उपरोक्त गीता अध्याय 17 श्लोक 14 से 16 का निष्कर्ष है कि सत्संग में आने वाले प्रभु के प्यारे बच्चों का सत्कार व सेवा करना शरीर का तप है। सत्य ज्ञान कहने में जो भी कठिनाई आवे, वह वाणी द्वारा किया गया तप है। मन में सांसारिक इच्छायें उत्पन्न होती हैं। उनको तत्वज्ञान के चिन्तन से मन से दूर करना। जैसे मन कार-कोठियों, विषय-विकारों की ओर आकर्षित हो तो तत्वज्ञान से विचार करके शुद्ध करना मन से किया गया तप है। शराब, तम्बाखु-माँस सेवन का त्याग करने में जो मन के साथ ज्ञान से संघर्ष करना पड़ता है, वह मन से किया गया तप है। यह तप करना शास्त्रानुकूल तप कहा जाता है। यह तप करना है।

(घ) जप

जप का अर्थ है मन्त्र का जाप करना। जो दीक्षा मन्त्र (नाम की दीक्षा) तत्वदर्शी सन्त देता है, उस का जाप करना 'जप' कहा जाता है। यह दो प्रकार से किया जाता है :- जाप तथा अजपा।

जाप = जो जिव्हा से उच्चारण किया जाता है, वह जाप कहा जाता है। जाप करने का 'नाम' शास्त्रानुकूल अर्थात् शास्त्र प्रमाणित होना ही लाभप्रद है। शास्त्रों में कौन-से नाम जाप के कहे हैं, वे जानना अनिवार्य है। भक्ति के लिए प्रमाणित शास्त्र तीन ही हैं :-

1. चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) 2. इन्हीं चारों वेदों का सारांश श्री मद्भगवत गीता 3. सूक्ष्मवेद

1+2 = वेद (चार) और गीता में कौन से मन्त्र जाप करने का निर्देश है?

पहले चार वेद : यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 में कहा है कि 'ओम्' नाम का जाप कार्य करते-करते स्मरण कर, विशेष कसक के साथ स्मरण कर तथा मनुष्य जन्म का मूल कर्तव्य जानकर स्मरण कर।

श्री मद्भगवत गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने बताया है कि :-

ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म व्यवहारन् माम अनुस्मरण,
यः प्रयाति तजन देहम् सः याति परमाम् गतिम्।।

अनुवाद : मुझ ब्रह्म का ओम् (ॐ) यह एक अक्षर है, उच्चारण करके स्मरण करता हुआ जो शरीर त्यागकर जाता है, वह ॐ के जप से मिलने वाली परमगति को प्राप्त होता है।

भावार्थ : गीता के अन्दर जाप करने का केवल एक नाम ओम् (ॐ) है। यह

ब्रह्म का जाप है। ऊँ के जप से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। यह ऊँ से होने वाली परम गति है। यही प्रमाण श्री देवी पुराण (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी) से सातवें स्कंद के पृष्ठ 562-563 पर श्री देवीजी (दुर्गा जी) ने राजा हिमालय से कहा था कि मेरी पूजा सहित अन्य सब पुजाओं को त्यागकर केवल एक ओम् (ऊँ) नाम का जप कर, ब्रह्म प्राप्ति का उद्देश्य रखकर ऊँ का जप कर जिससे उस ब्रह्म को प्राप्त हो जाएगा। वह ब्रह्म दिव्याकाश में ब्रह्म लोक में रहता है। तू ब्रह्म लोक में चला जाएगा।

याद रखें पुराणों में कुछ वेद ज्ञान है और अधिक किसी ऋषि, देवी, देवता का अपना अनुभव है। पुराणों का जो ज्ञान वेद या गीता से मिलता है, वह ज्ञान व भक्ति साधना का ज्ञान सही है। जो मेल नहीं खाता, वह व्यर्थ है। उसको हमने ग्रहण नहीं करना है। उपरोक्त कथन से स्पष्ट हुआ कि ऊँ नाम के जाप से ब्रह्म लोक प्राप्ति होती है क्योंकि ओम् (ऊँ) नाम ब्रह्म का जाप मन्त्र है।

श्री मद्भगवत गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्म लोक प्रयन्त सर्व लोक पुन्नावर्ती में हैं अर्थात् ब्रह्म लोक में गए साधक भी पुनः लौटकर संसार में आते हैं, उनका भी जन्म-मृत्यु सदा बना रहता है। अध्यात्म के अन्दर मुख्य भूमिका तीन देवताओं (रजगुण श्री ब्रह्मा जी, सत्गुण श्री विष्णु जी तथा तमगुण श्री शिवजी) की है। इसके साथ-साथ श्री गणेश जी तथा श्री देवी जी की भी भूमिका है क्योंकि यह पाँचों शक्तियाँ अन्य देवताओं तथा गणों में प्रधान है। इन सर्व का स्थान मानव शरीर में बने कमल चक्रों से है। जैसे मूल कमल चक्र में गणेश जी, स्वाद चक्र में सावित्री व ब्रह्मा जी, नाभि चक्र में लक्ष्मी-विष्णु जी, हृदय कमल में शिवजी व पार्वती जी तथा कण्ठ कमल में श्री देवी जी का वास है। इसलिए इनकी साधना भी अनिवार्य है। इनके अतिरिक्त तीन प्रभु हैं जो आध्यात्म के खम्ब हैं।

1. क्षर पुरुष : यह 21 ब्रह्माण्डों का प्रभु है, एक ब्रह्माण्ड में पूर्वोक्त देवी व देवता अपने-अपने विभाग के प्रधान हैं। जैसे श्री ब्रह्मा जी रजोगुण विभाग के, श्री विष्णु जी सतोगुण विभाग के तथा श्री शिवजी तमोगुण विभाग के मन्त्री हैं। एक ब्रह्माण्ड के 14 लोकों के अतिरिक्त तीन लोक (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) हैं। इन पर ही इन तीनों देवताओं का आधिपत्य है। श्री शिवजी के लोक में ही श्री गणेश जी का अलग लोक है, वहाँ पर शिवजी के गण रहते हैं। उनका प्रधान श्री गणेश जी है। श्री देवी जी 14 लोकों तथा इन तीनों लोकों पर भी स्वामीनी है। ब्रह्म ने दुर्गा जी को एक ब्रह्माण्ड की प्रधान शक्ति बनाया है। स्वयं अव्यक्त रहता है। किसी के समझ में नहीं आता। (प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25) ब्रह्म की प्रभुता 21 ब्रह्माण्डों पर है। इसी को क्षर पुरुष कहा है।

2. अक्षर पुरुष : यह 7 संख ब्रह्माण्डों का स्वामी है। इसकी हमारे अध्यात्म मार्ग में बहुत कम तथा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 4 तथा अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए अक्षर पुरुष के नाम मन्त्र का जाप करना अनिवार्य

है। गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर पुनः संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्माण्डों की रचना की है, केवल उसी की पूजा करो। (गीता अध्याय 15 श्लोक 4)

गीता अध्याय 15 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि हे भारत! तू सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा शाश्वत् स्थान (अमर लोक) को प्राप्त होगा। हमारे आध्यात्म मार्ग में विशेषकर दो प्रभुओं का महत्व है। प्रथम तो क्षर पुरुष (ब्रह्मकाल) का क्योंकि हम इसके लोक में फँसे हैं और हमने तीसरे प्रभु पर अक्षर पुरुष के लोक में जाना है जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर पुनः संसार में कभी नहीं आते।

3. परम अक्षर ब्रह्म : यह कुल का मालिक है। यह असंख्य ब्रह्माण्डों का प्रभु है। यह क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष का भी स्वामी है। यह सब देवों का देव वास्तव में महादेव है।

हम साधकों को क्षर पुरुष के लोक से निकलकर परम अक्षर पुरुष के लोक में जाने के लिए साधना करनी है। क्षर पुरुष अक्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष का प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 तथा अध्याय 8 श्लोक 3 में है। पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी पुनः नहीं आता, शास्त्रोक्त साधना करनी होती है।

श्री मद्भगवत गीता का ज्ञान श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने कहा है। गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो साधक जरा (वृद्धावस्था) तथा मरण से छुटकारा पाने के लिए प्रयत्न करते हैं अर्थात् केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए ही साधना करते हैं, वे तत् ब्रह्म से सब कर्मों से तथा सम्पूर्ण अध्यात्म से परीचित हैं। (गीता अध्याय 7 श्लोक 29)

गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने पूछा कि ''तत् ब्रह्म'' क्या है? उस का उत्तर गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में दिया। बताया कि वह 'परम अक्षर ब्रह्म' है।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में क्षर पुरुष और अक्षर पुरुष दो प्रभु बताए हैं। ये दोनों तथा इनके लोकों में जितने शरीरधारी प्राणी हैं, वे सब नाशवान हैं। जीवात्मा तो किसी की नहीं मरती।

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम पुरुष अर्थात् पुरुषोत्तम तो उपरोक्त श्लोक 18 में कहे क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष से अन्य ही है। उसी को 'परमात्मा' कहा गया। वहीं परमात्मा तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वह अविनाशी परमात्मा है। यह परम अक्षर ब्रह्म है।(गीता अध्याय 8 श्लोक 3)

❖ अब गीता अध्याय 8 श्लोक 5 तथा 7 में गीता ज्ञान दाता ने अपनी भक्ति करने को कहा है कि मेरी भक्ति करेगा तो मुझे प्राप्त होगा। इसमें कोई शंका नहीं।

अपनी साधना का नाम जाप गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में बता ही दिया कि ''मुझ ब्रह्म का केवल एक ओम् (ऊँ) नाम है।

गीता अध्याय 8 श्लोक 8, 9, 10 में परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने को कहा है कि जो उस परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करेगा, उसी को प्राप्त होगा। उस परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति का ज्ञान तत्वदर्शी सन्त बताते हैं, उनसे सुन। (गीता अध्याय 4 श्लोक 34) गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की साधना के तीन मन्त्र 'ओम्' (ऊँ) तत् सत् का नाम जाप करने का निर्देश बताया है। (ऊँ तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविध स्मृतः)

1. ऊँ (ओम्) नाम का जाप क्षर पुरुष अर्थात् ब्रह्म का है, यह तो स्पष्ट है।
2. ''तत्'' नाम सांकेतिक है, इसका वास्तविक मन्त्र तत्वदर्शी सन्त बताएगा। यह अक्षर पुरुष का नाम जाप करने का है।
3. 'सत्' नाम भी सांकेतिक है। इसका वास्तविक नाम मन्त्र जाप भी तत्वदर्शी सन्त बताएगा। (जिसके लिए गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है।)

'ऊँ तत् सत्' या 'हरि ऊँ तत् सत्' नाम का जाप करना व्यर्थ है। तत् तथा सत् कोई अन्य मन्त्र है। तब तीन नामों का जाप पूर्णगुरु (तत्वदर्शी सन्त) से प्राप्त करके करना होता है। इसको तीन विधि से जपा जाता है।

1. ये तो नाम जाप करने होते हैं, क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष और परम अक्षर पुरुष की साधना में।

2. इनके अतिरिक्त अन्य शक्तियों के नाम जाप भी करने होते हैं जो मानव शरीर में बने कमल चक्रों को खोलने के लिए किए जाते हैं। जिस कारण से अन्त समय जब साधक शरीर त्यागकर परम धाम को चलता है तो सर्व प्रथम मूल कमल में जाता है। वहाँ पर श्री गणेशजी का कार्यालय है। श्री गणेश जी का एक मूल मन्त्र है। उसकी साधना की कमाई इस कार्यालय में साधक के खाते में जमा मिलेगी। जिस कारण से उसको वहाँ पर रोका नहीं जाएगा। वह कमाई (साधना) वहीं पर छोड़कर श्री गणेश जी के गणों से No due Certificate (कोई बकाया लेन-देन नहीं है का प्रमाण) लेकर फिर श्री लक्ष्मी और विष्णु जी के नाभि कमल में साधक जाता है। इसी प्रकार फिर हृदय कमल में श्री शिव तथा पार्वती जी के कार्यालय से नाम कमाई के बदले में प्रमाण-पत्र लेकर फिर कण्ठ कमल में श्री दुर्गा जी के कार्यालय से प्रमाण पत्र लेकर साधक निर्बाध त्रिकुटि कमल पर पहुँचता है।

त्रिकुटी कमल में पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) साधक के गुरु के रुप में मिलता है। वह साधक को साथ लेकर धर्मराय के दरबार (कार्यालय) लेकर जाता है। गुरु रुप में परमेश्वर वकील की तरह कार्य करता है। सद्ग्रन्थ परमात्मा का संविधान है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में गीता ज्ञान दाता 'ब्रह्म' ने कहा है कि :-

सर्वधर्मान् परितज्य माम् एकम शरणम् व्रज।
अहम त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यमि मा शुचः।।

भावार्थ : गीता ज्ञान दाता ने कहा कि यदि तूने यानि किसी साधक ने शास्त्रविधि अनुसार साधना तत्वदर्शी गुरु से ज्ञान दीक्षा प्राप्त करके की है और वह उस परमेश्वर की शरण में जाना चाहता है जिसके विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में कहा कि मेरे यानि ब्रह्म के नाम ऊँ की जाप कमाई मुझ में छोड़ दे, इसके प्रतिफल 'ब्रह्मलोक' प्राप्ति न लेकर ऊँ नाम जाप की सर्व कमाई छोड़ कर तू 'एकम' जिस के समान अन्य कोई परमात्मा नहीं है, अद्वितीय परमेश्वर की शरण में (व्रज) जा। तब में तुझे सर्व ऋणों (पापों) से मुक्त कर दूँगा, तू चिन्ता न कर। (गीता अध्याय 18 श्लोक 66)

गुरु रुप में परमेश्वर साधक की ऊँ नाम की कमाई को धर्मराय के सामने रखकर कहता है कि श्रीमान् जी देखें वेद अर्थात् गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में लिखा है कि ब्रह्म के ऊँ नाम की धार्मिक साधना का धन मुझमें छोड़कर उस परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जा सकता है तो यह लिजिए ब्रह्म के ऊँ नाम जाप की साधना की पूँजी, यज्ञों की पूँजी और इस साधक का लेनदेन चुकता का प्रमाण पत्र देने की कृपा करें। तब धर्मराज उस साधक को आगे जाने का पासपोर्ट देता है। जो एक ब्रह्माण्ड में दसवें द्वार से पार कर देता है।

❖ गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहे ऊँ, तत्, सत् में से ब्रह्म के ऊँ नाम की साधना का धन तो ब्रह्म को दे दिया, अब बचे दो मन्त्र तत् सत्।

❖ अब ब्रह्म (क्षर पुरुष) के 21 ब्रह्माण्डों के क्षेत्र के अन्त में एक द्वार और है जो ग्यारहवां द्वार कहा जाता है। जिस ग्यारहवें द्वार को पार करके अक्षर पुरुष के 7 संख ब्रह्माण्डों के लोक (देश) में प्रवेश किया जाता है, यह अष्ट कमल दल अर्थात् आठवां कमल है। यहाँ पर अक्षर पुरुष को तत् सांकेतिक मन्त्र है, वास्तविक मन्त्र अन्य है, उसकी नाम जप की साधना को वहाँ छोड़ा जाता है। यह इसके 7 संख ब्रह्मण्डों को पार करने का टोल टैक्स है अर्थात् किराया है। यह भंवर गुफा तक जाने के रास्ते को साफ कर देगा।

❖ फिर 12वां द्वार आता है जिसको पार करके परम अक्षर ब्रह्म के लोक में प्रवेश होता है। परमात्मा गुरु रुप में साथ रहता है। भंवर गुफा में तीसरे नाम अर्थात् 'सत्' का जो वास्तविक मन्त्र है, उसके जप की कमाई वहाँ जमा होती है। तब साधक सत्यलोक (शाश्वत स्थान) को प्राप्त करता है और गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहे परमेश्वर के उस परम पद को प्राप्त करता है जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आता। उसका जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है। सत्यलोक में अमर शरीर अमर जीवन प्राप्त करके नए सिरे से जीवन शुरु करता है। उस अमर लोक में उसका फिर से परिवार बनता है। सदा युवा रहता है। वृद्धावस्था का कष्ट कभी नहीं होता जिसका वर्णन गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में है कि :-

जरा मरण मोक्षाय माम् आश्रित्य यतन्ति।
ते ब्रह्म तत् विद कृष्नम् अध्यातमम् कर्मच अखिलम्।।

भावार्थ : गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो मेरे द्वारा दिए ज्ञान को आश्रय बनाकर तत्वदर्शी सन्त को खोज लेते हैं तो वे सर्व आध्यात्म से सब कर्मों को जानते हैं तथा वे 'तत् ब्रह्म' यानि परम अक्षर ब्रह्म से परीचित हो जाते हैं। इसलिए ये साधक संसार की किसी वस्तु की इच्छा रखकर साधना नहीं करते, वे केवल जरा अर्थात् वृद्धावस्था तथा मरण (मृत्यु) से छुटकारा पाने के लिए अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्ति करने के लिए ही साधना करते हैं। (भक्ति प्रयत्न करते हैं।)

❖ सत्यलोक (शाश्वत स्थान) में जाने के पश्चात् जीवात्मा को अमर शरीर प्राप्त होता है। उस लोक में वृद्ध नहीं होते, सदा युवा रहते हैं। जैसे पृथ्वी पर हमारा परिवार है, वैसे ही वहाँ पर भी परिवार होगा। जो पहले चले गये, उनका भी परिवार है। वहाँ पर कोई कार्य नहीं करना, सर्व पदार्थ उपलब्ध हैं। सदाबहार वृक्ष हैं, फूल खिले रहते हैं। दूधों की नदियां बहती हैं। घी के सरोवर हैं। नदियाँ भी चलती हैं। सुन्दर मकान हैं तथा सर्व सुख है। आपस में प्यार-प्रेम से रहते हैं। वहाँ के व्यक्ति (स्त्री-पुरुष) जो भोजन खाते या पीते हैं, सर्व शरीर में ही समा जाता है। टट्टी-पेशाब नहीं करते। इसलिए वहाँ गन्दगी नहीं है। सत्यलोक में बहुत ही अच्छी सुगन्ध उठती रहती है। वह सत्यलोक स्वप्रकाशित है। वहाँ पर विशेष प्यारी-प्यारी धुन बजती रहती है। जैसे वर्तमान में मोबाईल फोन में बजती है। उसी प्रकार सत्यलोक में बिना किसी साज-बाज (ढोल-बैंड-सारंगी बिना) ही बजती है। सत्यलोक प्राप्त होने के पश्चात् साधक की पूर्ण गति अर्थात् पूर्ण मोक्ष हो जाता है। यही मानव जीवन का मूल उद्देश्य है। यह जप साधना का ज्ञान है। यह भक्ति बोध है। श्री मद्भागवत गीता अध्याय 3 श्लोक 4 में कहा है कि :-

न कर्मणाम् अनारम्भात् नैष्मकर्मयम् पुरुषःअश्नुते।
न च सन्यसनात् एवं सिद्धिम समधि गच्छति।।

भावार्थ : धार्मिक कर्मों (भक्ति की साधना) को किए बिना, कर्मयोग किए अर्थात् धार्मिक क्रियाओं को आरम्भ किए बिना साधक को (नैष्कर्म्यम्) बिना कर्म किए सब सुख प्राप्त होते हैं। उसको निष्कर्मता सिद्धि कहते हैं। जो सत्यलोक में चले जाते हैं, उनको बिना कर्म किए ही सर्व सुख प्राप्त होता है और कर्मसन्यास अर्थात् एक स्थान पर बैठकर हठ योग करना कर्म सन्यास कहा जाता है। निर्वाह के लिए किए गए कर्मों को करते-करते धार्मिक क्रियाओं को करना कर्मयोग कहलाता है। सन्यास धारण करने वालों को निष्कर्मता वाली सिद्धि प्राप्त नहीं होती। गीता अध्याय 3 श्लोक 8 में भी कर्मयोग को श्रेष्ठ बताया है। उपरोक्त भक्ति की साधना से वह निष्कर्मता मोक्ष प्राप्त होता है। वह साधना विश्व में मेरे अतिरिक्त किसी के पास नहीं है।

-संत रामपाल जी महाराज
सतलोक आश्रम बरवाला
जिला-हिसार(हरियाणा)

दो शब्द

भक्ति बोध की वाणी का सरलार्थ प्रारम्भ करने से पूर्व कुछ आवश्यक जानकारी कराते हैं। भक्ति बोध में अधिक वाणी सन्त गरीबदास महाराज जी की हैं। सन्त गरीबदास जी का जन्म गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर प्रांत-हरियाणा में सन् 1717 (विक्रमी संवत् 1774) में हुआ। गाँव छुड़ानी में गरीबदास महाराज जी का नानका है। ये गाँव करौंथा (जिला-रोहतक, हरियाणा) के रहने वाले धनखड़ गोत्र के थे। इनके पीता श्री बलराम जी का विवाह गाँव छुड़ानी में श्री शिवलाल सिहाग की बेटी रानी देवी से हुआ था। श्री शिवलाल जी का कोई पुत्र नहीं था। इसलिए श्री बलराम जी को घर-जमाई रख लिया था। गाँव छुड़ानी में रहते 12 वर्ष हो गए थे, तब सन्त गरीबदास महाराज जी जन्म गाँव छुड़ानी में हुआ था। श्री शिवलाल जी के पास 2500 बीघा (बड़ा बीघा जो वर्तमान के बीघा से 2.75 बड़ा होता था) जमीन थी। जिसके वर्तमान से 1400 एकड़ जमीन बनती है। (2500 x 2.75/5 = 1410 एकड़) उस सारी जमीन के वारिस श्री बलराम जी हुए तथा उनके पश्चात् उनके इकलौते पुत्र सन्त गरीबदास जी उस सारी जमीन के वारिस हुए। उस समय पशु अधिक पाले जाते थे। लगभग 150 गऊऐं श्री बलराम जी रखते थे। उनके चराने के लिए अपने पुत्र गरीबदास जी के साथ अन्य कई चरवाहा (पाली = ग्वाले) किराए पर ले रखे थे। वे भी गऊवों को खेतों में चराने के लिए ले जाया करते थे। जिस समय सन्त गरीबदास जी 10 वर्ष की आयु के हुए, वे गायों को चराने के लिए नला नामक खेत में गए हुए थे। फाल्गुन मास को शुद्धि द्वादशी के दिन के लगभग 10 बजे परम अक्षर ब्रह्म एक जिन्दा महात्मा के वेश में मिले। कंवारी गाय का दूध पीया। जिन्दा वेशधारी परमात्मा से ग्वालों ने दूध पीने का आग्रह किया तो परमेश्वर ने कहा कि मैं कंवारी गाय का दूध पीऊँगा। गरीबदास बालक ने एक बछिया जिसकी आयु 1½ वर्ष की थी, जिन्दा बाबा के पास लाकर खड़ी कर दी। परमात्मा ने बछिया की कमर पर आशीर्वाद भरा हाथ रख दिया। बछिया के स्तन लम्बे-लम्बे हो गए। एक मिट्टी के 5 कि.ग्रा. की क्षमता के पात्र (बरोले) को बछिया के स्तनों के नीचे रखा। स्तनों से अपने आप दूध निकलने लगा। मिट्टी का पात्र भर जाने पर दूध निकलना बन्द हो गया। पहले जिन्दा बाबा ने पीया, शेष दूध को अन्य पालियों (ग्वालों) को पीने के लिए कहा तो जो बड़ी आयु के ग्वाले (सँख्या में 10-12 थे) कहने लगे कि बाबाजी कंवारी गाय का दूध तो पाप का दूध है, हम नहीं पीऐंगे, दूसरे आप न जाने किस जाति के हो, आपका झूठा दूध हम नहीं पीऐंगे, तीसरे यह दूध आपने जादू-जन्त्र करके निकाला है। हम पर जादू-जन्त्र का कुप्रभाव पड़ेगा। यह कहकर जिस जांडी के वृक्ष के नीचे बैठे थे, वहाँ से चले गये। दूर जाकर किसी वृक्ष के नीचे बैठ गए।

तब बालक गरीबदास जी ने कहा कि हे बाबा जी! आपका झूठा दूध तो अमृत है। मुझे दीजिए। कुछ दूध बालक गरीबदास जी ने पीया। परमेश्वर जिन्दा वेशधारी

ने सन्त गरीबदास जी को ज्ञानोपदेश दिया। तत्वज्ञान (सूक्ष्मवेद का ज्ञान) बताया। सन्त गरीबदास जी के अधिक आग्रह करने पर परमेश्वर ने उनकी आत्मा को शरीर से अलग किया और ऊपर के रुहानी मण्डलों की सैर कराई। एक ब्रह्माण्ड में बने सर्व लोकों को दिखाया, श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा शिव जी से मिलाया। उसके पश्चात् ब्रह्म लोक तथा श्री देवी (दुर्गा) का लोक दिखाया। फिर दशवें द्वार (ब्रह्मरन्द्र) को पार करके ब्रह्म काल के 21 ब्रह्मण्डों के अन्तिम छोर पर बने ग्यारहवें द्वार को पार करके अक्षर पुरुष के 7 शंख ब्रह्माण्डों वाले लोक में प्रवेश किया। सन्त गरीबदास जी को सर्व ब्रह्माण्ड दिखाये, अक्षर पुरुष से मिलाया। पहले उसके दो हाथ थे, परंतु परमेश्वर के निकट जाते ही अक्षर पुरुष ने दस हजार (10000) हाथों का विस्तार कर लिया जैसे मयूर (मोर) पक्षी अपने पंख (चन्दों) को फैला लेता है। अक्षर पुरुष को जब संकट का अंदेशा होता है, तब ऐसा करता है। अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है क्योंकि अक्षर पुरुष अधिक से अधिक 10 हजार हाथ ही दिखा सकता है। इसके 10 हजार हाथ हैं। क्षर पुरुष के एक हजार हाथ हैं। जो गीता अध्याय 10-11 में अपना एक हजार हाथों वाला विराट रुप दिखाया। गीता अध्याय 11 श्लोक 46 में अर्जुन ने कहा कि हे सहस्त्र बाहु (एक हजार भुजाओं वाले) अपने चतुर्भुज रुप में आइए। संत गरीबदास जी को अक्षर पुरुष के 7 शंख ब्रह्माण्डों के भेद बता व आँखों दिखाकर परमेश्वर जिन्दा बाबा बारहवें (12वें) द्वार के सामने ले गया जो अक्षर पुरुष के लोक की सीमा पर बना है। जहाँ से भंवर गुफा में प्रवेश किया जाता है। जिन्दा वेशधारी परमेश्वर जी ने संत गरीबदास जी को बताया कि जो दसवां द्वार (ब्रह्म रन्द्र) है, वह मैंने सत्यनाम के जाप से खोला था। जो ग्यारहवां (11वां) द्वार है, वह मैंने तत् तथा सत् (जो सांकेतिक मन्त्र है) से खोला था। अन्य किसी भी मन्त्र से उन द्वारों पर लगे ताले (Locks) नहीं खुलते। अब यह बारहवां (12वां) द्वार है, यह मैं सत् शब्द (सार नाम) से खोलूंगा। इसके अतिरिक्त किसी नाम के जाप से यह नहीं खुल सकता। तब परमात्मा ने मन ही मन में सारनाम का जाप किया, 12वां (बारहवां) द्वार खुल गया और परमेश्वर जिन्दा रुप में तथा संत गरीबदास जी की आत्मा भंवर गुफा में प्रवेश कर गए। फिर सत्यलोक में प्रवेश करके उस श्वेत गुम्बद के सामने खड़े हो गए जिसके मध्य में सिंहासन (उर्दु में तख्त कहते हैं) के ऊपर तेजोमय श्वेत नर रुप में परम अक्षर ब्रह्म जी विराजमान थे। जिनके एक रोम (शरीर के बाल) से इतना प्रकाश निकल रहा था जो करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चाँदों (चन्द्रमाओं) के मिले-जुले प्रकाश से भी अधिक था। इससे अन्दाजा लग जाता है कि उस परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरुष) जी के सम्पूर्ण शरीर की कितनी रोशनी होगी। सत्यलोक स्वयं भी हीरे की तरह प्रकाशमान है। उस प्रकाश को जो परमेश्वर जी के पवित्र शरीर से तथा उसके अमर लोक से निकल रहा है, केवल आत्मा की आँखों से (दिव्य दृष्टि) से ही देखा जा सकता है। चर्म दृष्टि से नहीं देखा जा सकता।

फिर जिन्दा बाबा अपने साथ बालक गरीबदास जी को लेकर उस सिंहासन के

निकट गए तथा वहाँ रखे चंवर को उठाकर तख्त पर बैठे परमात्मा के ऊपर डुराने (चलाने) लगे। बालक गरीबदास जी ने विचार किया कि यह है परमात्मा और यह बाबा तो परमात्मा का सेवक है। उसी समय तेजोमय शरीर वाला प्रभु सिंहासन त्यागकर खड़ा हो गया और जिन्दा बाबा के हाथ से चंवर ले लिया और जिन्दा बाबा को सिंहासन पर बैठने का संकेत किया। जिन्दा वेशधारी प्रभु असंख्य ब्रह्माण्डों के मालिक के रुप में सिंहासन पर बैठ गए। पहले वाला प्रभु जिन्दा बाबा पर चंवर करने लगा। सन्त गरीबदास जी विचार कर ही रहे थे कि इनमें परमेश्वर कौन हो सकता है, इतने में तेजोमय शरीर वाला प्रभु जिन्दा बाबा वाले शरीर में समा गए, दोनों मिलकर एक हो गए। जिन्दा बाबा के शरीर का तेज उतना ही हो गया, जितना तेजोमय पूर्व में सिंहासन पर बैठे सत्य पुरुष जी का था। कुछ ही क्षणों में परमेश्वर बोले हे गरीबदास! मैं असंख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी हूँ। मैंने ही सर्व ब्रह्माण्डों की रचना की है। सर्व आत्माओं को वचन से मैंने ही रचा है। पाँच तत्व तथा सर्व पदार्थ भी मैंने ही रचे हैं। क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरूष व उनके लोकों को भी मैंने उत्पन्न किया है। इनको इनके तप के बदले में सर्व ब्रह्माण्डों का राज्य मैंने ही प्रदान किया है। मैं 120 वर्ष तक पृथ्वी पर कबीर नाम से जुलाहे की भूमिका करके आया हूँ। भारत देश (जम्बू द्वीप) के काशी नगर (बनारस) में नीरु-नीमा नाम के पति-पत्नी थे। वे मुसलमान जुलाहा थे। वे निःसंतान थे। ज्येष्ठ शुद्धि पूर्णमासी की सुबह (ब्रह्म मुहूर्त में) लहरतारा नामक सरोवर में काशी के बाहर जंगल में मैं नवजात शिशु का रुप धारण करके कमल के फूल पर लेटा था। मैं अपने इसी स्थान से गति करके गया था। नीरु जुलाहा तथा उसकी पत्नी प्रतिदिन उसी तालाब पर स्नानार्थ जाया करते थे। उस दिन मुझे बालक रुप में प्राप्त करके अत्यन्त खुश हुए। मुझे अपने घर ले गए। मैंने 25 दिन तक कुछ भी आहार नहीं किया था। तब शिवजी एक साधु के वेश में उनके घर गए। वह सब मेरी प्रेरणा ही थी। शिव से मैंने कहा था कि मैं कंवारी गाय का दूध पीता हूँ। तब नीरु एक बछिया लाया। शिव को मैंने शक्ति प्रदान की, उन्होंने बछिया की कमर पर अपना आशीर्वाद भरा हाथ रखा। कंवारी गाय ने दूध दिया। तब मैंने दूध पीया था। मैं प्रत्येक युग में ऐसी लीला करता हूँ। जब मैं शिशु रुप में प्रकट होता हूँ, तब कंवारी गायों से मेरी परवरिश की लीला हुआ करती है। हे गरीब दास! चारों वेद मेरी महिमा का गुणगान करते हैं।

वेद मेरा भेद है, मैं ना वेदन के मांही।।
जौन वेद से मैं मिलूं, वह वेद जानते नाहीं।।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 में लिखा है कि जब परमेश्वर शिशु रुप में पृथ्वी पर प्रकट होते हैं तो उनकी परवरिश की लीला कंवारी गायों द्वारा होती है। मैं सत्ययुग में ''सत्यसुकृत'' नाम से प्रकट हुआ था। त्रेतायुग में ''मुनीन्द्र'' नाम से तथा द्वापर में ''करुणामय'' नाम से और संवत् 1455 ज्येष्ठ शुद्धि पूर्णमासी को मैं कलयुग में ''कबीर'' नाम से प्रकट व प्रसिद्ध हुआ था।

❖ यह सब प्रसंग सुनकर सन्त गरीब दास जी ने कहा कि परवरदिगार! यह ज्ञान मुझे कैसे याद रहेगा? तब परमेश्वर जी ने बालक गरीबदास जी को आशीर्वाद दिया और कहा कि मैंने तेरा ज्ञानयोग खोल दिया है। आध्यात्म ज्ञान तेरे अन्तःकरण में डाल दिया है। अब आप असँख्य युगों के पहले से लेकर वर्तमान तथा भविष्य का ज्ञान भी याद रखोगे।

❖ दूसरी ओर नीचे पृथ्वी पर शाम के 3 बजे के आसपास अन्य ग्वालों (चरवाहों) को याद आया कि गरीब दास नहीं है, लाओ उठाकर। तब एक पाली गया। उसने दूर से आवाज लगाई कि हे गरीब दास! आजा गायों के सामने खड़ा होकर अपनी बारी कर। हम बहुत देर से खड़े हैं। भक्त गरीबदास जी नहीं बोले और न उठे क्योंकि पृथ्वी पर तो केवल शरीर था। जीवात्मा तो ऊपर के मण्डलों की सैर कर रही थी। उस पाली ने निकट जाकर हाथ से शरीर को हिलाया तो शरीर जमीन पर गिर गया, पहले सुखासन पर स्थिर था। ग्वाले ने देखा तो बालक गरीबदास को मृत पाया। उसने शोर मचाया। अन्य ग्वाले दौड़े आए। उनमें से एक गाँव छुड़ानी की ओर दौड़ा। छुड़ानी गाँव से गाँव कबलाना के रास्ते पर वह जांडी का वृक्ष था जिसके नीचे परमेश्वर जी जिन्दा रुप में गरीबदास जी तथा अन्य पालियों के साथ बैठे थे। गाँव कबलाना की सीमा के साथ वह खेत सटा हुआ था जो छुड़ानी गाँव का है जो गरीबदास जी का अपना ही खेत था। वह स्थान गाँव छुड़ानी से 1½ कि.मी दूर है। गाँव छुड़ानी में जाकर उस पाली ने गरीबदास जी के पिता-माता, नाना-नानी को सब हाल बताया कि एक बाबा ने कंवारी गाय का दूध जादू-जन्त्र करके निकाला, वह दूध हमने तो पीया नहीं बालक गरीबदास ने पी लिया। हमने अभी देखा तो वह मर चुका है। बच्चे के शव को चिता पर रखकर अन्तिम संस्कार की तैयारी कर दी। उसी समय परमेश्वर जी ने कहा हे गरीबदास! आप नीचे जाओ। आपके शरीर को नष्ट करने जा रहे हैं। सन्त गरीबदास जी ने नीचे को देखा तो यह पृथ्वी लोक सत्य लोक की तुलना में नरक लोक के समान दिखाई दे रहा था। सन्त गरीबदास जी ने कहा हे प्रभु! मुझे नीचे मत भेजो, यहीं पर रख लो। तब सत्यपुरुष कबीर जी ने कहा कि आप पहले भक्ति करोगे, जो साधना मैं तुझे बताऊँगा, उस भक्ति की कमाई (शक्ति) से फिर यहाँ स्थाई स्थान प्राप्त करोगे। सामने देख वह तेरा महल है जो खाली पड़ा है। सर्व खाद्य पदार्थ भरे पड़े हैं। नीचे पृथ्वी पर वर्षा होगी तो अन्न होगा। कितनी मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ जैसे पदार्थ पृथ्वी पर हैं ही नहीं। आप नीचे जाओ। प्रथम मन्त्र मैंने तुझे दे दिया है। फिर सत्यनाम भी तुझे प्रदान करने आऊंगा। यह सत्यनाम दो अक्षर का होता है। एक ऊँ अक्षर दूसरा तत् (यह सांकेतिक है) अक्षर है। फिर कुछ समय उपरान्त तुझे सारनाम दूँगा। इन सर्वनामों (प्रथम, दूसरा तथा तीसरा) की साधना करके ही तू यहाँ आ सकेगा। मैं हरदम भक्त के साथ रहता हूँ। तू चिन्ता मत करना। अब आप शीघ्र जाइए। इतना कहकर परम अक्षर पुरुष जी ने सन्त गरीबदास जी के जीव को शरीर में प्रवेश कर दिया। कुल परिवार के लोग चिता

में अग्नि लगाने ही वाले थे, उसी समय बच्चे के शरीर में हलचल हुई। शव को रस्से से बाँध कर ले जाते हैं, वह रस्सा भी अपने आप टूट गया। सन्त गरीबदास जी उठकर बैठ गए। चिता से नीचे उतरकर खड़े हो गए। उपस्थित गाँव के व परिवार के व्यक्तियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बालक गरीबदास ऊपर को आँखें करके परमात्मा को देख रहा था तथा जो अमृतज्ञान परमेश्वर जी ने उनके अन्तःकरण में डाला था, वह अमृतवाणी दोहों व चौपाइयों तथा शब्दों के रुप में बोलने लगा। गाँव वालों को उस अमृतवाणी का ज्ञान नहीं था। इसलिए उन्होंने सोचा कि बच्चे को बाबा ने फटकार मार दी जिस कारण से बड़बड़ा रहा है। कुछ का कुछ बोल रहा है, परंतु परमात्मा का सौ-सौ शुक्र मना रहे थे कि लड़की का लड़का जीवित हो गया। पागल है तो भी लड़की रानी देवी अपना दिल रोककर खुश रहेगी। यह समझकर महापुरुष गरीबदास जी को पागल (गाँव की भाषा में बावलिया) कहने लगे।

तीन वर्ष के पश्चात् एक गोपाल दास सन्त दादू दास जी के पंथ से दीक्षित था। वह सन्तों की वाणी को समझता था। उसके महत्व को जानता था। वह वैश्य जाति से था, सन्त वेशभूषा में रहता था। बनिये के घर जन्म होने के कारण कुछ पढ़ा-लिखा भी था। घर त्यागकर सन्यास ले रखा था। अधिकतर भ्रमण करता रहता था। गाँव-गाँव में जाकर प्रचार करता था। कुछ शिष्य भी बना रखे थे। उसका एक बैरागी गाँव छुड़ानी का भी शिष्य था। वह उसके घर रुका हुआ था। उस शिष्य ने सन्त गोपाल दास से कहा कि हे गुरुदेव! हमारे गाँव के चौधरी का दोहता (लड़की का लड़का) किसी साधु की फटकार से पागल हो गया। वह तो मर गया था, चिता पर रख दिया था। लड़की रानी की किस्मत से बच्चा जीवित तो हो गया, परंतु पागल हो गया। सब जगह झाड़-फूंक करने वालों से भी इलाज करा लिया, अन्य दवाई पागलपन दूर करने की भी बहुत खिला ली, लेकिन कोई राहत नहीं मिली। उस शिष्य ने वह सर्व घटना भी बताई जो कंवारी गाय का दूध निकलवाकर बच्चे गरीबदास को पिलाने की घटित हुई थी। फिर उसने कहा कि कहते हैं संत की विद्या को संत ही काट सकता है। कुछ कृपा करो गुरुदेव।

सन्त गोपाल दास जी ने कहा कि बुलाओ उस लड़के को। शिष्य ने चौधरी शिवलाल जी से कहा कि मेरे घर पर एक बाबा जी आया है। मैंने उसको आपके दोहते गरीबदास के बारे में बताया है। बाबा जी ने कहा है कि एक बार बुलाओ, ठीक हो जाएगा। एक बार दिखा लो, अब तो गाँव में ही बाबा जी आया है। बहुत पहुँचा हुआ संत है।

शिवलाल जी के साथ गाँव के कई अन्य व्यक्ति भी बाबा के पास गए। साथ में बच्चे गरीबदास जी को भी ले गए। संत गोपाल दास जी ने बालक गरीबदास जी से प्रश्न किया कि बेटा! वह कौन बाबा था जिसने तेरा जीवन बर्बाद कर दिया। प्रिय पाठकों से यहाँ पर यह बताना अनिवार्य है कि संत गोपाल दास जी सन्त दादू दास जी के पंथ से दीक्षित थे। सन्त दादू जी को भी सन्त गरीबदास जी की तरह

7 वर्ष की आयु में बाबा जिन्दा के वेश में परमेश्वर कबीर जी मिले थे। दादू जी सन्त को भी परमेश्वर शरीर से निकालकर सत्यलोक लेकर गए थे। सन्त दादू जी तीन दिन-रात अचेत अवस्था में रहे थे। तीसरे दिन वापिस सचेत हुए तो कहा था कि मैं परमेश्वर कबीर जी के साथ अमर लोक गया था। वह आलम बड़ा कबीर है। वह सबको रचने वाला है। सर्व सृष्टि का रचनहार है। कहा कि :-

जिन मुझको निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार।
दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सिरजन हार।।
दादू नाम कबीर की, जै कोई लेवे ओट।
उनको कबहु लागे नहीं, काल वज्र की चोट।।
अब ही तेरी सब मिटै, काल कर्म की पीड़ (पीर)।
स्वांस–उस्वांस सुमरले, दादू नाम कबीर।।
केहरी नाम कबीर का, विषम काल गजराज।
दादू भजन प्रताप से, भागै सुनत आवाज।।

इस प्रकार दादू जी के ग्रन्थ में वाणी लिखी है। गोपाल दास इस बात को जानता था कि दादू जी को बुढ़ा बाबा के रुप में परमात्मा मिला था। दादू जी मुसलमान तेली था। इसलिए मुसलमान समाज कबीर का अर्थ बड़ा करता है। जिस कारण से काशी वाले जुलाहे कबीर को नहीं मानते। दादू पंथी कहते हैं कि कबीर का अर्थ है बड़ा भगवान अल्लाहु कबीर = अल्लाह अकबीर कहते हैं।

❖ इसी प्रकार श्री नानक देव जी सुल्तानपुर शहर के पास बह रही बेई नदी में स्नान करने गए, परमात्मा जिन्दा बाबा के रुप में उस समय मिले थे। उनको भी तीन दिन तक अपने साथ रखा था। सच्चखण्ड (सत्यलोक) लेकर गए थे। फिर वापिस छोड़ा था।

❖ एक अब्राहिम सुल्तान अधम नाम का बलख बुखारे शहर का राजा था। (इराक देश का रहने वाला था।) उसको भी परमात्मा जिन्दा बाबा के रूप में मिले थे। उसका भी उद्धार कबीर परमेश्वर जी ने किया था।

सन्त गोपाल दास ने बच्चे गरीबदास जी से प्रश्न किया था कि तेरे को कौन बाबा मिला था जिसने तेरा जीवन बर्बाद कर दिया। सन्त गरीबदास जी ने उत्तर दिया था कि हे महात्मा जी! जो बाबा मुझे मिला था, उसने मेरा कल्याण कर दिया, मेरे जीवन को आबाद कर दिया। वह पूर्ण परमात्मा है।

गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद ना पाया, काशी माहें कबीर हुआ।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रती नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सिरजन हार।।
गरीब, सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्धि है तीर।
दास गरीब सत्पुरुष भजो, अविगत कला कबीर।।
गरीब, अजब नगर में ले गए, हमको सतगुरु आन।

झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।
गरीब, शब्द स्वरुपी उतरे, सतगुरु सत् कबीर।
दास गरीब दयाल हैं, डिगे बंधावैं धीर।।
गरीब, अलल पंख अनुराग है, सुन मण्डल रह थीर।
दास गरीब उधारिया, सतगुरु मिले कबीर।।
गरीब, प्रपटन वह लोक है, जहाँ अदली सतगुरु सार।
भक्ति हेत से उतरे, पाया हम दीदार।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, है जिन्दा जगदीश।
सुन्न विदेशी मिल गया, छत्र मुकुट है शीश।।
गरीब, जम जौरा जासे डरें, धर्मराय धरै धीर।
ऐसा सतगुरु एक है, अदली असल कबीर।।
गरीब, माया का रस पीय कर, हो गये डामा डोल।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ज्ञान योग दिया खोल।।
गरीब, जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के लेख।
अदली असल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।।

सन्त गरीबदास जी को कौन मिला था, बाबा जी को उसका परिचय दिया जो ऊपर लिखी वाणी से स्पष्ट होता है कि जिस परमेश्वर कबीर जी ने हम सबको संत गरीबदास, संत दादू दास, संत नानक देव तथा राजा अब्राहिम सुलतानी आदि-आदि को पार किया। वह भारत वर्ष के काशी शहर में कबीर जुलाहा नाम से प्रसिद्ध हुआ है। वह अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का सृजनहार है। वह मुझे मिला था। यह उपरोक्त वाणी बोलकर सन्त गरीब दास 13 वर्षीय बच्चा चल पड़े। संत गोपाल दास जी समझ गए कि वह कोई सामान्य बच्चा नहीं है। यह तो परमात्मा से मिला है। ऐसी अमृतवाणी बोल रहा है। इस वाणी को लिखना चाहिए। यह विचार करके बालक गरीबदास के पीछे-पीछे चल पड़ा और कहने लगा हे गाँव वालो! यह बालक पागल नहीं है, तुम पागल हो। यह क्या बोल रहा है, तुम समझ नहीं सके। मुझे पता चला है यह बच्चा तो अवतार है प्रभु का। इसको तो जिन्दा बाबा के रुप में स्वयं भगवान मिले थे। इसी प्रकार हमारे पूज्य दादू साहेब जी को भी मिले थे। दादू जी की सब वाणी लिखी नहीं गई थी। अब इस बच्चे से सर्व वाणी लिखवाऊंगा, मैं खुद लिखूंगा। यह वाणी कलयुग में अनेकों जीवों का कल्याण करेगी। संत गोपाल दास जी के बार-बार आग्रह करने पर सन्त गरीबदास जी ने कहा गोपाल दास जी यदि पूरी वाणी लिखे तो मैं लिखवाऊं, कहीं बीच में छोड़े तो नहीं लिखवाऊंगा। संत गोपाल दास जी ने कहा महाराज जी मैं तो घर से निकल चुका हूँ परमार्थ और कल्याण कराने के लिए, मेरी 62 वर्ष की आयु हो चुकी है। मुझे इससे अच्छा कोई कार्य नहीं है। आप कृपा करें।

तब संत गरीबदास जी तथा संत गोपाल दास जी बेरी के बाग में एक जांडी के नीचे बैठकर वाणी को लिखने-लिखवाने लगे। वह बेरी का बाग संत गरीबदास

जी का अपना ही था। उस समय छुड़ानी गाँव के आस-पास रेतिला क्षेत्र था जैसे राजस्थान में है। वहाँ पर जांडी के वृक्ष अधिक होते थे। उनकी छाया का ही प्रयोग अधिक किया जाता था। इस प्रकार संत गरीब दास जी ने परमात्मा से प्राप्त तत्वज्ञान आँखों देखा हाल वाणी रुप में बोला तथा संत गोपाल दास जी ने लिखा। लगभग छः महीनों तक यह कार्य किया गया। फिर जब-तब किसी से वार्ता होती तो संत गरीबदास जी वाणी बोला करते थे तो अन्य व्यक्ति भी लिख लिया करते थे। जिसको एक ग्रन्थ रुप में हाथ से लिखा गया था।

संत गरीबदास जी के समय से ही उस ग्रन्थ का पाठ करना प्रारम्भ हो गया था। उसको कुछ वर्षों पूर्व टाईप कराया गया था। उसी अमृतवाणी (सागर अमृत) से कुछ वाणी (अमृत) निकालकर ''भक्ति बोध'' पुस्तक में लिखी है। इसके अतिरिक्त परमेश्वर कबीर जी ने जो सूक्ष्म वेद अपने मुख कमल से बोला था। उस अमृत सागर (कबीर सागर) से निकालकर इसी भक्ति बोध पुस्तक में लिखी हैं। उस अमृतवाणी का अब सरलार्थ प्रारम्भ किया जाता है।

''भक्ति बोध की वाणी नित्य-नियम का सरलार्थ''

सन्त गरीबदास जी की अमृतवाणी

''मंगलाचरण''

गरीब नमो नमो सत्पुरुष कूं नमस्कार गुरु कीन्हीं।
सुरनर मुनिजन साधवां सन्तों सर्वस दीन्हीं।।(1)
सतगुरु साहेब सन्त सब डण्डवतम् प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुए तिनकूं जां कुर्बान।।(2)
नराकार निर्विषम काल जाल भय भंजनम्।
निर्लेपम् निज निर्गुणम् अकल अनुप बेसुन्न धुनं।।(3)
सोहं सुरति समापतम् सकल समाना निरति लै।
उज्वल हिरंबर हरदमं बे परवाह अथाह है वार पार नहीं मध्यतं।।(4)

यह लिखी वाणी मंगलाचरण है। बाद में गरीबदास जी पंथियों ने इन्हीं की वाणी से ''आदि गणेश पुराण'' के अंग से निम्न वाणी जोड़कर सारा ही मंगलाचरण बना लिया।

जो सर्व गरीबदास पंथ में तथा हमारे अनुयाईयों में यह प्रचलित है। आदि गणेश का अर्थ है सर्व शक्तियों का स्वामी। गण का अर्थ है कुछ शक्ति युक्त देव रुप आत्माएं। आम भक्त समाज गौरी पुत्र गणेश को ही जानता है।

वह तो केवल भगवान तम्गुण शिव के लोक में कुछ गणों का मुखिया है। इसलिए इन्हें 'गणेश' कहा गया है। परंतु सर्व देवताओं के स्वामी पूर्ण परमात्मा हैं। इसलिए उनको सन्त गरीबदास जी ने 'आदि गणेश' उपमा से सम्बोधित किया है। जैसे एक तो प्रांत का ग्रहमन्त्री, दूसरा केन्द्र का ग्रहमन्त्री दोनों ही ग्रह मन्त्री हैं, परन्तु केन्द्रीय ग्रहमन्त्री के अन्तर्गत सर्व प्रान्तों के ग्रहमन्त्री आते हैं। ठीक इसी तरह गणेश और आदि गणेश में अन्तर जानें।

गरीब जो सुमरे सिद्ध होई गणनायक गलताना।
करो अनुग्रह सोई पारस पद प्रवाना।(5)
आदि गणेश मनाऊँ गण नायक देवन देवा।
चरण कमल ल्यो लाऊँ आदि अन्त करुँ सेवा।(6)
परम शक्ति संगीतम् रिद्धि सिद्धि दाता सोई।
अविगत गुणह अतीतं सत् पुरुष निर्मोही।।(7)
जगदम्बा जगदीशं मंगल रुप मुरारी।
तन मन अरपूं शीशं भक्ति–मुक्ति भण्डारी।।(8)
सुरनर मुनिजन ध्यावें ब्रह्मा विष्णु महेशा।
शेष संहस्र मुख गावैं पूजें आदि गणेशा।।(9)
इन्द्र कुबेर सरीखा वरुण धर्मराय ध्यावैं।
सुमरथ जीवन जी का मन इच्छा फल पावैं।।(10)

तेतीस कोटि आधारा ध्यावें सहंस्र अठासी।
उतरें भवजल पारा कटहैं यम की फांसी।।(11)

-: मंगलाचरण की अमृतवाणियों का यथार्थ सरलार्थ :-

वाणी :- गरीब नमो नमो सत्पुरुष कूं नमस्कार गुरु कीन्हीं।
सुरनर मुनिजन साधवां सन्तों सर्वस दीन्हीं।।(1)

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर अव्यक्त तथा व्यक्त दोनों से जीव का पालन व कल्याण कार्य करता है। अव्यक्त रुप में सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान है। व्यक्त रुप में पृथ्वी या अन्य लोकों में ऋषि या सन्त व बाबा जिन्दा रुप में प्रकट होता है। प्रत्येक युग में शिशु रुप धारण करके किसी सरोवर में विकसित कमल के फूल पर प्रकट होता है। वहाँ से निःसंतान व्यक्ति घर ले जाते हैं। बड़े होकर परमात्मा तत्वज्ञान का उपदेश करते हैं तथा सामान्य नागरिक की तरह अपना व्यवसाय करते हैं। इसके साथ-साथ भक्ति करके भी दिखाया करते हैं तथा सत्य आध्यात्मिक ज्ञान का भी प्रचार करते हैं। परमेश्वर सामान्य नागरिक की भूमिका करके उदाहरण पेश करते हैं कि भक्त को अपना कर्म भी करना चाहिए तथा भक्ति साधना भी करते रहना चाहिए। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 श्लोक 4 में भी है कि जो व्यक्ति कर्म सन्यास लेकर एकान्त स्थल पर बैठकर हठ करके दिखावा करते हैं, वे मिथ्याचारी व ढोंगी हैं। ऊपर से आँखें बंद करके भक्ति करते दिखाई देते हैं। अन्दर से अन्य चिन्तन करते हैं। यदि अर्जुन एक स्थान पर बैठकर कर्म सन्यास लेकर साधना करेगा तो तेरा निर्वाह कैसे होगा। इसलिए कर्म भी कर, भक्ति भी कर। कर्म सन्यास से कर्मयोग श्रेष्ठ है। यही प्रमाण परमेश्वर कबीर जी ने अपनी अमृतवाणी में दिया है कि :-**

नाम उठत, नाम बैठत, नाम सोवत जाग रे।
नाम खाते, नाम पीते, नाम सेती लाग रे।।

यही प्रमाण वेदों में है। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 :-

वायु अनिलम् अथ इदम् भष्मान्तम् शरीरम् अमृतम्।
ओम् (ऊँ) कृतुम स्मर किलवे स्मर कृतुः स्मर।।

भावार्थ है कि ऊँ नाम का जाप कार्य करते-करते स्मरण कर, विशेष कसक यानि श्रद्धा से स्मरण कर, मनुष्य जीवन का मूल कार्य जानकर स्मरण कर। स्मरण की विधि बताई है कि वायु (स्वांस बाहर छोड़ें) अनिलम् (स्वास अन्दर लेते समय) अथ = प्रारम्भ करें तथा इदम् = भष्म समाप्त करें अर्थात् मन्त्र ऊँ के जाप को प्रारम्भ करें स्वांस (वायु) बाहर छोड़ें और अन्त करें स्वांस (अनिलम्) अन्दर लो। यह एक मन्त्र स्वांस से पूरा हो जाता है। ऊँ नाम का स्मरण शरीर के भष्म (अन्त) होने तक स्मरण करने से ऊँ नाम से होने वाला (अमृतम्) अमरत्व यानि ब्रह्मलोक प्राप्त होता है।

इसलिए परमात्मा स्वयं Practical क्रियावन्त करके उदाहरण पेश करते हैं।

उस समय परमात्मा व्यक्त होते हैं। इसीलिए परमेश्वर को दो बार नमस्कार ''नमो नमो'' कहा है। फिर गुरुजी को नमस्कार करने का प्रावधान बताया है। फिर सुर-देवताओं, नर, सर्व मानव शरीरधारी प्राणियों का सत्कार करने को कहा है क्योंकि जिन प्राणियों को मानव शरीर प्राप्त है, वे बहुत पुण्यकर्मी जीव हैं। मानव शरीर प्राप्त करके जो भक्ति करते हैं, वे ऋषि-मुनि, भक्त कहलाते हैं। वे अपने मानव जीवन को सफल करके कोई देव पद को प्राप्त कर चुके हैं, कोई भक्ति कर रहे हैं। वे सर्व आदरणीय आत्माएं हैं। जो मानव शरीर प्राप्त करके भक्ति नहीं करते, वे भी अच्छी आत्माएं हैं। उनका भी सत्कार करना आवश्यक है। मिलने पर प्रणाम करना तथा परमात्मा का उपमात्मा नाम सम्बोधन करके बुलाना। जैसे कोई राम-राम कहता है तो सामने वाला चाहे भक्त भी न हो, वह भी उत्तर में राम-राम कहता है। कोई सतश्री अकाल कहता है तो सामने वाला भक्त या अभक्त भी उत्तर में सतश्री अकाल बोलता है। कोई सत् साहेब कहता है तो सामने वाला भी सत् साहेब (अविनाशी परमात्मा) कहता है। ये सब परमात्मा की याद दिलाने वाले राम नाम हैं। कबीर परमेश्वर जी ने अमृतवाणी (सूक्ष्म वेद) में कहा है कि :-

कबीर आप राम कह, ओरां राम कहावै।
जा मुख राम न उच्चर, ता मुख फेर कहावै।।

भावार्थ है कि परमेश्वर जी ने बताया है कि जो व्यक्ति (स्त्री-पुरुष) मिलें तो उसको प्रणाम के साथ परमात्मा का नाम भी बोलो। यदि सामने वाला राम-राम नहीं बोला हो तो फिर बोलें, तब वह सामने वाला अवश्य बोलेगा। कई बार बोलेगा राम-राम, राम-राम।

जो व्यक्ति भक्ति नहीं करता, वह अपना मानव जीवन व्यर्थ कर रहा है। फिर भी पूर्व के पुण्यों के कारण पूर्व की भक्ति के कारण अच्छी आत्मा है और आदर का अधिकारी है। इसलिए वाणी संख्या नं. 1 में :-

''सुर, नर, मुनि जन साधवां संतो सर्वस दीन्हीं'' **कहा है।**

वाणी :- सतगुरु साहेब सन्त सब डण्डौतम् प्रणाम।
आगे पीछे मध्य हुए तिनकूं जां कुर्बान।।(2)

❖ सरलार्थ :- आगे पीछे व्यक्त रुप में स्वयं था। उनके ज्ञान से परीचित तत्वदर्शी सन्त चाहे पहले हो चुके हैं, चाहे वर्तमान में हैं, चाहे भविष्य में परमार्थ के लिए प्रकट होंगे, वे सर्व विशेष आदरणीय हैं।

वाणी संख्या 3 से 4 में परमेश्वर की महिमा का वर्णन है :-

वाणी :- नराकार निर्विषम काल जाल भय भंजनम्।
निर्लेपम् निज निर्गुणम् अकल अनूप बेसुन्न धुनं।।(3)

❖ सरलार्थ :- सत्पुरुष (परम अक्षर ब्रह्म) नराकार अर्थात् मनुष्य सदृश साकार है। निर्विकार, माया-मोह से रहित है, काल के जाल तथा भय को नष्ट करता है। परमेश्वर निज अर्थात् वास्तव में निर्गुण है। निर्गुण का भावार्थ : जैसे आम के बीज

में निर्गुण रुप में आम का वृक्ष तथा फल विद्यमान है। इसी प्रकार परमात्मा की शक्ति को निर्गुण कहा है। परमात्मा सत्यलोक में हमारे लिए निर्गुण है, परंतु जिस समय परमेश्वर पृथ्वी पर सगुण रुप में प्रकट होते हैं, तब अपनी वाणी से हमें अमृतज्ञान व भक्ति साधना यथार्थ रुप में बताते हैं तथा सतगुरु की महिमा करके अपने वचन से हमारे दुःखों का नाश करते हैं। वे परमात्मा सगुण हैं। सत्यलोक में अव्यक्त रुप में हमारे लिए निर्गुण हैं क्योंकि प्रत्येक प्राणी को केवल कर्मों का फल ही देते हैं। जब परमेश्वर सतगुरु रुप में प्रकट होते हैं तो कर्मों से अधिक सुख प्रदान करते हैं। पाप नाश करने का नाम मन्त्र देते हैं, आर्शीवाद देकर भाग्य के अतिरिक्त लाभ भी देते हैं।

परमात्मा अकल अर्थात् पूर्ण विद्वान हैं। जिनको कोई कील नहीं सकता अर्थात् उनकी शक्ति को कोई रोक नहीं सकता। जैसे कई व्यक्ति अपने पूर्व जन्म की भक्ति से जाड़ के दर्द को मन्त्र से कील देते हैं। दर्द प्रभाव को समाप्त कर देते हैं। 'अकल सोई जो किल्या न जाय' 'अनुप बेसुन्न धुनं' परमेश्वर के सत्यलोक में अनोखी धुन बज रही है जो आप जी ने किसी लोक में नहीं सुनी है। जिस समय आपजी की भक्ति बढ़ेगी और पाप की छाया कटेगी, तब न चाहते हुए भी वह धुन आप जी को शरीर में सुनाई देगी।।

वाणी :- सोहं सुरति समापतम् सकल समाना निरति लै।
उज्वल हिरंबर हरदमं बे परवाह अथाह है वार पार नहीं मध्यतं।।(4)

❖ **सरलार्थ :- भक्ति की नाम साधना में एक 'सोहं' मन्त्र भी है। इस मन्त्र के नाम की कमाई से सत्यलोक की सीमा पर बनी भंवर गुफा तक जाया जाता है। वहाँ पर सोहं नाम की सुरति-निरति अर्थात् स्मरण समाप्त हो जाता है। सोहं नाम की लौ अर्थात् लगन समाप्त हो जाती है। साधक की सर्व लगन उस परमेश्वर में लग जाती है जो उज्जवल अर्थात् तेजोमय शरीर युक्त है और जो हीरे की तरह स्वयं प्रकाशमान है। जो (हरदमं) शाश्वत् है, बे प्रवाह है जिसको किसी का भय नहीं, निर्भय परमेश्वर अथाह है जिसकी गहराई अर्थात् सामर्थ्य का किसी को पूर्ण ज्ञान नहीं, इसके वार व पार अर्थात् आदि और अन्त का किसी को ज्ञान नहीं। अपनी महिमा परमेश्वर ही ठीक-ठीक बताता है।**

आदि गणेश पुराण की वाणियों का सरलार्थ जिनको मंगलाचरण के साथ-साथ पढ़ा जाता है :-

वाणी :- गरीब, जो सुमरत सिद्ध होई, गण नायक गलताना।
करो अनुग्रह सोई, पारस पद प्रवाना।।(5)

वाणी :- आदि गणेश मनाऊ, गणनायक देवन देवा।
चरण कमल लो लाऊ आदि अन्त करु सेवा।।(6)

❖ **सरलार्थ :- हे सर्व गणों के नायक अर्थात् पूर्ण परमात्मा! आपकी भक्ति जो करता है, आपका स्मरण करता है, वह अपना जीवन सिद्ध कर लेता है क्योंकि आपजी का सत्यनाम, सारनाम या परवाना अर्थात् नाम दीक्षा पारस पत्थर जैसा**

है। पारस को लोहे से छू दिया जाए तो लोहा सोना बन जाता है। हे आदि गणेश, हे सनातन परमात्मा! हे सर्व देवों के देव अर्थात् कुल के मालिक मुझ पर अनुग्रह (कृपा) करो। मैं आपको सदा मनाऊँ (पूजूँ)। आपके चरण कमलों में मैं ध्यान लगाऊं तथा आपकी पूजा जीवन के प्रारम्भ से मृत्यु पर्यन्त करुँ।

वाणी :- परम शक्ति संगीतं रिद्धि सिद्धि दाता सोई।
अविगत गुणह अतीतम् सत् पुरुष निर्मोही।।(7)

❖ **सरलार्थ :- हे परमात्मा! आपके पास परम शक्ति है। आप सर्व रिद्धि तथा सिद्धि के देने वाले हैं। आप अविगत (जिसकी गति अर्थात् सामर्थ्य को कोई नहीं जानता) हैं। आप गुणातीत अर्थात् रजगुण, सत्गुण तथा तमगुण के प्रभाव से परे हैं। आप सत्य पुरुष हैं, आपको संसार का मोह व्याप्त नहीं होता।**

वाणी :- जगदम्बा जगदीशं मंगल रुप मुरारी।
तन मन अरपूं शीशं भक्ति मुक्ति भण्डारी।।(8)

❖ **सरलार्थ :- हे परमात्मा! आप जगत की मात रुप है क्योंकि आप सर्व का पालन करते है।। इसलिए आप जगत की माता भी कहे जाते हैं। आप जगत के स्वामी होने से जगदीश हैं। आप कल्याण करने वाले हैं, पाप रुपी मुरा राक्षस को समाप्त करने वाले मुरारी हैं। भक्ति और मुक्ति के भण्डारी अर्थात् पर्याप्त रुप में मोक्ष प्रदान करने वाले हैं। मैं आप जी को अपना शरीर तथा सिर समर्पित करता हूँ।**

वाणी :- सुरनर मुनि जन ध्यावैं, ब्रह्मा, विष्णु महेशा।
शेष सहंस मुख गावैं, पूजें आदि गणेशा।। (9)

❖ **सरलार्थ :- हे परम अक्षर पुरुष! आप जी को श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिवजी सहित सर्व देवता, जन तथा मुनिजन (ध्यावैं) पूजते हैं। आप जी के गुणगान शेषनाग जी अपने हजार मुखों से करते हैं। हे आदि गणेश! अर्थात् सनातन परमात्मा! सब आप जी की पूजा करते हैं।(9)**

वाणी :- इन्द्र कुबेर सरीखा, वरुण धर्मराय ध्यावैं।
सुमरथ जीवन जीका, मन इच्छा फल पावैं।।(10)

❖ **सरलार्थ :- हे पूर्ण परमात्मा! आप जी को देवराज इन्द्र तथा धन के देवता कुबेर जैसे तथा जल के देवता वरुण तथा सर्व जीवों के कर्मों का लेखा-जोखा रखने वाले न्याय करने वाले धर्मराय भी आपका (ध्यावैं) ध्यान करते हैं। जो आप जी की पूजा करता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है तथा मन इच्छा फल प्राप्त करते हैं।(10)**

वाणी :- तेतीस कोटि अधारा, ध्यावैं सहंस अठासी।
उतरे भवजल पारा, कट हैं यम की फांसी।। (11)

❖ **सरलार्थ :- हे परम अक्षर ब्रह्म! (हे सत्यपुरुष!) आप तेतीस करोड़ देवताओं का आधार हैं अर्थात् तेतीस करोड़ देवता भी आपको समर्थ जानकर पूजा करते हैं। भले ही उनकी पूजा यथार्थ नहीं है, फिर भी आपजी को अपनी पूजा का आधार मानते हैं। आपका ध्यान (ध्यावैं) अठासी हजार ऋषि भी करते हैं। जो आप जी**

की पूजा शास्त्र विधि अनुसार करते हैं, वे भवसागर से पार हो जाते हैं अर्थात् उनका पूर्ण मोक्ष हो जाता है। उन साधकों के पापकर्मों के बंधन रुपी फाँस आप जी के सत्यनाम तथा सारनाम के स्मरण से कट जाती है अर्थात् पूर्ण स्वतंत्र होकर आप जी (सत्यपुरुष जी) के लोक सत्यलोक में चला जाता है।

मन्त्र

इसके सरलार्थ को केवल इतना करना ही पर्याप्त है। जैसे मन्त्र की महिमा बताई है कि वास्तविक भक्ति का जो वास्तविक मन्त्र है उसके विधिवत पूर्ण गुरु से नाम लेकर स्मरण करने से यह मन्त्र जो लाभ देता है, वह इसमें वर्णित है।

वाणी :- अनाहद मन्त्र सुख सलाहद मन्त्र, अजोख मन्त्र।
बेसुन्न मन्त्र निर्बान मंत्र थीर है।।(1)

❖ **सरलार्थ :- अनाहद (अनन्त) सुख (सलाहद) प्रदान करने वाला है, यह मन्त्र अजोख (अद्वितीय) है। बेसुन्न (जिस मन्त्र को आपजी ने कभी किसी से नहीं सुना है) है अर्थात् नूतन है। इस मन्त्र के जाप से (थीर निर्वाण) स्थाई मोक्ष होता है।**

वाणी :- आदि मन्त्र, युगादी मन्त्र

❖ **सरलार्थ :- यह मन्त्र सृष्टि की आदि से प्रचलित है। बाद में यह लोप हो जाता है क्योंकि प्रत्येक युग की (युगादि) आदि अर्थात् प्रारम्भ में पूर्ण परमात्मा इस मन्त्र को बताते आते हैं। इसलिए यह मन्त्र युगादि कहा जाता है। गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि ऊँ तत् सत् यह तीन मन्त्र का जाप परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति का कहा गया है। सृष्टि की आदि में परमात्मा ने सत्य भक्ति इसी मन्त्र की बताई थी। इसी के आधार वेद तथा धार्मिक अनुष्ठान परमात्मा ने वाणी रुप में रचे थे अर्थात् परमेश्वर ने अपनी वाणी से तत्वज्ञान बोलकर उपरोक्त मन्त्र रचे थे।**

वाणी :- अचल अभंगी मन्त्र सदा सत्संगी मन्त्र
ल्यौलीन मन्त्र गहर गम्भीर है।।(2)

❖ **सरलार्थ :- यह भक्ति मन्त्र अचल अभंगी है अर्थात् इसमें कभी परिवर्तन नहीं होता। अचल (स्थाई) तथा अभंगी है, कभी भंग नहीं होता। मूर्ख सन्त भले ही अन्य मन्त्र दीक्षा देते रहते हैं, उनसे जीव को कोई लाभ नहीं होता। वे भी कहते हैं कि हम दीक्षा मन्त्र देते हैं, परन्तु वे गलत मन्त्र हैं। वास्तविक मन्त्र एक ही है अर्थात् कभी नष्ट नहीं होता।**

वाणी :- सोहं शुभान मन्त्र अगम अनुराग मन्त्र, निर्भय अडोल मन्त्र,
निर्गुण निर्बन्ध मन्त्र, निश्चय मन्त्र नेक है।।(3)

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर द्वारा जो मन्त्र मुझे (सन्त गरीबदास जी को) प्रदान किया गया है, वह कल्याणकारक सोहं मन्त्र है और इससे अन्य जो मन्त्र (सार शब्द) है। वह अगम (अक्षर पुरुष से आगे) परम अक्षर पुरुष का (अनुराग) प्रेम लगन का मन्त्र है। यह मन्त्र जीव को निर्भयी करता है। (अडोल) मार्ग से विचलित नहीं होने देता क्योंकि इस वास्तविक भक्ति मन्त्र की प्राप्ति के पश्चात् जीव को अनेकों चमत्कार**

होते हैं। जिस कारण से साधक दृढ़ रहता है, वह डामाडोल नहीं होता। यह मन्त्र निर्गुण अर्थात् दिखता है। जैसे नकली है परन्तु यह निर्बन्ध अर्थात् काल का बन्धन समाप्त करने वाला सत्यलोक में निश्चल (स्थाई) करने वाला (नेक) शुभ मन्त्र है।(3)

वाणी :- गैबी गुलजार मन्त्र, निर्भय निराधार मन्त्र,
सुमरत सुकृत मन्त्र अगमी अबन्ध मन्त्र अदली मन्त्र अलेख है।।(4)

❖ **सरलार्थ :- जो (मन्त्र) सत्य भक्ति की साधना का मन्त्र (गैबी गुलजार) गुप्त है, परंतु सर्व सुख देने वाला है। (निराधार) जिस साधक का सब कुछ लुट चुका हो, कोई आधार नहीं बचा है, उसको (निर्भय) लाभ देकर हिम्मत हौंसला देकर निर्भय करता है। जो (सुकृत) जो सर्व कार्य सिद्ध करता है, का (सुमरत) जाप करते हैं वे (अगमी अबन्ध) गम रहित अर्थात् शोक रहित तथा मुक्त हो जाते हैं। यह मन्त्र (अदली) न्यायरुपी अर्थात् पूर्ण परमात्मा का है जो दूध और पानी छानकर अर्थात् निर्णय करके दिया है। यह मन्त्र (अलेख) जो वेदों (चार वेद) में नहीं लिखा है, वह तत्वज्ञान में है। इसलिए यह प्रचलित शास्त्रों के लेख में न होने के कारण अलेख है।(4)**

वाणी :- फजलं फराक मन्त्र, बिन रसना, गुणलाप मन्त्र,
झिलमिल जहूर मन्त्र सरबंग भरपूर मन्त्र सैलान मन्त्र सार है।।(5)

❖ **सरलार्थ :- सत्य साधना का जो मन्त्र परमेश्वर कबीर जी ने प्रदान किया है। यह मन्त्र (फजलं) परमात्मा का रहम प्राप्त कराता है। (फराक) जिससे परमात्मा में अटूट प्रेम हो जाता है। इस मन्त्र का (बिन रसना गुणलाप) बिना जिव्हा के जाप होता है। स्वांस-उस्वांस से परमात्मा के नाम स्मरण तथा गुणों को ऐसे याद कराता है जैसे किसी प्रिय वस्तु के गुम होने पर तड़फ से उसकी याद में रोता है। तब वह साधक (झिलमिल जहूर) परमात्मा के प्रकाशमय लोक को प्राप्त करता है जिसमें झिलमिल-झिलमिल रोशनी का गुलजार है अर्थात् नजारा है। उस परमात्मा (सरबंग भरपूर) की शक्ति कण-कण में भरी है। (सैलान मन्त्र सार है) यह साधना परमेश्वर कबीर जी ने बताई है, वह मन्त्र सर्व सुखदायक तथा वास्तविक हैं।(5)**

वाणी :- रंरकार गरक मन्त्र, तेजपुंज परख मन्त्र, अदली अबन्ध मन्त्र,
अजपा निर्सन्ध मन्त्र, अविगत अनाहद मन्त्र दिल में दीदार है।।(6)

❖ **सरलार्थ :- प्रभु कबीर प्रदत्त भक्ति की साधना के वास्तविक मन्त्र का जाप 'रंरकार गरक' भाव से करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। मन्त्र सिद्धि शीघ्र प्राप्त होती है।**

❖ **उदाहरण : एक समय हाथी दरिया में पानी पीने गया था। मगरमच्छ ने हाथी का पैर पकड़कर दरीया में खींचना प्रारम्भ किया। हाथी ने अपनी ताकत से मगरमच्छ को जल से बाहर खींच लिया। फिर मगरमच्छ जल में खींच ले गया। आधा हाथी पानी में खींच लिया। इस प्रकार दोनों सारा दिन अपनी ताकत का इजहार करते और शाम को मगरमच्छ पैर छोड़ देता। हाथी सुबह फिर अपना पैर मगरमच्छ को पकड़ा देता, फिर वही रस्साकस्सी दिनभर चलती। पुराणों में लिखा**

है कि ऐसे दोनों दस हजार वर्ष तक लड़ते रहे। हाथी के आसपास का चारा (केले के वृक्ष) समाप्त हो गया। जिस कारण दुबला हो गया। अन्त के दिन मगरमच्छ ने हाथी को जल में घसीट लिया। केवल हाथी की नाक (जो सूंड के अन्त में होती है) जल से बाहर शेष रह गई। हाथी तथा मगरमच्छ पूर्व जन्म में हाहा तथा हुहु नाम के तपस्वी थे। उनको अपनी-अपनी तपस्या शक्ति का गर्व था। यह जानने के लिए कि किसमें ताकत अधिक है, वे मतंग तपस्वी के पास गए थे। मतंग ऋषी बहुत डिल-डौल था। मोटा भी आवश्यकता से अधिक था। दोनों (हाहा-हुहु) ने जब दूर से मतंग ऋषी को देखा तो हाहा ने मन में विचार किया मतंग तो हाथी जैसा है। हुहु ने विचार किया कि यह ऋषि तो मगरमच्छ जैसा है। निकट आकर दोनों मतंग ऋषी से आने का कारण बताया कि हम जानना चाहते हैं कि हम दोनों में से किसकी तपस्या अधिक है। मतंग ऋषि के पास एक सिद्धी थी जिससे सामने वाले के मन बात जान लेता था। इसलिए मतंग ऋषि ने कहा कि जो तुमने ऋषि का मजाक करके अपना कर्म खराब किया है। आप अपनी ताकत का फैसला उन्हीं हाथी तथा मगरमच्छ की योनियों में करो। हाहा तो हाथी का जन्म लेगा तथा हुहु मगरमच्छ का जन्म लेगा। उसी समय दोनों तपस्वियों के शरीर छूट गये थे अर्थात् मृत्यु को प्राप्त हो गए थे। फिर दोनों हाथी तथा मगरमच्छ के जीवन में अपनी-अपनी शक्ति का फैसला कर रहे थे। जिस समय हाथी की नाक में पानी भरने लगा, तब मरने को हुआ और अपनी ताकत कोई काम नहीं आई, तब हाथी ने जीवन रक्षा के लिए अन्तःकरण से 'राम' शब्द उच्चारण करने लगा। केवल 'रा' ही कहा था, आधा नाम ही पुकारा था, उसी समय परमेश्वर ने मगरमच्छ के मस्तिष्क में सुदर्शन चक्र दे मारा। मगरमच्छ का मुँह खुल गया। हाथी ने 'ररंकार' धुन से गरक (हृदय से) पुकार की तो परमात्मा ने तुरन्त सुनी और हाथी की जीवन रक्षा हुई।

निष्कर्ष : जब तक भक्त या प्राणी अपनी ताकत को सर्वस मानता है, तब तक परमात्मा दूर रहता है। जिस समय हार मानकर परमात्मा के अतिरिक्त किसी को मददगार नहीं देखता है, उस समय परमात्मा निकट आता है और 'ररंकार' पुकार को शीघ्र सुनता है। इसलिए मन्त्र का जाप इसी प्रकार कसक के साथ करना लाभदायक है। साधु सन्तों का किसी भी प्रकार मजाक नहीं करना चाहिए। चाहे कैसा ही शरीर हो। कैसे ही खाऐं-पीऐं, कैसे ही लेटे-बैठें।

❖ शेष सरलार्थ :- परमात्मा द्वारा बताए गए यथार्थ भक्ति की साधना के मन्त्र का जाप 'ररंकार' भाव से 'गरक' सच्ची आत्मा से करें। तेजपुंज अर्थात् परमात्मा को परखने (पहचानने) के लिए मन्त्र का जाप करें क्योंकि काल ब्रह्म का भी प्रकाश है। इसको 'ज्योति निरंजन' भी कहते हैं। इसी प्रकार 'अक्षर पुरुष' (परब्रह्म) के शरीर का भी प्रकाश है। परम अक्षर ब्रह्म के शरीर का भी प्रकाश है। जो मन्त्र परमात्मा ने सन्त गरीबदास जी को जाप करने का दिया है, उस मन्त्र का जाप करने से अन्य प्रभुओं का प्रकाश फीका होता नजर आएगा। लेकिन परम अक्षर ब्रह्म (सत्य

पुरुष) का प्रकाश वैसा ही रहेगा। इससे परमात्मा की पहचान हो जाती है। कहीं हम गलती से काल ब्रह्म (क्षर पुरुष) को पूर्ण परमात्मा जानकर काल जाल में ही फँसे न रह जायें।

वाणी :- 'अदली अबन्ध मन्त्र अजपा निरसन्ध मन्त्र
अविगत अनाहद मन्त्र दिल में दीदार है। (6)

❖ **सरलार्थ :- वह मन्त्र वास्तविक बन्दी छुड़ानी वाला है, बन्धनों का शत्रु है। उस मन्त्र का अजपा जाप (स्वांस-उस्वांस से) होता है, उसका कितना ही जाप करो, कोई सीमा नहीं है। उस अविगत परमात्मा का नाम जाप करो जिसकी कोई (अनहद) सीमा नहीं है, वह शाश्वत है। इस मन्त्र का उपरोक्त विधि से जाप करने से परमात्मा का दिल में अर्थात् हृदय कमल में दर्शन होता है। वैसे हृदय कमल में शिव-पार्वती जी का स्थान है, परंतु परमात्मा का इस ब्रह्माण्ड में बने कमलों से हृदय कमल में भिन्न स्थान पर दर्शन होता है। जिस समय केवल 'सोहं' नाम अकेला जाप किया जाता है तो वह शिव-पार्वती वाला हिस्सा हृदय कमल का दिखाई देगा। जिस समय सारनाम जाप करते हैं तो हृदय कमल का अन्य भाग खुल जाता है। सत्यलोक में विराजमान सत्यपुरुष को इस चैनल में देख सकते हैं क्योंकि जीव अधिक समय हृदय कमल में रहता है। जिस भाग में जीव रहता है, उसी भाग में यथार्थ मन्त्र के जाप से जीव को सत्यलोक में बैठे सत्यपुरुष जी दिखाई देते हैं।(6)**

वाणी :- वाणी विनोद मन्त्र, आनन्द असोध मन्त्र, खुरसी करार मन्त्र,
अनभय उच्चार मन्त्र, उजल मन्त्र अलेख है।। (7)

❖ **सरलार्थ :- एक मन्त्र यह भी है कि भक्त सबको प्यार से बोले, मधुर वचन कहे। इससे स्वयं सुख-आनन्द का अनुभव होता है तथा दूसरे भी खुश रहते हैं। (खुरसी करार मन्त्र) सच्चा वायदा निभाना भी मैंने माता के पेट में वचन (वायदा) किया था कि हे परमात्मा! मुझे इस कष्ट से मुक्त करो, बाहर निकालो, मैं सदा आपका नाम स्मरण किया करुंगा। हम माँ के गर्भ से बाहर आने पर उस (खरसी करार) संकट में किए करार (वायदे) को भूल चुके होते हैं। परमात्मा स्वयं संत रुप में प्रकट होकर फिर प्रेरणा करते हैं। (अनभय उच्चार मन्त्र) मन्त्र जो परमेश्वर कबीर जी ने बताया है सत्यनाम तथा सार नाम यह वास्तविक नाम जाप हैं। इसका उच्चारण स्वांस-उस्वांस तथा जो प्रथम मन्त्र उच्चारण करने का है उसका निर्भय होकर जाप करो, कोई धोखे वाला नहीं है। यह मन्त्र (उजल) आपके जीवन को अंधकार से उजाले में ले जाने वाला उज्जवल मन्त्र है। यह नाम जो पूर्ण मन्त्र है, सूक्ष्मवेद (सच्चिदानन्द घन ब्रह्म) की वाणी के अतिरिक्त विश्व में प्रचलित व प्रसिद्ध ग्रन्थों के लेख में न होने के कारण अलेख है। परमात्मा का बताया हुआ है। ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 95 मन्त्र 2 में कहा है कि परमात्मा अपने मुख कमल से वाणी बोलकर भक्ति की प्रेरणा करते हैं तथा गुप्त मन्त्र का आविष्कार करते हैं जो अन्य शास्त्रों में नहीं होता। इसलिए परमात्मा द्वारा दिया यथार्थ भक्ति-साधना का मन्त्र अलेख**

कहा है।(7)

वाणी :- साहिब सतराम मन्त्र साँई निहकाम मन्त्र, पारख प्रकाश मन्त्र,
हिरंबर हुलास मन्त्र मौले मलार मन्त्र पलक बीच खलक है।। (8)

❖ सरलार्थ :- यह मन्त्र (सतराम) अविनाशी अर्थात् सत्य साहिब का है जो (साई निहकाम) परमात्मा निःस्वार्थ भाव से हमारे लिए यहाँ आते हैं। पारखी सन्त ही परमात्मा को प्रकाश से पहचानते हैं। परमात्मा हीरे की तरह स्वप्रकाशित है। यह (हुलास = उल्लास) खुशी की बात है कि उस (मौले) परमात्मा की भक्ति से (मलार) जैसे सावन के महीने में शरीर में विशेष प्रक्रिया खुशी की होती है और मलारगान गाते हैं। उस परमात्मा ने (खलक) सर्व संसार प्रजा को (पलक) आँख की पलक झपकने जितने समय में उत्पन किया था। फिर विधान बनाकर छोड़ दिया, कर्मानुसार नर-मादा से उत्पत्ति होती है और निर्धारित समय पर मृत्यु हो जाती है। इसलिए जन्म-मरण तथा जरा (वृद्धावस्था) के कष्ट से छुटकारा पाने के लिए परमात्मा के उस वास्तविक मन्त्र का जाप करना चाहिए जो मुझे (सन्त गरीबदास जी को) प्राप्त हुआ है, वह मन्त्र तत्वदर्शी सन्त के पास होता है।

''गुरुदेव का अंग''

वाणी :- गरीब, प्रपटन वह प्रलोक है, जहाँ अदली सतगुरु सार।
भक्ति हेत से उतरे, पाया हम दीदार।।(1)

❖ सरलार्थ :- जैसा कि पूर्व में लिखा है कि परमेश्वर कबीर जी अपने सत्यलोक से सशरीर चलकर पृथ्वी पर आए थे। एक मुसलमान संत की वेशभूषा (जिन्दा बाबा के रुप) में गाँव छुड़ानी के जंगल (खेत) में संत गरीबदास जी को मिले थे। फिर उनके जीव को सत्यलोक लेकर गए थे। फिर वापिस छोड़ा था। गुरुदेव के अंग में संत गरीबदास जी वही बात बता रहे हैं कि जहाँ परमात्मा रहते हैं, वह 'प्रपट्टन' है अर्थात् वह लोक सत्यलोक स्थान है जहाँ (अदली सतगुरु सार) वास्तविक न्यायकारी परमात्मा है तथा सतगुरु भी वही है, यह निष्कर्ष समझो। (प्रपटन का अर्थ प्रलोक होता है।) वहाँ से भक्ति के हेतु उतरे अर्थात् ऊपर के लोक से नीचे के पृथ्वी लोक पर आए, तब मुझे उनका (दीदार) दर्शन हुआ।(1)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिला अलल पंख की जात।
काया माया ना वहां, नहीं पांच तत्व का गात।।(2)

❖ सरलार्थ :- एक अलल पंख (अनिल=वायु में रहने वाला, पंख=पक्षी है, उसको संत भाषा में अनल पंख कहा जाता है) आकाश में रहता था। वर्तमान में प्रदूषण के कारण बहुत-सी पक्षियों की प्रजातियां समाप्त हो चुकी हैं। यह पक्षी द्वापर युग तक रहा है। यह सदा आकाश में रहता है। इसके चार पैर होते थे। आगे के पैर बहुत छोटे थे, पीछे के पैर आगे वालों से चार गुणा बड़े होते थे। वह इतना शक्तिमान था कि चार हाथियों को चारों पैरों के पंजों में टाँगकर आकाश में उड़ जाता था। अलल पंख आकाश से अण्डा उत्पन्न कर देता था। पृथ्वी के उस भाग

में अण्डा छोड़ता था जिस भाग में केले का वन होता था। केले का वन 50-60 कि.मी. के क्षेत्रफल का होता था। केले के पेड़ आपस में ऊपर से एक-दूसरे में फैले होने के कारण आकाश से गिरने वाले अलल पंख के अण्डे का बचाव हो जाता है। यदि अण्डा सीधा पृथ्वी पर गिर जाए तो बच्चा तुरन्त मर जाएगा। अलल पक्षी का अण्डा बहुत बड़ा होता था। आकाश से माँ के पेट से निकलकर वायु में से होता हुआ नीचे को गिरता है। वायु की घर्षण से गर्मी प्राप्त करके पृथ्वी तक आते-आते अण्डा पक जाता था और केले के वृक्षों की झुरमुट पर गिरने के कारण उसकी गति धीमी हो जाती थी। केले के वृक्षों को तोड़कर अण्डा कम वेग से पृथ्वी पर गिरता था। उस कारण से अण्डा फूट जाता था, परंतु बच्चा सुरक्षित रहता था। जब तक वह पक्षी बच्चा उड़ने के योग्य नहीं होता अर्थात् पूरा पक्षी नहीं बनता, तब तक अन्य पक्षियों के साथ रहता, उड़ता तथा छोटे जानवरों को खाता रहता था। उस बच्चे के माता-पिता ऊपर आकाश में ही रहते हैं। वे हर समय अपने बच्चे की चिन्ता में उसी की याद में पृथ्वी पर ध्यान रखते। बच्चा कैसे रह रहा होगा? कब आएगा? दूसरी ओर वह बच्चा भी अपने माता-पिता को याद करके व्याकुल रहता कि कब मैं बड़ा होऊँ और अपने माता-पिता के पास अपने परिवार में जाऊँ और अपने माता-पिता से मिलूँगा। जिस समय वह बच्चा पूरा पक्षी बन जाता है तो ऊपर को चलने का अभ्यास करता है। बहुत ऊँचा उड़ जाता है। वहाँ से उसको हाथियों का झुण्ड दिखाई देता है जो केले के वन में ही रहता है। हाथी सैंकड़ों की सँख्या में इकट्ठे रहतें हैं। केलों के वृक्षों को खाते हैं। उन्हीं पर लेटते हैं। अलल पंख जो बच्चे से पूरा पक्षी बन जाता था। एकदम हाथियों के झुण्ड पर झपट्टा मारकर चार हाथियों को अपने चारों पैरों के मजबूत पंजों में फँसाकर उड़ाकर आकाश में उड़ जाता था। अपने परिवार के लिए आहार भी साथ ले जाता था। अपने परिवार से मिलकर अति आनन्दित होता था।

सन्त गरीबदास जी ने बताया है, उदाहरण दिया है कि परमात्मा यहाँ पर सतगुरु रुप में आया था। वह हमें भक्ति बताने के हेतु आए थे। वे अपने भक्तों को ऐसे नजर में रखता है जैसे अलल पंख अपने बच्चों की याद एक पल भी नहीं भूलता, परन्तु वे परमेश्वर को भूल चुके होते हैं, या तो भक्ति करते ही नहीं या करते हैं तो पूर्ण परमात्मा को छोड़कर अन्य प्रभुओं या देवी-देवताओं तथा भूतों, पितरों, भैरव आदि-आदि की मनमुखी (मनमाना आचरण) साधना करके अपना मानव जीवन नष्ट करते रहते हैं। इसलिए परमात्मा यथार्थ भक्ति की साधना के मन्त्र तथा तत्वज्ञान प्रदान करने के लिए सतगुरु रुप में यहाँ प्रकट होते हैं। परमेश्वर का शरीर पाँच तत्व से बना हुआ हमारे जैसा (गात) शरीर नहीं है। वहाँ पर सर्व मोक्ष प्राप्त करके गए हुए आत्माओं का शरीर भी पाँच तत्व का नहीं है। वहाँ पर केवल एक नूर तत्व से बना शरीर है।(2)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या उज्जल हिरम्बर आदि।
भलका ज्ञान कमाल का, घालत है सर सांधि।।(3)

❖ **सरलार्थ :- परम सन्त गरीबदास जी ने अपने सतगुरु रुप में मिले सत्यपुरुष की महिमा बताई है कि मुझे ऐसा सतगुरु मिला जो बहुत प्रकाशमान है जैसे (हिरम्बर) हीरा स्वयं प्रकाशित होता है। वह सतगुरु (आदि) सर्व से पहले का है। उसने मेरे को ज्ञान का (भलका) भाला (सर) तीर (सांधि) जँचा कर मारा।(3)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुन्न विदेशी आप।
रोम–रोम प्रकाश है, दीन्हा अजपा जाप।।(4)

❖ **सरलार्थ :- मेरा सतगुरु सत्यलोक में रहने वाला प्रदेशी है। उनके रोम-रोम (शरीर के प्रत्येक बाल) में बहुत प्रकाश है। उस सतगुरु ने मुझे ऐसा मन्त्र दिया है जिसका जाप जिव्हा से नहीं होता, स्वांस-उस्वांस से होता है उसको अजपा जाप कहा जाता है।(4)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, मगन किए मुस्ताक।
प्याला प्याया प्रेम का, गगन मण्डल गर गाप।।(5)

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी सतगुरु रुप में मुझे मिले। मेरे को प्रेम भक्ति का प्याला प्याया अर्थात् प्रेम भक्ति का रंग चढ़ाया। जिससे राम-नाम में (मगन किए मुस्ताक) पूर्ण रुप से मस्त कर दिए। परमात्मा गगन मण्डल में अर्थात् आकाश में शक्ति सम्पन्न है। (गरगाप = शक्ति सम्पन्न) (मुस्ताक = पूर्ण रुप से)(5)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सिंधु सुरति की सैन।
उर अन्तर प्रकाशिया, अजब सुनाए बैन।।(6)

❖ **सरलार्थ :- मुझको ऐसा सतगुरु मिला जिन्होंने (सैन) संकेत से सर्व (सिन्धु) समुद्र जैसा अथाह ज्ञान मेरी सुरति में अर्थात् ध्यान में भर दिया। मेरे (उर) हृदय को अन्दर से ज्ञान से प्रकाशित कर दिया। उस अमृतज्ञान के (अजब) अनोखे ज्ञान (बैन) वचन सुनाए।(6)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु की सैल।
बज्र पोल पट खोलकर, ले गया झीनी गैल।।(7)

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु ने उस मार्ग का ज्ञान कराया जिस (सिन्धु) समुद्र की तरह अथाह ज्ञान के किनारे भी पहुँचना कठिन था। उन सर्व ब्रह्माण्डों की सैल करा दी जिसके ज्ञान को जानना ही मुश्किल था। ब्रह्मरंद्र के (बज्र पोल दी खोल) निकट द्वार पर लगे बंद को खोल दिया। (बज्र = मजबूत पोल = खोखला मार्ग) भावार्थ है कि द्वार पर दृढ़ लगा हो, आगे खाली रास्ता है, उसको बज्र पोल खोल कहा है। उसके पश्चात् मुझे (झिनी) सूक्ष्म (गैल) मार्ग से सत्यलोक ले गए।(7)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिन्धु के तीर।
सब सन्तन सिर ताज है, सतगुरु अदली कबीर।।(8)

❖ **सरलार्थ :- जो परमेश्वर मुझे सतगुरु रुप में मिले थे, वे सर्व सन्तों में सन्त शिरोमणी कबीर जी हैं, वे वास्तव में (अदली) न्याकारी हैं।(8)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, सुरति सिंधु के मांही।
शब्द स्वरुपी अंग है, पिण्ड प्राण बिन छांई।।(9)

❖ **सरलार्थ :- उस सतगुरु के शरीर के अंग (शब्द स्वरुपी) अविनाशी हैं। उस परमेश्वर के (पिंड) शरीर की छाया नहीं है।(9)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, गलताना गुलजार।
वार–पार कीमत नहीं, नहीं हल्का नहीं भार।।(10)

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा जो सतगुरु रुप में मिले, सदा (गलताना) मस्त और (गुलजार) आनन्द का नजारा बना रहता है। उस सतगुरु अर्थात् सत् पुरुष का कोई (वार-पार) अन्त नहीं है।(10)**

वाणी :- गरीब ऐसा सतगुरु हम मिल्या सुरति सिंधु के मंझ।
अण्ड्यों आनन्द पोख (पोष) है, बैन सुनाए कुंज।।(11)

❖ **सरलार्थ :- इस अमृतवाणी में एक 'कुंज' पक्षी का उदाहरण देकर सन्त गरीबदास जी ने बताया है कि भगवान हम जीवों को कैसे पालता है? वह तो संखो किलोमीटर दूर सत्यलोक में रहता है?**

एक कुंज पक्षी होता है। वह इराक-इरान में रहता है। जिस समय वहाँ सूखा रहता है, वर्षा नहीं होती तो वह पक्षी भारत में आ जाता है। मादा कुंज अण्डे पैदा करके आती है। हजारों किलोमीटर दूर भारत में आकर अपने हृदय से पुकार करती रहती है। कुंज पक्षी खाते-पीते या उड़ते समय एक आवाज 'कुरल-कुरल' करती रहती है। वह अपने अण्डों का ध्यान करके उनके पास अपनी अन्तर्आत्मा की पुकार से उनका पोषण करती है। अन्य पक्षी तो अपने अण्डों के ऊपर बैठकर अपने शरीर को स्पर्श करके पोषण करते हैं, परिपक्व करते हैं, परंतु कुंज पक्षी अपनी कुरल-कुरल की आवाज से तथा अपनी सुरति (सूक्ष्म ध्यान) से अपनी पुकार द्वारा अपने अण्डों में शक्ति भेजती है। जब वे पक्षी वापिस लौटते हैं तो अण्डों से बच्चे निकले होते हैं। प्रत्येक कुंज अपने-अपने बच्चों को पहचान लेती है क्योंकि उनकी पल-पल की आवाज सुरति (सूक्ष्म ध्यान) के द्वारा बच्चों तक पहुँचती है तथा चलचित्र की तरह अण्डों से बच्चे निकले दिखाई देते हैं। उनकी पहचान बन जाती है। यह गुण परमात्मा का दिया हुआ कुंज पक्षी में है।

इसी प्रकार जो भक्त सत्यपुरुष की सत्य भक्ति करता है। उसका ध्यान तथा हर संकट का निवारण परमात्मा ऐसे सतलोक में बैठा करता है। प्रत्येक जीव का ऐसे कर्मानुसार धारण-पोषण करता है। जो भक्त है उनकी भक्ति अनुसार लाभ देता है।

मुझे ऐसा सतगुरु मिला जिसने मेरी भक्ति को ऐसे सफल बनाया, परिपक्व किया जैसे कुंज पक्षी दूर देश में अपने अण्डों को परिपक्व करता है, फिर बच्चों का पोषण अपनी अर्न्तआत्मा की आवाज से करती है। ऐसा सतगुरु मिल्या जिसने सुरति रुपी सिंधु यानि सागर के मंझ यानि मध्य में प्रकट होकर ऐसे मेरी भक्ति का पोषण किया जैसे कुंज पक्षी अपने अण्डों को पोषती है। बच्चे उत्पन्न हो जाते हैं तो भी अपनी सुरति के साथ अपनी आवाज से उनको पोषती है। जब वापिस जाती है तो अपने-अपने बच्चों को पहचान लेती है। इसी प्रकार परमात्मा सतगुरु रुप में आकर हमारे को सत्य भक्ति का मंत्र देकर आत्मा में भक्ति का बीज

डालकर अपनी शक्ति से सत्यलोक में बैठकर हमारी भक्ति को परिपक्व करता है।

वाणी :- गरीब ऐसा सतगुरु हम मिल्या सुरति सिंधु के नाल।
पीताम्बर ताखी धर्यो बानी शब्द रिसाल।।(12)

❖ सरलार्थ :- परमात्मा जब सन्त या बाबा जिन्दा के रुप में प्रकट होकर सतगुरु की भूमिका करता है, तब वह लाल-पीले वस्त्र (पीताम्बर = पीला वस्त्र) को ताखी (अलमारी में) धर्यो (रख देता है) अर्थात् लाल-पीले वस्त्र न पहनकर दम्भ रहित सादे वस्त्र पहनकर (रिसाल) यथार्थ (शब्द बानि) मन्त्र तथा वानी द्वारा यथार्थ ज्ञान प्रदान करके अपनी पहचान बनाता है कि सत्य में सतगुरु है।(12)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या सुरति सिंधु के नाल।
गवन किया परलोक से, अलल पंख की चाल।।(13)

❖ सरलार्थ :- जैसा कि गुरुदेव के अंग के अंग की दूसरी वाणी के सरलार्थ में अलल पंख का पूरा विवरण दिया है। उसी को यहाँ पर दोहराया है कि परमात्मा (परलोक) सत्यलोक से ऐसे सशरीर आता है जैसे अलल पक्षी पृथ्वी पर आता है, तुरंत कई हाथियों को उड़ाकर चला जाता है। कुछ समय ही पृथ्वी पर रहता है। इसी प्रकार परमेश्वर सतगुरु रुप में आते है। अपनी प्यारी आत्माओं को सत्य भक्ति देकर ले जाते हैं।(13)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या सुरति सिंधु के नाल।
ज्ञान योग और भक्ति सब दीन्हीं नजर निहाल।।(14)

❖ सरलार्थ :- सतगुरु कबीर जी ने मुझे यह अनमोल ज्ञान योग तथा यथार्थ भक्ति देकर नजरों से निहाल कर दिया अर्थात् परमात्मा कबीर जी ने अपनी मेहर भरी दृष्टि से मेरा कल्याण कर दिया। (निहाल = कल्याण)(14)

वाणी :- गरीब ऐसा सतगुरु हम मिल्या बे प्रवाह अबन्ध।
परम हंस पूर्ण पुरुष रोम–रोम रविचन्द।।(15)

❖ सरलार्थ :- जो परमात्मा कबीर जी मुझे सतगुरु रुप में मिला था, उसके रोम-रोम (शरीर के प्रत्येक बाल) में करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चन्द्रमाओं जितना प्रकाश है। वे पूर्ण परमात्मा तथा दूसरे शब्द में परम हंस हैं जो केवल भला ही करते हैं। केवल अच्छी आत्माओं को ही स्वीकार करते हैं, अयोग्य आत्माओं को छोड़ देते हैं। जेसे हंस पक्षी पानी मिले दूध से पानी छोड़ देता है, केवल दूध को पी लेता है। हंस में एक गुण और होता है, वह जिस सरोवर पर रहता है, उसके कीड़े-मकौड़े या मछली नहीं खाता। केवल मोती ही खाता है। यही दशा सतगुरु के भक्त की होती है। इसलिए सत्यलोक में गए भक्त या पूर्व की सृष्टि के रहने वाले आत्माओं को 'हंस' कहते हैं, परन्तु परमेश्वर को परम हंस कहा गया है।(15)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या है जिन्दा जगदीश।
सुन्न विदेशी मिल गया, छत्र मुकुट है शीश।।(16)

❖ सरलार्थ :- जो जिन्दा बाबा के रुप में मुझे सतगुरु मिला था, वह जगदीश अर्थात् पूर्ण जगत का मालिक है। (सुन्न विदेशी) सत्यलोक रुपी एकान्त स्थान पर

रहने वाला परदेशी मिला था। सत्यलोक में उस परमेश्वर के सिर पर मनोहर मुकुट है तथा श्वेत छत्र है।(16)

वाणी :- गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूं मधुरे बैन विनोद।
चार वेद षट शास्त्र कहा अठारा बोध।।(17)

❖ सरलार्थ :- जो सतगुरु मुझे मिला वह पूर्ण ज्ञानी था। पूर्ण ज्ञानी के लक्षण हैं कि वह सर्वशास्त्रों का ज्ञाता होता है। कुल 18 बोध कहे गये हैं। जैसे चार वेद एक बोध, 18 पुराण भी एक बोध, इस प्रकार कुल 18 बोध हैं उनको जानने वाला शास्त्रों के आधार से भक्ति विधि तथा ज्ञान बताता है। सूक्ष्मवेद में परमेश्वर कबीर जी ने यही कहा है, अपनी महिमा आप ही कही है।

गुरु के लक्षण चार बखाना। प्रथम वेद शास्त्र का ज्ञाता।
दूजे हरि भक्ति मन कर्म वाणी, तीजे सम दृष्टिकर जानी।
चौथा वेद विधि सब कर्मा। ये चार गुरुगुण जानो मर्मा।।

यह वाणी कबीर सागर (सूक्ष्मवेद) के अगम निगम बोध अध्याय के पृष्ठ 1960 पर है। इसमें भी परमेश्वर कबीर जी ने गुरु (सतगुरु) के चार लक्षण बताए हैं।

1. प्रथम लक्षण :- जो सतगुरु होगा, वह सर्व धर्मों के शास्त्रों का यथार्थ ज्ञान जानता है। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में तो कहा है कि स्वयं सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अपने मुख कमल से वाणी द्वारा यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी विस्तार से बताते हैं। वह तत्वज्ञान अर्थात् सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी कही जाती है। उसको जानने के पश्चात् साधक के सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं। फिर गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि उस तत्वज्ञान को तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत प्रणाम करने से नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्वदर्शी सन्त आपको तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में तत्वदर्शी सन्त की पहचान बताई है कि तत्वदर्शी सन्त संसार रुपी वृक्ष के सर्व भागों को सही-सही बताता है। ऊपर को मूल नीचे को शाखा वाला यह उल्टा लटका वृक्ष तुल्य संसार है। परमेश्वर कबीर जी ने तत्वदर्शी सन्त की भूमिका करके संसार रुपी वृक्ष के सर्व भागों को भिन्न-भिन्न बताया है।

कबीर, अक्षर पुरुष एक पेड़ है, क्षर पुरुष वाकि डार।।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रुप संसार।।

यह तो परमेश्वर कबीर जी ने सतगुरु रुप में प्रकट होकर संसार रुपी वृक्ष के भाग बताए। बाद में तत्वदर्शी सन्त (पूर्ण गुरु) वही ज्ञान बताता है।

गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 तथा गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में तीन पुरुष (प्रभु) कहे हैं।

क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष ये दोनों नाशवान हैं। इनके अन्तर्गत जितने प्राणी शरीरधारी हैं, वे भी नाशवान हैं। जीवात्मा तो किसी की भी नहीं मरती।

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि वास्तव में अविनाशी और

पुरुषोत्तम तथा परमात्मा तो कोई इन दोनों (क्षर, पुरुष और अक्षर पुरुष) से अन्य है। वहीं तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।

गीता अध्याय 8 श्लोक 1 का उत्तर श्लोक 3 में दिया है कि वह 'परम अक्षर ब्रह्म' जिसके विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 29 में कहा है कि जो व्यक्ति जरा (वृद्ध अवस्था) तथा मरण (मृत्यु) से छुटकारा प्राप्ति के लिए साधना करते हैं, वे 'तत् ब्रह्म' उस ब्रह्म को जानते हैं। गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने पूछा कि 'किम् तत् ब्रह्म'। गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में कहा कि वह 'परम अक्षर ब्रह्म' है। सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

कबीर अक्षर पुरुष एक पेड़ है, क्षर पुरुष वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रुप संसार।।

गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में कहे संसार रुपी वृक्ष के सर्व भाग ऊपर चित्र में बताए हैं। वर्तमान सन् 2012 तक सन्त रामपाल जी या परमेश्वर कबीर जी के अतिरिक्त किसी ने संसार रुपी वृक्ष के भागों का भिन्न-भिन्न वर्णन नहीं बताया है। इसलिए गीता अनुसार तत्वदर्शी सन्त (सः वेदवित्) वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है अर्थात् तत्वदर्शी सन्त है। भावार्थ है कि वह सर्व वेदों व शास्त्रों का ज्ञाता है। परमेश्वर कबीर जी की वाणी में गुरुजी का यह पहला लक्षण है कि वह सतगुरु वेद शास्त्रों का ज्ञान रखता है।

दूसरा लक्षण : वह सब भक्तों के साथ समान बर्ताव करता है।

तीसरा लक्षण : वह केवल ज्ञान प्रचारक ही नहीं होता, स्वयं भी मन कर्म वचन से शास्त्रविधि अनुसार भक्ति करता है तथा अपने शिष्यों से भी उसी भाव से भक्ति कराता है।

चौथा लक्षण : चौथा लक्षण गुरु का बताया है कि वह सर्व भक्ति कर्म वेदों में वर्णित विधि के अनुसार करता है तथा अपने अनुयाईयों से कराता है।

गीता में भक्ति के मन्त्र बताए हैं। गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में केवल ऊँ (ओम्) मन्त्र जाप का बताया है। यदि किसी ने ब्रह्म तक साधना करनी है तो केवल ऊँ नाम का जाप करे। अन्य किसी मन्त्र का नहीं। यदि किसी ने परम अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति के लिए भक्ति करनी है तो उसका मन्त्र व विधि गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में बताई है :-

ऊँ तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मरतः
ब्राह्मण तेन वेदा च यज्ञा विहिता पुरा।।

यह सर्व वेद विधि अनुसार साधना है। गुरु के ये उपरोक्त चार लक्षण हैं। प्रिय पाठको! आप इस मर्म अर्थात् गूढ़ ज्ञान को समझो। इसी प्रकार सन्त गरीबदास जी ने गुरुदेव के अंग की वाणी संख्या 17 में कहा है कि :-

सतगुरु के लक्षण कहुं मधुरे बैन विनोद।
चार वेद षट शास्त्र कह अठारा बोध।।

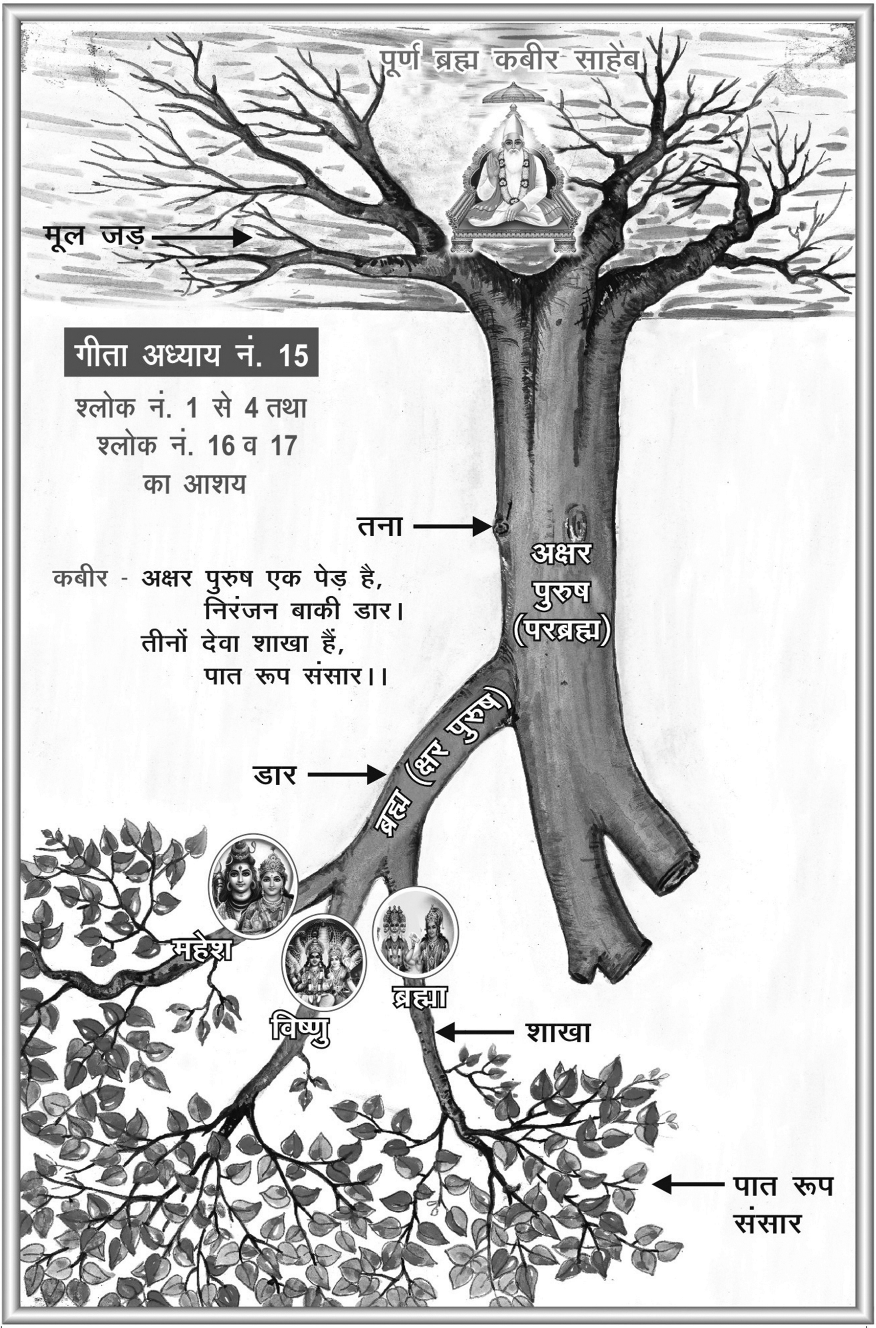

ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र

सरलार्थ :- सतगुरु के लक्षण बताता हूँ। सतगुरु मृदुभाषी होता है। चारों वेदों तथा छः शास्त्रों का ज्ञान बताता है।

वाणी :- गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूं अचल विहंगल चाल।
हम अमरापुर ले गया, ज्ञान शब्द सर घाल।।(18)

❖ **सरलार्थ :- इसी प्रकार सतगुरु के लक्षण वाणी सँख्या 18 में भी कहे हैं। परमात्मा की भक्ति की गति (चाल) अचल (भ्रम रहित) है, उनका मार्ग विहंगम अर्थात् जैसे पक्षी उड़कर एक वृक्ष से दूर ऊँचे पर्वत पर चला जाता है। इसी प्रकार सतगुरु का भक्ति मार्ग है कि जो सत्य मन्त्रों का जाप गुरु से प्राप्त करके करता है, वह काल लोक से पक्षी की तरह उड़कर सत्यलोक में चला जाता है। इसकी विधि सतगुरु (कबीर परमेश्वर जी) मुझे (सन्त गरीबदास जी को) ज्ञान रुपी तीर में टाँगकर अमर पुर (सत्यलोक) में ले गए थे।(18)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या तुरिया केरे तीर।
भगल विद्या बानी कहैं, छाने नीर अरु खीर।।(19)

❖ **सरलार्थ :- सर्व संतों ने भक्ति में तीन अवस्थाओं का ज्ञान कराया है। 1. जाग्रत, 2. सशोपति, 3. तुरिया, परंतु सतगुरु रुप में प्रकट परमेश्वर कबीर जी ने चौथी अवस्था 'पुरिया' बताई है। आध्यात्म ज्ञान का दूध और पानी छान दिया है कि यह मन्त्र या साधना गलत है। यह वास्तविक और भगल विद्या है। (जैसे जादूगर चमत्कार दिखाकर अचंभित कर देता है एवं परमात्मा आध्यात्म मार्ग के गूढ़ रहस्य बताकर अचंभित कर देते हैं।) जैसे अभी तक 10 द्वार ही बताए हैं, परंतु परमेश्वर ने 12 द्वार बताए है। अभी तक तीन अवस्थाओं का ही ज्ञान था, परंतु परमात्मा ने चौथी अवस्था का ज्ञान कराकर जादू जैसा कमाल कर दिया।(19)**

वाणी :- गरीब, जिन्दा जोगी जगत्गुरु मालिक मुरशद पीव।
काल कर्म लागै नहीं, नहीं शंका नहीं सीव।।(20)

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया कि मुझे जो जिन्दा बाबा के रुप में जोगी अर्थात् सन्त मिला था। वह जगत् गुरु है, वह स्वयं में कुल का मालिक है। वह मुरशद (सच्चा ज्ञान देने वाला पैगम्बर सच्चा गुरु) है, पीव अर्थात् पूजा का पति है। उस समर्थ परमेश्वर की शरण रहकर सत्य साधना करने वाले को काल लोक के कर्म नहीं लगते।**

इन्द्री कर्म ना लगे लगारं, जो भजन करैं निर्धुन्ध रे।
गरीब दास जग कीर्ति होगी, जब लग सुरज चन्द रे।।

उस साधक को पार होने में अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्ति में कोई शंका नहीं है, न ही उसे सीव अर्थात् कोई हानि नहीं होती।(20)

वाणी :- गरीब, जिन्दा जोशी जगत् गुरु, मालिक मुरशद पीर।
दोहूं दीन झगड़ा मण्ड्या, पाया नहीं शरीर।।(21)

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि जो जिन्दा बाबा के वेश में**

जगत् गुरु जो स्वंय मालिक है, सच्चा ज्ञान देने वाला (मुरशद) पैगम्बर व पीर (गुरु) है। वह जिस समय मगहर स्थान से सत्यलोक गए तो उनका शरीर नहीं मिला था। केवल सुगंधित फूल मिले थे। वह जिन्दा बाबा काशी शहर में रहने वाला कबीर जुलाहा था। उनके शिष्य हिन्दू तथा मुसलमान दोनों हुए थे। जिस समय उस परमेश्वर ने सत्यलोक जाने की सूचना दी तो दोनों धर्मों के अनुयाई मगहर नगर में इकट्ठे हो गए। हिन्दू कहने लगे कि सतगुरु की मृत्यु के उपरांत शरीर को हम अपनी रीति-रिवाज से अन्तिम संस्कार करेंगे। इसके लिए लड़ने-मरने के लिए तैयार हो गए। एक चादर परमेश्वर के शरीर के नीचे बिछाई तथा दूसरी परमेश्वर जी ने ओढ़ी। कुछ देर पश्चात् आकाशवाणी हुई कि चद्दर उठा कर देखो इसमें मुर्दा नहीं है। मैं तो अपने लोक में जा रहा हूँ। आप एक-एक चद्दर तथा आधे-आधे फूल ले लेना, झगड़ा नहीं करना। जब ऊपर आकाश में देखा तो परमेश्वर कबीर जुलाहा जी अपने लोक को सशरीर जा रहे थे। चद्दर उठाकर देखा तो शरीर की ऊँचाई और चौड़ाई व लम्बाई का सुंगधित फूलों का ढ़ेर मिला। दोनों धर्मों ने एक-एक चद्दर तथा आधे-आधे फूल बाँटकर मगहर शहर में ही 100 फुट के अन्तर में दो समाधि (यादगार) बना ली। मगहर नगर का नवाब बिजली खाँ पठान था। वह भी परमेश्वर कबीर जी का शिष्य था। उसने दोनों यादगारों के नाम 500-500 बीघा जमीन दान कर दी। मगहर में आज भी दोनों यादगार प्रमाण रुप में देखी जा सकती हैं। काशी (बनारस) का राजा बीर देव सिंह भी परमेश्वर कबीर जी का शिष्य था, हिन्दु था। वह भी परमेश्वर के सत्यलोक गमन के समय मगहर नगर में उपस्थित था। उसने जो फूल हिन्दुओं के हिस्से में आए थे, उनमें से आधे लेकर काशी में यादगार बनाई जिसे कबीर चौरा (चबूतरा) कहते हैं।(21)

वाणी :- गरीब, जिंदा जोगी जगत गुरु, मालिक मुरशद पीर।
मार्‌या भलका भेद से, लगे ज्ञान के तीर।।22

❖ **सरलार्थ :- जिन्दा बाबा रुप में मुझे सतगुरु मिले थे। वे कुल के मालिक हैं। उन्होंने ज्ञान का भलका (भाला) विशेष (भेद) गहरा ज्ञान का तीर (वचन की चोट जैसे तीर लगने से दर्द होता है) मारकर आत्मा में भगवान भक्ति की प्रेरणा का दर्द उत्पन्न किया।(22)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज के अंग।
झिलमिल नूर जहूर है, नर रूप सेत रंग।।23

❖ **सरलार्थ :- उस परमेश्वर (सतगुरु बनकर आए, मुझे मिले थे।) के शरीर के अंग तेजपुंज (प्रकाश तत्व) के बने हैं। उस परमेश्वर का आकार नर (मनुष्य) जैसा है और श्वेत (सफेद) प्रकाश से झिलमिल करता है जिसका बहुत अच्छा नजारा है।(23)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, तेज पुंज की लोय।
तन मन अरपूं शीश कूं, होनी होय सु होय।।24

❖ **सरलार्थ :- जिस सतगुरु का शरीर प्रकाश पुंज का है। उसके लिए मैं अपना तन तथा मन न्यौछावर कर दूँ जो होनी होगी, वह हो जाएगी।(24)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, खोले बज्र किवार।
अगम दीप कूं ले गया, जहाँ ब्रह्म दरबार।।25

❖ **सरलार्थ :- मुझे (संत गरीबदास जी को) ऐसे समर्थ सतगुरु मिले जिसने ब्रह्मरंद्र (दसवां द्वार), ग्याहरवां द्वार तथा बारहवें द्वार पर लगे वज्र अर्थात् पत्थर की चट्टान जैसे किवार (दरवाजे पर लगे पल्ले Leaf of Door) खोल दिए जो किसी भी सन्त ऋषि तथा साधक की साधना से नहीं खुलते क्योंकि उनके पास वह वास्तविक मन्त्र नहीं है जिससे ये द्वार खुल सकें। उसके पश्चात् मुझे पहले ब्रह्मलोक में ले गया। ब्रह्मरन्द्र का द्वार खोलकर जो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवजी के लोक से अगम (आगे वाले) द्वीप (लोक) हैं, वहाँ पर ब्रह्म दरबार लगाया। काल ब्रह्म नहीं था, केवल आकाशवाणी से आदेश देता है या किसी में प्रवेश करके बोलता है। जैसे ब्रह्मा कुमारी पंथ के व्यक्तियों में प्रेत बोलता है।(25)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, खोले बज्र कपाट।
अगम भूमि कूं गम करी, उतरे औघट घाट।।26

❖ **सरलार्थ :- इसके पश्चात् अगम (अगली) भूमि (लोक) कूं (को) गमन (प्रस्थान) किया। अक्षर पुरुष के लोक को पार करके परम अक्षर पुरुष के सत्यलोक में औघट घाट (भंवर गुफा के तंग द्वार को) को पार करके गए।(26)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, मारी ग्यासी गैन।
रोम–रोम में सालती, पलक नहीं है चैन।।27

❖ **सरलार्थ :- सन्त गरीबदास जी ने बताया कि मुझे ऐसा सतगुरु मिला जिसने तत्वज्ञान रुपी (ग्यासी) लोहे का नुकीली सड़क या पत्थर फोड़ने का औजार (उपकरण) मारा जिससे मेरा अज्ञान रुपी पत्थर टुकड़े-टुकड़े हो गया। पहले तो मानव जीवन के उद्देश्य का पता नहीं था। फिर तत्वज्ञान से पता चला तो रोम-रोम (शरीर का प्रत्येक बाल) सरन-सरन करने लगा। जैसे भय या खुशी में रोंगटे (बाल) खड़े हो जाते हैं, ऐसी स्थिति हो गई। उसके पश्चात् एक पल का भी चैन नहीं है। भक्ति बिना रहा नहीं जाता।(27)**

वाणी :- गरीब, सतगुरु भलका खैंच कर, लाया बान जु एक।
स्वांस उभारे सालता, पड़्या कलेजे छेक।।28

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु ने ज्ञान का भलका (भाला) तथा बाण मारा जैसा ज्ञान का वचन कहा जो तीर तथा भाले की तरह कलेजे के पार हो गया अर्थात् भक्ति की विशेष तड़फ लग गई।(28)**

वाणी :- गरीब, सतगुरु मार्‍या बाण कस, खैबर ग्यासी खैंच।
भर्म कर्म सब जर गये, लई कुबुद्धि सब ऐंच।।29

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु ने ऐसा कसकर (जोर से) बाण अर्थात् ज्ञान का वचन मारा कि जैसे खैबर (करद जैसी कटारी अर्थात् छुरे से बड़ा तीखा चाकू) जहाँ लगता**

है, उसको काट डालता है। सतगुरु के तत्वज्ञान ने सब शंकाओं को समाप्त कर दिया। (भ्रम = शंका) जो शास्त्रविरुद्ध भक्ति कर्म करते हैं, वे (जर = अग्नि में जलना) सब जल गए अर्थात् उठाकर फूँक दिए। भावार्थ है कि वे शास्त्रविरुद्ध जो भक्ति कर्म थे, वे सब त्याग दिए और परमात्मा स्वरुप सतगुरु के ज्ञान ने वो वाहियात के विचार माया ही संग्रह करने का उद्देश्य सांग-सिनेमा देखने की रुचि सब कुबुद्धि (दुर्बुद्धि) ऐंच ली अर्थात् जैसे सपेरा साँप का विष निकाल देता है। उसके विष के दांत तोड़कर मुंडी पकड़कर दबाकर जैसे थन से दूध निकालते हैं, ऐसी क्रिया को ऐचना कहते हैं। दूसरा उदाहरण जैसे दाँतों की पेस्ट जब ट्यूब में कम रह जाती है तो उसको ऊँगली तथा अँगूठे से दबाकर खाली करते हैं। भावार्थ है कि सतगुरु के ज्ञान ने हमारी सांसारिक बुराईयों में लगी बुद्धि ऐसे बाहर कर दी, हमें सत्य भक्ति मार्ग पर लगा दिया।(29)

वाणी :- गरीब, सतगुरु आये दया करि, ऐसे दीन दयाल।
बंदी छोड़ बिरद तास का, जठराग्नि प्रतिपाल।।30

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु कबीर परमेश्वर जी ऐसे दीन दयाल हैं, वे जानते हैं कि पृथ्वी पर चाहे कोई खरबपति है, चाहे पूरी पृथ्वी का मालिक भी है, परंतु वह आध्यात्मिक धन से वंचित होने के कारण निर्धन गरीब (दीन) है। ऐसे व्यक्तियों पर दया करने दीनदयाल परमेश्वर पृथ्वी पर आए। अपने सत्यलोक (सर्व सुख स्थान) को त्यागकर हमारे लिए दुःखी हुए।**

कबीर परमेश्वर जी बताते हैं कि :-

कबीर, सब जग निर्धना धनवंता ना कोए।
धनवंता सो जानियो राम नाम धन होय।।

परम अक्षर ब्रह्म स्वयं सतगुरु रुप में यहाँ आए और भक्ति धन (वास्तविक नाम मन्त्र) प्रदान किया। हम काल ब्रह्म की बन्द (कारागार) में हैं। वह सतगुरु काल की बँध से छुड़ाने आते हैं। उनका बिरद (स्वभाव + सामग्री = बिरद) बन्दी छोड़ है और यह पूर्ण परमात्मा है जो जीव की रक्षा माता के गर्भ के पास जल रही भयंकर जठराग्नि से भी करता है। जठराग्नि कच्चे फल-सब्जी तथा पकी हुई सब्जी-घी-रोटी आदि को पुनः जलाती है, पकाती है। उसकी कितनी गर्मी होती है और माता के गर्भ में जब बच्चे का शरीर बनने लगता है तो मुर्गी के अण्डे के अन्दर के पदार्थ जैसा होता है। सतगुरु अर्थात् परमेश्वर जो मुझे (सन्त गरीबदास जी को) मिला। वह इतना समर्थ है कि माता के पेट में गर्भ के बिल्कुल साथ में जठराग्नि की भंयकर गर्मी है, वहाँ भी आपकी रक्षा तथा प्रतिपाल (पोषण) करता है।(30)

वाणी :- गरीब, जठराग्नि सैं राखिया, प्याया अमृत खीर।
जुगन—जुगन सतसंग है, समझ कुटन बेपीर।।31

❖ **सरलार्थ :- माता के गर्भ में तो आपके शरीर को जठराग्नि से बचाया। (राखिया = रक्षा की) फिर जब गर्भ से बाहर आया तो बच्चे के मुख में दाँत नहीं थे। उस समय माता के शरीर में अमृत क्षीर (क्षीर = दूध) भर दिया, वह बच्चे को**

पिलाया। परमात्मा जुगन-जुगन (युगों-युगों) से आपके साथ है। (सत्संग=बहुत सच्चा साथी) सदा संग रहने वाला तथा सच्चा ज्ञान देने वाला है। हे कुटना (ढीठ = समझाया समझे नहीं, अपने ही स्वभाव को बर्तने वाले को कुटन = कुटील कहा है।)

हे अज्ञानी! कुछ समझ ले। हे बेपीर! (जिसको अपने कष्ट-पीड़ा का भी ध्यान नहीं, उसे बेपीर कहा है।) पाप कर्मों की पीर (पीड़ा) से अपरीचित कुछ समझ कर ले। परमात्मा तेरा प्रत्येक पल ध्यान रखता है, तेरी रक्षा करता है।(31)

वाणी :- गरीब, जूनी संकट मेट हैं, औंधे मुख नहीं आय।
ऐसा सतगुरु सेइये, जम सै लेत छुड़ाय।।32

❖ सरलार्थ :- जो सतगुरु कबीर जी मुझे मिला है, वह जुनी संकट (अनेकों प्राणियों की योनि में बार-बार कष्ट) को यथार्थ भक्ति मन्त्र प्रदान करके मेट है अर्थात् समाप्त कर देता है। औंधे मुख नहीं आय = सतगुरु जन्म-मरण को समाप्त कर देता है। फिर जन्म नहीं होता क्योंकि बालक माता के गर्भ में ऊपर को पैर और औंधे यानि नीचे को मुख होता है। फिर जन्म के समय भी औंधे (नीचे को मुख से ही) मुख से ही जन्म लेता है। यह कष्ट सदा के लिए समाप्त कर देता है। फिर औंधे मुख नहीं आएगा। फिर पुनः जन्म नहीं होगा। नकली गुरुओं से काल जाल तथा यम के दूत जीव को पार नहीं होने देते क्योंकि उनके पास यथार्थ भक्ति मन्त्र नहीं होते और वह नकली सतगुरु समर्थ नहीं होता। जिस कारण से यम से अर्थात् काल से नहीं छुड़ा सकता। मुझे जो सतगुरु मिला है। वह समर्थ है, यम से छुड़ा लेता है। आप भी ऐसे सक्षम सतगुरु की सेवा अर्थात् पूजा कीजिए।(32)

वाणी :- गरीब, जम जौरा जासै डरैं, धर्मराय के दूत।
चौदा कोटि न चंप हीं, सुन सतगुरु की कूत।।33

❖ सरलार्थ :- मुझे जो सतगुरु कबीर जी मिले हैं, उनसे जम अर्थात् यम = काल तथा जौरा = मृत्यु दोनों डरते हैं।

गरीब, काल डरै करतार से, जय जय जय जगदीश।
जौरा जोड़ी (जूते) झाड़ता, पग रज डारै शीश।।
काल जो पीसे पीसना, जौरा है पनिहार।
ये दो असल मजदूर है, मेरे सतगुरु के दरबार।।

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी के भक्त की मृत्यु काल नहीं कर सकता। परमेश्वर कबीर जी की आज्ञा से ही होगी। इसलिए यम तथा मौत दोनों सतगुरु के भक्त के निकट नहीं आते। धर्मराय (काल लोक का न्यायाधीश) के दूत (पकड़कर लाने वाले) भी उस सतगुरु से डरते हैं जो सँख्या में 14 करोड़ हैं। वे भक्त को नहीं चैंप (पकड़) सकते क्योंकि संकट में साधक अपने सतगुरु को तथा उनके द्वारा दिये नाम को स्मरण करता है। उस मन्त्र की कूत (शक्ति) को सुनकर यमदूत दूर हो जाते हैं।(33)

वाणी :- गरीब, जम जौरा जासे डरैं, धर्म राय धरै धीर।

ऐसा सतगुरु एक है, अदली असल कबीर।।34

❖ सरलार्थ :- जिस सतगुरु की महिमा ऊपर की वाणी में बताई है कि जिससे काल तथा मौत (मृत्यु) दोनों डरते हैं और धर्मराय (काल का न्यायधीश) भी दिल थाम के बैठ जाता है। वह भी उस सतगुरु के भक्त का हिसाब नहीं लेता। ऐसा सतगुरु केवल एक है जो वास्तव में न्यायकारी है, वह कबीर परमेश्वर है।(34)

वाणी :- गरीब, जम जौरा जासै डरैं, मिटें कर्म के अंक।
कागज कीरै दरगह दई, चौदह कोटि न चंप।।35

❖ सरलार्थ :- उस सतगुरु से यम (काल) तथा जौरा (मृत्यु) तो डरते ही हैं, वह सतगुरु पाप कर्म के बुरे लेख (अंक) को किस्मत से काट देता है। पाप कर्मों के कागज अर्थात् लेख को कीर (फाड़) देता है। उस धर्मराय (काल के न्यायधीश) द्वारा बनाए गए हिसाब को उसकी दरगाह (कार्यालय=दरबार) में जाकर दई (काल विधाता) के लेख को माफ कर देता है। जिस कारण से भी 14 करोड़ यम के दूत भक्त को पकड़ने नहीं आते।(35)

वाणी :- गरीब, जम जौरा जासे डरैं, मिटें कर्म के लेख।
अदली असल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।।36

❖ सरलार्थ :- जो परमात्मा कर्म लेख को मिटा (समाप्त कर) देता है। वह वास्तव में न्यायकारी एकमात्र सतगुरु कबीर जी ही है।(36)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, पहुँच्या मंझ निदान।
नौका नाम चढ़ाय कर, पार किये परमान।।37

❖ सरलार्थ :- हमको ऐसा सतगुरु मिला जो भवसागर के मंझ (मध्यम) में हम बिना खेवट (सतगुरु) की नाव में बैठे थे। वह अपनी मर्जी से कभी इधर-उधर घूम रही थी, पार नहीं जा सकती थी। वह सतगुरु हमारे को ऐसी स्थिति में मंझ (बीच में) निदान (अनायास) ही हमारे पास पहुँच गया। नाम की नौका देकर संसार सागर पार कर दिए, पूर्ण रुप से बात सिरे चढ़ा दी।(37)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, भौ सागर के माँहि।
नौका नाम चढ़ाय कर, ले राखे निज ठाँहि।।38

❖ सरलार्थ :- इस वाणी का भी वाणी सँख्या 37 वाला ही अर्थ है। इसमें कहा है कि सतगुरु ने मुझे निज ठाहीं (अपने निज सत्यलोक स्थान) पर स्थान दे दिया। मैं शरीर त्यागकर उस स्थान चला जाऊँगा।(38)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, भौ सागर के बीच।
खेवट सब कुं खेवता, क्या उत्तम क्या नीच।।39

❖ सरलार्थ :- वह सतगुरु अच्छे-बुरे, पापी या उत्तम सबको पार कर देता है क्योंकि उनके द्वारा बताए शास्त्रविधि अनुसार मन्त्र घोर पाप का भी नाश कर देते हैं। भावार्थ है कि वह सच्चा सतगुरु यह नहीं देखता कि यह चोर है, इसको शरण में नहीं लूंगा। सतगुरु को पता होता है कि चोर भी यदि हमारी नाम की नौका में बैठेगा अर्थात् शरण में आकर ज्ञान सुनेगा तो बुराई छोड़ेगा और पार हो

जाएगा। उदाहरण दिया है कि जैसे दरीया में नाव चलाने वाला खेवट दरिया से पार करने के लिए नौका में बैठने वालों से यह नहीं पूछता कि तू चोर है या डाकू या नेक इन्सान। वह तो सबको उत्तम तथा घटिया (नीच कर्म करने वाले) को नौका में बैठाकर दरिया के पार छोड़ देता है। ऐसे ही सतगुरु उत्तम तथा नीच दोनों को सत्य भक्ति की नौका में बैठाकर भव (संसार) दरिया से पार कर देता है।(39)

वाणी :- गरीब, चौरासी की धार में, बहे जात हैं जीव।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ले प्रसाया पीव।।40

❖ **सरलार्थ :- सत्य आध्यात्मिक ज्ञान न होने के कारण सर्व जीव तथा मैं (सन्त गरीबदास जी) जन्म-मरण के अर्थात् 84 लाख प्रणियों के जीवों के कष्ट के चक्र में अपने कर्मोंवश बह रहे थे जैसे तेज धार में व्यक्ति बह रहा हो। उसको कोई रस्से का या अन्य ट्यूब का सहारा मिल जाए तो वह बाहर निकल सकता है अन्यथा डूबकर मर जाता है। इस प्रकार 84 लाख के जन्म-मरण के प्रबल प्रवाह में बह रहे थे। मुझे ऐसा सतगुरु मिला जिसने 84 लाख के चक्र से मुक्त किए ही, ले प्रसाया पीव (परमात्मा = जीव, प्रसाया = मिलाया) मुझे साथ लेकर गए तथा परमात्मा से भी मिला दिया।(40)**

वाणी :- गरीब, लख चौरासी धार में, बहे जात हैं हंस।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अलख लखाया बंस।।41

❖ **सरलार्थ :- हंस = अच्छी आत्माएं जो नकली गुरुओं से दीक्षा प्राप्त करके साधना करते हैं, वे भी 84 लाख के चक्र में ही रहते हैं। ऐसा सतगुरु मिला जो आन उपासना कर रहे भक्त को समझाकर (धर्मदास जी की तरह) फिर उसे सत्यमार्ग पर लगाते हैं। मेरे को सतगुरु ने हमारा वास्तविक वंश (कुल) जो सत्यलोक में है जिसे हम त्यागकर नकली कुल में फँस गए जिसका कोई पता नहीं कि कब मृत्यु को प्राप्त हो जाए, समाप्त हो जाए, फिर कुत्तों में पैदा होकर कुत्तों वाला कुल हो जाएगा। उसे सतगुरु ने वह अलख (जिसे कभी नहीं देखा जा सकता था) हमारे सतगुरु ने दिखाया।(लखाया = दिखाया)(41)**

वाणी :- गरीब, माया का रस पीय कर, फूट गये दो नैन।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, बास दिया सुख चैन।।42

❖ **सरलार्थ :- हम माया संग्रह करने में लगे थे। हमारी तत्वज्ञान वाली आँखें फूट चुकी थी अर्थात् नष्ट हो चुकी थी कि मनुष्य जीवन का मूल उद्देश्य परमात्मा का भजन भक्ति करके जीव कल्याण कराना था। ऐसे सतगुरु मिले जिसने तत्वज्ञान देकर विवेक रुपी आँखें प्रदान कर दी तथा आशा-तृष्णा जो अधिक धन संग्रह करने की लगी थी, वह समाप्त हो गई और सुख चैन अर्थात् संतोष रूपी धन देकर शान्ति का वास हृदय में कर दिया।(42)**

वाणी :- गरीब, माया का रस पीय कर, हो गये डामाडोल।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ज्ञान जोग दिया खोल।।43

❖ **सरलार्थ :- माया संग्रह करने की हवस में डामाडोल (बुरी नीयत वाले हो गए थे, कोई दीन-मान नहीं रहा था) ऐसा सतगुरु मिला जिसने ज्ञान योग खोल दिया, जिस कारण से मानव जन्म के मूल उद्देश्य को जानकर भक्ति करने लग गया।(43)**

वाणी :- गरीब, माया का रस पीय कर, हो गये भूत खईस।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, भक्ति दई बकसीस।।44

❖ **सरलार्थ :- जो सत्य भक्ति नहीं करते, वे माया का संग्रह करने में अपना जीवन नष्ट कर गए। माया यहीं रह गई, स्वयं भूत-पित्तर बनकर भटक रहे हैं। हमको ऐसा सतगुरु मिल गया जिन्होंने सत्य भक्ति बकसीस (मुफ्त में दान करना, जिसकी आशा भी न हो) कर दी, मेरे जीवन का कल्याण हो गया।(44)**

वाणी :- गरीब, माया का रस पीय कर, फूट गये पट चार।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, लोयन संख उघार।।45

❖ **सरलार्थ :- माया के संग्रह की लगन में हमारे चारों पट (आँखें) फूट गई अर्थात् समाप्त हो गई थी। दो आँखें स्थूल शरीर की जो केवल अपना परिवार, रिश्तेदार या सम्पत्ति और कारोबार तक ही सीमित थी। भगवान को देखने वाली न होने के कारण आँखें होते हुए भी ज्ञानहीन (अन्धे) थे। दो आँखें सूक्ष्म शरीर में हैं। चर्मदृष्टि बन्द करने के पश्चात् इन्सान सूक्ष्म दृष्टि से देखता है। यथार्थ ज्ञान सतगुरु से न मिलने के कारण वह भी काल लोक में भटकता रहता है। वह सूक्ष्म शरीर की दोनों पट (आँखें) भी व्यर्थ हैं। हमको ऐसा सतगुरु मिल गया जिसने ऐसा तत्वज्ञान दिया जिससे हमारी संख लोचन (लोचन = आँखें) उघाड़ दी, (किसी गुप्त वस्तु को बेपर्दा करने को उघाड़ना कहते हैं, उसी शब्द को 'उघार' कहा है) अज्ञान का पर्दा हट गया, हमें अधिक विवेक हो गया।(45)**

वाणी :- गरीब, माया का रस पीय कर, डूब गये दहूँ दीन।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ज्ञान जोग प्रवीन।।46

❖ **सरलार्थ :- माया के संग्रह में दोनों दीन (धर्म) हिन्दू तथा मुसलमान डूब गए हैं। यथार्थ भक्ति न करने के कारण परमात्मा से इच्छित (वांछित) लाभ न मिलने के कारण भक्ति कम बुराई अधिक करके जीवन नष्ट करके 84 लाख योनियों के चक्र में गिरकर भवसागर में डूब गए। हमको ऐसा सतगुरु मिल गया जो तत्वज्ञान में प्रवीण (निपुण) है।(46)**

वाणी :- गरीब, माया का रस पीय कर, गये षट दल गारत गोर।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, प्रगट लिए बहोर।।47

❖ **सरलार्थ :- माया के रस अर्थात् आनन्द को पीकर षट दल (गिरी, पुरी, वैष्णु, नागा, नाथ, औलिया) साधक भी सिद्धियों की साधना करके जगत प्रसिद्ध होकर पूज्य बन जाते हैं। बड़े-बड़े मन्दिर बनवा देते हैं, परंतु मोक्ष से दूर रह जाते हैं। जिस कारण कहा है कि वे गारत गोर अर्थात् डूबकर मर गए। भव सागर में डूबकर चौरासी (84) लाख की दरिया में डूब गए। हम भी इसी भवसागर के अन्दर डूब रहे थे। अपना अनमोल जीवन नष्ट कर रहे थे, परंतु हमें ऐसा सतगुरु मिल गया**

कि हमको डूबतों को प्रकट (प्रत्यक्ष दर्शन देकर) होकर (बहोर लिए) वापिस कर लिए, डूबते को निकाल लिया।(47)

वाणी :- गरीब, सतगुरु कूं क्या दीजिए, देने कूं कुछ नाहीं।
संमन कूं साटा किया, सेऊ भेंट चढ़ाहीं।।48

❖ सरलार्थ :- ऐसे उपकारी सतगुरु को क्या दक्षिणा दूँ, हमारे पास कुछ भी देने को नहीं है। सम्मन ने सतगुरु से सौदा किया था। अपने पुत्र सेऊ (शिव) को भी जीवित कर दिया था। यहाँ कहने का भाव है कि व्यक्ति अपने पुत्र को बहुत प्रिय मानता है। जिसने सतगुरु की सेवा के सामने पुत्र का प्रेम-मोह फीका लगा। भक्त को ऐसे मोक्ष का सौदा करना पड़े तो भी चूकना नहीं चाहिए।(48)

वाणी :- गरीब, सिर साटे की भक्ति है, और कुछ नाहिं बात।
सिर के साटे पाईये, अवगत अलख अनाथ।।49

❖ सरलार्थ :- मोक्ष प्राप्ति तो सिर (शीश) के बदले में भी मिल जाए तो कुछ भी बात नहीं है। वैसे तो बिना शीश दिए सत्य भक्ति से मोक्ष मिल जाता है। बड़ी बात करते हैं कि यदि सिर के बदले भी मोक्ष मिल जाए तो प्राप्त करने योग्य है। सिर के सौदे भी भगवान मिले तो प्राप्त कीजिए। यदि भक्ति मार्ग में जीवन भय से विचलित हो गया तो कुछ भी हाथ नहीं आएगा। यदि किसी रोग के कारण मृत्यु हो गई, फिर क्या हाथ आया। भगवान भी गया, जीवन भी।

उदाहरण सत्य कथा : एक जवान फौज में भर्ती हो गया। कुछ समय पश्चात् कार्गिल का युद्ध हो गया। डर के मारे घर को भाग लिया। रास्ते में दुर्घटना में मारा गया। यदि मोर्चे में मरता तो वीरगति को प्राप्त होता तथा परिवार को बहुत धन सरकार देती। घर का रहा न घाट का। इसलिए परमात्मा प्राप्ति के लिए जो भी कुर्बानी करनी पड़े, मोक्ष हासिल करना चाहिए।(49)

वाणी :- गरीब, शीश तुम्हारा जायेगा, कर सतगुरु कूं दान।
मेरा मेरी छॉड़ दे, योही गोई मैदान।।50

वाणी :- गरीब, शीश तुम्हारा जायेगा, कर सतगुरु की भेंट।
नाम निरंतर लीजिए, जम की लगैं न फेंट।।51

❖ सरलार्थ :- एक दिन आप जी की मृत्यु निश्चित है। इसलिए अपना सिर (जीवन) सतगुरु को दान कर दे। मेरा-मेरी अर्थात् मोह-ममता छोड़ दे, नहीं तो तेरा भक्ति बिना जीवन व्यर्थ जाएगा। अपने शीश को सतगुरु की भेंट (दान) चढ़ा दे। सतगुरु द्वारा दिया नाम निरंतर जाप किया कर, जिस कारण से काल का आक्रमण आप साधक पर नहीं हो पाएगा।

सिर सौंपा गुरुदेव को, सफल हुआ यह शीश।
नित्यानन्द इस शीश पर, आप बसै जगदीश।।

अपना सिर काटकर सतगुरु को नहीं देना है। गुरुदेव की प्रत्येक आज्ञा का पालन करते हुए भक्ति करना सिर सौंपना कहलाता है।

उदाहरण : एक सन्त के आश्रम में चार-पाँच शिष्य रहते थे। गुरुजी उनको

सन्तों की वाणी से गुरु महिमा सुना रहा था कि गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए। जो शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करता, उसकी भक्ति नष्ट हो जाती है। गुरु का अनादर करने वाला घोर नरक में गिरता है। गुरु को परमात्मा समान दर्जा देना चाहिए। कुछ देर पश्चात् सर्व शिष्यों को अपने आसन के पास बुलाकर गुरु ने कहा कि आप सब मेरे सिर में एक-एक जूता मारो। सर्व शिष्य स्तब्ध रह गए। एक ओर तो गुरुजी की आज्ञा का पालन अनिवार्य, दूसरी ओर गुरु जी की ओर हाथ कर दिया तो महापाप। सब के सब मूर्ति की तरह जाम हो गए। गुरु जी ने कहा कि गुरु की आज्ञा पालन करना चाहिए। एक शिष्य उठा, अपना जूता निकाला और गुरु जी के चरणों में बैठकर अपने सिर में जूता मारा। गुरु जी ने कहा कि डांडी मत मार, (हेराफेरी मत कर) मेरे सिर में मार, अपने में नहीं। विवेकशील शिष्य ने कहा हे गुरुदेव! यह दास का शीश भी तो आपका ही तो है। गुरु जी प्रसन्न हुए, एक शिष्य पास हुआ और बाकी सब फैल हुए। इस प्रकार अपना सर्वस्व गुरुजी का मानकर निर्लेप रहकर मोक्ष मार्ग पर चलना चाहिए। सिर काटकर चढ़ाने को नहीं कहा है, समर्पण करने की राय है।(50-51)

वाणी :- गरीब, साहिब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये साध।
ये तीनों अंग एक हैं,गति कछु अगम अगाध।।52

वाणी :- गरीब, साहिब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये संत।
धर–धर भेष विशाल अंग, खेलें आदि और अंत।।53

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर से सतगुरु बने थे जो मुझे जंगल में मिले थे। वे ही स्वयं बाबा जिन्दा रुप में साधु रुप में प्रकट हुए थे। ये तीनों रुप एक ही परमेश्वर के हैं। उस परमेश्वर की गति (महिमा) अगम-अगाध (अगम = यहाँ के प्रभुओं से आगे की है। अगाध = सर्व से समर्थ है) वही परमात्मा सदा ऐसी लीला करते रहते हैं।(खेल करते रहते हैं।)(52-53)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु सेइये, बेग उतारे पार।
चौरासी भ्रम मेटहीं, आवा गवन निवार।।54

❖ सरलार्थ :- ऐसा सतगुरु सेईये (बनाइये) जो शास्त्रानुकूल साधना बताता है, जिससे शीघ्र मोक्ष हो जाता है। चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। यह भ्रम (शंका) पूर्ण रुप से सतगुरु समाप्त कर देता है।

वाणी :- गरीब, अन्धे गूंगे गुरु घने, लंगड़े लोभी लाख।
साहिब सैं परचे नहीं, काव बनावैं साख।।55

❖ सरलार्थ :- ज्ञान नेत्रहीन अंधे, मौन रखकर ढ़ोंग करने वाले गूंगे अर्थात् ज्ञानहीन गुरु घने (बहुत) हैं। लंगड़े (भक्ति मार्ग पर चलने के लिए दोनों टाँगें चाहिये अर्थात् जिस गुरु का भक्ति ज्ञान व साधना शास्त्रानुकूल है, वह दोनों पैरों वाला है, अन्य गुरु लंगड़े हैं जो सत्यभक्ति नहीं करते) लोभी (जो लालचवश गुरु का ढ़ोंग रचे हुए हैं) लाखों नकली गुरु मिल जायेंगे। साहिब (परमेश्वर) से परिचय नहीं, मनमुखी काव्य (चौपाई, दोहे) बनाकर जनता को भ्रमित करते हैं,

वे झूठी साख (महिमा) बनाए हैं।(55)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, शब्द समाना होय।
भौ सागर में डूबतें, पार लंघावैं सोय।।56

❖ **सरलार्थ :- ऐसा सतगुरु कीजिए जो शब्द शक्ति वाला व अविनाशी हो जो भवसागर में 84 लाख योनियों में जाते को (डूबते को) संसार सागर से पार कर दे अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्रदान कराए।(56)**

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, सोहं सिंधु मिलाप।
तुरिया मध्य आसन करैं, मेटैं तीन्यों ताप।।57

❖ **सरलार्थ :- ऐसा सतगुरु कीजिए जो सोहं मन्त्र तथा इसके साथ सारनाम की भी संधि (योग) करे। दो मन्त्रों (सत्यनाम + सारनाम) को मिलाकर भक्ति मन्त्र देता है। जिस कारण परमात्मा से मिलाय (मिलन) होता है। वह सतगुरु तुरिया अर्थात् त्रिकुटी पर ध्यान जाने की अवस्था तुरिया पद होता है। उस त्रिकुटी स्थान पर परमेश्वर जो स्वयं सतगुरु रुप में आसन (अपना बैठने का स्थान बनाकर बैठे हैं) लगाए बैठे हैं जो साधक सतगुरु से दीक्षा लेकर साधना करता है। परमात्मा उसके तीनों तापों (दैहिक, देविक तथा आध्यात्मिक) को (मेटे) मिटा देता है = नाश कर देता है।(57)**

वाणी :- गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पार ब्रह्म का देश।
ऐसा सतगुरु सेईये, शब्द विग्याना नेस।।58

❖ **सरलार्थ :- अभी तक केवल तीन अवस्था भक्ति की मानी गई थी-जाग्रत, सशोपति तथा तुरिया। यह काल ब्रह्म के लोक तक के साधकों का अन्तिम ज्ञान था। सतगुरु ने बताया कि तुरिया पद से आगे पुरिया पद भी है। उस पुरिया पद पर पहुँचकर साधक पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है। पुरिया अवस्था में पारब्रह्म (सबसे परे वाला प्रभु अर्थात् 'परम अक्षर ब्रह्म') का देश (लोक=सत्यलोक) है। ऐसा सतगुरु कीजिए जो शब्द अर्थात् यथार्थ मन्त्र का विज्ञाना (तत्वज्ञान जानने वाला हो) नेस अर्थात् सर्व अज्ञान का नाश कर दे।(58)**

वाणी :- गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पार ब्रह्म का धाम।
ऐसा सतगुरु सेईये, हंस करैं निहकाम।।59

❖ **सरलार्थ :- तुरिया के उपर पुरिया स्थान है जो पारब्रह्म (सत्यपुरुष) का धाम है। ऐसा सतगुरु कीजिए जो साधक को निहकाम अर्थात् सांसारिक कामनाओं से हटाकर सत्यलोक में होने वाले सुख प्राप्ति के लिए प्रेरित करे।(59)**

वाणी :- गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पार ब्रह्म का लोक।
ऐसा सतगुरु सेईये, हंस पठावैं मोख।।60

❖ **सरलार्थ :- तुरिया से उपर पुरिया पद में पारब्रह्म का सत्यलोक है। ऐसा सतगुरु कीजिए जो साधक को मोक्ष प्राप्ति कराए।(60)**

वाणी :- गरीब, तुरिया पर पुरिया महल, पार ब्रह्म का द्वीप।
ऐसा सतगुरु सेईये, राखे संग समीप।।61

❖ **सरलार्थ :- इसी प्रकार अर्थात् तुरिया से ऊपर जो पुरिया पद है, उससे पारब्रह्म (परम अक्षर ब्रह्म) का द्वीप यानि सत्यलोक है, ऐसा सतगुरु कीजिए जो जीव के संग-पास रहे।(61)**

वाणी :- गरीब, गगन मण्डल गादी जहाँ, पार ब्रह्म अस्थान।
सुन्न शिखर के महल में, हंस करैं विश्राम।।62

❖ **सरलार्थ :- आकाश मण्डल में परमेश्वर की गादी (गद्दी = सिंहासन) है जहाँ पर उस पारब्रह्म का स्थान (सत्यलोक) है। वह सत्यलोक सर्व ब्रह्माण्डों को पार करके सुन्न स्थान पर है जो सर्व के शिखर (चोटी) पर है अर्थात् लोकों के ऊपर है। उस सत्यलोक में अपने महल (घर) में मोक्ष प्राप्त साधक जन्म-मरण से मुक्त होकर विश्राम करते हैं।(62)**

वाणी :- गरीब, सतगुरु पूर्ण ब्रह्म हैं, सतगुरु आप अलेख।
सतगुरु रमता राम हैं, यामें मीन न मेख।।63

❖ **सरलार्थ :- जो जिन्दा बाबा के रुप में मुझे सतगुरु मिला था, वह कबीर जी पूर्ण परमात्मा हैं। (पूर्ण ब्रह्म है) वही अलेख हैं जिस परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग अन्य ग्रन्थों में नहीं है। इसलिए उसको अलेख कहा है। वह परमात्मा 'रमता राम' अर्थात् पृथ्वी पर भ्रमण करके सत्यज्ञान का प्रचार करने से रमता राम कहलाता है। इसमें कोई ''मीन मेख'' अर्थात् कोई त्रुटि नहीं है।(63)**

वाणी :- गरीब, सतगुरु आदि अनादि हैं, सतगुरु मध्य हैं मूल।
सतगुरु कुं सिजदा करूं, एक पलक नहीं भूल।।64

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु जो मुझे मिला था, वह आदि-अनादि मध्य तथा मूल है। भावार्थ है कि सर्वप्रथम (आदि में) यह परमात्मा थे। इसकी आदि नहीं है अर्थात् इनका जन्म नहीं है। ये मध्य अर्थात् सबका आधार है। जैसे गाड़ी का धुरा (जिस पर पहिए लगे होते हैं, अंग्रेजी में Axle कहते हैं) है, उस पर गाड़ी आधारित होती है। वह मध्य में परमात्मा है जो सतगुरु रुप में मिला था। वही सबका मूल है। जैसे गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में कहा है कि परमात्मा संसार रुपी वृक्ष की मूल (जड़) है जो सबका पालन-पोषण करता है अर्थात् कुल का परवरदिगार है, वही सतगुरु रुप में प्रकट परम अक्षर ब्रह्म (सत्यपुरुष) ही है। उस सतगुरु को मैं सिजदा (हार्दिक नमन) करता हूँ और एक पल (क्षण) भी उसको नहीं भूलता।(64)**

वाणी :- गरीब, पट्टन घाट लखाईयां, अगम भूमि का भेद।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अष्ट कमल दल छेद।।65

वाणी :- गरीब, पट्टन घाट लखाईयां, अगम भूमि का भेव।
ऐसा सतगुरु हम मिल्या, अष्ट कमल दल सेव।।66

❖ **सरलार्थ :- दोनों वाणियों का एक जैसा ही भावार्थ है कि ऐसा सतगुरु मिला जिसने अगम भूमि अर्थात् आगे के स्थान सत्यलोक का भेद (रहस्य) बताया। वह पट्टन (परलोक) जाने का घाट (पर्वतों के बीच का रास्ता = घाटि) लखाईयां अर्थात् आँखो दिखाया। अष्टकमल को छेदकर (खोलकर) सत्यलोक ले गया।**

सतगुरु ने वह सेव (पूजा) बताई जिससे अष्टकमल अर्थात् आठवां कमल खिल गया। अक्षर पुरुष का स्थान सूक्ष्म शरीर में है जो शरीर में बने ब्रह्माण्ड के पार है।(65-66)

मानव शरीर में कुल 7 कमल हैं जो एक पिण्ड कहलाता है जिसे शरीर भी कहते हैं। मानव शरीर में एक ब्रह्माण्ड का मानचित्र है। इसलिए इसको ब्रह्माण्ड भी कहते हैं।

1. मूल कमल, 2. स्वाद कमल (अनाहत कमल), 3. नाभि कमल, 4. हृदय कमल, 5. कण्ठ कमल, 6. त्रिकुटी कमल, 7. सहंस्त्र कमल।

पूर्ण सतगुरु से ज्ञान प्राप्त करने से पता चला कि हमने ''अष्ट कमल दल'' को खोलने की साधना भी करनी होती है, तब पूर्ण मोक्ष का मार्ग स्पष्ट होगा। अष्ट कमल दल आठवां कमल है। इसमें अक्षर पुरुष का वास है। इसके पश्चात् अर्थात् इसके ऊपर नौंवा कमल (नव कमल दल) है। इसमें परम अक्षर ब्रह्म का वास है।(सत्यलोक है)

वाणी :- गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, सतगुरु ले गया मोहि।
सिर साटै सौदा हुआ, अगली पिछली खोहि।।67

❖ सरलार्थ :- प्रपट्टन अर्थात् परलोक जाने के मार्ग में, पीठ (दुकान) में सतगुरु मुझे ले गया। ''सिर साटे सौदा हुआ, अगली पिछली खोहि'' जिसमें सत्य साधना करने वाला साधक अपना जीवन पूरा करके भक्ति करता हुआ शरीर छोड़कर जाता है तो वह जो साधना सतगुरु (स्वयं परमेश्वर जी ने गुरु रुप में प्रकट होकर) द्वारा बताई होती है, वह सर्व कमलों की साधना मन्त्रों से करता है। त्रिकुटी से नीचे के कमलों को पिछले (नीचे के) कमल कहा है और त्रिकुटी तथा सहंस्त्र कमल को अगले (आगे ऊपर के) कमल कहा है। यह एक ब्रह्माण्ड का वर्णन चल रहा है। जीवात्मा का निवास हृदय कमल में होता है। मृत्यु के उपरांत जीव शरीर त्यागने पर विवश होता है। यह सबसे पहले मूल कमल में जाता है। वहाँ पर मूल कमल की भक्ति (जो साधक मन्त्र से करता है) की कमाई वहीं छोड़ देता है, अपना ऋण मुक्त प्रमाण पत्र प्राप्त करके स्वाद कमल में जाता है। वहाँ सर्व साधना इस कमल की छोड़कर प्रमाण पत्र लेकर आगे नाभि कमल में फिर हृदय कमल में तथा फिर कण्ठ कमल में जाकर साधना कमाई छोड़कर ऋण मुक्त प्रमाण पत्र प्राप्त करता हुआ त्रिकुटी कमल में जाता है। (त्रिकुटी कमल का कोई जाप मन्त्र नहीं होता) फिर मूल कमल से कण्ठ कमल तक की साधना की कमाई (भक्ति धन) वहाँ छोड़कर आगे खाली होकर चला, उसे अगली-पिछली कमाई खोई (समाप्त कर दी) कहा है। उपरोक्त कमलों से रास्ता प्राप्त करने के जो 5 नाम मन्त्र हैं, वह हमारा प्रथम मन्त्र दीक्षा कहलाती है।

दूसरा दीक्षा मन्त्र = सत्यनाम कहा जाता है। जिसमें दो नाम होते हैं, ॐ + तत् (सांकेतिक) हैं। ॐ (ओम्) यह ब्रह्म का जाप है, सहंस्त्र कमल की कमाई (भक्ति धन) है। गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में कहा है कि मुझ ब्रह्म का केवल एक

ऊँ (ओम्) अक्षर है। इससे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। जो साधक सतगुरु से तत्वज्ञान समझ लेता है, वह केवल जरा-मरण (वृद्ध अवस्था तथा मृत्यु के दुःख) से छूटने का प्रयत्न करता है। गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में कहा है कि मेरे (ब्रह्मा के) सर्व धार्मिक कर्म अर्थात् साधना मुझ में छोड़कर तू केवल उस एक सर्व शक्तिमान परमात्मा की शरण में जा, मैं तुझे सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा, तू चिन्ता मत कर।

इसलिए ऊँ नाम की भक्ति कमाई (धन) सहंस्त्र कमल में धर्मराय के पास छोड़कर आगे अष्ट कमल की ओर साधक चलता है। सहंस्त्रकमल की साधना को अगली भक्ति की कमाई कहा है। पहले हम प्रत्येक देव की साधना का फल उनके लोक (स्वर्ग में) खा-खर्चकर समाप्त करके सदा जन्म-मरण के चक्र में रहते थे। सतगुरु का साधक उन सर्व देवों (प्रभुओं) की भक्ति को छोड़कर आगे मोक्ष स्थान को चलता है। इसलिए कहा है कि परलोक जाने के लिए ऐसी दुकान पर ले गए जहाँ अगली (ब्रह्म साधना) पिछली (नीचे के कमलों की साधना) खोई यानि प्रतिफल लिए बिना छोड़कर चल पड़े। जितने भी पुण्य थे, वे भी छोड़ दिए। पापों के बदले पुण्य छोड़कर हम पापरहित हो गए क्योंकि सत्यलोक में सारनाम की कमाई साथ जाएगी।(67)

वाणी :- गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, सतगुरु ले गया साथ।
जहां हीरे मानिक बिकैं, पारस लाग्या हाथ।।68

❖ सरलार्थ :- परलोक में जाने के लिए जिस पीठ (बाजार) पर मुझे सतगुरु साथ लेकर गए, वहीं पर हीरे-मोती भी बिक रहे थे। यहाँ पर हीरे-मोती का भावार्थ है कि स्वर्ग में देव पद यह तो मोती जानें तथा ब्रह्मलोक में देव पद हीरे जानें। भावार्थ है कि हम अपनी भक्ति कमाई (धन) से देव-पद भी प्राप्त कर सकते थे। अन्य भक्त ऐसा कर रहे थे, परंतु मेरे हाथ तो पारस लग गया। पारस का तात्पर्य सार शब्द (सार नाम) जिससे स्वयं तो महिमावान हुआ हो, अन्य भक्तों को भी पारस रुपी सारनाम व सत्यनाम देकर भक्ति धन के धनी बनाए। पारस एक पत्थर जैसा होता है, यदि पारस पत्थर से लोहे का गॉर्टर एक सिरे से स्पर्श हो जाए तो पूरा गॉर्टर (चाहे 15 फुट लम्बा हो) सोना (स्वर्ण) बन जाता है। मुझे पारस पत्थर जैसा मोक्ष मन्त्र मिला जिससे सत्यलोक परम पद मिला, फिर कभी जन्म-मरण नहीं होगा।

चार मुक्ति जहाँ चम्पी करती, माया हो रही दासी।
दास गरीब अभय पद पर्शे, मिले राम अविनाशी।।

इस प्रकार वाणी सँख्या 68 का अर्थ है।(68)

वाणी :- गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, है सतगुरु की हाट।
जहाँ हीरे मानिक बिकैं, सौदागर स्यों साट।।69

❖ सरलार्थ :- प्रपटन यानि परलोक मार्ग में जो पीठ जो बाजार है, उसमें यानि त्रिकुटी पर सतगुरु की हाट (हरि = दुकान) है। वहाँ पर देव पद रुपी हीरे व

माणिक (मोती-मनके) बिक रहे थे। मैंने तो सतगुरु से ही सॉट (सौदा) कर लिया, उनसे मेल हो गया। सतगुरु से हिस्सा (Partnership) कर लिया।(69)

वाणी :- गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, सौदा है निज सार।
हम कुं सतगुरु ले गया, औघट घाट उतार।।70

❖ **सरलार्थ :- परलोक बाजार में वास्तविक भक्ति का सौदा है। यदि सतगुरु मिल जाए तो मेरे को सतगुरु औघट-घाट अर्थात् जिस घाटी का किसी को न पता हो, वह औघट घाट कहा है। जिस मार्ग से केवल सतगुरु ही पार ले जा सकता है, सो सतगुरु मिला तो मुझे पार ले गया।(70)**

वाणी :- गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, प्रेम प्याले खूब।
जहाँ हम सतगुरु ले गया, मतवाला महबूब।।71

❖ **सरलार्थ :- परलोक बाजार (त्रिकुटी में) में सतगुरु के साथ प्रेम भाव हो जाने से बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। सतगुरु महबूब की तरह अपना लगा, तब वह हमको सत्यलोक ले गया। सतगुरु बहुत प्यारे हैं, वे मतवाले अर्थात् मस्त हैं।(71)**

वाणी :- गरीब, प्रपट्टन की पीठ में, मतवाले मस्तान।
हम कुं सतगुरु ले गया, अमरापुर अस्थान।।72

❖ **सरलार्थ :- परलोक बाजार (पीठ) में अन्य बहुत से साधक मिले जो अपनी-अपनी साधना से काल लोक में देव पद प्राप्त करके मतवाले (खुशी नाच रहे थे।) उसी में मस्तान यानि मगन थे, परंतु हमको (गरीबदास जी को) सतगुरु अमूक स्थान (सत्यलोक) में ले गए।(72)**

वाणी :- गरीब, बंक नाल के अंतरै, त्रिवैणी के तीर।
मान सरोवर हंस हैं, बानी कोकिल कीर।।73

❖ **सरलार्थ :- मानव शरीर में रीढ़ की हड्डी के अन्दर की ओर उसके साथ टेढ़ी-मेढ़ी एक नाड़ी रीढ़ की हड्डी के निचले सिरे से (जो गुदा के पास रीढ़ की हड्डी का अन्त है) त्रिकुटी (जो आँखों के पीछे है) तक जाती है, उसे बंकनाल (बंक=टेढ़ी, नाल = नाड़ी) कहते हैं। मूल कमल से त्रिवेणी (त्रिकुटी के आगे तीन रास्ते होते हैं, उसे त्रिवैणी कहा है।) तक साधक अपनी भक्ति कमाई से जाता है। सूक्ष्म रुप में सतगुरु साथ रहता है। त्रिकुटी पर जाकर परमात्मा गुरु रुप में दर्शन देता है। बंकनाल के अन्दर से त्रिवैणी के किनारे चले गए। वहाँ पर मानो मानसरोवर जैसा स्थान है। जैसे सरोवर पर हंस पक्षी भी होते हैं, बुगले भी। हंस पक्षी मोती खाते हैं, बुगले मछली खाते हैं। दोनों (हंस तथा बुगला) देखने में एक जैसे लगते हैं, परंतु उनके आहार से पता चलता है कि हंस कौन-सा है और बुगला कौन-सा है? इसी प्रकार वहाँ पर उपस्थित सतगुरु के हंस (सतपुरुष की भक्ति करने वाले) तथा काल के पुजारी दोनों भक्त दिखाई देते हैं, परंतु उनके ज्ञान से अंतर पता चलता है। जब वे ज्ञान की वाणी बोलते हैं, उनमें इतना अन्तर होता है जैसे कोकिल (कोयल) तथा कीर (कौवे) की बोली में अंतर होता है।(73)**

वाणी :- गरीब, बंकनाल के अंतरे, त्रिवैणी के तीर।

जहाँ हम सतगुरु ले गया, चुवै अमीरस षीर।।74

❖ **सरलार्थ :- सतगुरू बंकनाल के अन्दर से त्रिवैणी के किनारे लेकर चले गए। उसी त्रिवेणी पर सतगुरु के ज्ञानामृत की अमृतरस रुपी खीर (क्षीर) अर्थात् दूध जैसा तत्वज्ञान टपक (चवै) रहा था।(74)**

वाणी :- गरीब, बंक नाल के अंतरे, त्रिवैणी के तीर।
जहां हम सतगुरु ले गया, बन्दी छोड़ कबीर।।75

❖ **सरलार्थ :- सतगुरू बंकनाल के अन्दर से त्रिवैणी के किनारे लेकर चले गए। उस त्रिवेणी पर मुझे मेरे सतगुरु बन्दी छोड़ कबीर जी लेकर गये थे।(75)**

वाणी :- गरीब, भंवर गुफा में बैठ कर, अमी महारस जोख।
ऐसा सतगुरु मिल गया, सौदा रोकम रोक।।76

❖ **सरलार्थ :- उस त्रिवेणी से आगे ग्यारहवां द्वार पार करके बारहवां द्वार पार किया और भंवर गुफा में सतगुरु ले गए। वहाँ बैठकर अमी (अमृत) महारस (महाआनन्द) जोख पानी पीया। भावार्थ है कि वहाँ अनोखा आनन्द महसूस हुआ। ऐसा सतगुरु मिला जिसने सत्य साधना की, इतनी कमाई (धन) करा दी कि रास्ते में सब कमलों में सौदा रोकम रोक (नकदा-नकदी = Cash) किया, वहाँ पर उधार नहीं चलता।(76)**

वाणी :- गरीब, भंवर गुफा में बैठ कर, अमी महारस तोल।
ऐसा सतगुरु मिल गया, बज्र पौल दई खोल।।77

❖ **सरलार्थ :- भंवर गुफा में अपनी भक्ति की धनराशि से सत्यलोक का सुख तुलवाया अर्थात् प्राप्त किया। फिर सतगुरु साथ रहे, उन्होंने प्रत्येक द्वार पर लगे दृढ़ ताले (वज्र पोल) खोल दिए। पोल = खाली स्थान जो ढ़का हुआ हो। उसी को पोल (पोल = साहुकारों का घर जिसमें मेहमान बैठा करते थे। केवल नर मानव बैठते थे, उसे पौली दहलीज कहते हैं) कहा करते जो अब समाप्त प्राय हो चुकी है। सतगुरु ने उस पौली का द्वार खोल दिया।(77)**

वाणी :- गरीब, भंवर गुफा में बैठ कर, अमी महारस जोख।
ऐसा सतगुरु मिल गया, ले गया हम प्रलोक।।78

❖ **सरलार्थ :- भंवर गुफा में अमृत रस पीया अर्थात् आनन्द का अनुभव हुआ। ऐसा सतगुरु मिला जो हमको प्रलोक अर्थात् सत्यलोक में ले गया।(78)**

वाणी :- गरीब, पिण्ड ब्रह्मण्ड सैं अगम हैं, न्यारी सिंधु समाध।
ऐसा सतगुरु मिल गया, देख्या अगम अगाध।।79

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा का स्थान इस पिण्ड अर्थात् शरीर में नहीं देखा जा सकता। वह ब्रह्माण्ड से भिन्न है। उसके लिए सहज समाधि लगानी पड़ती है। (सिंधु = समुद्र) ऊपर समाधि ले जाने के लिए जैसे आकाश रुप समुद्र को पार करना पड़ता है, वहाँ वह सत्यलोक है। हमने सतगुरु की महिमा जानी जो अगम अगाध अर्थात् बहुत आगे का ज्ञान वाला है, उसका ज्ञान (अगाध) गहरा है।(79)**

वाणी :- गरीब, पिण्ड ब्रह्मण्ड सैं अगम हैं, न्यारी सिन्धु समाध।

ऐसा सतगुरु मिल गया, दिया अखै प्रसाद।।80

❖ **सरलार्थ :- पिण्ड-ब्रह्माण्ड से भिन्न जो स्थान देखा, वहाँ पर अखै प्रसाद अर्थात् जो स्वादिष्ट मिष्ठान स्वर्ग-महास्वर्ग में नहीं मिलता, वह सत्यलोक में खाया। जैसे काशी नगर में परमेश्वर कबीर जी ने भण्डारा (भोजन-लंगर) कराया था। 18 लाख साधुओं को जिमाया (भोजन कराया) था। उस समय सर्व लड्डू, जलेबी, कचौड़ी, पकौडी, हलवा, खीर सब सत्यलोक से पका-पकाया आया था। नौ लाख बैलों पर थैलों में भर-भरकर लादकर केशव रुप धारण करके स्वयं कबीर जी लाए थे। इसी प्रकार परमात्मा का प्रसाद सत्यलोक में खाया।(80)**

वाणी :- गरीब, औघट घाटी ऊतरे, सतगुरु के उपदेश।
पूर्ण पद प्रकाशिया, ज्ञान जोग प्रवेश।।81

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा की कृपा से उनके ज्ञानोपदेश से हम औघट घाट (कठिन घाटियों) में से पार गये। सतगुरु जी ने पूर्ण तत्वज्ञान का प्रकाश किया और ज्ञान योग को मेरी आत्मा में प्रवेश किया।(81)**

वाणी :- गरीब, सुन्न सरोवर हंस मन, न्हाया सतगुरु भेद।
सुरति निरति परचा भया, अष्ट कमल दल छेद।।82

❖ **सरलार्थ :- सुन्न स्थान सत्यलोक में मानसरोवर है। वहाँ पर मेरी आत्मा (हंस) ने स्नान किया। उस स्थान पर सतगुरुदेव को गूढ़ रहस्य के ज्ञान द्वारा ही जाना सम्भव हुआ। आठवें कमल को खोला, सुरति-निरति से यह परिचय हुआ।(82)**

वाणी :- गरीब, सुन्न बेसुन्न सैं अगम है, पिण्ड ब्रह्मण्ड सैं न्यार।
शब्द समाना शब्द में, अवगत वार न पार।।83

❖ **सरलार्थ :- जब आत्मा सत्यलोक को चलती है, तब कई सुन्न स्थानों से गुजरना पड़ता है। सत्यलोक सर्व सुन्नों के पार है। बेसुन्न अर्थात् विशेष सुन्न में अक्षर पुरुष का लोक है। वह पिण्ड (शरीर) तथा ब्रह्माण्ड से भी पार है। उससे भी आगे सत्यलोक है। शब्द अर्थात् सारनाम की भक्ति को शब्द अर्थात् परमात्मा के भक्ति खजाने में जमा कर दिया, परंतु परमात्मा (अवगत) की महिमा का कोई वार-पार नहीं, कोई सीमा नहीं है।(83)**

वाणी :- गरीब, सतगुरु कूं कुरबान जां, अजब लखाया देस।
पार ब्रह्म प्रवान है, निरालम्भ निज नेस।।84

❖ **सरलार्थ :- बलिहारी अपने सतगुरु पर जिसने अजब (अनोखा) लखाया (दिखाया) देश (सत्यलोक)। पारब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म प्रमाण है, वह निरालम्ब जिसको किसी का सहारा नहीं, वह अपनी शक्ति से स्थिर है तथा निज नेस (खास पापनाशक) है।(84)**

वाणी :- गरीब, सतगुरु सोहं नाम दे, गुज बीरज विस्तार।
बिन सोहं सीझे नहीं, मूल मन्त्र निज सार।।85

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु सोहं नाम जाप देता है। इससे आगे और गुज (गूढ़)**

बीरज (विशेष ज्ञान) विस्तार के साथ उपदेश मन्त्र का राज यानि रहस्य है जो सतगुरु उपदेश देते समय समझाता है। पहले सोहं मन्त्र का जाप देता है। सोहं के जाप बिना मूल मन्त्र अर्थात् सार नाम (सीझै नहीं) लाभ नहीं देता।(85)

वाणी :- गरीब, सोहं सोहं धुन लगै, दर्द बन्द दिल माहीं।
सतगुरु परदा खोल हीं, परालोक ले जाहीं।।86

❖ सरलार्थ :- काल ब्रह्म के ऊँ नाम की कमाई को त्रिकुटी पर जमा करने के पश्चात् ऊँ नाम का जाप समाप्त हो जाता है। फिर सोहं-सोहं ही दोनों श्वांसों से प्रारम्भ हो जाता है और सारनाम पहले की तरह ऊपर के श्वांस से स्मरण होता है। सुरति-निरति से जाप चलता है। नाम के स्मरण से हृदय में मीठा-मीठा दर्द महसूस होने लगता है। फिर सतगुरु सर्व द्वारों का पर्दा यानि दरवाजा खोलकर परालोक अर्थात् सत्यलोक में ले जाता है।(86)

वाणी :- गरीब, सोहं जाप अजाप है, बिन रसना होए धुन्न।
चढ़े महल सुख सेज पर, जहाँ पाप नहीं पुण्य।।87

❖ सरलार्थ :- सोहं नाम का जाप अजपा जाप है क्योंकि इसमें जिव्हा तथा होंठ प्रयोग नहीं होते, केवल श्वांस से सुमरण होता है। उसी से सोहं जाप की आवाज होती है। उस महल (सत्यलोक) में चढ़ जाते हैं, जहाँ पाप तथा पुण्य का व्यवहार नहीं है।(87)

वाणी :- गरीब, सोहं जाप अजाप है, बिन रसना होए धुन्न।
सतगुरु दीप समीप है, नहीं बस्ती नहीं सुन्न।।88

❖ सरलार्थ :- सत्यलोक में जहाँ सब हंसात्माएं (भक्त) जो मुक्त होकर जाते हैं, उनका घर परमात्मा के सिंहासन के पास है। उसका द्वीप सत्यलोक में ही भिन्न है जैसे राजा का महल अलग होता है, परंतु सर्व को जैसे सूर्य के दर्शन होते हैं और अपने साथ ही रहता नजर आता है, ऐसे परमात्मा प्रत्येक सत्यलोकवासी को महसूस होता है।(88)

वाणी :- गरीब, सुन्न बस्ती सैं रहित है, मूल मन्त्र मन माहिं।
जहां हम सतगुरु ले गया, अगम भूमि सत ठाहिं।।89

❖ सरलार्थ :- मूल मन्त्र अर्थात् सारनाम को मन में रख लगाकर जाप करने से उस स्थान पर चले जाते हैं जो सत्यलोक सब सुन्नों में बनी बस्ती अर्थात् लोकों से रहित अर्थात् न्यारा है जहाँ पर हमें सतगुरु लेकर गया। वह भूमि अगम अर्थात् वह लोक आगे वाला (सत ठांही) सत्यलोक है। (ठाहं=स्थान)(89)

वाणी :- गरीब, मूल मन्त्र निज नाम है, सुरत सिंधु के तीर।
गैबी बाणी अरस में, सुर नर धरैं न धीर।।90

❖ सरलार्थ :- मूल मन्त्र जो सार नाम है, उसका जाप सुरति-निरति से किया जाता है। (सुरति=सूक्ष्म दृष्टि, सिंधु=सागर, तीर=किनारों) जैसे भव सागर है ऐसे ही सत्यलोक सागर है। उसके किनारे जाने के लिए सूक्ष्म ध्यान (सुरति) की आवश्यकता है। अर्श (आकाश) में बहुत-सी गैबी वाणी (रहस्यमय आवाजें) होती

हैं। उनसे उन साधकों को भय उत्पन्न होता है जिनके पास सारनाम नहीं होता। वे सुर अर्थात् देवता, नर = जो पूर्व जन्म की भक्ति से बिना गुरु के ध्यान लगाकर समाधिस्थ हो जाते हैं, वे भयभीत हो जाते हैं क्योंकि उनके पास सारनाम नहीं होता।(90)

वाणी :- गरीब, अजब नगर में ले गया, हम कुं सतगुरु आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सूते चादर तान।।91

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु जो पूर्ण ब्रह्म जी हैं, वे जिन्दा बाबा के रुप में सत्यलोक से (आन) पृथ्वी पर आकर मुझे अजब नगर (अद्भुत नगर अर्थात् सत्यलोक) में ले गए। वहाँ पर अनोखी झिलमिल हो रही थी। वहाँ जाकर पता चला कि यह स्थान पूर्ण सुखमय है, यह परमात्मा अविनाशी है। इनका दिया ज्ञान तथा भक्ति की साधना सत्य (शास्त्रानुकूल) है। अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि मेरा कल्याण निश्चित है। इसलिए ''सुते चादर तान'' अर्थात् चादर तानकर सोने का भावार्थ है जिस व्यक्ति ने उस दिन का सारा कार्य समाप्त कर लिया हो तो वह चादर ओढ़कर सो रहा हो तो अन्य व्यक्ति आता है और पूछता है कि सारा कार्य कर लिया, लगता है कोई कार्य शेष नहीं रहा, इसलिए तो चादर तानकर सो रहा है। चादर तान कर सोना = निश्चिंत होकर रहना।(91)**

वाणी :- गरीब, अगम अनाहद दीप है, अगम अनाहद लोक।
अगम अनाहद गवन है, अगम अनाहद मोख।।92

❖ **सरलार्थ :- अगम (सब से ऊपर आगे) का अनाहद दीप अर्थात् जिस द्वीप की कोई सीमा न हो, ऐसा द्वीप यानि क्षेत्र है। उस क्षेत्र में ऐसा ही अनाहद (जिसका कोई अन्त न हो) सत्यलोक स्थान है। इस वाणी में अनाहद दीप का अर्थ है ऊपर के चारों शाश्वत लोकों का क्षेत्र 1. सत्यलोक, 2. अलख लोक, 3. अगम लोक, 4. अकह लोक।**

इस लोक में जाने के लिए भी अगम=अन्य लोकों वाले भक्ति मार्ग से आगे का अर्थात् उत्तम भक्ति है। (गवन=प्रस्थान)। उस भक्ति मार्ग से सबसे आगे का (अगम-अनाहद मोक्ष) शाश्वत मोख (मोक्ष) है।(92)

वाणी :- गरीब, सतगुरु पारस रूप हैं, हमरी लोहा जात।
पलक बीच कचन करैं, पलटैं पिण्डरु गात।। 93

❖ **सरलार्थ :- जैसे पारस पत्थर लोहे से स्पर्श होने पर लोहे को स्वर्ग बना देता है। जिस कारण से वह बहुमूल्य हो जाता हे। इसी प्रकार हम तो लोह जैसे जीव थे। सतगुरु का ज्ञान, नाम तथा आशीर्वाद पारस जैसा है जिसने हमारे को भक्त रुपी स्वर्ण बना दिया। हमारा (पिण्डरु गात) शरीर ही पलट दिया अर्थात् बुराई छुड़वाकर सत्यभक्ति पर लगाकर जीव का उद्धार कर दिया।(93)**

वाणी :- गरीब, हम तो लोहा कठिन हैं, सतगुरु बने लुहार।
जुगन–जुगन के मोरचे, तोड़ घड़े घणसार।।94

❖ **सरलार्थ :- अन्य उदाहरण दिया है कि सतगुरु तो लुहार समान हैं। हम लोहा**

थे, लोहा भी जर युक्त, कठिन अर्थात् अहंकार से युक्त भक्तिरहित थे। सतगुरु जी ने हमारे ऊपर सत्संग वचनों के बाण मारकर हमारा अहँकार तोड़ दिया तथा जो युगों-युगों का जन्म-मरण का मोर्चा तैयार किए हुए थे, वह समाप्त कर दिया।(94)

वाणी :- गरीब, हम पशुवा जन जीव हैं, सतगुरु जात भिरंग।
मुरदे सैं जिन्दा करैं, पलट धरत हैं अंग।।95

❖ सरलार्थ :- भक्ति का ज्ञान न होने के कारण हम तो पशु के तुल्य जीवन जी रहे थे। सतगुरु जी ने बार-बार सत्संग सुनाकर अपने जैसे बना लिए। जैसे एक भ्रंग कीड़ा पँखों वाला अन्य बिना पँखों के कीड़ों को अपनी आवाज सुना-सुनाकर अपने जैसा बना लेता है। हम भक्ति मार्ग से भटके हुए थे। हम मुर्दों जैसा जीवन जी रहे थे। जीवन में कोई उत्साह नहीं था। परमात्मा ने तत्वज्ञान सुनाकर जीवन में नई चेतना भरकर जिन्दा समान कर दिए।(95)

वाणी :- गरीब, सतगुरु सिकलीगर बने, यौह तन तेगा देह।
जुगन–जुगन के मोरचे, खोवैं भर्म संदेह।।96

❖ सरलार्थ :- सिकलीगर (तालों को ताली लगाते थे जो नई चाबी एक कील को कूट-छेतकर बना देते थे।) सतगुरू इसी प्रकार हम जीवों को भक्ति करने योग्य शब्द की चोट मारकर बनाते हैं। इसलिए कहा कि सतगुरु सिकलीगर बने, यह शरीर (तेगा) तलवार तुल्य है। इस शरीर से भक्ति करके जन्म-मरण से छुटकारा पाने का युद्ध जीतना है। सतगुरु युगों-युगों का भ्रम निर्वाण करके सर्व शंकाओं का नाश कर देते हैं।(96)

वाणी :- गरीब, सतगुरु कंद कपूर हैं, हमरी तुनका देह।
स्वॉति सीप का मेल है, चंद चकोरा नेह।।97

❖ सरलार्थ :- सतगुरु जी तो अमृत फल तुल्य हैं। हमारा शरीर तो तृण तुल्य है। जैसे स्वॉति नक्षत्र की वर्षा की बूँद सीप के मुख में गिरने से मोती बन जाता है। ऐसे सतगुरु जी ने हमारे अन्तःकरण रुपी सीप में सत्य साधना रुपी स्वॉती की बून्द डाल दी और हमने परमात्मा रुपी सतगुरु में इतनी लगन लगाई जैसे चकोर पक्षी चाँद को देखने में लगाता है। एकटक रात्रि में उगते चाँद को अस्त तक देखता रहता है। देखते-देखते वृक्ष से गिरकर गर्दन भी तुड़वा लेता है, परंतु नजर फिर भी चाँद को देख रही होती है। ऐसी लगन परमात्मा में लगाकर मोक्ष प्राप्त किया।(97)

वाणी :- गरीब, ऐसा सतगुरु सेईये, बेग उधारै हंस।
भौ सागर आवै नहीं, जौरा काल विध्वंस।।98

❖ सरलार्थ :- ऐसा सतगुरु कीजिए जो शीघ्र कल्याण करें, हंस रुपी भक्त को संदेश दिया है। आगे कहा है कि फिर संसार सागर में पुनः जन्म नहीं लेता, सतगुरु जौरा (मौत) काल को समाप्त कर देता है, पूर्ण मोक्ष प्राप्त कराता है।(98)

वाणी :- गरीब, पट्टन नगरी घर करै, गगन मण्डल गैनार।

अलल पंख ज्यूं संचरै, सतगुरु अधम उधार।।99

❖ **सरलार्थ :- सत्य साधना से उस (पट्टन) नगरी सत्यलोक में (घर करै) निवास स्थान प्राप्त करता है जो गगन मण्डल में (गैनार) पर्वत जैसा ऊँचा महल है। उद्धार करने के लिए सतगुरु अलल पक्षी की तरह सत्यलोक से चलकर आता है।(99)**

वाणी :- गरीब, अलल पंख अनुराग है, सुन्न मण्डल रहै थीर।
दास गरीब उधारिया, सतगुरु मिले कबीर।।100

❖ **सरलार्थ :- जिस प्रकार अलल पक्षी का बच्चा पृथ्वी पर होता है। वह अपने परिवार तथा घर को नहीं भूलता जो ऊपर वायु में आकाश में होता है। दूसरी ओर उस बच्चे के माता-पिता अलल पक्षी अपने बच्चे के लौटने की राह देखते रहते हैं और दिल में मिलने की मीठी-मीठी हिलोद-सी उठती रहती है तो अन्त में वह बच्चा अपने परिवार में ऊपर चला जाता है। इसी प्रकार परमात्मा आपको सदा चाहता है कि मेरे बच्चे मेरे पास सतलोक में आ जायें, सदा सुखी हो जायेंगे। हम सतगुरु के भक्त अलल पंख के बच्चे की तरह परमात्मा को तथा अपने घर सत्यलोक को नहीं भूलेंगे तो एक दिन हम सत्यलोक चले जायेंगे। सन्त गरीबदास जी ने कहा है कि मेरा उद्धार भी इसी विधि से हुआ है। मुझे सतगुरु कबीर जी मिले थे।(100)**

''साहेब कबीर की वाणी गुरुदेव के अंग से'' का सरलार्थ

वाणी :- कबीर, दण्डवत् गोविन्द गुरु, बन्दूँ अविजन सोय।
पहले भये प्रणाम तिन, नमो जो आगे होय।।1

❖ **सरलार्थ :- गुरु तथा परमात्मा को समान भाव से देखना चाहिए। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने सूक्ष्मवेद (तत्वज्ञान) में अपने मुख कमल से कहा है कि गुरु तथा परमेश्वर (गोविन्द) को दण्डवत प्रणाम करें, अन्य महापुरुषों को जो पहले हो चुके हैं तथा भविष्य में परमार्थ के लिए जन्म लेंगे। उन सबको प्रणाम शीश झुकाकर नमन कीजिए।(1)**

वाणी :- कबीर, गुरु को कीजे दण्डवत, कोटि कोटि परनाम।
कीट न जानै भृंगको, यों गुरुकरि आप समान।।2

❖ **सरलार्थ :- गुरुजी को दण्डवत करना चाहिए तथा करोड़-करोड़ बार प्रणाम करना चाहिए। जैसे भृंग कीट किसी अन्य कीट को उठाकर लाता है, उसको अपनी आवाज सुना-सुनाकर अपने जैसे रंग व पँखों वाला बना लेता है। ऐसे ही गुरु जी अपने शिष्य को बार-बार सत्संग सुनाकर अपने जैसे गुणों वाला बना लेता है।(2)**

वाणी :- कबीर, गुरु गोविंद कर जानिये, रहिये शब्द समाय।
मिलै तौ दण्डवत् बन्दगी, नहिं पल पल ध्यान लगाय।।3

❖ **सरलार्थ :- गुरु जी को गोविन्द (परमात्मा तुल्य) जानना चाहिए और उनके द्वारा दिये गये भक्ति साधना के शब्द (नाम) को सदा जाप करते रहिए। जब कभी**

गुरुजी मिले, उस समय उनको दण्डवत प्रणाम करें, नहीं तो पल-पल उनमें ध्यान लगायें।(3)

वाणी :- कबीर, गुरु गोविंद दोनों खड़े, किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दिया मिलाय।।4

❖ **सरलार्थ :- यदि गुरु तथा परमात्मा दोनों साथ-साथ खड़े हों तो किसके पैरों लगोगे? यह प्रश्न है। इसका उत्तर दिया है कि मैं तो अपने गुरु के पैरों लगूंगा। उस पर बलिहारी जाऊं जिन्होंने परमात्मा मिला दिया।(4)**

वाणी :- कबीर, सतगुरु के उपदेश का, सुनिया एक बिचार।
जो सतगुरु मिलता नहीं, जाता यमके द्वार।।5

वाणी :- कबीर, यम द्वारेमें दूत सब, करते खैंचा तानि।
उनते कभू न छूटता, फिरता चारों खानि।।6

वाणी :- कबीर, चारि खानिमें भरमता, कबहुं न लगता पार।
सो फेरा सब मिटि गया, सतगुरुके उपकार।।7

❖ **सरलार्थ :- वाणी सँख्या 5 से 7 का भावार्थ है कि ''तत्वज्ञान'' की प्राप्ति के पश्चात् विचार लगाया कि यदि सतगुरु नहीं मिलते तो भक्तिहीन जीव यमद्वार अर्थात् काल के नरक का द्वार जिसके अन्दर यमराज विराजमान है, उसके करोड़ों यमदूत हैं जो मृत्यु उपरांत भक्तिहीन प्राणी को यमराज के पास ले जाते हैं। जो उनको धर्मराय के आदेशानुसार जैसी-जैसी यातनाएं लिखी हैं, वैसी यातनाएं देता है, नरक में डालता है। साथ में ही नरक बना है, उसी के पास यमराज का आसन है। जिस समय यमदूत पापी प्राणियों को कर्मानुसार नरक में डालते हैं तो जीव उस नरक के कष्ट को देखकर वापिस भागने की कोशिश करते हैं। यमदूत उनको डण्डों, भालों तथा गंडासों से मार-पीटकर नरक में डाल देते हैं। इसको खैंचातान कहा है। नरक में तो जाता ही, फिर 84 लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में भी कष्ट उठाता, कभी-भी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता था। वह सब फेरा (चक्र) मेरे सतगुरु देव जी के उपकार से समाप्त हो गया। अब सत्य साधना शास्त्रनुसार करके सीधे सत्यलोक में चले जायेंगे। न नरक में जाना तथा न 84 लाख प्राणियों के जीवनों का कष्ट उठाना। भवसागर से पार हो जाना है।(5-6-7)**

वाणी :- कबीर, सात समुन्द्र की मसि करूं, लेखनि करूं बनिराय।
धरती का कागद करूं, गुरु गुण लिखा न जाय।।8

❖ **सरलार्थ :- ऐसे सतगुरु की महिमा करने के लिए यदि सातों समुद्रों की स्याही (Ink) करुँ और कलम बनाऊँ सर्व वृक्षों की तथा पूरी पृथ्वी जितना कागज बना लूं तो भी ऐसे सतगुरु की महिमा नहीं लिखी जा सकती।**

उदाहरण : यदि कुत्ते के जीवन का कष्ट लिखें, फिर गधे के जीवन का कष्ट लिखें। फिर अन्य 84 लाख प्रकार के प्राणियों का कष्ट लिखें जो सतगुरु जी ने नहीं होने दिया तो उपरोक्त कलम-दवात कागज कम पड़ेंगे।(8)

वाणी :- कबीर, बलिहारी गुरु आपना, घरी घरी सौ–सौ बार।
मानुष तें देवता किया, करत न लागी बार।।9

❖ **सरलार्थ :- ऐसे सतगुरु पर सौ-सौ बार कुर्बान जाऊँ जिसने सर्व बुराई और आदतें छुड़वाकर मनुष्य से देवता बना दिया। जैसे सच्चा सौदा सिरसा डेरे वाले संत गुरुमीत सिंह ने अपने जीवन की उपलब्धि बताई है कि मैंने अपने अनुयाईयों को इन्सां (मनुष्य) बना दिया। सिरसा डेरे के सर्व प्रेमी तथा प्रेमण बहनें अपने नाम के पश्चात् जैसे गोत्र लिखा करते हैं, ऐसे इन्सां (इन्सान=मनुष्य) लिखकर गर्व महसूस कर रहे हैं। उस भोले इंसान श्री गुरमीत सिंह जी को पता नहीं कि सतगुरु तो इन्सां (मनुष्य) से देवता (हंस) बनाता है। अभी तो आप तथा आपके अनुयाई अधूरे हैं।(9)**

वाणी :- कबीर, गुरु को मानुष जो गिनै, चरणामृत को पान।
ते नर नरकै जाहिगें, जन्म–जन्म होय श्वान।।10

❖ **सरलार्थ :- जो सतगुरु तत्वदर्शी है, उसको परमात्मा के तुल्य ही मानना चाहिए। यदि साधक ने गुरु धारण कर रखा है और नियमानुसार चरणामृत भी पी रहा है और गुरु जी को केवल संत रुप में देखता है और परमात्मा अन्य मानता है तो वह शिष्य पार नहीं हो सकता। पार नहीं हुआ तो श्वान यानि कुत्ते आदि के शरीर प्राप्त करता रहेगा।(10)**

वाणी :- कबीर, गुरु मानुष करि जानते, ते नर कहिये अंध।
होय दुखी संसार में, आगे यमका फंद।।11

❖ **सरलार्थ :- जो साधक गुरुजी को सामान्य मनुष्य मानते हैं, वे व्यक्ति अन्धे (तत्वज्ञान नेत्रहीन) हैं। उनको भक्ति का कोई लाभ नहीं मिलता। जिस कारण से इस संसार में भी दुःखी रहेंगे तथा फिर यम (यमराज) के नरक का कष्ट भी बना रहेगा।(11)**

उदाहरण : जैसे गणित की पढ़ाई में एक ऋण का प्रश्न होता है। उसमें मूलधन ज्ञात करना होता है। वह मूलधन करोड़ों की सँख्या में धनराशि होता है। उस करोड़ों रुपये के मूलधन को प्राप्त करने के लिए मानना पड़ता है कि मान लो मूलधन 100 रु., हालांकि सौ रु. मूलधन नहीं है। फिर भी सौ रुपये को मूलधन मानकर ही करोड़ों रुपयों का मूलधन प्राप्त किया जा सकता है। तभी विद्यार्थी को सफलता मिलती है। इसी प्रकार गुरु भले ही परमात्मा नहीं है, परंतु परमात्मा को प्राप्त करने के लिए गुरु जी को परमात्मा मानना पड़ेगा, तभी साधक मोक्ष प्राप्त करेगा।

वाणी :- कबीर, ते नर अंध हैं, गुरुको कहते और।
हरिके रूठे ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर।।12

❖ **सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी स्वयं तत्वज्ञान बताते हुए कह रहे हैं कि वे व्यक्ति अंधे (ज्ञान नेत्रहीन) हैं जो गुरु को परमात्मा से अन्य केवल सन्त देखते हैं। यदि हरि (प्रभु) रुष्ट हो जाए तो गुरु जी की शरण जाइए। यदि गुरु जी रुठ गए**

तो साधक को ठौर (स्थान) नहीं है जो सुखी कर सके।(12)

वाणी :- कबीर, कबीरा हरि के रूठते, गुरुके शरने जाय।
कहै कबीर गुरु रूठते, हरि नहिं होत सहाय।।13

❖ **सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि यदि भगवान रुष्ट हो गया है तो गुरु जी की शरण में जाओ। गुरुजी आपको नाम दीक्षा तथा आशीर्वाद देकर सुखी कर देगा। यदि गुरु जी ही रुष्ट हो गए तो परमात्मा सहायता नहीं करेगा।(13)**

उदाहरण : जैसे गर्मी के मौसम में कोई व्यक्ति खेतों में कार्य कर रहा है। उसने पीने के लिए पानी का घड़ा भर रखा था। कुछ समय उपरांत घड़े का पानी बार-बार पीने से समाप्त हो गया। जब तक घड़े में जल था तो आप जी को कोई कष्ट महसूस नहीं हो रहा था। जब जल समाप्त हुआ तो प्यास लगी, जान को बन आई। आप जी हैंडपंप या कुएँ पर गये। नल का घड़ा भर लाए तो आपके दुःख का निर्वाण हुआ।

इसी प्रकार जब तक मानव के पूर्व जन्म-जन्मान्तर के पुण्यों से घड़ा रुपी जीवन भरा है तो आप जी को सर्व सुख प्राप्त है। जिस समय पूर्व जन्म के पुण्य समाप्त हो जाते हैं तो पाप कर्मों का दौर प्रारम्भ होता है। उस समय आपका हरि यानि परमात्मा रुष्ट हो गया। जिस समय कोई व्यक्ति चारों ओर से आपदाओं से घिर जाता है तो स्वयं कहा करता है कि मेरा राम रुठ गया। मुझे संकटों ने घेर लिया। ऐसे समय में व्यक्ति यदि पूर्ण सतगुरु जी के चरणों में यानि शरण में चला जाता है तो गुरुजी नाम की दीक्षा तथा आशीर्वाद देकर उसको पुण्य करने की विधि बताकर पुण्य संग्रह कराकर तथा अपना आशीर्वाद देकर उस शरणागत भक्त को सुखी कर देता है। इसलिए कहा है कि हरि रुष्ट हो जाने पर गुरु की शरण में जाने से दुःखी प्राणी सुखी हो जाता है। फिर कहा है कि गुरु तथा गोविन्द दोनों मे से आप किसको चुनोगे? उत्तर भी बताया है कि गुरुजी को चुनेंगे। जैसे एक ओर तो पीने के पानी का नल (हैंडपम्प) खड़ा है, दूसरी ओर जल का भरा घड़ा रखा है। नल तो गुरु जानों तथा घड़े में जल को हरि जानो। यदि आप जी से कहा जाए कि आप दोनों में से किसे चाहते हैं तो बुद्धिमान का उत्तर होगा कि मैं तो नल (हैंडपंप) को लूँगा क्योंकि घड़े का जल तो समाप्त हो जाएगा, परंतु नल तो जल का स्त्रोत है। जल तो हरि अर्थात् प्यासे को सुखी करने वाला है और नल अर्थात् गुरु सुखदाई जल अर्थात् हरि का भण्डार है। यदि गुरु रुठ गया तो हरि कोई मदद नहीं कर सकेगा। इसका भावार्थ है कि यदि नल (हैण्डपंप) खराब हो गया तो जल प्राप्त नहीं होगा। इसलिए कहा है कि हरि रुठे ठौर है, गुरु रुठे नहीं ठौर।।

वाणी :- कबीर, गुरु सो ज्ञान जो लीजिये, शीश दीजिये दान।
बहुतक भोंदू बहि गये, राखि जीव अभिमान।।14

❖ **सरलार्थ :- गुरु जी से उपदेश लेने के पश्चात् समर्पण कर देना चाहिए। मन**

में अभिमान नहीं रखना चाहिए। मन में अभिमान रखकर भक्ति करने का नाटक करने वाले अनेकों मूर्ख अपना मानव जीवन नष्ट कर गए।(14)

वाणी :- कबीर, गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरु दीन्हीं दान।।15

❖ सरलार्थ :- यदि गुरुजी से कोई नाम दीक्षा माँगता है तो उस जैसा बुद्धिमान याचक (मँगता) नहीं और सतगुरु जैसा दानकर्ता (दाता) नहीं जिसने छोटा दान न देकर अनमोल नाम दे दिया जिसके समान तीन लोक भी नहीं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, कहता हूँ कही जात हूँ कहूँ बजाकर ढोल।
श्वांस जो खाली जात है, तीन लोक का मोल।।

यदि साधक सतगुरु से प्राप्त नाम का स्मरण करता है तो उसके एक श्वांस-उश्वांस के नाम के जाप की कीमत तीन लोक (पृथ्वी, पाताल, स्वर्ग लोक) के समान है।(15)

वाणी :- कबीर, तन मन दिया तो भला किया, सिर का जासी भार।
जो कभू कहै मैं दिया, बहुत सहे शिर मार।।16

❖ सरलार्थ :- यदि शिष्य ने गुरु जी को तन-मन-धन समर्पित कर दिया तो अच्छा किया सिर का भार (चिंता) समाप्त हुआ। यदि कभी यह कह दिया कि मैंने इतना दान कर दिया तो आपका दिया दान फल रहित हो जाता है और गुरु के मार्ग से नाम रहित होकर बहुत कष्ट उठाएगा।(16)

वाणी :- कबीर, गुरु बड़े हैं गोविन्द से, मन में देख विचार।
हरि सुमरे सो वारि हैं, गुरु सुमरे होय पार।।17

❖ सरलार्थ :- गुरुजी को परमात्मा से बड़ा बताया है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है :- कबीर, राम कृष्ण से कौन बड़ा उन्हूं भी गुरु किन्हं।
तीन लोक के वे धनी, गुरु आगे आधीन।।

जैसे हम पौराणिक कथाओं के आधार से श्री राम तथा श्री कृष्ण जी को प्रभु मानते रहे तो परमात्मा कबीर जी कहना चाहते हैं कि जब राम-कृष्ण भी गुरु जी के सामने झुके हैं तो गुरु तो गोविन्द (परमात्मा) से बड़े हुए। इस वाणी का यह भी भावार्थ है कि यदि राम-कृष्ण जी ने गुरु धारण करके भक्ति की और स्वर्गलोक जा सके तो सामान्य मानव को भी गुरु बनाना अनिवार्य है।

अब वाणी सँख्या 17 का सरलार्थ करते हैं :- जैसे किसी को प्यास लगी है, घड़ा लेकर पानी की खोज में चला। वह पानी-पानी कर रहा है तो कोई व्यक्ति अपने घड़े से उसको घड़ा भरने को पानी नहीं देगा। इसलिए वह वाँछित वस्तु से खाली रह जाएगा। यदि वह कुआँ या नल पूछेगा-पुकारेगा तो उसको नल मिल जाएगा। फिर कितने ही घड़े भरो। इसी प्रकार यदि व्यक्ति केवल संतों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए जाता है तो जो भक्ति से खाली होते हैं, वे चाहे हाथ से आशीर्वाद भी देते हैं तो भी शरणागत को कोई लाभ नहीं होता। यदि वो भक्ति कर रहा है

तो उसको ज्ञान भी होता है कि अपनी भक्ति कमाई (धन) को आशीर्वाद द्वारा अन्य को नहीं बाँटना चाहिए। उसको नल अर्थात् गुरु धारण करने की राय देता है। इसलिए कहा है कि जो हरि सुमरता है, वह खाली रह जाता है जो गुरु के बताए हरि के नाम को स्मरण करता है, वह मोक्ष प्राप्त करता है।(17)

वाणी :- कबीर, ये तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान।
शीश दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।18

❖ **सरलार्थ :- यदि गुरु भी नहीं मिलते हैं तो यह मानव शरीर विषय-विकारों रुपी विष (जहर) का घर है। गुरु तत्वज्ञान रुपी अमृत की खान अर्थात् घर है जो मानव को विषय-विकारों से हटाकर अमृत ज्ञान से भर देता है। ऐसा तत्वदर्शी सन्त (गुरु) शीश दान करने से भी मिल जाए तो सस्ता ही जानें। शीश दान का भावार्थ है कि गुरु दीक्षा किसी भी मूल्य में मिल जाए। जैसे मीराबाई जी को गुरु बनाने के लिए अपने जीवन को जोखिम में डाला, चाहे जान भी चली जाती, परंतु गुरु रविदास से नाम लिया। फिर परमेश्वर कबीर जी ने उस बाई को सत्यनाम देकर कृत्यार्थ किया। इसलिए कहा है कि यदि पूरे गुरु से दीक्षा लेने में जीवन को भी खतरा (भय) हो तो भी प्राप्त करना चाहिए, यह भी सस्ता सौदा है।(18)**

वाणी :- कबीर, सात द्वीप नौ खण्ड में, गुरु से बड़ा ना कोय।
करता करे ना कर सकै, गुरु करे सो होय।।19

❖ **सरलार्थ :- सूक्ष्मवेद की वाणियों का सरलार्थ किया जा रहा है। सूक्ष्मवेद स्वयं परम अक्षर ब्रह्म ही बताते हैं। कबीर जी परम अक्षर ब्रह्म हैं। कबीर जी स्वयं सतगुरु रुप में इस पृथ्वी पर आए थे। सन् 1398 (विक्रमी संवत्.1453) में उस समय हिन्दू लोग तो श्री राम-श्री कृष्ण जी को गोविन्द मान रहे थे। उस समय परम अक्षर ब्रह्म स्वयं सतगुरु थे, कहा कि आप जिन गोविन्दों की भक्ति करते हो, वे आपका तीन ताप का कष्ट तथा पाप कर्म से उत्पन्न कर्म लेख समाप्त नहीं कर सकते। मैं सतगुरु हूँ। मुझसे दीक्षा लो, जो सुख आपके गोविन्द नहीं दे सकते, वह गुरु प्रदान करेगा। यह गुरु आपके गोविन्द से बड़ा है। गुरु के समान 7 द्वीप तथा नौ खण्ड में कोई बड़ा नहीं है। इसी प्रकार जो संत उसी ज्ञान तथा दीक्षा नाम को जानता है और नामदान करने का अधिकारी है, वह भी वही गुण रखता है जो परमात्मा स्वयं गुरु रुप में आता है।(19)**

वाणी :- कबीर, राम कृष्ण से को बड़ा, तिन्हूं भी गुरु कीन्ह।
तीन लोक के वे धनी, गुरु आगै आधीन।।20

❖ **सरलार्थ :- कबीर जी ने कहा है कि आप जी जो बिना गुरु के फिरते हो, कभी कोई अनुष्ठान करते हो, कभी स्वयं ही कोई नाम जप करते हो, किसी से सुना और कोई व्रत रखने लग जाते हो। आपका कल्याण तब होगा जब आप गुरु धारण करोगे। आप जी श्री राम तथा श्री कृष्ण जी से तो किसी को बड़ा नहीं मानते। उन्होंने भी गुरु बनाये थे। ये तीन लोक के मालिक (धनी) होकर भी गुरु जी के आगे नतमस्तक होते थे। इसलिए सर्व मानव को गुरु बनाना अनिवार्य है तथा**

उसके बताए अनुसार भक्ति करने से ही मोक्ष प्राप्त होगा।(20)

वाणी :- कबीर, हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक।
तासु पटन्तर ना तुलैं, संतन किया विवेक।।21

❖ **सरलार्थ :- बिना गुरु धारण किए परमात्मा की भक्ति चार युग तक करते रहना और गुरु धारण करके एक पल अर्थात् एक नाम का स्मरण भी कर लिया तो उसके समान मनमुखी साधना चार युग वाली नहीं है अर्थात् कम है।(21)**

सतगुरु महिमा (संत गरीबदास जी की वाणी)

वाणी :- सतगुरु दाता हैं कलि माहिं, प्राण उधारण उत्तरे सॉई।(1)
सतगुरु दाता दीन दयालं, जम किंकर के तोरैं जालं।।(2)

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी स्वयं सतगुरु रुप में मिले थे। सत्यपुरुष कबीर जी ऊपर सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान रहते हैं। वहाँ से चलकर अन्य रुप जिन्दा बाबा का बनाकर पृथ्वी पर आए थे, सत्यलोक से उतरकर आए थे। संत गरीबदास जी ने कहा कि सतगुरु ही इस कलयुग में नाम के दाता हैं, वे प्राण उधारण अर्थात् जीवों का कल्याण करने के लिए ऊपर सत्यलोक से उतरे थे। सतगुरु दीन दयाल हैं, अनमोल नाम का दान करते हैं तथा यमकिंकर-काल के दूतों ने जो जीव को रोके रखने के लिए कर्म जाल फैला रखा है, उसको सतगुरु तोड़ देते हैं।(1-2)**

वाणी :- सतगुरु दाता दया करांही, अगम दीप सैं सो चल आहीं।(3)
सतगुरु बिना पंथ नहीं पावै, सतगुरु मिलैं तो अलख लखावैं।।(4)

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु जी ने दया की, वे अगम लोक (यहाँ के लोकों से आगे के) सत्यलोक से चलकर पृथ्वी पर आए। सतगुरु बिना भक्ति का पंथ (मार्ग) नहीं मिलता। सतगुरु मिल जाए तो अलख (जिसे देखा न जा सकने वाला अर्थात् गलती से निराकार कहते हैं, उसको) लखाता (दिखाता) है।(3-4)**

वाणी :- सतगुरु साहिब एक शरीरा, सतगुरु बिना न लागै तीरा।(5)
सतगुरु बान विहंगम मारैं, सतगुरु भव सागर सैं तारैं।।(6)

❖ **सरलार्थ :- जो सतगुरु मुझे मिले थे, मैं, उनका तथा सत्यपुरुष का एक जैसा शरीर है अर्थात् परमात्मा नराकार है तथा जो काशी में जुलाहा कबीर नाम से प्रसिद्ध है। वही स्वयं सत्यपुरुष (साहिब) हैं। ऐसे सतगुरु बिना सत्य भक्ति का तीर नहीं लगता अर्थात् जन्म-मरण सत्य साधना रुपी शस्त्र से नाश किया जा सकता है जो सतगुरु ही प्रदान कर सकता है। सतगुरु विहंगम (जैसे पक्षी एक स्थान से उड़कर दूसरे स्थान पर चला जाता है, उसको विहंगम मार्ग अध्यात्म में कहते हैं।) बाण मारता है अर्थात् ऐसा भक्ति मार्ग दे देता है जिससे साधक पक्षी की तरह उड़कर सत्यलोक चला जाता है। इस विधि से सतगुरु जीव को संसार सागर से पार कर देता है।(5-6)**

वाणी :- सतगुरु बिना न पावै पैण्डा, हूंठ हाथ गढ लीजै कैण्डा।(7)

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु के बिना यह मार्ग (पैण्डा) नहीं मिलता। हूंठ हाथ अर्थात् साढ़े तीन (3½) हाथ (कोहनी से बड़ी ऊँगली के अंत तक की पैमाइश अर्थात् माप को एक हाथ कहते हैं।) हूंठ का अर्थ साढ़े तीन होता है। प्रत्येक मनुष्य के शरीर की लम्बाई उसके साढ़े तीन हाथ की होती है। इसलिए कहा कि इस साढ़े तीन हाथ के शरीररुपी गढ़ अर्थात् किले का इतना केण्डा (माप) है। इसके कमलों को खोलकर मोक्ष प्राप्ति को इस शरीर रुपी कीले को तोड़ना अर्थात् सत्य भक्ति करके पार होने का संकेत किया है।(7)**

वाणी :- सतगुरु दर्द बंद दर्वेसा, जो मन कर है दूर अंदेशा ।।(8)
सतगुरु दर्द बंद दरबारी, उतरे साहिब सुन्य अधारी ।(9)
सतगुरु साहिब अंग न दूजा, ये सर्गुण वै निर्गुन पूजा ।। (10)
गरीब, निर्गुण सर्गुण एक है, दूजा भर्म विकार ।
निर्गुण साहिब आप हैं सर्गुण संत विचार ।।(11)

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु कबीर परमेश्वर जी संत गरीब दास जी के सतगुरु थे। वे सुन्न में सत्यलोक में रहते है। वहाँ से नीचे उतरकर आए। वे हमारे दर्द को समझते हैं। वे सच्चे दरबारी अर्थात् पृथ्वी लोक पर वे अपना वेश तथा घर बदलकर आते हैं। अपने आपको परमेश्वर का दास बताते हैं, संत बताते हैं। संत जो सच्चा है, वह परमेश्वर के दरबार अर्थात् संसद भवन का प्रतिनिधि होता है। वह सच्चे दरबार की सब खबर रखता है। इसलिए कहा है कि सतगुरु हमारे दुःखों से दुःखी होता है। इसलिए यहाँ पृथ्वी पर आकर हमारा कष्ट निवारण करते हैं। सुखी होने की भक्ति विधि बताते हैं। ऐसा सतगुरु जो परमात्मा ही है, वह हमारे दुःख में दुःखी होने वाला दर्वेश (संत) है। सच्चा ज्ञान देकर हमारी सब आध्यात्मिक शंकाओं का समाधान करके सब अंदेशा (शंका) समाप्त कर देता है। वह सच्चा दरबारी अर्थात् परमेश्वर के कार्यालय का धुर का प्रतिनिधि है। ऐसा सतगुरु और साहेब (परमात्मा) एक ही होता है जो पृथ्वी पर प्रकट होकर सच्चा ज्ञान व भक्ति साधना बताता है, वह सगुण है और जो सत्यलोक में है हमें दिखाई नहीं देता, उसने कर्माधार विधान बनाकर छोड़ रखा है। इस आधार से सर्व प्राणी अपने किए कर्मों का फल प्राप्त करते रहते हैं। इसलिए वहाँ सत्यलोक में बैठे परमात्मा को निगुर्ण कहा जाता है। वैसे जब परमात्मा पृथ्वी पर संत (दर्वेश) रुप में आता है, तब वह भक्ति के साथ मन्त्र जाप करने को देकर तथा आशीर्वाद देकर हमारे कर्मों में परिवर्तन कर देता है। वास्तव में सगुण (सरगुण) तथा निर्गुण दोनों एक ही परमात्मा है जो सतगुरु (दर्वेश) रुप में सत्य ज्ञान (तत्वज्ञान) बताकर जाता है। बाद में वे वाणी उसी का स्वरुप होती हैं। तब साहिब (सत्य पुरुष) निर्गुण रुप में अपने सत्यलोक में विराजमान रहता है।(8-9-10-11)**

वाणी :- सतगुरु बिना सुरति नहीं पाटै, खेल मंड्या है सिर के साटै ।(12)

❖ **सरलार्थ :- हमारी सुरति अर्थात् ध्यान संसार के वैभव तथा मोह-ममता में जकड़ी हुई है। सतगुरु के बिना यह सुरति संसार से हटकर परमात्मा में नहीं**

लगती। भक्ति का खेल यदि जीतना है तो सिर का भी साटा (सौदा) करना पड़े तो भी करना चाहिए, तब ही भक्ति के खेल में विजय होगी।(12)

वाणी :- सतगुरु भक्ति मुक्ति के दानी, सतगुरु बिना न छूटै खानी।।(13)

❖ सरलार्थ :- सतगुरु भक्ति कराकर मुक्ति प्रदान करते हैं। वे भक्ति तथा मुक्ति के दाता हैं। सतगुरु के बिना चार खानी (अण्डज, जेरज, उद्भज, श्वेतज, ये चार खानी हैं, इनमें जन्म-मरण होता है।) का यह चक्र नहीं छुटता।

(1) अण्डजः- जो प्राणी अण्डे से उत्पन्न होते हैं जैसे पक्षी, इसको अण्डज खानी कहते हैं।

(2) जेरजः- जो जेर से उत्पन्न होते हैं, जैसे मानव तथा पशु।

(3) उद्भजः- जो स्वयं उत्पन्न होते हैं, जैसे गेहूं में सरसी, ढ़ोरा तथा किसी पदार्थ के खट्टा होने पर उसमें कीड़े उत्पन्न होना, उद्भज खानी है।

(4) श्वेतजः- जो पसीने से उत्पन्न होते हैं जैसे मानव शरीर या पशु के शरीर में ढ़ेरे, जूम, चिचड़ आदि ये श्वेतज खानी कहलाती है। इस प्रकार चार खानी से जीव उत्पन्न होते हैं जो कुल 84 लाख प्रकार की योनि अर्थात् शरीर का जीव धारण करते हैं और जन्मते-मरते हैं। यह चार खानी का संकट सतगुरु बिना नहीं मिट (समाप्त हो) सकता।(13)

वाणी :- मार्ग बिना चलन है तेरा, सतगुरु मेटैं तिमर अंधेरा।(14)

❖ सरलार्थ :- जैसे पक्षी एक स्थान से दूसरे स्थान पर उड़कर जाता है। ऐसे सतगुरु का भक्त विहंगम मार्ग से जाता है। उसका कोई निर्धारित मार्ग नहीं होता। इसको कहा है कि भक्त का मार्ग के बिना प्रस्थान होता है। अज्ञान अंधेरे को सतगुरु समाप्त करते हैं।(तिमिर = अंधेरा)(14)

वाणी :- अपने प्राणदानजो करहीं, तनमन धनसब अर्पण धरहीं।।(15)
सतगुरु संख कला दरसावैं, सतगुरु अर्श विमान बिठावैं।(16)

❖ सरलार्थ :- अपने प्राण (श्वांस) अर्थात् जीवन सतगुरु को जो दान करता है, अपना तन-मन तथा धन सतगुरु को अर्पण (न्योछावर) करता है तो सतगुरु उस साधक को सँखों कला (चमत्कार) दिखाता है तथा अर्श विमान अर्थात् आकाश में जाने के लिए विमान पर बैठाकर सत्यलोक ले जाता है।(15-16)

वाणी :- सतगुरु भौ सागरके कोली, सतगुरु पार निबाहैं डोली।।(17)
सतगुरु मादर पिदर हमारे, भौ सागर के तारन हारे।(18)

❖ सरलार्थ :- सतगुरु संसार सागर से पार करने वाले कोली (खेवट) है। सतगुरु ही हमारी डोली अर्थात् जीवन की गाड़ी (डोली :- जैसे दुल्हन से दुल्हा विवाह कर जिस गाड़ी में बैठाकर ले जाता है, उसे डोली कहते हैं।) को निर्बाध जंगलों से पार करता है। जंगल का अर्थ है सांसारिक व कर्म के संकटों से बचाकर भक्ति कराकर मोक्ष प्राप्ति कराते हैं। सतगुरु हमारे मादर (माता) तथा पिदर (पिता) हैं। सतगुरु भवसागर से पार करने वाले हैं।(17-18)

वाणी :- सतगुरु सुन्दर रूप अपारा, सतगुरु तीन लोक सैं न्यारा।।(19)

सतगुरु परम पदारथ पूरा, सतगुरु बिना न बाजैं तूरा।(20)

❖ **सरलार्थ :- जो सतगुरु मुझे मिले थे, उनके शरीर का तेज बहुत अधिक है। वे बहुत सुंदर हैं और उनकी सुंदरता तीन लोक से भिन्न है। सतगुरु परम सुखदाई वस्तु हैं। सतगुरु बिना संसार में भक्ति का तूरा (बिगुल) नहीं बजता।(19-20)**

वाणी :- सतगुरु आवादान कर देवैं, सतगुरु राम रसायन भेवैं।।(21)

सतगुरु पसु मानस करि डारैं, सिद्धि देय कर ब्रह्म विचारै।।(22)

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु आवादान (जन्म-मरण के चक्र को समाप्त) कर देते हैं। सतगुरु राम रसायन (परमात्मा प्राप्ति की रसायन अर्थात् भक्ति का वैज्ञानिक पदार्थ) भिगोते हैं। रसायन एक ऐसा मिश्रण होता है जो लोहे के कुछ टुकड़े उसमें डाल दिए जाये तो सोना बन जाता है। इसलिए कहा है कि सतगुरु के पास नाम रुपी रसायन है। जिसमें जीव को डाल दिया जाता है जिससे वह हंस (भक्त) बन जाता है। सोना अर्थात् मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। सतगुरु जीव की बुरी आदत छुड़वा देता है जो बुराई करके पशु की तरह जीवन जी रहा होता है। उसको मनुष्य जैसा जीवन जीने की राह दिखाता है। फिर अपने वचन से नाम प्रदान करके अपनी सिद्धि (भक्ति की शक्ति) प्रदान करके ब्रह्म विचारे अर्थात् परमात्मा का चिन्तन-मनन स्मरण करता है।(21-22)**

वाणी :- गरीब, ब्रह्म बिनानी होत हैं सतगुरु शरणालीन।

सूभर सोई जानिये, सब सेती आधीन।।(23)

❖ **सरलार्थ :- सन्त गरीबदास जी ने कहा है कि जो सतगुरु की शरण में आ जाता है, वह ब्रह्म (परमात्मा) जैसे गुणों जैसे गुण युक्त हो जाता है, परंतु सूभर (अच्छी भक्ति से भरपूर) वही है जो अहंकार नहीं करता अर्थात् सबके साथ आधीन भाव से रहता है।(23)**

वाणी :- सतगुरु जो चाहे सो करही, चौदह कोटि दूत जम डरहीं।(24)

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास ने कहा है कि मुझे जो सतगुरु जिन्दा बाबा के रुप में मिले थे, वे पूर्ण परमात्मा हैं। वे जो चाहे कर सकते हैं, उनसे चौदह (14) करोड़ यम के दूत डरते हैं।(24)**

वाणी :- ऊत भूत जम त्रास निवारे, चित्र गुप्त के कागज फारै।(25)

❖ **सरलार्थ :- सतगुरु ऊत-भूत तथा जम (जम=काल) की त्रास (पीड़ा=संकट) को समाप्त कर देता है। ऊत-भूत उस को कहते हैं जो व्यक्ति निःसंतान मर जाता है, उसको ऊत (बिना औलाद का) कहते हैं। फिर वह भूत बन जाता है। उसके हिस्से को उसके भाई बाँट लेते हैं। वह ऊत-भूत अपने भाईयों को तंग करता है। उनसे अपने हिस्से को लेने के लिए उनकी हानि करता है। वह ऊत-भूत किसी भी सेवड़े या तान्त्रिक से काबू नहीं आता, परंतु सतगुरु कबीर जी या उनके प्रतिनिधि संत से डरकर स्थान छोड़ जाता है। सतगुरु कबीर जी चित्रगुप्त (पौराणिक कथा है कि जीव के साथ चित्र तथा गुप्त नाम के दो फरिश्ते रहते हैं। वे जीव के सर्व कर्म लिखते रहते हैं। जिन कर्मों के आधार से जीव कर्म भोग भोगता है।) के खराब**

कर्म (लेख) के कागज फाड़ देता है। जिस कारण से जीव को पाप कर्मों का संकट भोगना नहीं पड़ता अर्थात् साधक सुखी हो जाता है।(25)

''साहेब कबीर जी की वाणी से सतगुरु महिमा''

सूक्ष्मवेद (तत्वज्ञान) से स्वंय परमात्मा अपने मुखकमल से बोलते हैं। विस्तार के साथ यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान कराते हैं। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में भी कहा है कि ब्रह्मणः मुखे = सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी में यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी विस्तार के साथ कही गई है। वही ज्ञान कबीर वाणी है। कबीर जी ने गुरु की महिमा बताई है :-

वाणी :- गुरु ते अधिक न कोई ठहरायी। मोक्षपंथ नहिं गुरु बिनु पाई।।(1)
राम कृष्ण बड़ तिहुँपुर राजा। तिन गुरु बंदि कीन्ह निज काजा।।(2)

❖ सरलार्थ :- गुरु से अधिक किसी को नहीं मानें। गुरु के बिना मोक्ष का रास्ता (भक्ति विधि) प्राप्त नहीं हो सकती। उदाहरण बताया है कि श्री राम तथा श्री कृष्ण जी को तो आप हिन्दू भगवान मानते हैं। इनसे बड़े तो आप नहीं हैं। जब श्री राम तथा श्री कृष्ण ने भी गुरु बनाए और उनको अर्थात् अपने गुरुदेवों को नमन किया। उनके सामने एक भक्त की तरह आधीन बनकर रहे। उनकी आज्ञा का पालन किया तो आप जी को भी गुरु बनाकर उपदेश दीक्षा लेकर साधना करनी चाहिए। श्री राम तथा श्री कृष्ण तो तीन लोक में बड़े हैं। उन्होंने भी गुरु की बंदि (प्रणाम) करके अपने निजी कार्यों को किया, उनकी आज्ञा मानी।(1-2)

वाणी :- गेही भक्ति सतगुरु की करहीं। आदि नाम निज हृदय धरहीं।।(3)
गुरु चरणन से ध्यान लगावै। अंत कपट गुरु से ना लावै।।(4)

❖ सरलार्थ :- ग्रहस्थी व्यक्ति को गुरु धारण करके गुरुजी के बताए अनुसार भक्ति करनी चाहिए तथा आदि नाम जो वास्तविक तथा सनातन साधना के नाम मन्त्र हैं, उनको हृदय से स्मरण करना चाहिए। गुरुजी के चरणों में ध्यान रखें अर्थात् गुरु जी को किसी समय भी दिल से दूर न करें तथा अंत = अर्थात् अन्तः करण में कभी भी गुरु से छल-कपट नहीं रखना चाहिए।(3-4)

वाणी :- गुरु सेवा में फल सर्बस आवै। गुरु विमुख नर पार न पावै।। (5)
गुरु वचन निश्चय कर मानै। पूरे गुरु की सेवा ठानै।।(6)

❖ सरलार्थ :- गुरुजी की सेवा में सब सुख-भक्ति आदि प्राप्त होते हैं तो गुरु धारण करके फिर गुरुजी से दूर हो जाते हैं। गुरुजी में कोई दोष निकालते हैं। जो भक्ति नहीं करते रहते हैं या भक्ति त्याग देते हैं, गुरु विमुख कहे जाते हैं। वे व्यक्ति कभी संसार सागर से पार नहीं हो सकते। पूर्ण गुरु से दीक्षा लेकर गुरु सेवा करते हुए साधना करनी चाहिए और गुरुजी के वचनों का पालन निश्चय अर्थात् विश्वास के साथ करें।(5-6)

वाणी :- गुरुकी शरणा लीजै भाई। जाते जीव नरक नहीं जाई।।(7)
गुरु कृपा कटे यम फांसी। विलम्ब ने होय मिले अविनाशी।।(8)

❖ सरलार्थ :- हे भाई! हे मानव! गुरुजी की शरण प्राप्त कर, जिस` जीव नरक में नहीं जाएगा। या तो पार हो जाएगा या पुनः मानव जन्म (स्त्री-पुरुष) का प्राप्त करेगा। मानव जन्म मिलेगा तो फिर सतगुरु भी मिलेगा। इस प्रकार गुरु बनाकर भक्ति करने से मोक्ष मिलता है। गुरुजी की कृपा से यम द्वारा लगाई गई कर्मों का बन्धन गले की फाँस कट जाती है, अविलम्ब अविनाश परमात्मा (सत्य साहेब) मिल जाता है।(7-8)

वाणी :- गुरु बिनु काहु न पाया ज्ञाना। ज्यों थोथा भुस छड़े किसाना।।(9)

❖ सरलार्थ :- गुरु जी के बिना किसी को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं होता। जो नकली गुरु से ज्ञान प्राप्त करके शास्त्रविरुद्ध साधना करते हैं या मनमुखी साधना स्वयं एक-दूसरे को देखकर करते हैं, वे तो ऐसा कर रहे हैं कि जैसे मूर्ख किसान थोथे भूस अर्थात् धान की पराल (भूसा) या सरसों का झोड़ा (भूसा) जिसमें से चावल या धान तथा सरसों निकल गयी हो और भूखा पड़ा हो, इस भूसे को कूट रहा हो या छिड़ रहा हो। छिड़ना होता है पैरों से स्वयं या पशुओं से मिली सरसों या धान पर चलाकर धान या सरसों निकालते हैं। वर्तमान में धान को पटक-पटककर धान तथा भूसा भिन्न-भिन्न करते हैं, परन्तु केवल भूस को छिड़कने से धान-सरसों प्राप्त नहीं होती। प्रयत्न मेहनत उतनी ही करता है जो व्यर्थ रहती है और कुछ हाथ नहीं लगता। ठीक उसी प्रकार पूर्ण गुरु से दीक्षा तथा ज्ञान प्राप्त किए बिना किया गया भक्ति कर्म उसी प्रकार व्यर्थ है जैसे भूसा छिड़कने वाले को कुछ भी प्राप्ति नहीं होती। श्री मद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 32 से 41 तक भी यही प्रमाण है कि यथार्थ भक्ति ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान को यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान का विस्तार से ज्ञान (तत्वज्ञान = सूक्ष्मवेद) ब्रह्मणः मुखे अर्थात् सच्चिदानन्द घन ब्रह्म के मुख कमल से बोली अमृतवाणी में कहा गया है। उसे जानकर तू सब पापों से मुक्त हो जाएगा।(गीता अध्याय 4 श्लोक 32)

हे अर्जुन! द्रव्यमय यज्ञ की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ (तत्वज्ञान) श्रेष्ठ है। सर्व कर्म जो शास्त्र विरुद्ध साधना द्वारा किए जाते है, वे सम्पूर्ण ज्ञान में समाप्त हो जाते हैं। भावार्थ है कि शास्त्रों के अनुकूल ज्ञान (तत्वज्ञान) न होने के कारण लोकवेद (दंत कथा) के आधार से कोई कम्बल दान कर देता है, कोई प्याऊ लगवा देता है, कोई भोजन-भण्डारा (लंगर) लगवा देता है, कोई सवा मणी (50 सेर मिठाई बाँटने का धर्म) लगाते हैं। यदि तत्व ज्ञान नहीं है तो यह द्रव्यमय यज्ञ (जो धन से होने वाले धार्मिक अनुष्ठान जो वे बताते हैं) की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ अर्थात् जो धार्मिक यज्ञ हम कर रहे हैं, ये शास्त्रनुकूल भी है कि नहीं, यह ज्ञान होना श्रेष्ठ है। उसके पश्चात् धार्मिक कर्म करना उचित है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 33)

जो ज्ञान गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में स्वयं परमेश्वर बताते हैं, वह तत्वज्ञान है। उस ज्ञान को तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत् प्रणाम करने से नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्वदर्शी सन्त जो परमात्म तत्व को भली-भांति जानने वाले हैं, तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे। (गीता अध्याय 4

श्लोक 34)

जिस तत्वज्ञान को जानकर फिर तू इस प्रकार मोह को नहीं प्राप्त होगा तथा हे अर्जुन! जिस ज्ञान के द्वारा तू प्राणियों को पूर्ण रूप से पूर्ण परमात्मा जो आत्मा के साथ अभेद रूप में रहता है, उस पूर्ण परमात्मा में और पीछे मुझे देखेगा कि मैं काल हूँ, यह जान जाएगा।(गीता अध्याय 4 श्लोक 35)

यदि तू सब पापियों से भी अधिक पाप करने वाला है, तो भी तू ज्ञान रुपी नौका द्वारा सम्पूर्ण पाप समुद्र से भली-भाँति तर जाएगा।(गीता अध्याय 4 श्लोक 36)

हे अर्जुन! जैसे अग्नि घास को जला देती है, वैसे ही तत्वज्ञान में बताई शास्त्रानुकूल भक्ति की साधना पाप कर्मों को जलाकर भस्म कर देती है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 37)

सूक्ष्मवेद में भी कहा है कि :-

वाणी :- गुरु बिन वेद पढ़े जो प्राणी। समझे ना सार रहे अज्ञानी।।

जब ही सत्य नाम हृदय धरो, भयो पाप को नाश।
जैसे चिंगारी अग्नि की, पड़ी पुराने घास।।

❖ सरलार्थ :- इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं है। जिस ज्ञान की साधना कर्मयोग द्वारा (कर्म भी करो तथा भक्ति भी करो, इस प्रकार) शुद्ध अन्तःकरण वाला अपने आप ही कुछ समय में मोक्ष प्राप्ति कर लेता है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 38)

अपनी इन्द्रियों का संयम करके तत्वज्ञान द्वारा श्रद्धावान मनुष्य सत्य भक्ति ज्ञान को प्राप्त है। उस सत्य साधना के ज्ञान को प्राप्त होकर अविलम्ब अर्थात् शीघ्र ही परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 39)

विवेकहीन, श्रद्धाहीन और संशययुक्त मनुष्य कभी भी भ्रमित होकर विनाश को प्राप्त हो जाएगा अर्थात् जिसको पूर्ण ज्ञान नहीं होता, वह किसी के द्वारा भ्रमित होकर स्वयं साधना त्यागकर शास्त्रविरुद्ध साधना करके अपना अनमोल मानुष जन्म नष्ट कर जाएगा। संशययुक्त आत्मा को न तो इस लोक में सुख है, न परलोक में क्योंकि शास्त्रानुकूल साधना से सुख होता है, उससे संसार में भी सुख मिलता है तथा मृत्यु उपरान्त सत्यलोक में भी सुखी होता है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 40)

सूक्ष्मवेद में कहा है :-

कबीर, ज्ञान सम्पूर्ण हुआ, नहीं हृदय नहीं छिदाया।
देखा देखी भक्ति का रंग नहीं ठहराया।।
कबीर, मां मूडूं उस सन्त की, जिससे संशय न जाय।
काल खावें थोड़े संशय सबहन कूं खाय।।

हे धनंजय! जिस साधक ने तत्वज्ञान के आधार से सर्व शास्त्रविधिविरुद्ध भक्ति कर्मों को त्याग दिया है और जिसने तत्वज्ञान से सब संशयों को नाश कर दिया है। उस आत्मज्ञानी को कर्म नहीं बाँधते।(गीता अध्याय 4 श्लोक 41)

इसलिए अपने हृदय में अज्ञानजनित इस संशय को तत्वज्ञान रुपी तलवार से काटकर (योगम्) भक्ति साधना में (उत्तिष्ठ) खड़ा होना अर्थात् जाग जा (आतिष्ठ) और इस भक्ति में स्थित हो जा।(गीता अध्याय 4 श्लोक 42)

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि जब तक पूर्ण सन्त (सतगुरु) नहीं मिलता, तब तक साधक का कल्याण सम्भव नहीं है।(9)

वाणी :- तीर्थ व्रत अरू सब पूजा। गुरु बिन दाता और न दूजा।।(10)
नौ नाथ चौरासी सिद्धा। गुरु के चरण सेवे गोविन्दा।।(11)

❖ सरलार्थ :- चाहे कोई तीर्थ भ्रमण करता है, चाहे व्रत करता है, चाहे स्वयं या नकली गुरुओं से दीक्षा लेकर पूजा भी करता है, वह कोई लाभ नहीं देता। गुरु (जो तत्वदर्शी है) जो सत्य साधना देते हैं जिससे इस लोक में तथा परलोक में सर्व सुख प्राप्त होता है। इसलिए कहा है कि गुरु के समान दाता (सुख व मोक्ष दाता) नहीं है। तीर्थ तथा व्रत तथा नकली गुरुओं द्वारा बताई भक्ति सुखदाई नहीं है। जितने भी महापुरुष या अवतार हुए हैं, उन्होंने गुरु बनाए हैं चाहे वो नाथ हुए हैं, चाहे 84 सिद्ध तथा अवतारधारी गोविन्द (श्री राम तथा श्री कृष्ण) हुए हैं, सबने गुरु धारण करके उनकी चरण सेवा की थी।(10-11)

वाणी :- गुरु बिन प्रेत जन्म सब पावै। वर्ष सहंस्र गरभ सो रहावै।।(12)

❖ सरलार्थ :- जो साधक गुरु से दीक्षा न लेकर अपने आप साधना करते हैं, वे प्रेत योनि को प्राप्त होते हैं तथा हजारों वर्षों तक जन्म-मरण के चक्र में कष्ट उठाते रहते हैं। जिस कारण से सहंस्त्र (हजार) वर्ष तक गर्भ का कष्ट उठाते हैं।

उदाहरण : राधास्वामी पंथ के प्रवर्तक श्री शिवदयाल सिंह सेठ जी आगरा शहर के मोहल्ला पन्नी गली (उत्तर प्रदेश) में रहा करते थे। उनके जीवन चरित्र में लिखा है कि श्री शिवदयाल सिंह सन् 1961 से 1878 (17) वर्ष तक गुरु दीक्षा देते थे, परंतु उनका कोई गुरु नहीं था।

1878 में उनकी मृत्यु हो गई थी। श्री शिवदयाल सिंह जी हुक्का (तम्बाकु) पीते थे। उनकी एक बुक्की नाम की परम शिष्या (चेली) थी। मृत्यु के एक महीने पश्चात् श्री शिवदयाल सिंह जी प्रेत बनकर बुक्की के शरीर में प्रवेश करके अपने अन्य शिष्यों से बातें करते थे। अपने भाई सेठ प्रताप सिंह के प्रश्नों का उत्तर देते थे। पहले बुक्की हुक्का नहीं पीती थी, परंतु श्री शिवदयाल जी प्रेत बनकर बुक्की में प्रवेश होने के पश्चात् बुक्की हुक्का पीने लगी अर्थात् श्री शिवदयाल सिंह जी (राधास्वामी पंथ का प्रवर्तक) प्रेत बनकर बुक्की के शरीर में प्रवेश करके हुक्का पीता था। उसी पलंग (चारपाई) पर बैठकर हुक्का पीता था, जिस पर मृत्य से पहले बैठा करता था। यह प्रकरण पुस्तक जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज में लिखा है जो आगरा से प्रकाशित है। जिसमें प्रताप सिंह सेठ के विषय में लेख है जो श्री शिवदयाल जी के छोटे भाई थे। परमात्मा कबीर जी की वाणी सिद्ध हुई।(12)

वाणी :- गुरु बिन दान पुण्य जो करई। मिथ्या होय कबहूँ नहीं फलहीं।।(13)

गुरु बिनु भर्म न छूटे भाई ।कोटि उपाय करे चतुराई ।।(14)

❖ **सरलार्थ :- पहले गुरु से ज्ञान समझें, फिर दीक्षा लेकर गुरुजी के बताए अनुसार दान-पुण्य करने से आध्यात्मिक सफलता मिलती है। गुरु बिन दान आदि कर्म करने से कोई लाभ नहीं होता। गुरु के बिना भ्रम (शंका) का नाश नहीं हो सकता चाहे व्यक्ति कितनी ही चतुरता करता रहे।(13-14)**

गुरु के मिले कटे दुःख पापा । जन्म जन्म के मिटें संतापा ।।(15)
गुरु के चरण सदा चित्त दीजै । जीवन जन्म सफल कर लीजै ।। (16)

❖ **सरलार्थ :- गुरु मिलने पर ही सर्व दुःख जो पाप के कारण होता है, वह समाप्त हो जाता है। जन्म-जन्म के संताप (दुःख) समाप्त हो जाते हैं। सदा गुरुजी के चरणों में ध्यान रखें। इस प्रकार साधना करके अपना मानव जीवन सफल करना चाहिए।(15-16)**

वाणी :- गुरु भगता मम आतम सोई । वाके ह्रदय रहूँ समोई ।।(17)
अड़सठ तीर्थ भ्रम भ्रम आवे । सो फल गुरु के चरनों पावे ।।(18)

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा ने स्वयं बताया है कि गुरु के भक्त मेरी आत्मा हैं, शेष काल के जाल में फँसकर काल की आत्मा हैं। जो मेरे कृपापात्र सन्त को गुरु बनाए हैं, मै उसके ह्रदय में रहता हूँ अर्थात् मेरा आशीर्वाद सदा गुरु भक्त पर बना रहता है।**

अड़सठ प्रकार के तीर्थ स्थान माने गए हैं। पुराणों में कहा है कि अड़सठ तीर्थों का भ्रमण करने से मोक्ष प्राप्त होता है। परमेश्वर ने कहा है कि वैसे तो तीर्थ भ्रमण से कोई लाभ नहीं होता, हानि होती है क्योंकि तीर्थों पर जाने का निर्देश श्रीमद्भगवत गीता में नहीं है। जिस कारण से शास्त्रविरुद्ध साधना होने के कारण व्यर्थ है। (प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में) फिर भी यदि आप मानते हैं कि 68 तीर्थों पर जाने से मोक्ष लाभ है तो 68 तीर्थों का भ्रमाण करने में पुराने समय में लगभग एक वर्ष लगता था। वर्तमान में तीन महीने तथा तीन-चार लाख रुपये का गाड़ी खर्च होता है। 68 तीर्थों का फल पूर्ण सन्त के चरणों की धूल (चरणामृत) से ही आप जी को प्राप्त हो जाएगा, परंतु गुरु पुरा हो। इसलिए गुरु की महिमा अपार तथा लाभदायक है।(17-18)

वाणी :- दशवाँ अंश गुरु को दीजै । जीवन जन्म सफल कर लीजै ।।(19)
गुरु बिन होम यज्ञ नहिं कीजे । गुरु की आज्ञा माहिं रहीजे ।।(20)

❖ **सरलार्थ :- अपनी कमाई का दसवां अंश अर्थात् 10% प्रतिशत दान गुरुजी को करें और अपना मानव जीवन सफल करें। गुरु के बिना कोई भी धार्मिक अनुष्ठान (होम यज्ञ = हवन यज्ञ आदि) नहीं करना चाहिए। गुरुजी की आज्ञा का सदा पालन करना चाहिए।(19-20)**

वाणी :- गुरु सुरतरु सुरधेनु समाना । पावै चरन मुक्ति परवाना ।।(21)
तन मन धन अरपि गुरु सेवै । होय गलतान उपदेशहिं लेवै ।।(22)

❖ **सरलार्थ :- पौराणिक कथाओं में वर्णन है कि स्वर्ग में कई सुरतरु (देववृक्ष) हैं।**

वृक्ष के नीचे बैठकर मन इच्छा वस्तु प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार स्वर्ग में सुरधेनु (कामधेनु = देवताओं की गाय) है। जिसके पास जाकर जो भी मनोकामना करते हैं, वह पूरी कर देती है। परमात्मा कबीर जी कहते हैं कि आप के सुरतरु तथा सुरधेनु (कामधेनु) तो स्वर्ग में हैं। आपकी साधना शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण होने से व्यर्थ है। (प्रमाण : गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में) आप जी स्वर्ग ही नहीं जा सकते। जो सुविधा पुराणों में बताई है, वे स्वर्ग में ही मिलती हैं। फिर पृथ्वी पर तो साधक भूखा-प्यासा तथा दुःखी ही रहा। गुरु (पूर्ण सतगुरु = तत्वदर्शी सन्त) तो पृथ्वी पर सुरतरु (देव वृक्ष) तथा देवधेनु (काम धेनु) अर्थात् सुरधेनु है जो इस लोक में तथा परलोक में दोनों स्थानों पर सर्व सुख प्रदान करता है। गुरु के चरणों में मुक्ति का प्रवाना अर्थात् मोक्ष मन्त्र भी प्राप्त होता है।

गुरु जी का उपदेश उस समय लेना चाहिए जब आप जी उनके ज्ञान से पूर्ण रुप से संतुष्ट हो जायें। फिर आप जी गलताना अर्थात् गुरुजी पर मस्त होकर न्यौछावर हो जाओगे। इसलिए कहा है कि गुरुजी से गलताना अर्थात् पूर्ण रुप से समर्पित होकर मस्त होकर उपदेश लें और अपना तन-मन तथा धन भी सतगुरु को अर्पण कर दें अर्थात् सब कुछ परमात्मा का है, यह भाव मन में उठे।(21-22)

वाणी :- सतगुरुकी गति हृदय धारे। और सकल बकवाद निवारै।।(23)
गुरु के सन्मुख वचन न कहै। सो शिष्य रहनिगहनि सुख लहै।।(24)

❖ सरलार्थ :- जो ज्ञान सतगुरु जी बतायें, उसी के अनुसार भक्ति की साधना करनी चाहिए तथा अन्य जो व्यर्थ की भक्ति साधना तथा ज्ञान व नाचना-गाना, माँस-मदिरा सेवन, तम्बाकू सेवन, चोरी-जारी दुराचार करना आदि-आदि छोड़ दे। गुरु जी से वाद-विवाद नहीं करना चाहिए। वही शिष्य रहनी (जो वस्तु गुरु ने मना की है, उनका परहेज रखना) गहनी (गूढ़ ज्ञान तथा उस प्राप्त सुख) का आनन्द प्राप्त करता है। भावार्थ है कि जो शिष्य गुरु सामने मर्यादा में रहता है, वह भगवान की भक्ति का पूर्ण लाभ प्राप्त करता है।(23-24)

वाणी :- गुरु से शिष्य करै चतुराई। सेवा हीन नर्क में जाई।।(25)
शिष्य होय सरबस नहीं वारै। हिये कपट मुख प्रीति उचारे।।(26)
जो जिव कैसे लोक सिधाई। बिन गुरु मिले मोहे नहिं पाई।।(27)

❖ सरलार्थ :- जो शिष्य गुरु के साथ हेराफेरी (चतुराई) करता है। उसकी सेवा (भक्ति) नष्ट हो जाती है। वह नरक का अधिकारी होता है। जो दीक्षा लेने के पश्चात् भी सतगुरु के प्रति समर्पित नहीं होता और मुख से प्यारा बोलता है और दिल में गुरु के प्रति दोष रखता है। वह भी सतलोक कैसे जा सकता है? क्योंकि गुरु के मिले बिना अर्थात् गुरु के ऊपर पूर्ण विश्वास तथा श्रद्धा लगाए हुए बिना मुझे (परमात्मा को) प्राप्त नहीं हो सकता।(25-26-27)

वाणी :- गुरु से करै कपट चतुराई। सो हंसा भव भरमें आई।।(28)
गुरु से कपट शिष्य जो राखै। यम राजा के मुगदर चाखै।।(29)

❖ सरलार्थ :- जो हंसा (भक्त) गुरु जी से कपट युक्त व्यवहार करता है, वह हंस

(भक्त) संसार में पुनः पशु-पक्षियों के जीवन प्राप्त करके कष्ट उठाता भटकता रहता है। जो शिष्य गुरु से कपटयुक्त बर्ताव करता है, मृत्यु उपरान्त यमराजा (यमराज) उसको मुगदरों (मोटे लट्ठों से) से पीटता है।(28-29)

वाणी :- जो जन गुरु की निंदा करई। सूकर श्वान गरभमें परई।।(30)
गुरु की निंदा सुने जो काना। ताको निश्चय नरक निदाना।।(31)
अपने मुख निंदा जो करई। परिवार सहित नर्क में पड़ही।।(32)

❖ **सरलार्थ :-** जो शिष्य गुरु जी की निन्दा करता है, उसकी भक्ति समाप्त हो जाती है। फिर शुकर (सूअर) तथा श्वान (कुत्ते) के जन्म प्राप्त करता है। जो शिष्य गुरु जी की निन्दा अपने कानों से सुनता है उसको नरक प्राप्ति होती है, यह निश्चय कर मानें।

❖ **स्पष्टीकरण :** यदि कोई व्यक्ति आपके गुरूदेव जी की निन्दा कर रहा है और आप उसके पास बैठे हैं। आपको लग रहा है कि यह व्यक्ति जो कह रहा है, हो सकता है यह दोष गुरुजी में हो तो आपने वह निन्दा अपने कानों सुन ली। आपकी भक्ति नष्ट हो गई। उस शिष्य को चाहिए अपनी गलती माने और पुनः उपदेश प्राप्त करे, फिर किसी सिरफिरे की बकवास सुनकर गुरु में दोष न देखे। यदि कोई व्यक्ति आपके गुरु जी की निन्दा करता है और आप वहाँ बैठे हो। आपको लगे कि यह व्यर्थ की बकवास कर रहा है। हमसे अधिक यह व्यक्ति हमारे गुरुजी के विषय में कैसे जान सकता है तो उस शिष्य ने निन्दा अपने कानों नहीं सुनी। उस शिष्य की भक्ति सुरक्षित है। वह पक्का भक्त होगा।

जो शिष्य होकर अपने मुख से गुरु जी की निन्दा करता है तो वह पूरे परिवार सहित नरक में गिरता है क्योंकि उससे सुनी मिथ्या बातों को उसका परिवार जगह-जगह जाकर सुनाएगा। जिस कारण से अन्य भोली-भाली जनताजन भी उस सन्त से घृणा (नफरत) करने लगेंगे और उस परम सन्त से दीक्षा न ले सकेंगे। जिस कारण से अनमोल जीवन नष्ट कर जायेंगे। अन्य व्यक्तियों को परमात्मा से दूर करने का पाप भी उस परिवार को लगेगा। जिस कारण से वह गुरु की निन्दा करने वाला शिष्य अपना जीवन तो नष्ट करता ही है, साथ में अपने परिवार को भी नरक का अधिकारी बनाता है।(30-31-32)

वाणी :- गुरु को तजै भजै जो आना। ता पशुवा को फोकट ज्ञाना।।(33)
गुरु से बैर करै शिष्य जोई। भजन नाश अरु बहुत बिगोई।।(34)

❖ **सरलार्थ :-** जो शिष्य अपने गुरु से अधिक किसी अन्य सन्त या भक्त में आस्था रखता है तो उस पशु को कोई ज्ञान नहीं है क्योंकि गुरु के प्रति परमात्मा जैसा भाव रहना चाहिए। हमने सत्यलोक में भी यही गलती की थी। हम अपने मालिक को छोड़कर इस काल ब्रह्म में आस्था रखने लगे थे। जिस कारण से हम पतिव्रत धर्म (एक मालिक के अतिरिक्त अन्य को न चाहने वाली स्त्री को पतिव्रता कहा जाता है) से गिर गए और परमेश्वर जी ने हमारे को दिल से त्याग दिया और हम इस गन्दे लोक में आ गिरे। इसी प्रकार गुरुजी से अधिक किसी को स्थान अपने

हृदय में न दें, सत्कार सबका करें। जो शिष्य गुरुजी से शत्रुता करता है। उसकी भक्ति नष्ट हो जाती है और भी बहुत विनाश होता है।(33-34)

वाणी :- पीढ़ी सहित नरकमें परिहै। गुरु आज्ञा शिष्य लोप जो करि है।।(35)
चेलो अथवा उपासक होई। गुरु सन्मुख ले झूठ संजोई।।(36)
निश्चय नर्क परै शिष्य सोई। वेद पुराण भाषत सब कोई।।(37)

❖ **सरलार्थ :- जो शिष्य गुरु की आज्ञा को अनदेखा करता है। वह पीढ़ी सहित नरक में गिरता है अर्थात् पूरे वंश को डुबो देता है। चेला (जो घर त्यागकर संत वेश धारण करके गुरु के साथ आश्रम में रहता है। उसको सन्तजन चेला कहते हैं) हो अथवा उपासक (जो ग्रहस्थ आश्रम में रहकर साधना करता है व दीक्षा लेकर गुरुजी के बताए भक्ति कर्म को करता है, उसे उपासक कहा है) हो, जो गुरुजी के आगे झूठ बोलता है। वह शिष्य नरक में अवश्य गिरता है। यह प्रमाण वेदों तथा पुराणों में भी लिखा है अर्थात् वेद-पुराण भी यही कहते (भाषत) हैं।(35-36-37)**

वाणी :- सन्मुख गुरु की आज्ञा धारै। अरू पिछे तै सकल निवारै।।(38)
सो शिष्य घोर नर्कमें परिहै। रुधिर राध पीवै नहिं तरि है।।(39)
मुख पर वचन करै परमाना। घर पर जाय करै विज्ञाना।।(40)
जहाँ जावै तहाँ निंदा करई। सो शिष्य क्रोध अग्नि में जरई।।(41)
ऐसे शिष्य को ठाहर नाहीं। गुरु विमुख लोचत है मनमाहीं।।(42)
बेद पुराण कहै सब साखी। साखी शब्द सबै यों भाखी।।(43)
मानुष जन्म पाय कर खोवै। सतगुरु विमुखा जुगजुग रोवै।।(44)

❖ **सरलार्थ :- गुरुजी के सामने तो हाँ जी-हाँ जी करता है और घर पर जाकर सब व्यर्थ की बातें बताता है। वह शिष्य महाकष्टदायक घोर (भंयकर) नरक में गिरता है। इस नरक कुण्ड में रुधिर (खून) तथा राध (मवाद) पीता है, कभी भवसागर से पार नहीं हो सकता। गुरु के सामने तो कहता है कि गुरुजी आप सत्य कह रहे हैं, परंतु घर पर जाकर गुरु की बातों में त्रुटि देखता है। अपने को विद्वान सिद्ध करता है। जहाँ भी जाता है, गुरुजी की निन्दा करता है। वह शिष्य क्रोध रुपी अग्नि में सदैव जलता रहता है। ऐसे शिष्य को कोई ठाहर (सहारा) परमेश्वर का नहीं मिलता। गुरुजी से विमुख (गुरु से उल्टा चलना) मन-मन में लोचता (तड़फता) रहता है। वेदों के मन्त्र तथा पुराणों के श्लोक भी यही कहते हैं तथा महापुरुषों की वाणी साखी (दोहे) तथा शब्द भी यही कहते हैं। जो शिष्य गुरु से विमुख हो जाता है, वह व्यक्ति युगों-युगों रोता रहता है। अनमोल मनुष्य जीवन को प्राप्त करके गुरु से दूर होकर अर्थात् गुरु की निन्दा करके गुरुद्रोही होकर नष्ट कर देता है।(38-39-40-41-42-43-44)**

वाणी :- गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जे पग आवै बीर।
चौरासी निश्चय पड़े, सतगुरु कहैं कबीर।।(45)

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने अपने गुरु भगवान कबीर जी को साक्षी बनाकर कहा है कि यदि गुरुद्रोही की पैड़ पर यदि किसी भाई का पैर भी रखा**

जाता है तो वह 84 लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाएगा। फिर गुरुद्रोही की तो और भी बुरी दशा होगी। पैड़ (पैर का मिट्‌टी पर चिन्ह) पर किसी का पैर रखा जाता है और वह भी 84 लाख योनियों में भटकता है तो जो गुरु के साथ शत्रुता करता है या निन्दा करता है, वह गुरु द्रोही कहलाता है, उसकी कितनी बुरी दशा होगी? यह आसानी से जान सकते हैं।

भावार्थ : पैड़ पर पैर रखा जाना का अर्थ केवल यह नहीं है कि किसी रास्ते से चला जा रहा हो और उसके पैर के चिन्ह हो, उन पर किसी का पैर रखा जाने से नरक में व 84 लाख योनियों में गिर जाएगा। नहीं, भावार्थ यह है कि गुरुद्रोही गुरु जी की निन्दा कर रहा है और अन्य शिष्य उसकी हाँ में हाँ मिलाए, उसने गुरुद्रोही की पैर पर पैर रख दिया। उस शिष्य का नाम खण्डित हो जाएगा, भक्ति नष्ट हो जाएगी। जिस कारण से गुरुद्रोही की हाँ में हाँ मिलाने वाला 84 लाख प्रकार की योनियों में कष्ट उठाता है और गुरुद्रोही को तो कितना कष्ट उठाना पड़ेगा, उसका तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता।(45)

वाणी :- कबीर, जान बूझ साची तजै, करैं झूठे से नेह।
जाकि संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।।(46)

❖ सरलार्थ :- सूक्ष्मवेद में परमेश्वर कबीर जी की वाणी में भी कहा है कि शिष्य वही होता है जो गुरुजी को तथा उनके भक्ति ज्ञान को उत्तम मानकर दीक्षा लेता है। फिर लालच या अभिमानवश गुरु जी को त्यागकर चला आता है जहाँ उसको सम्मान मिलता है। जो कुछ दान कर देता है, नकली गुरु उसको विशेष सम्मान देते हैं। जिस कारण से वह मंदभागी व्यक्ति गुरु जी को त्यागकर झूठे गुरु तथा झूठे ज्ञान को स्वीकार कर लेता है। परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि हे परमात्मा! ऐसे दुष्ट व्यक्ति के दर्शन जगत में तो बुरे होते ही हैं, परंतु स्वपन में भी दर्शन नहीं हों अर्थात् कभी भी ऐसे व्यक्ति का संग स्वपन में भी न देना।(46)

वाणी :- तातै सतगुरु सरना लीजै। कपट भाव सब दूर करीजै।।(47)
योग यज्ञ जप दान करावै। गुरु विमुख फल कबहुँ न पावै।(48)

❖ सरलार्थ :- इसलिए गुरुजी शरण प्राप्त करें, दीक्षा लें और मन में कपट नहीं रखना चाहिए। छल-कपट को छोड़कर दीक्षा लेनी चाहिए। यदि गुरु से विमुख होकर कोई यज्ञ, दान, जप करता-कराता है तो उसको कोई आध्यात्मिक लाभ प्राप्त नहीं होता।(47-48)

''शिष्य की आधीनता''

वाणी :- दोउकर जोरि गुरुके आगे।करिबहु विनती चरनन लागे।।(1)
अति शीतल बोलै सब बैना। मेटै सकल कपट के भैना।।(2)

❖ सरलार्थ :- शिष्य को चाहिए कि अपने गुरुदेव के सामने दोनों हाथ जोड़कर चरणों में मस्तक यानि सिर रखकर बहुत विनय (प्रार्थना) करे। शिष्य अपने गुरु जी के सामने शीतल (बैन) वचन अर्थात् सर्व वचन गुरुजी के सामने अति शीतल

(बहुत प्यारे) कहे। सब छल-कपट के (भैना) झूठे वचन (मेटै) समाप्त करे अर्थात् त्याग देने चाहिए।(1-2)

वाणी :- हे गुरु तुम हो दीनदयाला। मैं हूँ दीन करो प्रतिपाला।।(3)
बंदी छोड़ मैं अतिहि अनाथा। भवजल बूड़त पकड़ो हाथा।।(4)

❖ **सरलार्थ :- हे गुरुदेव जी! आप दीन दुःखियों पर दया करने वाले हो। मैं दीन (गरीब) तथा दुःखी हूँ। कृप्या मेरा (प्रतिपाल) पालन-पोषण अर्थात् भक्ति से मुझे तृप्त करके मेरा उद्धार करो। हे गुरुदेव! आप काल के बन्धन में अर्थात् काल की कारागार (कैद) में कर्म बंधन में बंधे बंदियों को छुड़ाने वाले (बन्दी छोड़) हो। हे बन्दी छोड़! मैं बिल्कुल अनाथ हूँ। आपके अतिरिक्त मेरा कोई सहायक या साथी नहीं है। मैं सत्य भक्ति शास्त्रानुकूल न करके मनमाना आचरण करके (भवजल) संसार रुपी जल के सागर अर्थात् 84 लाख योनियों के चक्र में गिरकर डूब रहा हूँ। मुझे अपनी शरण में लेकर मेरा डूबते का हाथ पकड़ो।(3-4)**

वाणी :- दिजै उपदेश गुप्त मंत्र सुनाओ। जन्म मरन भवदुःख छुड़ाओ।।(5)

❖ **सरलार्थ :- हे गुरुदेव! मुझे वो गुप्त मंत्र दीजिए जो आज तक किसी के ज्ञान में मन्त्र नहीं है, सब शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कर रहे हैं। जो गुप्त मन्त्र रहस्ययुक्त भक्ति के नाम आप जी के पास हैं, वे किसी सन्त के पास नहीं हैं। आप मुझे (उपदेश) दीक्षा व ज्ञान दीजिए। मेरा जन्म तथा मरण का दुःख छुड़वायें। भव (संसार) में कोई सुख नहीं, कोरा दुःख ही व्याप्त है। यह भव दुःख छुड़वाएं अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करायें जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी संत से तत्वज्ञान रुपी शस्त्र प्राप्त करके भक्ति अज्ञान को उससे काटकर अर्थात् अच्छी तरह अज्ञान नाश होने के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते अर्थात् जिनका जन्म-मरण सदा के लिये समाप्त हो जाता है। संसार के दुःख व जन्म-मरण के दुःख से सदा के लिए छूट जाते हैं। जिस परमेश्वर से संसार रुपी वृक्ष की प्रवृत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है अर्थात् जिस परम अक्षर ब्रह्म ने सर्व संसार की रचना की है, वही प्रमाण इस उपरोक्त वाणी सँख्या 5 में है।(5)**

वाणी :- यों आधीन होवै शिष्य जबहीं। शिष्य पर कृपा करै गुरु तबहीं।।(6)

❖ **सरलार्थ :- इस अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर जी ने अपने कृपा पात्र भक्त को समझाया है जो गुरु पद पर विराजमान है। कहा है कि जिस समय शिष्य उपरोक्त वाणियों में वर्णित आचरण वाला तथा आधीन (दास भाव वाला विनम्र) हो जाए, तब गुरु उस शिष्य पर कृपा करे अर्थात् दीक्षा देवे।(6)**

वाणी :- गुरुसे शिष्य जब दीच्छा मांगै। मन कर्म वचन धरै धन आगै।।(7)
ऐसी प्रीति देखि गुरु जबहीं। गुप्त मंत्र कहै गुरु तबहीं।।(8)

❖ **सरलार्थ :- इस वाणी में शिष्य को नसीहत (शिक्षा) दी है कि जिस समय शिष्य गुरुजी से दीक्षा लेवे, उस समय मन-कर्म-वचन से समर्पित होकर कुछ दक्षिणा में**

धनराशि गुरु के सम्मुख अवश्य रखे अर्थात् दक्षिणा अच्छे दिल से अवश्य देवें अर्थात् कुछ दान अवश्य करें। इस अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर जी ने गुरु पद पर विराजमान अपने कृपा पात्र संत को नसीहत (शिक्षा) दी है कि जिस समय दीक्षार्थी में उपरोक्त श्रद्धा दिखाई दे, तब उसको गुप्त मन्त्र अर्थात् सत्यनाम जो दो अक्षर का है, वह बोलकर बतावै अर्थात् जो ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 93 मन्त्र 2 में कहा है कि परमात्मा पृथ्वी पर विचरण करता हुआ मनुष्यों को भक्ति करने प्रेरणा अपने मुख से वाणी बोलकर करता है तथा भक्ति के गुप्त मन्त्रों का आविष्कार करके बताता है। वाणी में कहा है ''सोहं शब्द हम जग में ल्याए, आदि नाम हम गुप्त छुपाए।'' **इस प्रकार गुरु ने योग्य (सुपात्र) दीक्षार्थी को दीक्षा देनी चाहिए।(7-8)**

वाणी :- भक्ति मुक्ति को पंथ बतावै। बुरो होनको पंथ छुड़ावै।।(9)

❖ **सरलार्थ :- गुरु की शिक्षा गुरु भक्ति के द्वारा अर्थात् शास्त्रानुकूल साधना करके जो मोक्ष प्राप्ति होती है, वह (पंथ) मोक्ष मार्ग बतावै। जो (पंथ) भक्ति मार्ग शास्त्रविधि रहित होने के कारण हितकारी नहीं है। उस साधना को (जिसे साधक पहले नकली गुरु से दीक्षा लेकर या स्वयं लोकवेद के अनुसार कर रहा था, उस भक्ति की गलत साधना को) छुड़वाऐ।**

संत गरीबदास जी ने अमृतवाणी में कहा है कि :-

वाणी :- मन कर धीर बाँध ले रे बोरे, छोड़ दे न पिछल्यों की रीत।।

भावार्थ है कि आप इस बात से भयभीत होते हो कि जो साधना हम परंपरागत पीढ़ी दर पीढ़ी करते आ रहे हैं, कहीं उसे त्याग देने से हमारे कुल के देवता रुष्ट होकर हमें हानि न कर दें। विचार करें देवता उसे कहते हैं जो कभी किसी की हानि नहीं करता। अपने व्यक्तियों का सदा हित करते हैं। जो हानि करते हैं, वे देवता नहीं हो सकते। गीता अध्याय 9 श्लोक 12 से 15, 20 से 23 गीता अध्याय 9 श्लोक 20 से 23 तथा 25 में अन्य देवताओं की भक्ति करना निषेध है। इसलिए संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त ज्ञान के आधार से बताया है कि हे (बौरे) भोले भक्त! मन में दृढ़ता ला और (छोड़ दे न पिछल्यों की रीत) पिछली रीति (परंपरा से चली आ रही शास्त्रविरुद्ध साधना) को छोड़ दे अर्थात् त्याग दे।

नोट : हरियाणवी भाषा का ज्ञान न होने के कारण कुछ अनुवाद संत गरीबदास जी की इस वाणी का विपरीत अर्थ करते हैं ''छोड़ दे न पिछल्यों की रीत'' कहते है कि पिछलों की रिति–रिवाज को छोड़ते नहीं है, करते रहना चाहिए।

यह अनुवाद गलत है। हरियाणवी भाषा विशेषकर पुराने रोहतक जिले (वर्तमान में सोनीपत, रोहतक, झज्जर) तथा कुछ हिस्सा जीन्द जिले का जो रोहतक से लगता है। उसकी भाषा में 'न' अक्षर का अर्थ 'नहीं' करना गलत है। उदाहरण एक व्यक्ति सिर पर पशुओं के चारे का गठ्ठड़ (गठरी) लिए खड़ा था। दूसरे व्यक्ति से बातें करने लगा। दूसरे व्यक्ति ने कहा कि इस सिर पर रखे गठड़ी को 'धरती

पे गेर दे न, कुछ देर बात करेंगे' इस में यदि न का अर्थ यह किया जाए कि गठड़ी को धरती पर न डाल सिर पर रखे रह, बातें करेंगे। विचार करें सिर पर तो वह रखे हुए खड़ा था। इसलिए इसका अर्थ यह है कि इस सिर पर रखे वजन गठड़ी को जमीन पर डाल दे, कुछ देर बातें करेंगे। इसी प्रकार संत गरीबदास की वाणी का अर्थ जानना चाहिए कि पिछलों की रिति को छोड़कर शास्त्रविधि अनुसार साधना करो।(9)

वाणी :- ऐसे शिष्य उपदेशहिं पाई। होय दिव्य दृष्टि पुरूषपै जाई।।(10)

❖ **सरलार्थ :- उपरोक्त विधि से गुरुजी के सामने विनम्रतापूर्वक प्रश्न करने तथा समर्पित भाव से दीक्षा प्राप्त करके भक्त दिव्य दृष्टि अर्थात् अलौकिक ज्ञान रुपी दृष्टि प्राप्त करके सत्यलोक में जाने का हरदम उद्देश्य रखकर भक्ति करता हुआ परमेश्वर के पास चला जाएगा।(10)**

''गुरु सेवा का महात्मय'' (परमेश्वर कबीर जी की वाणी से)

(भक्ति बोध के पृष्ठ 24 पर)

वाणी :- गंगा यमुना बद्री समेते। जगन्नाथ धाम हैं जेते।।(1)
भ्रमे फल प्राप्त होय न जेतो। गुरु सेवा में पावै फल तेतो।।(2)

❖ **सरलार्थ :- गंगा तथा जमना नदियों में स्नान करने जाना, बद्रीनाथ धाम तथा जगन्नाथ जैसे जितने भी धाम हैं, उन पर भ्रमण के लिए जाने से उतना फल प्राप्त नहीं हो सकता, जितना गुरु सेवा में प्राप्त हो जाता है।(1-2)**

वाणी :- गुरु महातम को वार न पारा। वरणे शिवसनकादिक और अवतारा।।(3)
गुरुको पूर्ण ब्रह्मकर जाने। और भाव कबहूँ नहिं आने।।(4)

❖ **सरलार्थ :- इसलिए गुरु के महातम अर्थात् महिमा का कोई वार-पार नहीं है, वह असीम है। यह ज्ञान सनक, सनन्दन, सनातन तथा संत कुमार (जो सनकादिक कहलाते हैं) भी कहते हैं कि गुरु की महिमा अपार है। गुरु जी को पूर्ण परमात्मा के समान जानना चाहिए। इसके अतिक्ति गुरु के प्रति अन्य भाव मन में नहीं आना चाहिए। गुरुजी को सामान्य मनुष्य न समझें।(3-4)**

वाणी :- जिन बातन से गुरु दुःख पावै। तिन बातनको दूर बहावै।।(5)
अष्ट अंग से दंडवत प्रणामा। संध्या प्रात करै निष्कामा।।(6)

❖ **सरलार्थ :- जिन बातों से गुरुजी को दुःख हो, उन बातों को त्याग देना चाहिए। सुबह और शाम निष्काम भाव से गुरुजी को अष्टांग से दण्डवत् प्रणाम करनी चाहिए। अष्टांग दण्डवत् प्रणाम उसे कहते हैं जिसमें पेट के बल लेटकर मस्तिष्क, नाक, वक्ष (छाती), पेट, घुटने, हाथों की कोहनी, हाथों के पंजे (हाथ जोड़े हुए) तथा पैरों के पंजे, ये आठों अंग पृथ्वी से लगे हो और डण्डे के समान सीधा लेटकर जो नमस्कार किया जाता है, उसे दण्डवत् प्रणाम कहते हैं।(5-6)**

''गुरु चरणामृत का महात्मय'' (भक्ति बोध के पृष्ठ 24 पर)

(परमेश्वर कबीर जी की वाणी से)

वाणी :- कोटिक तीर्थ सब कर आवै। गुरु चरणाफल तुरंत ही पावै।।(1)
चरनामृत कदाचित पावै। चौरासी कटै लोक सिधावै।।(2)

❖ सरलार्थ :- यदि करोड़ों तीर्थों का भ्रमण करके आऐं, वैसा फल गुरुजी के चरणों में तुरंत ही मिल जाता है। कभी भी गुरुजी के चरणों का जल (चरणामृत) प्राप्त हो जाए तो उस साधक का 84 लाख योनियों का जन्म लेने वाला कष्ट समाप्त हो जाता हे। भावार्थ है कि जो साधक संत के सत्संग में जाएगा तो उसे भक्ति का यथार्थ ज्ञान हो जाता है और दीक्षा लेकर चरणामृत प्राप्त करता है। जिससे मोक्ष प्राप्त हो जाता है। तीर्थ तो पवित्र यादगारें हैं, वहाँ कोई ज्ञान बताने वाला तत्वदर्शी नहीं होता, केवल तीर्थ की महिमा बताने वाले तथा रुपये-पैसा दान लेने वाले ही मिलते हैं, मोक्ष नहीं मिलता। मोक्ष मिलता है सतगुरु की शरण में जाने से, वहीं पर चरणामृत मिलता है।(1-2)

वाणी :- कोटिक जप तप करै करावै, वेद पुराण सबै मिलि गावै।(3)
गुरू पद रज मस्तक पर देवै, सो फल तत्कालहि लेवै।(4)

❖ सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी हमारे सद्ग्रन्थों को साक्षी बनाकर अपना तत्वज्ञान बता रहे हैं कि सब वेदों तथा पुराणों में प्रमाण है कि शास्त्रविधि त्यागकर जो नामों का जाप किया जाता है, वह करोड़ों जाप तथा करोड़ों वर्ष हठ योग आधार वाला तप करने से जो लाभ मानते हो, वह लाभ तो पूर्ण सतगुरू के पद (चरणों) की रज (धूल) मस्तक पर लगाने से तुरंत ही मिल जाता है।

विवेक :- गुरू चरणों की धूल उसी को प्राप्त होती है जो गुरू धारण कर लेता है। पूर्ण गुरू से सत्य मंत्रों की साधना प्राप्त करके जीव की मुक्ति होती है। उस जीव को कल्याण मार्ग प्राप्त हो जाता है।

वाणी :- सो गुरू सत जो सार चिनावै, यम बंधन से जीव मुक्तावै।(5)

❖ सरलार्थ :- गुरू वही सत्य है जो सर्व ग्रन्थों का सार बताता है और वास्तविकता अपने ही सद्ग्रन्थों में (चिनावै) दिखाकर पहचान कराता है, उस संत से सत्य मंत्रों की दीक्षा से मुक्ति हो जाती है, जिससे वह पूर्ण संत यम बंधन अर्थात् काल के जाल से मुक्त कराता है।(5)

वाणी :- गुरू पद सेवै बिरला कोई, जा पर कृपा साहिब की होई।(6)

❖ सरलार्थ :- 'पद' शब्द के प्रकरणवश कई अर्थ बनते हैं। पद का अर्थ पदवी, अंग्रेजी में 'Post' कहते हैं, भी है। पद का अर्थ पद्यति अर्थात् प्रणाली भी होता है जैसे भक्ति की पद्यति वेदों, गीता आदि ग्रंथों में वर्णित है, वह सत्य पद्यति है। पद का अर्थ गीता अध्याय 15 श्लोक 4 वाला परमपद भी है जिसमें कहा है कि तत्वदर्शी संत के मिलने के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में वापिस नहीं आते। .... जैसे

अमर पद। पद का अर्थ स्थान, लोक भी है जैसे अमर पद, अमर लोक अर्थात् श्रेष्ठ स्थान। पद का अर्थ पैर (चरण) भी है, जैसे पैदल यात्रा। वाणी सँख्या 6 में पद का अर्थ विशेषकर चरण है, कहा है कि गुरू के पद अर्थात् चरणों की सेवा अर्थात् पूजा कोई बिरला भक्त करता है जिस पर परमेश्वर की विशेष कृपा होती है।(6)

वाणी :- गुरू महिमा सुखदेव जो पाई, चढ़ि विमान बैकुण्ठे जाई।(7)

❖ सरलार्थ :- श्री वेदव्यास जी का पुत्र ऋषि शुकदेव जी पूर्व जन्म की भक्ति शक्ति से आकाश में उड़कर स्वर्ग लोक व विष्णु लोक में चले जाते थे। इसी सिद्धि को उत्तम मानकर गुरू के बिना ही साधना करते थे। बाद में जब राजा जनक से आत्म ज्ञान तथा आध्यात्म ज्ञान सुना तब गुरू की महिमा का ज्ञान हुआ। राजा जनक से दीक्षा लेकर फिर गुरू के द्वारा बताई पद्यति से भक्ति करके विमान में बैठकर स्वर्ग में गए।(7)

वाणी :- गुरू बिन वेद पढ़ै जो प्राणी, समझै न सार रह अज्ञानी।(8)

❖ सरलार्थ :- तत्वदर्शी संत अर्थात् पूर्ण गुरू की शरण में आए बिना यदि कोई वेदों को पढ़ता है, उसको सद्ग्रन्थों का सारज्ञान समझ नहीं आता। सद्ग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को न समझकर अज्ञानी ही रह जाता है।

प्रमाण :- श्री देवी पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी) में पृष्ठ नं. 414 पर प्रकरण है कि ''सत्ययुग के ब्राह्मण वेद के पूर्ण विद्वान थे। वे श्री देवी की पूजा करते थे। प्रत्येक गाँव में देवी का मंदिर बने, यह उनकी प्रबल इच्छा थी।''

विवेचन :- पवित्र चारों वेदों में तथा वेदों के सारांश रूप पवित्र श्रीमद् भगवत गीता में कोई वर्णन नहीं है कि श्री देवी (दुर्गा) जी की पूजा करनी चाहिए। इससे प्रमाणित हो जाता है कि सत्ययुग के ब्राह्मणों को वेद ज्ञान नहीं था। फिर वर्तमान के ब्राह्मणों का तो सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि उनको कितना वेद ज्ञान है क्योंकि इन्होंने अपने पूर्वजों से ही वेद ज्ञान प्राप्त हुआ है।

सत्ययुग से लेकर कलयुग के प्रथम चरण तक किसी को वेद ज्ञान नहीं था। केवल परमात्मा को ही सर्व ज्ञान है। वह परमेश्वर प्रत्येक युग में प्रकट होकर यथार्थ अध्यात्मिक ज्ञान अपने मुख कमल से बोली अमृतवाणी द्वारा बोलते हैं, वह लीपिबद्ध कर ली जाती है। वह सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी कही जाती है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में 'ब्रह्मणः मुखे' शब्द लिखा, उसका अर्थ है कि 'सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी में' यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान विस्तार से कहा गया है, वह तत्वज्ञान है।) उसी परमेश्वर ने सन् 1398 में प्रकट होकर सन् 1518 तक तत्वज्ञान कहा था जो उनके परम भक्त संत धनी धर्मदास जी ने लीपिबद्ध किया था, वह 'कबीर वाणी' है। इसी को तत्वज्ञान तथा सूक्ष्मवेद कहा जाता है। इसका ज्ञान भी मेरे (रामपाल दास) से पहले किसी को नहीं था। सब अज्ञानी थे।(8)

वाणी :- सतगुरू मिलै तो अगम बतावै, जम की आँच ताहि नहीं आवै।(9)

गुरू से ही सदा हित जानों, क्यों भूले तुम चतुर स्यानों।(10)
गुरू सीढ़ी चढ़ ऊपर जाई, सुख सागर में रह समाई।(11)

❖ **सरलार्थ :- जिस समय पूर्ण गुरू मिल जाएगा, वह अगम अर्थात् तत्कालीन ज्ञान से आगे का ज्ञान बताएगा। फिर सतगुरू के बताए भक्ति मार्ग से भक्ति करने वाले उस साधक को जम (काल प्रभु) की आँच (कर्मदण्ड का दुःख कभी नहीं होता) कभी नहीं लगती।(आँच का अर्थ है अग्नि का ताप) भावार्थ है कि काल रूपी अग्नि की आँच अर्थात् कर्म दण्ड की पीड़ा कभी नहीं होती।(9)**

❖ **जो बिना गुरू के भक्ति करते हैं तथा आध्यात्मिक ज्ञान सुनाते हैं, जिनको भोली जनता स्याना अर्थात् विद्वान मानती है और वे चतुरता से सद्ग्रन्थों का ज्ञान तोड़-मरोड़कर सुनाकर अपनी प्रभुता बनाए हैं। उनको परमेश्वर कबीर जी सतर्क करते हैं कि हे चतुर स्यानो! अर्थात् नकली विद्वानो! गुरू से ही सदा लाभ होता है। मनमाना आचरण करने से गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 के अनुसार साधक को न सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है और न परम गति ही प्राप्त होती है।(10)**

❖ **इसलिए गुरू सीढ़ी (Stair) से अर्थात् गुरू जी द्वारा बताई पद्यति से ऊपर जाया जाता है अर्थात् आध्यात्मिक उत्थान होता है। जिससे सुख सागर अर्थात् पूर्ण मोक्ष रूपी अथाह सुख वाले परमपद में समा जाता है अर्थात् अमर लोक को प्राप्त हो जाता है।(11)**

वाणी :- गौरी शंकर और गणेशा, सबही लिन्हा गुरू उपदेशा।(12)
शिव विरंच गुरू सेवा कीन्हा, नारद दीक्षा ध्रू को दीन्हा।(13)
गुरू विमुख सोई दुःख पावै, जन्म–जन्म सोई डहकावै।(14)
गुरू सेवै सो चतुर स्याना, गुरू पटतर कोई और न आना।(15)

सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी समझा रहे हैं कि गौरी अर्थात् पार्वती जी ने भगवान शंकर से दीक्षा ली, तब उनका कल्याण हुआ। भगवान शंकर जी ने सत सुकृत नामक गुरू जी से दीक्षा ली थी। सत सुकृत जी स्वयं परमेश्वर सत्ययुग में प्रकट होकर ज्ञान प्रचार कर रहे थे। श्री गणेश जी ने भी सत सुकृत जी से दीक्षा ली थी। विरंच अर्थात् श्री ब्रह्मा जी ने भी सत्ययुग में प्रकट परमेश्वर से दीक्षा ली थी। परमेश्वर ने अपना नाम अग्नि ऋषि बताया था। नारद ऋषि से ध्रू जी ने दीक्षा ली थी। इन सब महान आत्माओं ने भी गुरू जी से उपदेश लिया था।(12-13)

❖ **फिर परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि 'गुरू विमुख' अर्थात् गुरू से दूर बिना गुरू वाला साधक सदा दुःखी रहता है। अनेकों जन्मों तक ढ़हकावै अर्थात् भिन्न-भिन्न योनियों में भटकता रहता है।(14)**

❖ **वास्तव में वही चतुर स्याना अर्थात् विशेष बुद्धिमान है जो गुरू जी को सेवै अर्थात् पूजा करता है। गुरू के समान कोई अन्य नहीं है।(15)**

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

गुरू बड़े गोविन्द से, मन में देख विचार।

हरि सुमरे सो वार है, गुरू सुमरे होवैं पार।।

❖ **गुरू की पूजा का भावार्थ है कि गुरू जी का परमात्मा के समान सत्कार करें और गुरू की बताई भक्ति करे।**

''साहिब कबीर के उपदेश'' का सरलार्थ

वाणी :- जो तोकूं काँटा बोवै, ताको बो तू फूल।
तोहे फूल के फूल है, वाको है त्रिशूल।।(1)

❖ **यदि कोई आपको कष्ट देता है तो आप उसका उपकार करने की धारण बनाए, उसका भला करें। आपको तो सुख रूपी फूल प्राप्त होंगे और जो आपको कष्ट रूपी काँटे दे रहा था, उसको तीन गुणा कष्ट रूपी काँटे प्राप्त होंगे।(1)**

वाणी :- कबीर, दुर्बल को ना सताईये, जाकि मोटी हाय।
बिना जीव की श्वांस से, लोह भस्म हो जाए।।(2)

❖ **परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि 'दुर्बल को ना सताईये'। दुर्बल का अर्थ है कमजोर, बलहीन। दुर्बल वैसे शारीरिक कमजोर को कहते हैं, परंतु यहाँ पर सब प्रकार की दुर्बलता से अभिप्राय है। जैसे कोई शरीर से दुर्बल है, कोई पद (Post) में छोटा है, कोई परिवार में अकेला है, अन्य कई भाई होने के कारण एक को सताते हैं। यह सब दुर्बल को सताना कहा है।(1)**

अपने से दुर्बल को न सताना, उसकी हाय बहुत सबल होती है। वह आप जी का सर्वनाश कर देगी। उदाहरण बताया है कि जैसे लौहार कारीगर पुराने समय में पशु की खाल (चर्म) की धौंकनी बनवाते थे। उससे पंखे की तरह अग्नि जलाने का कार्य लेता था। उससे अहरण में अग्नि जलाकर लोहे को पिघलाकर औजार (उपकरण) बनाता था। उस खाल से बनी धौंकनी को हाथ से चलाता था। उसमें ब्लेडर की तरह हवा भर जाती थी। फिर उसको दबाता था तो हवा अहरण में डली लकड़ियों और कोयले की अग्नि को तेज करती थी। बार-बार उठाता तथा दबाता था। वह श्वांस की तरह आवाज करती थी जैसे दुःख में इंसान आहें भरता है। श्वांस-उश्वांस की क्रिया तेज होती है। परमेश्वर कबीर जी ने उसी का उदाहरण देकर समझाया है कि धौंकनी की श्वांस तो बिना जीव की खाल है जिससे लोहा भी भस्म हो जाता है और निर्बल व्यक्ति की श्वांस जो जीव की श्वांस अर्थात् हाय है, उससे आप जी को कितनी हानि हो सकती है, अनुमान लगाया जा सकता है।(2)

वाणी :- कबीर, आप ठगाईये, और न ठगिए कोय।
आप ठगाए सुख होत है, और ठगे दुःख होय।।(3)

❖ **परमेश्वर कबीर जी उपदेश दे रहे हैं कि हे मानव! आप किसी से धोखा करके कुछ भी न लेना, किसी को न ठगना। यदि आप जी को कोई ठगता है तो आप अपना स्वभाव व सिद्धांत न बदलना। जैसे एक समय एक संत नदी में स्नान कर रहा था। एक बिच्छू पानी में बहता हुआ साधु के पास आया। संत ने देखा कि यह**

प्राणी डूबकर मरेगा। संत ने बिच्छू को हाथ से उठाया और नदी से बाहर रखना चाहा। बिच्छू ने संत के हाथ पर डंक मारा और पानी में गिर गया। ऐसे-ऐसे तीन-चार होने करने के बाद संत ने पानी सहित बिच्छू को दरिया से बाहर फैंक दिया। उसके प्राणों की रक्षा की। यह सब एक अन्य व्यक्ति देख रहा था। उसने उस संत से कहा कि आप कैसे हठी तथा नासमझ व्यक्ति हो? इस विषैले बिच्छू को बहने देते। आप इसकी रक्षा कर रहे थे, वह डंक मार रहा था। संत ने उत्तर दिया हे भाई! इसका स्वभाव पीड़ा देना है, मेरा स्वभाव भला करने का है। जब यह अपना स्वभाव नहीं त्याग रहा तो मैं अपना स्वभाव कैसे त्याग दूं। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि आप किसी को न ठगना, भले ही कोई आपको धोखा देकर कुछ ले ले अर्थात् ठग ले। यदि आप किसी को ठग लोगे तो आपको उस पाप के फलस्वरूप दुःख दण्ड भोगना पड़ेगा। यदि आप जी को कोई ठग लेता है और आप प्रतिशोध नहीं लेते तो आपको सुख होगा।(3)

वाणी :- कबीर, या दुनिया में आय कर, छाड़ दिए तू ऐंठ।
लेना हो सो लेइले, उठि जाति है पैंठ।।(4)

❖ हे मानव! आप मनुष्य शरीर प्राप्त करके इस पृथ्वी लोक पर जन्मे हो, मनुष्य जन्म बहुत ही दुर्लभ है। आप अपने शरीर, धन, पद, राज्य का जो अभिमान कर रहे हो, यह अस्थाई है। आपको मानव जन्म भक्ति तथा शुभ कर्म करने के लिए मिला है। यदि कुछ लाभ लेना है तो ले ले अन्यथा यह पैंठ अर्थात् दुकान उठने वाली है अर्थात् आप का जीवन कभी भी समाप्त हो सकता है। जब तक दुकान लगी है अर्थात् जीवन है, तब तक कुछ खरीद ले। गुरू की शरण में जाकर सत्य साधना रूपी सौदा कर लो।(4)

वाणी :- कहै कबीर पुकार के, दोय बात लख लेय।
एक साहेब की बंदगी, व भूखों को कुछ देय।।(5)

❖ हे मानव! मैं आवाज लगाकर ऊँचे स्वर से कह रहा हूँ कि मानव शरीर प्राप्त करके दो बातों पर ध्यान दें। एक तो परमात्मा की भक्ति कर दूसरी बात है कि भूखों को भोजन अवश्य कराना चाहिए। यह मानव का परम धर्म है।(5)

वाणी :- कबीर इष्ट मिलै और मन मिलै, मिलै शकल रस रीत।
कहै कबीर तहां जाइए, रह संतन की प्रीत।।(6)

❖ परमेश्वर कबीर जी ने समझाया है कि आप अपने ही सत्संग में जाना, वहाँ पर आपको सर्व क्रियाऐं अनुकूल लगेंगी। आपका ज्ञान, भक्ति विधि एक समान होने से कोई वाद-विवाद नहीं होता। सब संतों-भक्तों का आपस में प्यार बना रहता है। यदि आप अपने से भिन्न विचारों वाले भक्त समूह में जाएंगे तो वाद-विवाद अवश्य होगा। आप उनको समझाने में सक्षम न होने के कारण अशांति बनेगी। आपका मन दुःखी होगा, झगड़ा भी हो सकता है।(6)

वाणी :- कबीर, ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोए।
औरन को शीतल करे, आप भी शीतल होय।।(7)

❖ **कबीर जी ने समझाया है कि नम्रतापूर्वक बोलना चाहिए, अपने आपको बड़ा सिद्ध नहीं करना चाहिए। ऐसी भाषा बोलिए जिससे अन्य भी सुख महसूस करे और स्वयं को भी शांति रहे।(7)**

वाणी :- कबीर, जग में बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय।
या आप को डार दे, दया करें सब कोय।।(8)

❖ **कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि यदि आप शांत स्वभाव के हैं तो आपका कोई शत्रु नहीं है। अपने अभिमान को त्याग दें, सबसे नम्रता से बोलें। फिर सबको आपके प्रति दयाभाव हो जाएगा।(8)**

वाणी :- कबीर, कहते को कह जान दे, गुरू की सीख तू ले।
साकट और श्वान को, उलट जवाब न दे।।(9)

❖ **कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि यदि कोई अज्ञानी व्यक्ति आपके भक्ति कर्म और परमार्थी कर्म को गलत बताता है। आपकी आलोचना करता है तो आप उसकी बातों पर ध्यान न देना, उसको कहने दे। उसको ज्ञान नहीं है। आप अपने गुरू जी द्वारा बताए मार्ग पर अडिग रहना और उस आलोचक के साथ वाद-विवाद भी मत करना वरना वह और कई बकवाद करेगा। उदाहरण दिया है कि जैसे श्वान अर्थात् कुत्ता भौंक रहा हो तो उसको कुछ नहीं कहना। आप जितना उसको रोकने के लिए धमकाओगे, वह उतना अधिक भौंकेगा। इसी प्रकार साकट व्यक्ति की बातों का उत्तर देने से वह अधिक विवाद करेगा, गलत भाषा का प्रयोग करेगा, उससे झगड़ा उत्पन्न हो सकता है।**

साकट उस व्यक्ति को कहते हैं जो स्वयं भक्ति करता नहीं और कोई भक्ति तथा शुभ कर्म कर रहा हो, उसको बाधित करता है।

वाणी :- कबीर, हस्ती चढ़िए ज्ञान के, सहज दुलिचा डार।
श्वान रूप संसार है, भूसन दे झख मार।।(10)

❖ **कबीर जी ने भक्त समाज को उपदेश दिया है कि आध्यात्म ज्ञान रूपी हाथी आप जी को आपके गुरू जी से प्राप्त हुआ है, आप उस ज्ञान रूपी हाथी पर सहज दुलिचा डालकर बैठे रहना अर्थात् अपने गुरू जी के वचनों पर विश्वास करके अपने धर्म कर्म पर अडिग रहना। भक्ति व ज्ञानहीन जनता तो कुत्ते के समान है, वह आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। यदि आप अपने ज्ञान रूपी हाथी से नीचे नहीं उतरे तो उसी तरह सुरक्षित है। जैसे हाथी के ऊपर बैठा व्यक्ति कुत्तों की पहुँच से दूर होता है। कुत्ते उसकी कोई हानि नहीं कर सकते। इसी प्रकार वह भक्त सुरक्षित है जो गुरू जी के ज्ञान पर दृढ़ रहता है।(10)**

वाणी :- कबीर, काहे कूँ डरै, सिर पर सिरजनहार।
हस्ती चढ़ डरिये नहीं, कुकर भुसैं हजार।।(11)

❖ **कबीर परमेश्वर जी ने उपदेश दृढ़ किया है कि हे भक्त! आप क्यों डरते हो? आपके सिर पर परमेश्वर का आशीर्वाद है। आप परमात्मा की भक्ति करते हो तो आप इतने सुरक्षित हो जितना हाथी के ऊपर बैठा व्यक्ति कुत्तों की पहुँच से बाहर**

होता है। चाहे हजार कुत्ते भी उस हाथी के ऊपर बैठे व्यक्ति को भौंक रहे हों और काटने की नीयत भी रखते हों तो भी हजारों कुत्ते भी हाथी के असवार का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इसी प्रकार परमात्मा के भक्त का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता क्योंकि उस भक्त को परमात्मा की शक्ति रूपी हाथी पर स्थान प्राप्त है।(11)

वाणी :- कबीर, आवत गारी एक है, उलटत होए अनेक।
कहैं कबीर न उलटियो, रह एक की एक।।(12)
कबीर, गाली ही से उपजैं, कलह, कष्ट और मीच।
हार चलैं सो साधु है, लागि मरै सो नीच।।(13)
कबीर, हरिजन तो हारा भला, जीतन दे संसार।
हारा तो हर से मिलै, जीता जम की लार।।(14)
कबीर, जेता घट तेता मता, घट—घट और स्वभाव।
जा घट हार न जीत है, ता घट ब्रह्म समावै।।(15)

❖ परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि जब कोई व्यक्ति क्रोधवश आप जी को गाली देता है तो वह एक गाली देकर चुप हो जाता है। यदि आप जी ने उलट कर गाली दे दी तो वह तो तैयार है लड़ने के लिए, वह आपको अनेकों गालियाँ देगा। कबीर जी कहते हैं मेरी राय है कि आप प्रतिउत्तर में गाली न देना, वह एक की एक ही रह जाएगी। बात आगे नहीं बढ़ेगी।(12)

❖ गाली-गलौच से ही कलह अर्थात् झगड़े का जन्म होता है। गाली ही से आत्मा को कष्ट होता है। गाली ही से झगड़ा बढ़ जाने से मृत्यु तक संभव है। यदि गाली देने वाले का उत्तर गाली से न देकर अपने आपको हारा यानि पराजित मान लेता है, वह संत है। यदि अन्य झगड़ालु की तरह झगड़ा करके मर-मिटता है तो वह नीच व्यक्ति है।(13)

❖ कबीर जी ने कहा है कि हरिजन अर्थात् परमात्मा का भक्त तो हारा ही अच्छा है क्योंकि भक्त प्रतिष्ठावश गलत कार्य नहीं करते। संसारी व्यक्ति आध्यात्म ज्ञान से अपरीचित होने से मान-बड़ाई अर्थात् प्रतिष्ठावश अपना और सामने वाले का नाश करने पर तुल जाता है। ऐसे में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि ऐसे महिमा के भूखे संसारी व्यक्ति को अपनी जीत का जश्न मनाने दे। वह तो काल के मुँह में जाएगा और भक्त जो हारकर झगड़ा न करके चला गया, वह भक्ति करके परमात्मा के पास सत्यलोक में चला जाएगा।(14)

❖ कबीर जी ने परम भक्त की स्थिति बताई है और जन साधारण का स्वभाव बताया है। कहा है कि जितने घट अर्थात् मानव शरीरधारी व्यक्ति हैं, सबका भिन्न-भिन्न स्वभाव तथा विचारधारा है। जिस भक्त के लिए जीत तथा हार कोई महत्व नहीं रखती, उसमें ब्रह्म अर्थात् परमात्मा का प्यार समाया है। वह भक्त संसार से भिन्न स्वभाव का है।(15)

वाणी :- कबीर कथा करो करतार की, सुनो कथा करतार।

आन कथा सुनिये नहीं, कह कबीर विचार।।(16)

❖ **कबीर जी ने उपदेश दिया है कि भक्त को चाहिए, वह केवल परमात्मा की चर्चा ही सुने और परमात्मा की चर्चा ही करे। अन्य कोई चर्चा नहीं सुननी चाहिए। उदाहरण जैसे यदि भूतों-प्रेतों की चर्चा करोगे तो डर लगेगा, स्वपन भी उन्हीं के आएंगे। यदि अन्य मलीन चर्चा करोगे तो मन मैला होकर बुरे विचार उत्पन्न होंगे। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने भक्त समाज को केवल परमेश्वर की कथा ही करने व सुनने की राय दी है।(16)**

वाणी :- कबीर, बन्दे तू कर बन्दगी, जे चाहे दीदार।
अवसर मानुष जन्म का, बहुर न बारम्बार।(17)

❖ **परमेश्वर कबीर जी ने उपदेश दिया है कि हे मानव! यदि आप परमात्मा का दीदार अर्थात् दर्शन करना चाहते हैं तो परमात्मा की भक्ति करो। यह कार्य केवल मानव शरीर (स्त्री तथा पुरूष) में ही संभव है और मानव शरीर मिलना आसान नहीं है। ग्रन्थों में प्रमाण है कि 84 लाख प्रकार के अन्य प्राणियों के शरीरों में यातनाऐं झेलकर एक मानव शरीर प्राप्त होता है, मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता। यदि मानव जीवन में पूर्ण संत से दीक्षा लेकर भक्ति नहीं की तो फिर से 84 लाख प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाना पड़ेगा। इसलिए मानव जीवन का अवसर बार-बार नहीं मिलता।(17)**

वाणी :- कबीर, बनजारे के बैल ज्यूं, भ्रमत फिरा बहु देश।
खाण्ड लादि भुष खात है, बिन सतगुरू उपदेश।।(18)

❖ **कबीर परमेश्वर जी ने इस भोले मानव को उदाहरण देकर समझाया है कि पुराने समय में बनजारे लोग बैलों के ऊपर गधे की तरह बोरा (बड़ा थैला) रखकर उसमें सामान भरकर व्यापार करते थे। बनजारे कहते हैं व्यापारियों को, यह पहले के समय का शब्द है। उस समय जंगलों से जाना-आना होता था। बैलों को आगे-पीछे बाँधकर पंक्ति बनाकर एक शहर की मण्डी से दूर दूसरे शहर की मण्डी में गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, दाल आदि सामान बेचने के लिए लाते-ले जाते थे। जिस बैल की कमर पर थैले में खाण्ड भरी है, वह उसका वजन वहन कर रहा है और स्वयं भुष खा रहा है। भावार्थ है कि मानव को ज्ञान नहीं है। वह परमात्मा की भक्ति रूपी खाण्ड को नहीं खा रहा जो मानव शरीर प्राप्त प्राणी के लिए अनिवार्य है। उसके स्थान पर गाने-बजाने, नाचने तथा शराब, तम्बाकू रूपी भुष को खा रहा है और निर्वाह के लिए दिन-रात देश-प्रदेश में भटक रहा है। सत्संग के लिए, करतार की कथा सुनने के लिए कहीं आता-जाता नहीं। यह मानव उस बनजारे के बैल की तरह अच्छी वस्तु छोड़कर भक्ति न करके मानव जीवन अन्य क्रियाओं में व्यर्थ कर रहा है। परमेश्वर कबीर जी का कहना है कि एक-आध मुँह खाण्ड का भी मार ले अर्थात् निर्वाह के कार्य के साथ-साथ परमात्मा की भक्ति भी करो।(18)**

भावार्थ :- इस अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर जी ने मानव को सतर्क किया है

कि मानव शरीर प्राप्त करके इंसान सर्व मिष्ठान खा रहा है। अच्छे-अच्छे पदार्थ खा रहा है। यदि सतगुरू अर्थात् पूर्ण संत से उपदेश अर्थात् आध्यात्म ज्ञान तथा दीक्षा प्राप्त नहीं की तो आप बैल बनकर खाण्ड जैसे स्वादिष्ट पदार्थ को कमर पर लादे फिरेगा और खा नहीं सकेगा। इसलिए पहले सतगुरू के सत्संग ज्ञान विचार सुनो, फिर दीक्षा लेकर अपने जीव को भविष्य में आने वाले संकटों से बचाओ। बैल, गधे आदि-आदि के शरीरों में कष्ट भोगने से बचो।

'सुमिरन का अंग' का सरलार्थ

❖ परमेश्वर की भक्ति के लिए साधनाऐं करनी अनिवार्य हैं :-

(क) यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान :- यज्ञ कई प्रकार की हैं। जैसे :-

1. धर्म यज्ञ :- धार्मिक भण्डारे करना, धर्मशाला, प्याऊ आदि बनवाना।

2. ध्यान यज्ञ :- परमेश्वर में अटूट मन लगाना संत मत की ध्यान यज्ञ है। कुछ व्यक्तियों ने इसको अंग्रेजी में मेडिटेशन (Meditation) कहकर इसकी परिभाषा ही बदल डाली। उनका मानना है अर्थात् सिद्धांत है कि एकांत स्थान में बैठकर आँखें बंद करके विचार शुन्य हो जाना मेडिटेशन (Meditation) है। यह योगासन का एक अंग कहा है। वे मानते हैं कि इससे कई शारीरिक उपचार होते हैं। विचार करें यह तो एक व्यायाम है जो दिमाग के लिए की जाती है।

संत मत में जो ध्यान (Meditation) है, वह परमात्मा की प्राप्ति की तड़फ में प्रति क्षण उसी की याद बनी रहे जैसे चिंता (टैंशन=Tention) होती है तो पल-पल मन उसी केन्द्र पर केन्द्रित हो जाता है। कोशिश करने पर भी नहीं हटता। ठीक ऐसे परमात्मा की चिंता जो चिंतन कहा जाता है, संत-मत का ध्यान यज्ञ है।

3. हवन यज्ञ :- इस यज्ञ को कई प्रकार से करते हैं :-

(i) जो अपने आपको वेदवित् कहते हैं, वे हवन कुण्ड बनाते हैं या वैसे पृथ्वी को लीपकर शुद्ध करके लकड़ियाँ जलाकर, गाय या भैंस का घी डालकर वेद के कुछ मंत्र बोलते हैं। इस प्रकार हवन यज्ञ करते हैं।

(ii) कुछ व्यक्ति केवल धूप अगरबत्ती जलाकर ही हवन करते हैं। धूप या अगरबत्ती को घी से बनी मानते हैं।

(iii) कुछ व्यक्ति कुछ जड़ी-बूटियों को कूटकर घी में मिलाकर अग्नि के अंगारों के ऊपर डालकर हवन यज्ञ करते हैं।

विचार करें :- प्रत्येक साधक को अपने सद्ग्रन्थों में वर्णित भक्ति कर्म ही करने चाहिऐं। श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी यही कहा है कि जो साधक शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, उसको न कोई सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है और न ही उसकी गति होती है। (गीता अध्याय 16 श्लोक 23)

इससे तेरे लिए अर्जुन! कर्तव्य अर्थात् जो भक्ति कर्म करने चाहिऐं और अकर्तव्य अर्थात् जो भक्ति कर्म नहीं करने चाहिऐं, उनके लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं। (गीता

अध्याय 16 श्लोक 24)

भक्ति करने की साधना के सद्ग्रन्थ केवल वेद हैं। वेद दो प्रकार के हैं :-

(i) सामान्य वेद :- जो सँख्या में चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद, इन्हीं चारों वेदों का सारांश श्रीमद् भगवत गीता है।

(ii) सूक्ष्म वेद :- यह वह वेद है जिसको परमेश्वर स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर अपने मुख कमल से कवित्व से बोलकर सुनाते हैं। जिसको गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 के अनुसार तत्वज्ञान भी कहते हैं। वह संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान है, इसी के विषय में ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 26-27, मण्डल 9 सूक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 20 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मंत्र 2 और ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17-18 में वर्णन है।

3. संत-मत :- संत-मत सूक्ष्मवेद पर आधारित है। जिसमें हवन यज्ञ का प्रावधान शुद्ध गाय या भैंस के घी का दीप जलाना है, इसको 'ज्योति यज्ञ' कहा जाता है। इसी का समर्थन ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 10 में है कि साधक को ज्योति जलाकर हवन यज्ञ करना चाहिए। सूक्ष्मवेद की अमृतवाणी परमात्मा के श्री मुखकमल से उच्चारित होने के कारण अधिक प्रभाव करती हैं।

हम ज्योति यज्ञ करते हैं तथा साधकों से करवाते हैं। सूक्ष्मवेद की आरती तथा अन्य वाणी बोलते हैं।

4. प्रणाम यज्ञ :- यह दो प्रकार की होती है :-

(i) नमस्कार अर्थात् प्रणाम :- इसमें दोनों हाथ जोड़कर शीश झुकाकर नमस्कार, प्रणाम या नमस्ते शब्द बोला जाता है जो गणमान्य देवों व मनुष्यों के लिए है। गीता अध्याय 18 श्लोक 65 तथा अध्याय 9 श्लोक 14 तथा 34 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मुझे नमस्कार कर।

(ii) डण्डवत प्रणाम :- इसमें जमीन पर मुख के बल लेटकर हाथों को सिर के आगे सीधा जोड़कर दोनों पैरों को भी जोड़कर डण्डे की तरह सीधा रहकर प्रणाम या नमस्कार शब्द बोला जाता है। इसे डण्डवत प्रणाम या दण्डवत प्रणाम कहते हैं। यह केवल परम संत तथा पूर्ण परमात्मा को ही करना होता है जिसका प्रमाण गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में दिया है, कहा है कि जिस संत के पास सूक्ष्मवेद अर्थात् तत्वज्ञान है, उसको दण्डवत प्रणाम करो।

5. ज्ञान यज्ञ :- सद्ग्रन्थों का पठन-पाठन तथा संतों के विचार सुनना अर्थात् सत्संग सुनना-सुनाना ज्ञान यज्ञ कहलाता है।

(ख) भक्ति की साधना में 'नाम स्मरण' साधना भी है।

अब जो सरलार्थ किया जाएगा, यह नाम स्मरण साधना के विषय में है। सूक्ष्मवेद की कुछ अमृतवाणियों का सरलार्थ यहाँ किया जाएगा जो नित्य पाठ में लिखी हैं।

सुमिरण (स्मरण) के अंग से

वाणी :- कबीर, सुमिरन मारग सहज का, सतगुरू दिया बताय।
श्वांस–उश्वांस जो सुमिरता, एक दिन मिल सी आय।।(1)
कबीर, माला श्वांस–उश्वांस की, फेरैंगे निजदास।
चौरासी भरमै नहीं, कटै कर्म की फाँस।।(2)

❖ परमेश्वर कबीर जी ने स्वंय पृथ्वी पर प्रकट होकर कलयुग के प्रथम चरण में यह सूक्ष्मवेद (तत्वज्ञान) अपने मुख कमल से बोलकर लोकोक्तियों, साखियों, दोहों तथा चौपाईयों के रूप में बोलकर सुनाया। जिस कारण से परमेश्वर कबीर को प्रसिद्ध कवि की उपाधि भी प्राप्त है। भक्ति की साधना में नाम स्मरण करने का सही तथा सहज(आसान) मार्ग बताया है जो श्वांस-उश्वांस से किया जाता है। श्वांस जो बाहर आता है, उश्वांस जो वापिस शरीर में जाता है। ऐसे सतनाम का स्मरण करने को कहा है, यही वास्तविक साधना है जिसको तत्वदर्शी संत ही जानता है या स्वयं परमेश्वर जानते हैं।(1)

❖ सत्यनाम के स्मरण को श्वांस-उश्वांस रूपी माला अर्थात् यथार्थ भक्ति साधना कोई खास भक्त ही फेरेगा। भावार्थ है कि पूर्ण संत सत्य साधना बताता है। पूर्ण संत किसी भाग्यवान को ही मिलता है। वह विशेष किस्मत वाला ही उस श्वांस-उश्वांस से स्मरण को प्राप्त करके नाम जाप करता है जिससे उस साधक के पाप कर्मों का नाश होकर कर्म बंधन रूपी जाल नष्ट हो जाता है। जिस कारण से वह साधक फिर से जन्म-मरण के चक्र से निकल जाता है, चौरासी (84) लाख प्रकार के जीवों के शरीरों में नहीं भटकता।(2)

वाणी :- कबीर, सुमिरन सार है, और सकल जंजाल।
आदि अन्त मध्य सोधिया, दूजा देख्या ख्याल।।(3)

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि भक्ति के लिए की जाने वाली साधनाओं में नाम का स्मरण सार है अर्थात् निष्कर्ष है। भावार्थ है कि जैसे कई साधक केवल सद्ग्रन्थों का पठन-पाठन अधिक करते हैं जो ज्ञान यज्ञ है। कुछ धार्मिक भण्डारे-भोजन कराने को महत्व देते हैं। कई धर्मशाला, प्याऊ आदि के निर्माण में अधिक समय देते हैं। कई हवन करने में अधिक समय लगाते हैं। परंतु इन सर्व साधनाओं में सबसे अधिक समय नाम स्मरण में लगाना चाहिए। नाम स्मरण न करके अन्य क्रियाओं को करना तो जंजाल बताया है अर्थात् व्यर्थ बताया है। आदि से तथा वर्तमान के अंत तक सब शोध करके देख लिया, नाम का स्मरण करना ही लाभदायक है। (यही प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 में भी है, कहा है कि :-

वायु अनिलम् अथ इदम् अमृतम् भस्मान्तम् शरीरम्।
ओम् (ॐ) कृतो स्मर, किलबे स्मर, कृतुम् स्मर।।

❖ अनुवाद :- (वायु) हवा अर्थात् श्वांस (अनिलम्) अग्नि अर्थात् गर्म (अथ) प्रारंभ कर (इदम्) इस प्रकार स्मरण से (भस्मान्तम् शरीरम्) देहान्त के बाद जो

(अमृतम्) अमरत्व मिलेगा, उसके लिए (ओम्) ॐ नाम का (कृतो) कार्य करते-करते (स्मर) स्मरण कर (किलबे स्मर) विशेष कसक के साथ स्मरण कर (कृतुम् स्मर) मानव जीवन का मूल कर्तव्य जानकर स्मरण कर।

भावार्थ :- गर्म श्वांस से आरंभ कर अर्थात् जो श्वांस बाहर छोड़ा जाता है, वह गर्म है। जो सतनाम है, उसमें दो अक्षर है। एक ॐ (ओम्) और दूसरा तत् = यह गुप्त मंत्र है, उपदेश लेने वाले को दीक्षा के समय बताया जाता है। इनमें से एक अक्षर अर्थात् नाम बाहर छोड़ते समय श्वांस के द्वारा जपा जाता है। दूसरा श्वांस अंदर लेते समय उश्वांस द्वारा जपा जाता है। सिद्ध हुआ कि अपने सद्ग्रन्थ नाम स्मरण को अधिक महत्व देते हैं।(3)

वाणी :- कबीर, जिन मुख आत्म राम है, दूजा दुःख अपार।
मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमिरन सार।।(4)

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि आत्मा को वास्तविक सुख परमात्मा से मिलता है। इसके अतिरिक्त सर्व असीमित दुख है। जैसे मानव जीवन में पूर्व जन्मों के पुण्य कर्मों से यहाँ पर कितना बड़ा पद प्राप्त है, चाहे राजा भी बना है, यदि नाम जाप अर्थात् भक्ति नहीं की तो 84 लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाना पड़ेगा जो अपार दुःख है जिसका कोई अन्त नहीं है। अन्त नाम स्मरण से ही होगा, वह मानव जीवन में ही संभव है। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने अति दृढ़ता के साथ कहा है कि मैं मन-कर्म-वचन से कह रहा हूँ कि नाम का स्मरण मोक्ष के लिए मूल रूप है।(4)**

वाणी :- कबीर, दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करे ना कोय।
जो सुख में सुमिरन करें, तो दुख काहे को होय।।(5)
कबीर, सुख में सुमिरन किया नहीं, दुख में किया याद।
कह कबीर ता दास की, कौन सुने फरियाद।।(6)

❖ **सरलार्थ :- आपत्ति आने पर तो सब परमात्मा को याद करते हैं, परंतु सुख समय में याद नहीं करते। यदि सुख में परमात्मा का नाम स्मरण करते तो दुख नहीं होता।(5)**

❖ **परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि जिस समय जीवन सुखी था, उस समय तो परमात्मा का नाम स्मरण किया नहीं, जिस समय पाप कर्मों के भोगने का दौर प्रारंभ हुआ, दुख आया, तब लगे परमात्मा को याद करने। उस समय उस स्वार्थी की प्रार्थना परमात्मा कैसे सुनेगा? अर्थात् फिर तो कष्ट भोगने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं होगा।(6)**

विशेष :- यहाँ पर यह स्पष्ट करना अनिवार्य समझता हूँ कि उपरोक्त वाणी सँख्या 6 का अर्थ ऊपर किया, ठीक है। यह उनके लिए है जिनको दुख के समय परमात्मा की खोज में जाने के पश्चात् भी पूर्ण संत नहीं मिलता, नकली गुरूओं या जंत्र-मंत्र करने वाले तांत्रिकों की भेंट चढ़ जाते हैं। यदि दुख समय में भटकते व्यक्ति को पूर्ण संत मिल जाता है तो उसका संकट निवार्ण हो जाता है, दुख दूर

हो जाता है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-

कबीर, सतगुरू शरण में आने से, आई टलै बला।
जै भाग्य में शूली हो, काँटे में टल जाय।।

वाणी :- कबीर, सांई यूंही मत जानियो, प्रीत घटे मम चित।
मरूं तो सुमिरत मरूं, जीवित सिमरूं नित्य।।(7)

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी भक्तों को समझाना चाहते हैं कि नामदान होने के पश्चात् परमेश्वर को सामान्य भाव से मत याद करना क्योंकि नाम को प्राप्त करके कुछ व्यक्ति यह समझते हैं कि यह कैसा नाम, कभी सुना ही नहीं। या फिर कई यह भावना बनाते हैं कि इतनी साधना कैसे बनेगी? 108 मंत्र जाप करना संभव नहीं। इस प्रकार से भगवान को जानने से श्रद्धा कम हो जाती हैं परमेश्वर कबीर जी ने श्रद्धा की दृष्टि से कहा है कि आप तो एक माला 108 नाम की जाप करने में कठिनाई मानते हो, मैं तो परमात्मा के नाम का स्मरण करते-करते प्राण त्यागने का वरदान माँगता हूँ और जब तक जीवन है, तब तक परमेश्वर को नित्य अर्थात् सदा क्षण-क्षण स्मरण करूँ, ऐसा आशीर्वाद गुरूदेव दें, मैं मेरी मृत्यु हो तब भी मरते-मरते नाम को याद करता हुआ प्राण त्यागूँ और जीवन प्रयन्त कभी स्मरण न भूलूँ।(7)

वाणी :- कबीर, जप तप संयम साधना, सब सुमिरन के मांही।
कबीर, जानै राम जन, सुमिरन बिन कुछ नाहीं।।(8)

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि हे भक्त! जो तुम अन्य मनमाने नामों का जप करते हो तथा हठयोग करके तप करते हो और अपनी इन्द्रियों पर संयम करने के लिए अनेकों क्रियाऐं करते हो, उसकी बजाय आप सतनाम का स्मरण करो, ये सर्व साधना अपने आप सिद्ध हो जाऐंगी, इस रहस्य को रामजन अर्थात् पूर्ण संत का शिष्य जानता है कि सत्य साधना सतनाम से होती है, इसके बिना अन्य क्रियाऐं व्यर्थ हैं। जैसे कोई विष्णु संहस्रनामा का जाप करता है, कोई गायत्री मंत्र का (जो यजुर्वेद के अध्याय 36 का मंत्र 3 है, उससे पहले ओम् = ॐ अक्षर जोड़कर गायत्री मंत्र बनाया है,उसका) जाप करते हैं। इन्द्रियों पर संयम करने के लिए श्रृंगी ऋषि वन में चला गया। अभ्यास करके इतना संयम कर लिया कि दिन में एक बार वृक्ष की छाल को चाटने मात्र से भूख-प्यास शांत हो जाती थी। राजा दशरथ की लड़की ने वृक्ष के उस स्थान पर शहद लगा दिया जहाँ श्रृंगी ऋषि जीभ से चाटता था। तीसरे दिन श्रृंगी ऋषि ने खीर खानी प्रारंभ कर दी, अंत में उस लड़की से विवाह करके ग्रहस्थ बन गया। सैंकड़ों वर्ष संयम बनाने के लिए साधना की, भक्ति की नहीं, अंत में पहले जैसे ही हो गए। इसलिए परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त तत्वज्ञान में संत गरीबदास जी ने कहा है :-

इन्द्री कर्म ना लगे लगारम, जो भजन करै निर्दुन्द रे।
गरीबदास, जग कीर्ति होगी, जब लग सूरज चंद रे।।

भावार्थ :- यदि परमात्मा के नाम स्मरण में लीन रहे तो इन्द्रियों के विषय

विकारों का चिंतन करने का समय ही नहीं मिलेगा। सत्यनाम की साधना से इन्द्री कर्म साधक में लिप्त नहीं होते। परमात्मा के लगातार नाम स्मरण करने से साधक का यश भी पृथ्वी पर बना रहता है। जैसे पूर्व के महान भक्त ध्रू, प्रहलाद, मीरा बाई, भीलनी, धन्ना भक्त, संत रविदास जी, परमेश्वर कबीर जी, संत नामदेव जी, संत गरीबदास जी आदि-आदि महान भक्तों के नाम भक्त समाज में सूरज की तरह रोशन हैं।(8)

वाणी :- कबीर, जिन हर जैसा सुमरिया, ताको तैसा लाभ।
ओसां प्यास न भागही, जब तक धसै नहीं आब।।(9)

❖ सरलार्थ :- जो भक्त जैसी श्रद्धा से तथा अधिकता तथा न्यूनता से भक्ति करता है, उसको उतना ही साधना का लाभ होता है। परमेश्वर कबीर जी ने सटीक उदाहरण दिया है कि जैसे ओस जल जो घास पर रात्रि के समय जमा होता है, यदि कोई उस ओस के जल को जीभ से चाटकर प्यास शांत करना चाहे तो संभव नहीं। प्यास शांत करने के लिए आब अर्थात् पानी में धंसना पड़ेगा अर्थात् प्यास शांत करने के लिए गिलास के गिलास जल पीना पड़ेगा। धँसना का अर्थ है किसी तरल पदार्थ में खड़ा होना, उदाहरण के लिए जब कोई दलदल गारा में प्रवेश कर जाता है तो कीचड़ उसके पैरों से चिपट जाती है। उसको कहते हैं गारा में धँस गया। दूसरा उदाहरण यह जानें जैसे कोई लालची अधिक है तो उसका व्यवहार देखकर अन्य व्यक्ति कहते हैं कि यह तो लालच में धँसा है। इसी प्रकार ओस जल प्यास शांत करने के लिए पर्याप्त नहीं होता, प्यास शांत करने के लिए अधिक जल पीना पड़ता है। इसी प्रकार आत्मा की भक्ति वाली प्यास शांत करने के लिए अधिक स्मरण, दान-धर्म करना पड़ेगा। जैसे हम तत्वज्ञान न होने के कारण रूई की पतली-सी ज्योति घी में गीली-सुखी करके जलाते थे। वह शीघ्र ही शांत हो जाती थी तथा मंगलवार को सवा रूपये या सवा दो रूपये की बुन्दी प्रसाद बाँटकर अपने आपको धन्य मानते थे। वह हम ओस चाट रहे थे। अब हम सुबह शाम ज्योति (दीप) देशी घी में जलाते हैं, लगभग 100 ग्राम घी प्रतिदिन हवन करते हैं, पाठ करते हैं, हजारों रूपये वर्ष में धर्म पर लगाते हैं, यह हम आब में धँस रहे हैं अर्थात् गट-गट पानी के गिलास पी रहे हैं।(9)

वाणी :- कबीर, सुमिरन की सुध यूं करो, जैसे दाम कंगाल।
कह कबीर विसरै नहीं, पल–पल लेत संभाल।।(10)

❖ शब्दार्थ :- (1. सुध का अर्थ है संभाल, देखरेख, ध्यान 2. दाम = रूपये 3. कंगाल = निर्धन 4. विसरना = भूलना)

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि परमात्मा के नाम के स्मरण की सुध अर्थात् संभाल ऐसे करनी चाहिए जैसे किसी निर्धन ने कुछ रूपये उधार लिए। वे कुछ दिन बाद आने वाले किसी धनी का कर्ज देना था। निर्धन व्यक्ति उन रूपयों को दिन में तथा रात्रि में कई-कई बार संभालता है, देखता है सुरक्षित है, पूरे हैं कि नहीं, कहीं कोई चोर तो नहीं चुरा ले गया। इस प्रकार की चिंता

उसको सताती रहती है और निर्धन व्यक्ति अपने दामों (रूपयों) की देखरेख करता है। वह चिंतित रहता है कि यदि रूपये (दाम) चोरी हो गये तो मेरा तो दिवाला ही निकल जाएगा। इसी प्रकार एक साधक को अपने नाम स्मरण रूपी धन की संभाल करनी चाहिए अर्थात् रह-रहकर स्मरण में लगन लगानी चाहिए, स्मरण करना चाहिए, भूल लगे तो फिर तुरंत स्मरण कर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।(10)

वाणी :- कबीर, सुमिरन स्यों मन लाईये, जैसे पानी मीन।
प्राण तजै पल बिछुड़ैं, सार कबीर कह दीन्ह।।(11)

❖ सरलार्थ :- स्मरण से मन को ऐसे लगाकर रखें जैसे मछली पानी से लगाती है। यदि मछली एक पल भी जल से बाहर निकाल दी जाए तो तड़फ-तड़फकर मर जाती है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि यह सार अर्थात् निचोड़ कह दिया है। भावार्थ है कि जैसे मछली जल के अभाव में प्राण त्याग देती है, उसके बिना मरना उचित समझती है। साधक को वह दिन तथा समय जिस दिन किसी कारण से स्मरण न कर सका हो, ऐसा लगना चाहिए जैसे सब कुछ लुट गया हो। तुंरत स्मरण में लगकर क्षतिपूर्ति करनी चाहिए।(11)

वाणी :- कबीर, सत्यनाम सुमरले, प्राण जाहिंगे छूट।
घर के प्यार आदमी, चलते लेंगे लूट।।(12)

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने मानव को सतर्क किया है, कहा है कि हे मानव! परमात्मा के सत्यनाम (वास्तविक नाम मंत्र) का स्मरण करले, न जाने कब जीवन का अंत हो जाएगा। मृत्यु के उपरांत जो आपके प्यारे व्यक्ति (पुत्र, पत्नी या पति, बेटी, भाई) आपकी जेब की तलाशी लेकर सब रूपया निकाल लेंगे तथा गले या नाक-कान में पहने हुए स्वर्ण के आभूषण निकाल लेंगे और वस्त्र भी उतार लेंगे, बिल्कुल नंगा करके एक कपड़े के टुकड़े (कफन) से ढ़ककर शमशान घाट पर ले जाकर स्वाह कर देंगे। भावार्थ है कि अज्ञानता के कारण आप परमात्मा का स्मरण न करके परिवार के मोह में पड़कर सर्व समय व्यर्थ कर रहे हो। मृत्यु के पश्चात् पता चलेगा कि कौन प्यारा है और कौन-सा धन तुम्हारा है। आपके साथ आपका सत्यनाम के स्मरण का धन चलेगा, दान-धर्म किया, वह तथा तेरा पाप तेरे साथ चलेगा। इसलिए हे मानव! सत्यनाम का स्मरण कर, तेरा कल्याण हो जाएगा।(12)

वाणी :- कबीर, लूट सकै तो लूट ले, राम नाम की लूट।
फिर पीछै पछताएगा, प्राण जांहिंगे छूट।।(13)

❖ सरलार्थ :- हे मानव! तू भौतिक धन को संग्रह करने के लिए बेसब्रा होकर जनता को लूट रहा है। कोई रिश्वत लेकर, कोई चोरी करके, कोई मिलावट तथा हेराफेरी करके धन लूटने में लगा है, यह साथ चलना नहीं। जब मृत्यु होगी और परमात्मा से रूबरू होने का समय आएगा, तब तुझे याद आएगा कि मुझे मानव शरीर तो भक्ति करने के लिए मिला था, वह तो किया नहीं। जो सारे जीवन में

भौतिक धन जोड़ा, वह सब यहीं रह गया। अब घर का रहा न घाट का। तब तुझे पाश्चाताप होगा। इसलिए कुछ समय धंधे (सांसारिक कार्य) से निकालकर राम के नाम की लूट करले, यह वास्तविक लूट है, यदि लूट सकता है तो भक्ति लूट ले।(13)

वाणी :- कबीर, सोया तो निष्फल गया, जागो सो फल लेय।
साहब हक ना राखसी, जब माँगे तब देय।।(14)

❖ सरलार्थ :- जो व्यक्ति मोह तथा अज्ञान रूपी निन्द्रा में सोये हैं अर्थात् भक्ति नहीं करते, उनका जीवन व्यर्थ गया और जो सन्तों के विचार सुनकर मोह तथा अज्ञान निन्द्रा से जाग गए, वे भक्ति का फल प्राप्त करते हैं। परमात्मा किसी के किए कर्म का हक अर्थात् हिस्सा नहीं रखते, जब माँगोगे, उसी समय आपको वह भक्ति धन प्रदान कर देंगे। आपको आपत्ति से बचा लेंगे।(14)

वाणी :- कबीर, चिंता तो हरि नाम की, और न चिन्ता दास।
जो कुछ चितवै नाम बिना, सोई काल की फाँस।।(15)

❖ सरलार्थ :- हे दास अर्थात् मेरे (कबीर जी के) भक्त! यदि चिन्ता करे तो नाम स्मरण की करना। यदि नाम स्मरण के अतिरिक्त जो भी चिन्ता उत्पन्न होती है, वह काल पुरूष की फाँस अर्थात् बन्धन है। अन्य चिन्ता स्मरण से दूर होती है। नाम स्मरण की चिन्ता है, वह वास्तविक चिन्ता है, यह करनी चाहिए अर्थात् भक्ति कम होने की चिन्ता होती है तो स्मरण में लगन लगेगी और मोक्ष प्राप्त होगा। यह चिन्ता करने योग्य है, अन्य तो बिना किए ही हो जाती है।(15)

वाणी :- कबीर, जब ही सत्यनाम हृदय धर्यो, भयो पाप को नाश।
मानो चिंगारी अग्नि की, पड़ी पुराणे घास।।(16)

❖ सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि जिस समय साधक को सत्यनाम अर्थात् वास्तविक नाम मंत्र मिल जाता है और साधक हृदय से सत्यनाम का स्मरण करता है तो उसके पाप ऐसे नष्ट हो जाते हैं जैसे हजारों टन सूखा पुराने घास में अग्नि की एक छोटी-सी चिंगारी लगा देने से वह जलकर भस्म हो जाता है। उसी प्रकार सत्यनाम के स्मरण से साधक का पाप नाश हो जाता है जो दुखों का मूल है। पाप नाश हुआ तो साधक सुखी हो जाता है।(16)

वाणी :- कबीर, राम नाम को सुमरतां, अधम तरे अपार।
अजामेल गणिका स्वपच, सदना सबरी नारी।।(17)

❖ सरलार्थ :- राम नाम अर्थात् परमात्मा के सत्यनाम का स्मरण करने से बहुत से अधम (नीच कर्मी प्राणी) भी भव सागर से पार हो गए। उदाहरण दिया है कि अजामेल नामक शराबी-कबाबी दुराचारी व्यक्ति सन्तों की शरण में आकर सुधरकर भक्ति करके अपना कल्याण करा गया। इसी प्रकार गणिका (वैश्या) को ज्ञान हुआ, वह भी सुधर गई और सत्यनाम का स्मरण करके पार हो गई। एक सदना कसाई था, सुधरकर नाम स्मरण करके पार हुआ। इसी प्रकार भीलनी जाति की शबरी नारी भी शुद्र होते हुए भी सत्यनाम का स्मरण करके अपना कल्याण करा गई। इस प्रकार सत्यनाम का स्मरण करके अनेकों बुरे व्यक्ति भी

सुधरकर पार हो गए तो अन्य व्यक्ति भी सत्यनाम का स्मरण करके अपना कल्याण आसानी से करा सकते हैं।(17)

वाणी :- कबीर, स्वपन में बर्राय के, जो कोई कहे राम।
वाके पग की पांवड़ी, मेरे तन को चाम।।(18)

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने भक्ति करने वाले मानव को कितना महान बताया है तथा उसका कितना सम्मान किया है, कहा कि यदि कोई मानव स्वपन में बरड़ाय कर भी परमात्मा के नाम का जाप कर देता है, वह मुझे इतना प्रिय है कि उसके पाँव की जूती अपने शरीर के चाम से बनवा दूँ। कई व्यक्ति सोते समय स्वपन देखते हैं तो उस समय दृश्य को सोते-सोते बोलते हैं जो अस्पष्ट भाषा होती है, उसको बरड़ाना कहते हैं कि अमूक व्यक्ति सोते समय बरड़ाता है। स्वपन में वही दृश्य दिखाई देते हैं जो दिन में देखे होते हैं।

एक व्यक्ति केले बेचता था, वह दिनभर बोलता था कि ले लो 10 के 12 केले, ले लो 10 के 12 केले। रात्रि में भी कई बार जोर से आवाज लगाता, कहता कि ले लो 10 के 12 केले, ले लो 10 के 12 केले।

ऐसे ही एक किसान बाजरे की फसल की पक्षियों से रखवाली करता था। वह दिनभर कहता रहता था, हर्र चिड़िया........। कई बार सोते समय भी इसी प्रकार ऊँची आवाज में बोलता था। कारण यह है कि दिनभर किया अभ्यास ही स्वपन बनकर रात्रि में दिखता है। इसी प्रकार स्वपन में वही भक्त राम नाम का उच्चारण करेगा जो दिनभर परमात्मा का नाम जाप करता है। वह भक्त परमात्मा का प्रिय होता ही है। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने हम साधकों को संकेत दिया है कि भक्ति निर्धुंध करो अर्थात् भक्ति का तूफान उठा दो, अधिक से अधिक भक्ति करो। उस भक्त के लिए मैं (परमेश्वर) अनहोनी कर दूँगा।(18)

वाणी :- कबीर, नाम जपत कन्या भली, साकट भला न पूत।
छेरी के गल गलथना, जिसमें दूध न मूत।।(19)

❖ सरलार्थ :- परमात्मा की भक्ति करने वाली बेटी अच्छी है साकट पुत्र से। साकट उसको कहते हैं जो स्वयं भक्ति नहीं करता तथा अन्य को भी बाधा करता है। भक्ति करने वाली कन्या के जीवन में आने वाली कर्म की आपत्ति को परमात्मा दूर करेगा। बेटी जो भक्ति करती है, वह सदा सुखी रहेगी। माता-पिता भी अपनी बेटी को सुखी देखकर खुश रहते हैं। जो लड़का भक्ति नहीं करता तो वह कोई ऐसा कार्य करेगा जिसके कारण वह स्वयं तो जेल में जाएगा तथा पिताजी उसके दुख में दुखी रहेगा। माताजी भी उस नालायक के दुख से अत्यधिक दुखी रहती है। इसलिए परमात्मा ने उस साकट पुत्र को बकरी के गले में गलथना की उपमा दी है जो न तो पेशाब करने के काम आता और न उससे दूध ही निकलता, व्यर्थ में ही गले में भार बना होता है। वह साकट पुत्र माता-पिता के गले का गलथना सिद्ध होता है।(19)

वाणी :- कबीर, सब जग निर्धना, धनवंता ना कोय।
धनवंता सो जानिये, जा पै राम नाम धन होय।।(20)

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि जो व्यक्ति संसार में अधिक धन संपत्ति के स्वामी हैं, सामान्यतः जनता उनको धनवान कहती है। कबीर जी ने बताया है कि उस धनवान व्यक्ति की मृत्यु हो गई, सारा धन यहीं छोड़ गया। जब धन यहीं रह गया तो वह संसार से निर्धन बनकर गया। जो भक्त भक्ति करता है, वह राम नाम की कमाई करके राम नाम का धन संग्रहित करता है। भक्त को यहाँ पर भी परमात्मा धन देता है, मृत्यु के उपरांत भक्ति धन उसके साथ जाता है। धनवंता अर्थात् साहूकार तो वह है जिसके पास राम नाम की भक्ति का धन है। उदाहरण :- ''काशी शहर में भोजन भण्डारा करना''

❖ परमेश्वर कबीर जी ने स्वयं एक भक्त का अभिनय करके उपरोक्त अमृतवाणी की सत्यता दृढ़ की है।

सर्व विदित है कि काशी शहर में रहने वाला कबीर जुलाहा एक झोंपड़ी में रहता था। कुल पाँच सदस्यों का परिवार था। दो मुँहबोले माता-पिता (नीमा तथा नीरू) जिनको परमेश्वर कबीर जी काशी शहर के बाहर लहरतारा नामक तालाब में कमल के फूल पर नवजात शिशु के रूप में मिले थे। एक लड़की मृत्यु के उपरांत उसके परिवार ने कब्र में दफना रखी थी। लड़की का पिता शेखतकी पीर था जो दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी का धार्मिक गुरू भी था। राजा सिकंदर का असाध्य रोग परमेश्वर कबीर जी के आशीर्वाद से ठीक हो गया था। जिस कारण से सिकंदर लोधी राजा कबीर जी को अल्लाह की जात कहता था। जो उस धार्मिक पीर शेखतकी को गवारा नहीं था। वह कबीर जी से ईर्ष्या रखता था। कबीर जी को नीचा दिखाकर राजा की नजरों में अपनी महिमा बरकरार रखना चाहता था। वह कबीर जी को अल्लाह तो छोड़, वह संत भी मानने को तैयार नहीं था। उसने शर्त रखी कि यदि कबीर जी किसी मुर्दे को जीवित कर दे तो मैं इन्हें अल्लाह (भगवान) मान लूंगा।

एक 12 वर्ष के लड़के का शव गंगा में बहता जा रहा था। शेखतकी ने राजा सिकंदर से कहा कि यदि कबीर जी इस मुर्दे बालक को जीवित कर दें तो मैं इन्हें अल्लाह मान लूंगा और इनका मुरीद (शिष्य) बन जाऊँगा। हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में परमेश्वर कबीर जी ने उस 12 वर्षीय लड़के को तत्काल जीवित कर दिया। दर्शकों ने कहा कमाल कर दिया। बालक का नाम कमाल रख दिया और अपने पुत्र के रूप में कबीर जी ने रखा। शेखतकी ने कहा यह बालक सदमे में था, मृत नहीं था। एक दिन से अचेत था, ऐसा तो इत्तफाक (संयोग) से होना था, नाम कबीर का हो गया। मैं तो तब मानूं जब मेरी लड़की को जीवित करे जो 20 दिन से कब्र में है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि आज से तीसरे दिन तेरी लड़की को जीवित कर दूंगा। ऐसा कर, दिल्ली शहर तथा आसपास में मुनादी (Advertisement) करा दे, सब देखने आऐं। ऐसा ही किया गया। लड़की की कब्र खोद दी गई। परमेश्वर कबीर जी ने उस लड़की को तुरंत जीवित कर दिया। सर्व दर्शकों ने कहा कमाल कर दिया। लड़की का नाम कमाली रखा।

लाखों दर्शकों ने परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ली, परंतु भाग्यहीन शेखतकी फिर भी नहीं समझा। उसकी ईर्ष्या बढ़ती ही चली गई। उस लड़की ने अपने पिता शेखतकी के साथ जाने से मना कर दिया और 1½ घण्टे तक उपस्थित जनता को प्रवचन कर बताया कि ये स्वयं अल्लाह अकबर कबीर जी हैं, ये सामान्य व्यक्ति नहीं हैं। आपने भी देख लिया है मेरे को जीवन दान दिया है। मेरे मानव जीवन का संस्कार शेष नहीं था। मुझे अपना वास्तविक पिता मिल गया है। मैं कबीर अल्लाह के साथ जाऊँगी। कबीर जी ने उस कमाली लड़की को अपनी बेटी के रूप में रखा। इस प्रकार परमेश्वर कबीर जी का परिवार पाँच सदस्यों का था। परमेश्वर कबीर जी जुलाहे का कार्य करते थे जो धन कमाने की दृष्टि से नहीं था। परमेश्वर कबीर जी तो लीला करके हमें सच्चे भक्त की भूमिका करके उदाहरण देना चाहते थे, उसी उद्देश्य से यह कार्य चुना था। कपड़ा बुनने से जो कमाई (income) होती थी, उससे कठिनता से निर्वाह चलता था। परमात्मा कबीर जी सत्यज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान का प्रचार भी करते थे। हिन्दू धर्म के गुरूजन ब्राह्मणों की अज्ञानता उजागर करते थे। जिस कारण से सर्व पंडित कबीर जी के विरोधी हो गए थे। दूसरी ओर मुसलमान धर्म के मुल्ला-काजी भी कबीर जी के यथार्थ ज्ञान से बौखला गए थे।

शेखतकी सब मुसलमानों का मुखिया अर्थात् मुख्य पीर था जो पहले से ही खार खाए था अर्थात् पहले से ही ईर्ष्या करता था। सर्व ब्राह्मणों तथा मुल्ला-काजियों व शेखतकी ने मजलिस (मीटिंग) करके षड़यंत्र के तहत योजना बनाई कि कबीर निर्धन व्यक्ति है। इसके नाम से पत्र भेज दो कि कबीर जी काशी में बहुत बड़े सेठ हैं। उनका पूरा पता है कबीर पुत्र नूरअली अंसारी, जुलाहों वाली कॉलोनी, काशी शहर। कबीर जी तीन दिन का धर्म भोजन-भण्डारा करेंगे। सर्व साधु संत आमंत्रित हैं। प्रतिदिन प्रत्येक भोजन करने वाले को एक दोहर (जो उस समय का सबसे कीमती कम्बल के स्थान पर माना जाता था), एक मोहर (10 ग्राम स्वर्ण से बनी गोलाकार की मोहर) दक्षिणा देगें। प्रतिदिन जो जितनी बार भी भोजन करेगा, कबीर उसको उतनी बार ही दोहर तथा मोहर दान करेगा। भोजन में लड्डू, जलेबी, हलवा, खीर, दही बड़े, माल पूड़े, रसगुल्ले आदि-2 सब मिष्ठान खाने को मिलेंगे। सुखा सीधा (आटा, चावल, दाल आदि सूखे जो बिना पकाए हुए, घी-बूरा) भी दिया जाएगा। एक पत्र शेखतकी ने अपने नाम तथा दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी के नाम भी भिजवाया। निश्चित दिन से पहले वाली रात्रि को ही साधु-संत भक्त एकत्रित होने लगे। अगले दिन भण्डारा होना था। परमेश्वर कबीर जी को संत रविदास दास जी ने बताया कि आपके नाम के पत्र लेकर लगभग 18 लाख साधु-संत व भक्त काशी शहर में आए हैं। भण्डारा खाने के लिए आमंत्रित हैं। कबीर जी अब तो अपने को काशी त्यागकर कहीं और जाना पड़ेगा। कबीर जी तो जानीजान थे। फिर भी अभिनय कर रहे थे, बोले रविदास जी झोंपड़ी के अंदर बैठ जा, सांकल लगा ले। अपने आप चले जाएंगे झख मारकर। हम बाहर निकलेंगे ही नहीं। परमेश्वर कबीर जी अन्य वेश में अपनी राजधानी

सत्यलोक में पहुँचे। वहाँ से नौ लाख बैलों के ऊपर गधों जैसा बौरा (थैला) रखकर उनमें पका-पकाया सर्व सामान भरकर तथा सूखा सामान (चावल, आटा, खाण्ड, बूरा, दाल, घी आदि) भरकर पृथ्वी पर उतरे। सत्यलोक से ही सेवादार आए। परमेश्वर कबीर जी ने स्वयं बनजारे का रूप बनाया और अपना नाम केशव बताया। दिल्ली के सिकंदर बादशाह तथा उसका धार्मिक पीर शेखतकी भी आया। काशी में भोजन-भण्डारा चल रहा था। सबको प्रत्येक भोजन के पश्चात् एक दोहर तथा एक मोहर (10 ग्राम सोना{Gold}) दक्षिणा दी जा रही थी। कई बेईमान संत तो दिन में चार-चार बार भोजन करके चारों बार दोहर तथा मोहर ले रहे थे। कुछ सूखा सीधा (चावल, खाण्ड, घी, दाल, आटा) भी ले रहे थे।

यह सब देखकर शेखतकी ने तो रोने जैसी शक्ल बना ली और जाँच (Enquiry) करने लगा। सिकंदर लोधी राजा के साथ उस टैंट में गया जिसमें केशव नाम से स्वयं कबीर जी वेश बदलकर बनजारे (उस समय के व्यापारियों को बनजारे कहते थे) के रूप में बैठे थे। सिकंदर लोधी राजा ने पूछा आप कौन हैं? क्या नाम है? आप जी का कबीर जी से क्या संबंध है? केशव रूप में बैठे परमात्मा जी ने कहा कि मेरा नाम केशव है, मैं बनजारा हूँ। कबीर जी मेरे पगड़ी बदल मित्र हैं। मेरे पास उनका पत्र गया था कि एक छोटा-सा भण्डारा (भोजन कराने का आयोजन) करना है, कुछ सामान लेते आइएगा। उनके आदेश का पालन करते हुए सेवक हाजिर है। भण्डारा चल रहा है। शेखतकी तो कलेजा पकड़कर जमीन पर बैठ गया जब यह सुना कि एक छोटा-सा भण्डारा करना है जहाँ पर 18 लाख व्यक्ति भोजन करने आए हैं। प्रत्येक को दोहर तथा मोहर और आटा, दाल, चावल, घी, खाण्ड भी दिए जा रहे हैं। इसको छोटा-सा भण्डारा कह रहे हैं। परंतु ईर्ष्या की अग्नि में जलता हुआ विश्राम गृह में चला गया जहाँ पर राजा ठहरा हुआ था। सिकंदर लोधी ने केशव से पूछा कबीर जी क्यों नहीं आए? केशव ने उत्तर दिया कि उनका गुलाम जो बैठा है, उनको तकलीफ उठाने की क्या आवश्यकता? जब इच्छा होगी, आ जाएंगे। यह भण्डारा तो तीन दिन चलना है। सिकंदर लोधी हाथी पर बैठकर अंगरक्षकों के साथ कबीर जी की झोंपड़ी पर गए। वहाँ से उनको तथा रविदास जी को साथ लेकर भण्डारा स्थल पर आए। सबसे कबीर सेठ का परिचय कराया तथा केशव रूप में स्वयं डबल रोल करके उपस्थित संतों-भक्तों को प्रश्न-उत्तर करके सत्संग सुनाया जो 24 घण्टे तक चला। कई लाख सन्तों ने अपनी गलत भक्ति त्यागकर कबीर जी से दीक्षा ली, अपना कल्याण कराया। भण्डारे के समापन के बाद जब बचा हुआ सब सामान तथा टैंट बैलों पर लादकर चलने लगे, उस समय सिकंदर लोधी राजा तथा शेखतकी, केशव तथा कबीर जी एक स्थान पर खड़े थे, सब बैल तथा साथ लाए सेवक जो बनजारों की वेशभूषा में थे, गंगा पार करके चले गए। कुछ ही देर के बाद सिकंदर लोधी राजा ने केशव से कहा आप जाइये आपके बैल तथा साथी जा रहे हैं। जिस ओर बैल तथा बनजारे गए थे, उधर राजा ने देखा तो कोई भी नहीं था। आश्चर्यचकित होकर राजा ने पूछा कबीर जी! वे बैल तथा बनजारे इतनी शीघ्र

कहाँ चले गए? उसी समय देखते-देखते केशव भी परमेश्वर कबीर जी के शरीर में समा गए। अकेले कबीर जी खड़े थे। सब माजरा (रहस्य) समझकर सिकंदर लोधी राजा ने कहा कि कबीर जी! यह सब लीला आपकी ही थी। आप स्वयं परमात्मा हो। शेखतकी के तो तन-मन में ईर्ष्या की आग लग गई, कहने लगा ऐसे-ऐसे भण्डारे हम सौ कर दें, यह क्या भण्डारा किया है? महौछा किया है।

महौछा उस अनुष्ठान को कहते हैं जो किसी गुरू द्वारा किसी वृद्ध की गति करने के लिए थोपा जाता है। उसके लिए सब घटिया सामान लगाया जाता है। जग जौनार करना उस अनुष्ठान को कहते हैं जो विशेष खुशी के अवसर पर किया जाता है, जिसमें अनुष्ठान करने वाला दिल खोलकर रूपये लगाता है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, कोई कह जग जौनार करी है, कोई कहे महौछा।
बड़े बड़ाई किया करें, गाली काढ़े औछा।।

सारांश :- कबीर जी ने भक्तों को उदाहरण दिया है कि यदि आप मेरी तरह सच्चे मन से भक्ति करोगे तथा ईमानदारी से निर्वाह करोगे तो परमात्मा आपकी ऐसे सहायता करता है।

भक्त ही वास्तव में सेठ अर्थात् धनवंता हैं। भक्त के पास दोनों धन हैं, संसार में जो चाहिए वह भी धन भक्त के पास होता है तथा सत्य साधना रूपी धन भी भक्त के पास होता है।

वाणी :- कबीर, कहता हूँ कह जात हूँ, कहूँ बजा कर ढ़ोल।
श्वांस जो खाली जात है, तीन लोक का मोल।।(21)

❖ सरलार्थ :- कबीर जी ने श्वांस के द्वारा सत्यनाम के स्मरण की कीमत बताई है कि एक श्वांस के द्वारा किए गए सत्यनाम के स्मरण की कीमत (Value) तीन लोक (1. स्वर्ग लोक 2. पाताल लोक 3. पृथ्वी लोक) के समान है। ऐसे मँहगे (कीमती) श्वांस को स्मरण के बिना गँवाना (खोना) भक्त के लिए हानिकारक है। यह बात मैं (कबीर जी) ढ़ोल के डंके पर कह रहा हूँ अर्थात् पूरे विश्वास से कह रहा हूँ कि आपका एक श्वांस भी स्मरण के बिना जाता है तो यह तीन लोक के समान कीमत वाला है।(21)

वाणी :- कबीर, ऐसे मँहगे मोल का, एक श्वांस जो जाय।
चौदह लोक न पटतरे, काहे धूर मिलाय।।

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने एक श्वांस से सत्यनाम के स्मरण की ऊपर लिखी वाणी सँख्या 21 में कीमत बताई है। उसके बाद इस वाणी 22 में दृढ़ किया है कि ऐसा कीमती श्वांस एक भी बिना स्मरण के जाता है तो आपको कितनी हानि होती है? फिर कहा है कि ऊपर की वाणी में जो एक श्वांस के स्मरण की कीमत तीन लोक कही है, वह तो थोड़ी है, इसकी कीमत के पटतरै अर्थात् बराबर तो चौदह लोक भी नहीं हैं। चौदह लोक उपरोक्त तीन लोकों (1. स्वर्ग 2. पाताल 3. पृथ्वी) से भिन्न हैं। जैसे श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक,

श्री दुर्गा जी का लोक, श्री इन्द्र जी का लोक, ब्रह्म लोक, गोलोक आदि-आदि 14 लोक तीन लोकों से भिन्न हैं। संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त तत्वज्ञान में इसी श्वांस के द्वारा सत्यनाम के स्मरण की कीमत इस प्रकार बताई है :-गरीब, सत्यनाम पालड़ै रंग होरी हो, चौदह लोक चढ़ावै राम रंग होरी हो।

तीन लोक पासंग धरै रंग होरी हो, तो ना तुलै तुलाय राम रंग होरी हो।।

❖ सरलार्थ :- सत्यनाम दो अक्षर का मंत्र है। इसमें एक ओम् (ॐ) अक्षर है, दूसरा सांकेतिक 'तत्' मन्त्र है। इन दोनों अक्षरों का स्मरण एक का श्वांस से (जो श्वांस बाहर छोड़ते हैं) तथा दूसरे का उश्वांस (जो श्वांस अंदर लेते हैं) से किया जाता है। संत गरीबदास जी ने बताया है कि इस प्रकार सत्यनाम को स्मरण करने की कीमत है कि तुला (तराजु Balance) के एक पलड़े में यह श्वांस-उश्वांस का सत्यनाम का स्मरण रख दे, दूसरे पालड़े में चौदह (14) लोक रख दे और तीन लोक तो पासंग के स्थान पर रख दे तो भी सत्यनाम के स्मरण की कीमत अधिक होगी। तुला का वह पलड़ा जिसमें सत्यनाम रखा है, फिर भी भारी रहेगा अर्थात् सत्यनाम का श्वांस से किया जाने वाला स्मरण अनमोल है। इस प्रकार स्मरण करने वाले साधक का भक्ति धन अधिक संग्रहित (इकट्ठा) होता है। शीघ्र भक्ति का धनी बनकर मोक्ष प्राप्त करता है।(22)

वाणी :- कबीर, जीवन तो थोड़ा भला, जे सत्य सुमिरन होय।

लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरे ना कोय।।(23)

❖ सरलार्थ :- जैसाकि ऊपर बताया है कि वह सत्य स्मरण विधि है। यदि ऐसी विधि से स्मरण किया जाए तो यदि थोड़ा जीवनकाल भी बचा हो तो भी मोक्ष प्राप्त हो जाएगा। सत्य स्मरण न करके अन्य विधि से साधना चाहे लाख वर्ष की लम्बी आयु तक करते रहो, उसका कोई लेखा (Account) नहीं होगा, व्यर्थ प्रयत्न होगा।(23)

वाणी :- कबीर, कहता हूँ कह जात हूँ, सुनता है सब कोय।

सिमरन से भला होएगा, नातरै भला न होय।।(24)

❖ सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने स्पष्ट किया है कि भक्ति की साधना में नाम स्मरण सर्वोत्तम है। जैसे कुछ साधक ज्ञान यज्ञ अर्थात् सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय या सत्संग करना, कीर्तन-जागरण करना अधिक पसंद करते हैं। कुछ साधक हवन यज्ञ को अधिक महत्व देते हैं। कुछ धर्म यज्ञ को ही करके मोक्ष मानते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि :-

जप–तप सयंग साधना, सब स्मरण के मांहीं।

कबीर जाने रामजन, सुमिरन सम कछु नाहीं।।

❖ सरलार्थ पहले कर दिया है। कबीर जी के कहने का तात्पर्य है कि यज्ञ भी करना है, परंतु नाम बिना यज्ञ व्यर्थ है।

उदाहरण के लिए = जैसे किसान गेहूँ बीजता है। उसके पश्चात् खाद भी डालता है, सिंचाई भी करता है। यदि किसान खेत में बीज डाले नहीं और

खाद-पानी डालता रहे तो उसको गेहूँ प्राप्त नहीं हो सकते। अब गेहूँ के बीज को तो नाम मानो और खाद-पानी को यज्ञ। यज्ञों की जानकारी पूर्व में बता दी है। (धर्म यज्ञ, ध्यान यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, हवन यज्ञ और प्रणाम यज्ञ) इसलिए उपरोक्त वाणी सँख्या 24 में कहा है कि नाम स्मरण से भला होगा अन्यथा लाभ नहीं होगा।(24)

वाणी :- कबीर, हरि की भक्ति बिन, धिक जीवन संसार।
धूवें जैसा धौलहरा, जात न लागै बार।।(25)

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर की भक्ति के बिना मनुष्य का जीवन धिक्कार है। जिस परिवार तथा प्रोपर्टी को अपना मानकर फूला फिरता है, यह तो जैसे धुवाँ बहुत फैला नजर आता है, हवा चलते ही पता नहीं चलता, धुँवा कहाँ चला जाता है। इसी प्रकार जिस बड़ी कोठी और कार को प्राप्त करके परमात्मा की भक्ति भूल गया है। इन सबको जाते तथा जीवन अन्त होते देर नहीं लगेगी। जैसे भूकम्प में 8-8 मंजिल की कोठियाँ समाप्त हो गई थी, अन्दर ही मालिक सपरिवार मर गए थे। इसलिए कहा है कि परमात्मा की भक्ति बिना मनुष्य जन्म धिक्कार है।(25)**

वाणी :- कबीर, भक्ति भाव भादौ नदी, सभी चलैं गहराय।
सरित सोय जानियो, जो ज्येष्ठ मास ठहराय।।(26)

❖ **सरलार्थ :- जैसे भादौ मास में वर्षा अधिक होती है, जिस कारण से सर्व नाले भी विशाल रूप धारण करके बहने लगते हैं और नदी जैसे दिखाई देते हैं। परंतु सरिता अर्थात् दरिया तो उसको मानो जिसमें ज्येष्ठ महीने में भी पर्याप्त जल बह रहा हो। जैसे भक्तों को परमात्मा सुख दे रहा है तो सबका भाव-श्रद्धा उमड़ती दिखाई देती है। सब ही परम भक्त नजर आते हैं क्योंकि उस समय उन पर परमेश्वर की कृपा बरस रही होती है। वह समझें भादौ मास। जब कभी ज्येष्ठ मास आए अर्थात् कोई आपत्ति का समय आ जाए। यदि उस समय भी परमात्मा में श्रद्धा और विश्वास बना रहता है तो समझें वह परम भक्त है।(26)**

वाणी :- कबीर, भक्ति बीज बिनसै नहीं, आ पड़ै सौ झोल।
जै कंचन बिष्टा पड़ै, घटै न ताका मोल।।(27)

❖ **सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने भक्त के लक्षण तथा महिमा बताई है। कहा है कि जो भक्ति बीज अर्थात् सच्चा भक्त होगा, उसका नाश नहीं होता। वह भक्ति नहीं छोड़ता चाहे सैंकड़ों आपत्तियाँ आ पड़ें। चाहे संसार के लोग उसे कितना ही बदनाम करें, चाहे कितना ही अपमानित करें। परमात्मा के दरबार में उसकी महिमा कम नहीं होती। जैसे स्वर्ण यदि बिष्टे (टट्टी-गोबर) में गिर जाए तो भी उसकी कीमत कम नहीं होती।(27)**

वाणी :- कबीर, कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति वर्ण सब खोय।।(28)

❖ **सरलार्थ :- कामी जो विषय-वासना में लिप्त हो, जो क्रोधी है, लालची है, उससे भक्ति नहीं होती। भक्ति तो कोई शूरवीर करेगा जो जाति तथा कुल से**

ऊपर उठकर विचार करेगा और कुल की लाज को समाप्त करके अपना कल्याण कराऐगा।(28)

वाणी :- कबीर, जब तक भक्ति सकामना, तब लग निष्फल सेव।
कहैं कबीर वह क्यों मिले, निष्कामी निज देव।।(29)

❖ सरलार्थ :- जब तक भक्त स्वार्थ पूर्ति के लिए भक्ति करता है। कभी कार माँगता है, कभी कोठी। तब तक उसकी सेव अर्थात् पूजा व्यर्थ है। परमेश्वर कबीर जी समझा रहे हैं कि ऐसे साधक को वह परम पुरूष प्राप्त नहीं होता। केवल आत्म कल्याण के लिए भक्ति करने वाले को संसारी लाभ तथा मोक्ष दोनों मिलते हैं।

उदाहरण :- जैसे किसान गेहूँ की फसल उगाता है। उसका उद्देश्य भुष प्राप्त करना नहीं होता। उसका उद्देश्य जीवनदाता अन्न गेहूँ प्राप्त करना होता है। फिर भुसा तो अपने आप ही प्राप्त हो जाता है। यदि किसान भूसा प्राप्त करने घास बीजकर सर्व लाभ की इच्छा करे तो वह व्यर्थ है। इसी प्रकार ऐसी भक्ति करें जिसका उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति हो, उससे सांसारिक लाभ भी अवश्य मिलेंगे, वे तो भक्ति के By Product होते हैं अर्थात् भक्ति के साथ मुफ्त मिलते हैं।(29)

''सातों वार की रमैणी का सरलार्थ''

इस रमैणी के सरलार्थ की मैं आवश्यकता नहीं समझता क्योंकि इसमें संत गरीबदास जी ने यह सिद्ध किया है कि जो व्यक्ति शुभ-अशुभ वार (दिन) के चक्कर में पड़े हैं, उनको पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है। सातों वार (रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार) एक समान हैं। हमने प्रत्येक वार को सत्यनाम का जाप किया जिसके स्मरण से राहू तथा केतू राक्षस मार्ग नहीं रोकते तथा नौ ग्रह नमन रहते हैं। राहु तथा केतु नाम के दो राक्षस माने गए हैं जिनके विषय में धारणा है कि ये शुभ कार्य में बाधा करते ही करते हैं। उनकी बाधा का विनाश करने के लिए ब्राह्मण लोग कुछ अनुष्ठान करने को कहा करते हैं। संत गरीबदास जी ने बताया है कि सत्यनाम साधक के शुभ कर्म में राहु-केतु राक्षस घाट अर्थात् मार्ग नहीं रोक सकते। सतगुरू तुरंत उस बाधा को समाप्त कर देते हैं। भावार्थ है कि सत्यनाम साधक पर किसी भी ग्रह तथा राहु-केतु का कोई प्रभाव नहीं पड़ता तथा दशों दिशाओं की सर्व बाधाऐं समाप्त हो जाती हैं। हमारे भक्ति मार्ग को कोई नहीं समझ रहा क्योंकि यह आप जी को कठिन लगता है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि सतनाम की साधना करने से मेरे को चन्द्र समूला चिन्तामणी पाया अर्थात् मेरे चन्द्रमा जैसे शीतल परमात्मा समूल अर्थात् पूर्ण रूप से मिल गया। मैं (गरीब दास जी) पद अर्थात् सत्य भक्ति पद्यति के द्वारा साधना करके उस परम पद का अधिकारी बन गया जहाँ जाने के पश्चात् कभी लौटकर संसार में नहीं आता। जिसका प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में है।

''सर्व लक्षणा ग्रन्थ का सरलार्थ''

इसमें दो पद हैं जो इस प्रकार हैं :-

''प्रथम पद''

वाणी :- गरीब उत्तम कुल कर्तार दे, द्वादस भूषण संग।
रूप द्रव्य दे दया कर, ज्ञान भजन सत्संग।।1

❖ भावार्थ :- प्रथम पद की वाणी नं. 1 का भावार्थ है कि भक्त भगवान से यह याचना करे कि हे करतार! मुझ उत्तम कुल देना। उत्तम कुल का अर्थ स्वर्ण जाति से नहीं है। भक्त परिवार में जन्म देना जो नेक व्यक्ति हों और मुझे द्वादश भूषण अर्थात् बारह आभूषण भी प्रदान करना। जैसे शील, संतोष, श्रद्धा, दया, भक्ति भाव, नम्रता, शौर्य, विवेक, सत्य भाषण, सेवा भाव, क्षमा, परोपकार भावना भी प्रदान करना। इसके अतिरिक्त रूप अर्थात् सरल स्वरूप प्रदान करना, कठोर दिखाई न दूँ। द्रव्य अर्थात् धन भी देना प्रभु ताकि मेरा निर्वाह ठीक चले जिस कारण से मैं कुछ दान-धर्म भी कर सकूँ और भक्ति के लिए भी निश्चिंत होकर समय निकाल सकूँ क्योंकि निर्धन व्यक्ति पहले धन चाहता है, उसी चिंता में भक्ति नहीं कर पाता। हे प्रभु! महापुरूषों का मिलन कराना, जिस कारण से तत्वज्ञान तथा सत्संग प्राप्त हो सके, यह भी आप मुझे प्रदान करना।(1)

वाणी :- सील संतोष विवेक दे, क्षमा दया इकतार।
भाव भक्ति वैराग दे, नाम निरालम्भ सार।।2

❖ सरलार्थ :- उपरोक्त आभूषणों को फिर नाम से पुकार कर याचना की है कि हे दाता! शील (ब्रह्मचारी, संयमी भाव), संतोष, विवेक प्रदान करना, क्षमाभाव तथा दया भाव एकरस सदा बना रहे। ऐसा भक्ति भाव दीजिए परमेश्वर! संसार से वैराग्य होकर आपके नाम में लगातार लीन रहूँ।(2)

वाणी :- जोग युक्ति स्वास्थ्य जगदीश दे, सुक्ष्म ध्यान दयाल।
अकल अकीन अजन्म जति,अठसिद्धि नौनिधि ख्याल।।3

❖ सरलार्थ :- योगयुक्त अर्थात् भक्ति की विधि शास्त्रानुकूल देना तथा स्वस्थ अर्थात् निरोग जीवन देना। हे जगदीश! सूक्ष्म ध्यान अर्थात् अंतर में आपकी लगन बनी रहे, वैसे संसार में कार्य करता रहूँ। अकल अकीन अर्थात् अटूट विश्वास तथा कभी जन्म न हो ऐसा मन को जति अर्थात् दृढ़ प्रतिज्ञा वाला बना दे। अष्ट सिद्धि और नौ प्रकार की रिद्धि तो एक ख्याल अर्थात् स्वपन समान लगे। जैसे स्वपन में वस्तु प्राप्त होती है तो स्वपन टूट जाने पर वह पास नहीं होती। इसी प्रकार सिद्धि और रिद्धि है।(3)

वाणी :- स्वर्ग नरक बांचै नहीं, मोक्ष बन्धन सैं दूर।
बड़ी गरीबी जगत में, संत चरण रज धूर।।4

❖ सरलार्थ :- हे परमात्मा! ऐसा ज्ञान दे तथा भाव बना दे कि स्वर्ग-नरक अर्थात् काल लोक के सुख तथा दुःख से ऊपर उठकर मोक्ष जो केवल स्वर्ग तक है तथा बंधन जो कर्म बंधन है, इससे दूर रहूँ। संसार में भक्ति की गरीबी (निर्धनता) प्रवेश

कर गई है। इसको दूर करने के लिए परम संतों के चरण संसार में फिरने चाहिऐं जिनकी धूल भक्तों को मिल सके अर्थात् सत्य साधना, तत्वज्ञान तो संत ही प्रदान करते हैं, वे संसार को प्राप्त हों, तब कल्याण होगा।(4)

वाणी :- जीवत मुक्ता सो कहो, आशा तृष्णा खण्ड।
मन के जीते जीत है, क्यों भरमें ब्रह्मंड।।5

❖ **सरलार्थ :- जीवित मुक्त तो वही है जिसको किसी वस्तु की इच्छा न रही हो। मन को भक्ति में लगा लिया तो मन आपके आधीन हो गया। जब तक मन काबू में नहीं है तो चाहे ब्रह्माण्ड की सैर कर ले, कोई लाभ नहीं। जैसे कई साधक प्रेरित होकर घर त्यागकर वन में चले जाते हैं। किसी संत से ज्ञान लेते हैं। फिर अन्य के पास चले जाते हैं। फिर एकान्त स्थान पर रहते हैं। उनको कहा है कि जब तक मन भक्ति में नहीं लगेगा, यह काबू में नहीं आएगा चाहे पूरे ब्रह्माण्ड के चक्कर लगा ले। (5)**

वाणी :- साला कर्म शरीर में, सतगुरु दिया लखाय।
गरीबदास गलतान पद, नहीं आवै नहीं जाय।।6

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में मिले थे तो कह रहे थे कि मेरे को सतगुरू जी ने इस मानव शरीर की उपयोगता का ज्ञान कराकर सर्व कर्म समझा दिया। मेरे (संत गरीबदास जी) को गलतान पद अर्थात् वह परम पद प्राप्त हो गया जिसके पश्चात् आना-जाना अर्थात् जन्म-मरण समाप्त हो गया और मैं गलतान अर्थात् मस्त हो गया हूँ।(6)**

वाणी :- चौरासी की चाल क्या, मो सेती सुन लेह।
चोरी जारी करत हैं, जाकै मुंहडे खेह।।7

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा है कि जिस कारण से 84 लाख प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाते हो, वह चाल अर्थात् कर्म गति मेरे से सुन। जो व्यक्ति चोरी, जारी अर्थात् परस्त्री गमन करते हैं, उनके माथे पर खेह अर्थात् कॉलस लगती है। उनके काले कर्म (बुरे कर्म) होते हैं। जिस कारण से वे 84 लाख वाले कर्म भोग चक्कर में गिरते हैं।(7)**

वाणी :- काम क्रोध मद लोभ लट, छुटि रहे बिकराल।
क्रोध कसाई उर बसै, कुशब्द छुरा घर घाल।।8

❖ **सरलार्थ :- भक्ति न करने वाले व्यक्ति में काम वासना, क्रोध तथा लोभ और मद अर्थात् नशे का प्रबल प्रभाव रहता है। क्रोध जब प्रभावी होता है, यह तो कसाई जैसा है। जब व्यक्ति को क्रोध आता है तो वह कुशब्द अर्थात् गालियाँ देने लगता है। जिससे घर घाल देता है। घर घालना अर्थात् जुल्म करना। क्रोधवश होकर प्राणी ऐसा जुल्म (अपराध) कर देता है जो निन्दा के योग्य होता है।(8)**

वाणी :- हर्ष शोग है श्वान गति, संशय सर्प शरीर।
राग द्वेष बड़े रोग हैं, जम के पड़े जंजीर।।9

❖ **सरलार्थ :- कभी यहाँ खुशी होती है, कभी कष्ट से दुख होता है, यह कुत्ते जैसी**

स्थिति है। भावार्थ है कि आध्यात्म ज्ञान के अभाव से ही व्यक्ति इस गंदे काल लोक में थोड़े से नकली सुख से हर्षित (खुश) हो जाता है और दुःख आने पर दुखी हो जाता है। जैसे लड़के के जन्म की खुशी पर नाचे-गाए, लोग जिमाए (भोजन-भण्डारा किया), किसी कारण से मर गया तो रोना-पीटना शुरू कर दिया। यह तो कुत्ते जैसा स्वभाव बताया है। जैसे कुत्ते को खाना डाला, खुश हुआ। धमकाया तो गुर्राया, काटने को दौड़ा। भावार्थ है कि जब तक काल के जाल का ज्ञान नहीं होता तो मानव पशु के तुल्य गतिविधि करता है। आध्यात्म ज्ञान के अभाव में मानव प्रत्येक कार्य तथा धार्मिक क्रियाओं में शंका करता है। जिस कारण से किसी भी अनुष्ठान को रूचि से नहीं कर पाता। जिस कारण से आध्यात्म लाभ से वंचित रह जाता है क्योंकि जब तक संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता, तब तक कोई भी संत या भक्त भ्रमित कर सकता है। यह सर्प के डंक जैसा घातक है, मानव शरीर से लेने वाले मोक्ष लाभ में विष घोल देता है।

राग (किसी में अपनापन होना) तथा द्वेष (किसी से बैर करना) ये बहुत बड़े रोग हैं जो मानव जीवन को भक्ति का पूर्ण लाभ नहीं लेने देते। जिनके कारण साधक जम अर्थात् काल के जंजीर अर्थात् बंधन में गिरा रहता है। 84 लाख योनियों में कष्ट उठाता रहता है।(9)

वाणी :- आशा तृष्णा नदी में, डूबे तीनों लोक।
मनसा माया बिस्तरी, आत्म आत्म दोष।।10

❖ सरलार्थ :- काल लोक के अस्थाई सुख तथा संतान,संपत्ति की आशा में तथा अच्छे पदार्थ खाने-पीने की तृष्णा (प्यास) में तीनों लोकों के प्राणी डूबे हैं अर्थात् इसी आशा में अनमोल जीवन नाश करके 84 लाख के चक्कर में रह जाते हैं। कल्पना (मनसा) एक ऐसा मायाजाल है जिसका अन्त ही नहीं। जैसे गाँव का पंच-सरपंच बनने की कल्पना, फिर चेयरमैन की कल्पना, फिर विधायक तथा मंत्री, मुख्यमंत्री बनने की कल्पना, फिर प्रधानमंत्री बनने का स्वपन देखता है। यह बहुत विस्तृत है। मानव जीवन समाप्त हो जाता है, कल्पना (मनसा माया) का अन्त नहीं आता। अन्य कल्पना पुत्र प्राप्त हो, नौकरी लगे। इसका भी पुत्र हो, बड़ी कोठी-कार हो आदि।

फिर प्रत्येक प्राणी की आत्मा में दोष भरा है। पिता अपनी संतान से दुःखी होकर मन में दोष पैदा कर लेता है। सोचता है कि इनको एक पैसा-रूपया नहीं दूँगा। कहीं धर्मशाला में दान कर दूँगा। इसी प्रकार संतान में माता-पिता के प्रति दोष आता है। लड़के में दोष होता है कि माता-पिता मेरी पत्नी को दुःखी करते हैं। जिस कारण से माता-पिता के प्रति दोष पैदा कर लेता है।

एक व्यक्ति को पैंशन मिलती थी। उसके दो लड़के थे। जब वे अलग-अलग रहने लगे तो दोनों ने माता-पिता को भी बाँट लिया। छोटे लड़के के हिस्से में माता तथा बड़े के हिस्से में पिता आया। पिता पैंशन उसी पुत्र को देता था जिसके पास रहता था। छोटे को दोष आया कि आधी पैंशन मुझे दे। पिता ने ऐसा करने से मना कर दिया तो छोटे बेटे ने पिता की हत्या कर दी यह सोचकर कि पिता की मृत्यु के पश्चात् पैंशन माता को मिलेगी। हत्या के अपराध में जेल गया, आजीवन कारावास हो गई। यह है

आत्म-आत्म दोष। जब आध्यात्मिक ज्ञान हो जाएगा तब यह दोष भक्ति करके समाप्त किया जाएगा।(10)

वाणी :- एक शत्रु एक मित्र हैं, भूल पड़ीरे प्रान।
जम की नगरी जायेगा, शब्द हमारा मान।।11

❖ सरलार्थ :- आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव से हे जीव! आपजी ने शत्रु तथा मित्र बना रखे हैं। यहाँ आप एक रेलगाड़ी यात्री की तरह हैं। संसार रेलगाड़ी है, आप वाला डिब्बा (Compartment) गाँव है, आप जिस सीट पर बैठे हो, वह परिवार है। जिस-जिसकी यात्रा पूरी होती जाएगी, स्थान छोड़कर चला जाएगा। उस थोड़े से समय में आप यदि किसी से लड़ाई करके शत्रु बना लें और किसी से मित्रता करना चाहें तो दोनों ही व्यर्थ है। इसी प्रकार इस संसार वाली रेलगाड़ी में आप वैसा ही कर लेते हैं। यह सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान की कमी है। जिस-जिस प्राणी की जीवन रूपी यात्रा पूरी होती जाती है, वह संसार वाली रेलगाड़ी त्यागकर चला जाता है। वह किसी का मित्र या किसी का शत्रु था। मृत्यु के पश्चात् वह न शत्रु है, न मित्र है। यदि हमारे को तत्वज्ञान मिल जाए तो हम केवल एक परमात्मा को मित्र मानेंगे, संसार में न हमारा कोई शत्रु होगा, न मित्र क्योंकि शत्रु-मित्र का यहाँ अस्तित्व ही नहीं है। इसलिए कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

वाणी :- कबीर, खड़ा बाजार में, सबकी माँगे खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।।

उपरोक्त वाणी नं. 11 में नसीहत दी है कि आप किसी से मित्रता तथा शत्रुता न करके अपना समय नेक कार्य तथा भक्ति में लगाऐं, जैसे रेलगाड़ी में सभ्य यात्री एक-दूसरे की सहायता करते हैं। भोजन तक बाँटकर खाते हैं। स्थान का अभाव है तो आगे-पीछे होकर अन्य को भी साथ में सीट पर बैठा लेते हैं। संत गरीबदास जी ने कहा है कि हमारी बात को मानो अन्यथा जम की नगरी अर्थात् यमलोक में जाएगा। जहाँ पर आप जी को यमदूत बहुत यातना देंगे।(11)

वाणी :- निंद्या बिंद्या छोड़ दे, संतन स्यौं कर प्रीत।
भौसागर तिर जात है, जीवत मुक्त अतीत।।12

❖ सरलार्थ :- किसी संसारी व्यक्ति को कोई भक्त या संत शिक्षा देता है, उपदेश सुनाता है तो वह अपनी अज्ञानतावश होकर संतो या भक्तों में दोष देखता है, जगह-जगह जाकर निंदा-आलोचना करता है। उसको समझाया है कि निन्दा तथा बिन्दा अर्थात् व्यर्थ का वाद-विवाद त्यागकर सन्तों से मेल कर सन्तों के विचार सुनने से आत्मा जाग्रत होती है। संसार असार लगता है। साधक जीवित ही अपने आपको मुक्त महसूस करता है तथा अतीत अर्थात् जीवन के बीते समय को व्यर्थ गया महसूस करता है। जीवन के शेष समय को सदुपयोग करके पूरी लगन से नेक कार्य तथा भक्ति करके अपना जीवन धन्य बनाता है।(12)

वाणी :- जे तेरे उपजै नहीं, तो शब्द साखी सुन लेह।
साखी भूत संगीत हैं, जासैं लावो नेह।।13

❖ **सरलार्थ :- यदि आप जी को ज्ञान नहीं है तो संतों के मुख से सत्संग वचन सुन ले। वे सद्ग्रन्थों से साखी अर्थात् दोहे तथा शब्द सुनाते हैं जो विश्वास के लिए पर्याप्त हैं। साक्षी भूत अर्थात् परमात्मा सबका साक्षी है, सबकी हकीकत (वास्तविकता) से परीचित है, उसके द्वारा दिया तत्वज्ञान सत्य है, उससे प्रेम कर अर्थात् उस तत्वज्ञान के आधार से अपना मार्ग बदलकर कल्याण करा ले।**

❑ **एक समय एक अंधा व्यक्ति भयंकर वन की ओर जाने वाले मार्ग पर जा रहा था। आगे एक आँखों वाला सभ्य व्यक्ति मार्ग पर खड़ा था। उसने सूरदास जी से पूछा कहाँ जा रहे हो सूरदास? उत्तर मिला बाग में। सभ्य व्यक्ति ने बताया जिस मार्ग पर आप जा रहे हैं, यह बागों में जाने वाला मार्ग नहीं है, यह तो भयंकर जंगल की ओर जा रहा है जिसमें हिसंक पशु, शेर, भेड़िये रहते हैं, तेरा जीवन अंत कर देंगे। यदि वह अंधा कहे कि किसने देखा है। मैं ठीक जा रहा हूँ। सभ्य व्यक्ति फिर कहेगा आप मेरी बात मानो अन्यथा आप पर घोर आपत्ति आएगी। यदि वह सूरदास कहे कि देखी जाएगी जो होगा। क्या यह बुद्धिमता होगी? उत्तर-नहीं।**

विचार करें :- नेत्रहीन को दिखाई नहीं देता। आँखों वाला नेक राय दे रहा है, उसकी बात नहीं मान रहा तो उसको वह कष्ट उठाना पड़ेगा जो आँखों वाला सभ्य व्यक्ति बता रहा था। स्वयं दिखाई देता नहीं, आँखों वाले की मानता नहीं तो पड़ो भाड़ में! बुद्धिमता तो यह है कि तुरंत माने और आग्रह करे कि मुझे बाग का मार्ग बता दो। संत तथा सद्ग्रन्थ आँखों वाले हैं, संसारी व्यक्ति आध्यात्म नेत्रहीन हैं। उनको महापुरूषों तथा सद्ग्रन्थों में लिखी नेक राय पर विश्वास करके बुरा काम त्यागकर सुमार्ग ग्रहण करके अपना कल्याण कराना हितकर है।(13)

वाणी :- स्वर्ग सात असमान पर, भटकत है मन मूढ।
खालिक तो खोया नहीं, इसी महल में ढूंढ़।।14

❖ **सरलार्थ :- संतो के लिए सर्व धर्म तथा देश के व्यक्ति अपने जैसे होते हैं, वे मानव मात्र के कल्याण के लिए ही उपदेश किया करते हैं। इस वाणी सँख्या 14 में संत गरीबदास जी ने विशेषकर मुसलमान धर्म को मानने वालों को समझाया है। उनका मानना है कि अल्लाह (परमात्मा) ऊपर सातवें आसमान पर है तो आप पृथ्वी पर कभी मक्का, कभी मदीना, कभी किसी पीर की मजार पर क्यों भटक रहे हो? परमात्मा कहीं गुम नहीं हुआ है, यदि उसको खोजना चाहता है तो मानव शरीर रूपी महल (मकान) में ढूँढ़ (खोज), सत्य साधना करके उस परमेश्वर को प्राप्त कर।(14) {शब्दार्थ = खालिक का अर्थ है परमात्मा}**

वाणी :- कर्म भर्म भारी लगे, संसा सूल बंबूल।
डाली पानो डोलते, परसत नाहीं मूल।।15

❖ **सरलार्थ :- जब तक सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता तब तक संशय बबूल के सूल (काँटे) के समान चुभता रहता है। कोई भी भ्रमित कर देता है। अपनी क्रिया पर शंका हो जाती है। दूसरे की क्रिया स्वीकार करना मुश्किल होता है। जब तक सम्पूर्ण ज्ञान नहीं होता तो जो क्रिया कर रहा है, वे कठिन भी लगती हैं, जैसे बैठकर या खड़ा**

होकर हठ योग द्वारा तप, हरिद्वार से पैदल चलकर कावड़ लाना आदि-आदि, ये कठिन भी लगती हैं तथा भ्रम, अविश्वास भी रहता है। फिर साधक सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान के अभाव से संसार रूपी वृक्ष के मूल को न पूजकर डाली तथा पत्तों को पूजता डोल रहा है।

श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में तथा श्लोक 16-17 में बताया है कि यह संसार पीपल के वृक्ष के तुल्य जानो जिसकी मूल (जड़ें) तो ऊपर को हैं, वह तो पूर्ण परमात्मा मानो जो सर्व का सृजन करने वाला तथा धारण-पोषण करने वाला है। उसको गीता अध्याय 8 श्लोक 3, 8, 9, 10 में परम अक्षर ब्रह्म कहा है। इसी का विवरण गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी है। फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में आगे कहा है कि जो संत उस संसार रूपी वृक्ष के सब अंगों का ज्ञान करा देता है, वह वेदवित अर्थात् वेद के तात्पर्य को जानने वाला तत्वदर्शी संत है। इस वृक्ष की ऊपर को जड़ नीचे को शाखा हैं। गीता अध्याय 15 श्लोक 2-3 में बताया है कि इस संसार रूपी वृक्ष की तीनों गुण (रजगुण श्री ब्रह्मा जी, सतगुण श्री विष्णु जी तथा तमगुण श्री शिव जी) रूपी शाखाऐं हैं जो ऊपर स्वर्ग लोक में तथा नीचे पाताल लोक तक फैली हैं। तीसरे पृथ्वी लोक पर यह गीता ज्ञान बोला जा रहा था क्योंकि श्री ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश जी की सत्ता एक ब्रह्माण्ड में बने तीनों लोकों पर ही है। इसलिए कहा है कि इनकी सत्ता पृथ्वी के अतिरिक्त ऊपर (स्वर्ग लोक में) तथा नीचे (पाताल लोक में) फैली है। ये ही तीनों देवता (तीनों गुण रूपी शाखा) प्रत्येक प्राणी को कर्मों के अनुसार संसार चक्र में बाँधने वाले मुख्य हैं।

गीता अध्याय 15 श्लोक 3 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि ''इस संसार का वृक्ष जैसा स्वरूप है, पूर्ण रूप से मैं यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा बताए जा रहे गीता ज्ञान में मैं तुझे नहीं बता पाऊंगा क्योंकि जैसी वास्तविक इस संसार रूपी वृक्ष की संरचना है, वैसी नहीं पाई जाती।

भावार्थ है कि गीता ज्ञान दाता को भी सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान नहीं है। उसके लिए गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में स्पष्ट किया है कि सम्पूर्ण यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान स्वयं सच्चिदानन्द घन ब्रह्म (ब्रह्मणः) अपने मुख कमल से (मुखे) बोलकर कही वाणी में विस्तारपूर्वक कहता है, वह तत्वज्ञान है।(गीता अध्याय 4 श्लोक 32)

फिर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि वह तत्वज्ञान तत्वदर्शी संतों से समझ, उनको दण्डवत करने से नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तेरे को तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता को पूर्ण अध्यात्मिक ज्ञान नहीं है। यदि होता तो एक अध्याय और बोल देता और कहता तत्वज्ञान उस अध्याय में पढ़ लेना।

गीता अध्याय 15 श्लोक 3 में गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि अर्जुन! मैं तेरे को इस संसार रूपी वृक्ष के सम्पूर्ण भाग नहीं बता पाऊँगा क्योंकि इसकी स्थिति का आदि-अंत को मुझे ज्ञान नहीं है। इस अति दृढ़ मूल वाले संसार रूपी वृक्ष को तत्वज्ञान

रूपी शस्त्र द्वारा काटकर अर्थात् अच्छी तरह समझकर।

{विशेष :- संसार रूपी वृक्ष की मूल (जड़ें) तो ऊपर का भाग बताया है जो ऊपर के चार अमर लोक हैं (1. सत्यलोक 2. अलख लोक 3. अगम लोक 4. अकह-अनामी लोक) ये अति दृढ़ अर्थात् अविनाशी हैं। इसलिए अति दृढ़ मूल वाला कहा है।}

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि तत्वदर्शी संत से तत्वज्ञान समझकर अर्थात् नौ मन सूत सुलझने के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के बाद साधक लौटकर कभी संसार में नहीं आते। जिस परमेश्वर से संसार रूपी वृक्ष की प्रवृति विस्तार को प्राप्त हुई है अर्थात् जिसने संसार की रचना की है, केवल उसी मूल रूप परमेश्वर की भक्ति करो।

इस श्लोक में गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट कर दिया है कि मेरी भक्ति भी छोड़, उस मूल मालिक परमेश्वर की भक्ति करो जैसा कि गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन पुरूष (प्रभु) बताए हैं। गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में कहा है कि इस संसार में दो पुरूष (प्रभु) हैं :- 1. क्षर पुरूष (यह केवल 21 ब्रह्माण्डों का प्रभु है।) 2. अक्षर पुरूष (यह केवल 7 शंख ब्रह्माण्डों का प्रभु (पुरूष) है। ये दोनों तथा इनके अंतर्गत जितने जीव हैं, वे सब नाशवान हैं, आत्मा तो किसी की नहीं मरती।(गीता अध्याय 15 श्लोक 16)

3. परम अक्षर पुरूष (यह कुल का मालिक है, संसार रूपी वृक्ष का मूल रूप प्रभु है। यह असँख्य ब्रह्माण्डों का मालिक तथा सृजनहार है।) इस परम अक्षर ब्रह्म का ज्ञान गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में है। कहा है :- ''उत्तम पुरूष अर्थात् पुरूषोत्तम तो उपरोक्त क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य ही है जो परमात्मा कहा जाता है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।

{विशेष :- यहाँ पर तीन लोकों का जो वर्णन है, वे लोक इस प्रकार हैं :-

1. क्षर पुरूष का 21 ब्रह्माण्डों का क्षेत्र है जो काल लोक कहलाता है।

2. अक्षर पुरूष का 7 शंख ब्रह्माण्डों का क्षेत्र जो अक्षर पुरूष लोक कहलाता है।

3. परम अक्षर पुरूष के ऊपर के चार लोकों वाला क्षेत्र जो अमर लोक कहलाता है।}

इसलिए गीता अध्याय 15 के श्लोक 17 में कहा है कि परम अक्षर पुरूष तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। अब संत गरीबदास जी की अमर वाणी नं. 15 का शेष सरलार्थ करते हैं :-

संत गरीबदास जी ने भी गीता वाले ज्ञान को दृढ़ किया है कि आप जी डालियों {शाखा रूपी तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी) की पूजा करते डोलते अर्थात् फिरते हो, आप मूल को नहीं पूज रहे। जिस कारण से मोक्ष फल से वंचित हैं।}(15)

वाणी :- स्वासा ही में सार पद, पद में स्वासा सार।
दम देही का खोज कर, आवागमन निवार।।16

❖ सरलार्थ :- इस अमृतवाणी में बताया है कि श्वांस द्वारा किए जाने वाले स्मरण से सार पद अर्थात् वह परम पद प्राप्त होता है जिसका वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 4

में है तथा पद अर्थात् भक्ति की पद्यति में श्वांस द्वारा सतनाम की स्मरण वाली पद्यति अर्थात् पद सार है अर्थात् निष्कर्ष है।(16)

वाणी :- बिन सतगुरु पावै नहीं खालिक खोज विचार।
चौरासी जग जात है, चिन्हत नाहीं सार।।17

❖ सरलार्थ :- पूर्ण गुरू के बिना खालिक अर्थात् परमेश्वर को पाने के विचार अर्थात् तत्वज्ञान नहीं मिल सकता। सर्व संसार के साधक अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार तथा अज्ञानी संतों द्वारा बताए भक्ति मार्ग से साधना करके चौरासी (84) लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट भोगने के चक्र में पड़ जाते हैं क्योंकि पूर्ण संत की खोज करके सार मंत्र प्राप्त नहीं करते।(17)

वाणी :- मर्द गर्द में मिल गए, रावण से रणधीर।
कंस केश चाणूर से, हिरनाकुश बलबीर।।18

❖ सरलार्थ :- भक्ति न करके यदि आप शक्तिमान बनकर अपनी महिमा बनाना चाहते हो तो सुन ले कि रावण जैसे जो अपने आपको मर्द अर्थात् शूरवीर समझते थे, वे भी मिट्टी में मिल गए। और सुन! मथुरा के राजा कंश, उसका पाला हुआ राक्षस जो केशी (घोड़े) के रूप में बालक श्री कृष्ण जी को मारने गया था। वह तथा कंश का पाला हुआ पहलवान चाणूर चमार जाति से था, वह कंश केसरी बनकर अपनी महिमा मानता था, ये सब श्री कृष्ण जी ने मार गिराए थे तथा एक हिरण्यकशिपु नाम का राक्षस राजा जो अपने आपको सर्व ओर से शक्तिमान मानता था, अपने पुत्र प्रहलाद भक्त को तंग करता था। वह परमेश्वर ने नरसिंह (ऊपर का मुँह-हाथ शेर के तथा नीचे का शरीर नर जैसा) रूप धारण करके मारा था। भक्ति न करके अन्य बकवादों को आधार बनाकर मानव जीवन का नाश करा कर चले गए।(18)

वाणी :- तेरी क्या बुनियाद है, जीव जन्म धर लेत।
गरीबदास हरि नाम बिन, खाली परसी खेत।।19

❖ सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने समझाया है कि हे सामान्य जीव! आप अपनी बुनियाद अर्थात् औकात (सामर्थ्य) देख ले। जब इतने बड़े-बड़े बलवान राजा भी भक्ति बिना मानव जीवन नष्ट करके नरक के भागी बने, आप तो जन्म लेते हो, मर जाते हो, कोई सामर्थ्य ही नहीं है। आप संसार में क्या यश ले सकते हो? अर्थात् आप तो उपरोक्त वर्णित राजाओं की तरह बदनाम होकर भी ख्याति प्राप्त करने योग्य नहीं हो। वे तो कुबुद्ध करने में अपनी महिमा मानकर भक्ति नहीं करते थे, जिस कारण से अनमोल मानव जीवन का नाश कराकर पाप तथा अपयश को प्राप्त हुए। सत्य भक्ति के बिना मानव जीवन ऐसे व्यर्थ चला जाता है जैसे किसान खेत में फसल नहीं बीजता तो खेत खाली रह जाता है। किसान को कुछ लाभ नहीं होगा। वह तथा उसका परिवार भूखा मरेगा तथा निर्धन हो जाएगा। इसी प्रकार शास्त्रविधि अनुसार साधना न करने से मानव शरीरधारी प्राणी लाभ प्राप्त न करके भक्ति धन से खाली रहकर अध्यात्मिक धन रहित निर्धन हो जाएगा।(19)

कबीर, सब जग निर्धना, धनवंता ना कोय।
धनवंता सो जानिये, जा पै राम नाम धन होय।।

ब्रह्म बेदी का सरलार्थ

ब्रह्म बेदी का अर्थ परमात्मा की भक्ति का सुसज्जित आसन जिसके ऊपर छतर या चाँदनी लगी हो, सुन्दर स्वच्छ गलीचा या गद्दा बिछा हो जैसे पाठ प्रकाश के समय श्री सद्ग्रन्थ साहेब का आसन तैयार करते हैं। भावार्थ है कि आत्मा में परमात्मा की बेदी बनाकर परमेश्वर को आसन-सिहांसन पर विराजमान करके उसकी स्तुति करें। संत गरीबदास जी की वाणी :-

वाणी :- ज्ञान सागर अति उजागर, निर्विकार निरंजनं।
ब्रह्मज्ञानी महाध्यानी, सत सुकृत दुःख भंजनं।।1

❖ सरलार्थ :- हे परमेश्वर! आप सर्व ज्ञान सम्पन्न हो, ज्ञान के सागर हो। आप अति उजागर अर्थात् पूर्ण रूप मान्य हो। सर्व को आपका ज्ञान है कि परमात्मा परम शक्ति है। इस प्रकार आपका सर्व को ज्ञान है। यह तो उजागर अर्थात् स्पष्ट है कि परमात्मा समर्थ है। आप निर्-विकार निरंजन हो। आप में कोई दोष नहीं, कोई विषय-विकार नहीं है। आप वास्तव में निरंजन हैं। निरंजन का अर्थ है माया रहित अर्थात् निर्लेप परमात्मा। काल भी निरंजन कहलाता है। वास्तव में वह निरंजन नहीं है, वह ज्योति निरंजन है। काल निरंजन है, वह निर्विकार निरंजन नहीं है। हे परमात्मा! आप ब्रह्म ज्ञानी अर्थात् परमात्मा का ज्ञान अर्थात् अपनी जानकारी आप ही प्रकट होकर बताते हैं। इसलिए आप ब्रह्म ज्ञानी हो। अन्य नकली ब्रह्म ज्ञानी हैं। हे परमात्मा! आप महाध्यानी हैं। आप सर्व प्राणियों का ध्यान रखते हो। इस कारण से आप जैसा ध्यानी कोई नहीं। आप सत सुकृत अर्थात् सच्चे कल्याणकर्ता हो। आप अपने भक्त का दुःख नाश करने वाले हैं।(1)

अब वाणी सँख्या 2 से 8 तक मानव शरीर में बने कमलों का वर्णन संत गरीबदास जी ने किया है। साथ में उनके कमलों को विकसित करने के मंत्र भी बताए हैं। परंतु इन मंत्रों के जाप की विधि केवल मेरे को (संत रामपाल दास को) पता है तथा भक्तों को नाम देने की आज्ञा भी मुझे ही है। यदि कोई इन मंत्रों को जान पढ़कर जाप करेगा तो उसको कोई लाभ नहीं होगा।

वाणी :- मूल चक्र गणेश बासा, रक्त वर्ण जहां जानिये।
किलियं जाप कुलीन तज सब, शब्द हमारा मानिये।।2

❖ सरलार्थ :- मानव शरीर में एक रीढ़ की हड्डी (Spine) है जिसे Back Bone भी कहते हैं। गुदा के पास इसका निचला सिरा है। इस रीढ़ की हड्डी के साथ शरीर की ओर गुदा से एक इन्च ऊपर मूल चक्र (कमल) है जिसका रक्त वर्ण अर्थात् खून जैसा लाल रंग है। इस कमल की चार पंखुड़ियाँ हैं। इस कमल श्री गणेश देव का निवास है। हे साधक! इस कमल को खोलने के लिए किलियम् नाम का जाप कर और सब कूलीन अर्थात् नकली व्यर्थ नामों का जाप त्याग दे, हमारे वचन पर विश्वास करके मान लेना।(2)

पहले यह मानव शरीर में बने कमलों का चित्र देखें :-

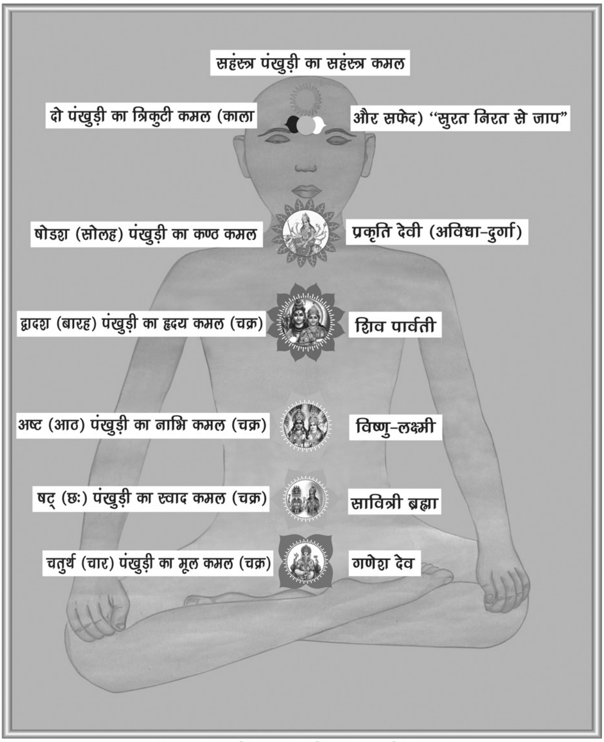

शरीर (पिण्ड) में कमलों (चक्रों) का चित्र

वाणी :- स्वाद चक्र ब्रह्मादि बासा, जहां सावित्री ब्रह्मा रहैं।
ॐ जाप जपंत हंसा, ज्ञान जोग सतगुरु कहैं।।3

❖ सरलार्थ :- मूल चक्र से एक इन्च ऊपर स्वाद कमल है। इस कमल में सावित्री तथा ब्रह्मा जी का निवास है। इस कमल को विकसित करने के लिए ओम् (ॐ) नाम का जाप कर। यह भेद परमेश्वर कबीर जी ने मुझे (संत गरीबदास जी से) सतगुरू रूप में प्रकट होकर कहा है। (3)

वाणी :- नाभि कमल में विष्णु विशम्भर, जहां लक्ष्मी संग बास है।
हरियं जाप जपन्त हंसा, जानत बिरला दास है।।4

❖ सरलार्थ :- शरीर में बनी नाभि तो पेट के ऊपर स्पष्ट दिखाई देती है। इसके ठीक पीछे रीढ़ की हड्डी के ऊपर यह नाभि चक्र (कमल) है। इसमें लक्ष्मी जी तथा विष्णु जी का निवास है। इस कमल को विकसित करने के लिए हरियम् नाम का जाप करना चाहिए। इस गुप्त मंत्र को कोई बिरला ही जानता है जो सतगुरू का भक्त होगा।(4)

वाणी :- हृदय कमल महादेव देवं, सती पार्वती संग है।
सोहं जाप जपंत हंसा, ज्ञान जोग भल रंग है।।5

❖ सरलार्थ :- हृदय कमल की स्थिति इस प्रकार है :- छाती में बने दोनों स्तनों के मध्य स्थान में ठीक पीछे रीढ़ की हड्डी पर यह हृदय कमल बना है, दिल अलग अंग

है। हृदय मध्य को भी कहते हैं। जैसे यह बीच (मध्य) का कमल है। तीन इससे नीचे तथा तीन ऊपर बने हैं। इस कारण से इसको हृदय कमल के नाम से जाना जाता है। इस कमल में महादेव शंकर जी तथा सती जी (पार्वती जी) रहते हैं। इस कमल (चक्र) को विकसित करने का नाम मंत्र सोहम् जाप साधक को जपना चाहिए। जो ज्ञान योग में वास्तविक ज्ञान मिला है, यह अच्छा रंग अर्थात् शुभ लगन का कार्य है। इस यथार्थ ज्ञान के रंग में रंगे जाओ।(5)

वाणी :- कंठ कमल में बसै अविद्या, ज्ञान ध्यान बुद्धि नासही।
लील चक्र मध्य काल कर्मम्, आवत दम कुं फांसही।।6

❖ **सरलार्थ :- गले के पीछे रीढ़ की हड्डी के ऊपर यह कण्ठ कमल बना है। इसमें अविद्या अर्थात् दुर्गा जी का निवास है। जिसके प्रभाव से जीव का ज्ञान तथा भक्ति के समय ध्यान समाप्त होता है तथा बुद्धि को भ्रष्ट करती है दुर्गा। यह लील चक्र अर्थात् 16 पंखुड़ियों का यह चक्र है। इसी के साथ सूक्ष्म रूप में काल निरंजन भी रहता है। दुर्गा देवी जी काल निरंजन की पत्नी है। काल ने गुप्त रहने की प्रतिज्ञा कर रखी है। ये दोनों मिलकर भक्त के आध्यात्म ज्ञान तथा ध्यान को तथा श्वांस से किए जाने वाले नाम स्मरण को भुलाते हैं। इस कमल को विकसित करने का श्रीयम् मंत्र है।(6)**

वाणी :- त्रिकुटी कमल परम हंस पूर्ण, सतगुरु समरथ आप है।
मन पौना सम सिंध मेलो, सुरति निरति का जाप है।।7

❖ **सरलार्थ :- मस्तिष्क का वह स्थान जो दोनों आँखों के ऊपर बनी भौवों (सेलियों) के मध्य जहाँ टीका लगाते हैं, उसके पीछे की ओर आँखों के पीछे यह त्रिकुटी कमल है। इसमें पूर्ण परमात्मा सतगुरू रूप में विराजमान हैं। इस कमल की दो पंखुड़ियाँ हैं। एक का सफेद रंग है, दूसरी का काला रंग है। यहाँ पर विराजमान सतगुरू के सारनाम का जाप सुरति निरति से किया जाता है। वह उपदेशी को बताया जाता है।(7)**

वाणी :- सहंस कमल दल भी आप साहिब, ज्यूं फूलन मध्य गन्ध है।
पूर रह्या जगदीश जोगी, सत् समरथ निर्बन्ध है।।8

❖ **सरलार्थ :- सहंस्र कमल दल का स्थान सिर के ऊपरी भाग में कुछ पीछे की ओर है जहाँ पर कुछ साधक बालों की चोटी रखते हैं। वैसे भी बाल छोटे करवाने पर वहाँ एक भिन्न निशान-सा नजर आता है। इस कमल की हजार पंखुड़ियाँ हैं। इस कारण से इसे सहंस्र कमल कहा जाता है। इसमें काल निरंजन के साथ-साथ परमेश्वर की निराकार शक्ति भी विशेष तौर से विद्यमान है। जैसे भूमध्य रेखा पर सूर्य की उष्णता अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक रहती है। वह जगदीश ही सच्चा समर्थ है, वह निर्बन्ध है। काल तो 21 ब्रह्माण्डों में बँधा है। सत्य पुरूष सर्व का मालिक है।(8)**

वाणी :- मीनी खोज हनोज हरदम, उलट पन्थ की बाट है।
इला पिंगुला सुषमन खोजो, चल हंसा औघट घाट है।।9

❖ **सरलार्थ :- जैसे मछली ऊपर से गिर रहे जल की धारा में उल्टी चढ़ जाती है। इसी प्रकार भक्त को ऊपर की ओर सतलोक में चलना है। उसके लिए इला (इड़ा अर्थात् बाईं नाक से श्वांस) तथा पिंगुला (दांया स्वर नाक से) तथा दोनों के मध्य सुष्मणा नाड़ी है। उसको खोजो। फिर हे भक्त! ऊपर को चल जो औघट घाट अर्थात्**

उलट मार्ग है। संसार के साधकों का मार्ग त्रिकुटी तक है। संत मार्ग (घाट) इससे और ऊपर उल्टा चढ़ने का मार्ग (घाट) है। यह सुष्मणा सतनाम के जाप से खुल जाता है।(9)

वाणी :- ऐसा जोग विजोग वरणो, जो शंकर ने चित धरया।
कुम्भक रेचक द्वादस पलटे, काल कर्म तिस तैं डरया।।10

❖ सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि मुझे सतगुरू रूप में परमेश्वर मिले थे। उन्होंने तत्वज्ञान बताया, मैनें अभ्यास करके देखा जो खरा उतरा। मैं आपको ऐसा जोग (योग, साधना) तथा विजोग (वियोग अर्थात् विशेष साधना) का वर्णन करता हूँ जो साधना (योग) शंकर जी ने चित्त धर्या (ध्यान किया = समाधि लगाई) सामान्य योग (साधना) तो यह है कि कुम्भक (श्वांस को अंदर लेने की क्रिया को कहते हैं, श्वांस को कुछ समय अंदर रोकना होता है) तथा रेचक (श्वांस को बाहर छोड़ने की क्रिया को रेचक क्रिया कहते हैं) करके किया जाता है। विजोग अर्थात् विशेष योग का ज्ञान परमेश्वर जी ने ही बताया है जो हमारे पास है जिसके करने से द्वादश वायु पलटती हैं अर्थात् नीचे की बजाय ऊपर को रूख कर लेती हैं। शरीर में पाँच वायु (पान, अपान, वियान, धन्जय, प्राण वायु) का ज्ञान तो सामान्य योग करने वाले योगियों (साधकों) को भी होता है। इसके अतिरिक्त 7 वायु शरीर में ओर हैं जिनका ज्ञान वियोग करने वाले योगियों (साधकों) को ही होता है। वियोग को करने से कर्मनाश होता है। इसी आधार से काल भगवान दण्डित करता है। कर्मनाश होने के कारण काल भी उस साधक से भय मानता है कि इसको विजोग (विशेष योग) का ज्ञान है। यह परम अक्षर पुरूष का भक्त है।(10)

वाणी :- सुन्न सिंघासन अमर आसन, अलख पुरुष निर्बान है।
अति ल्यौलीन बेदीन मालिक, कादर कुं कुर्बान है।।11

❖ सरलार्थ :- परम अक्षर पुरूष अर्थात् पूर्ण ब्रह्म तो निर्बान (निर्वाण अर्थात् पूर्ण मुक्त) अर्थात् स्वतंत्र है। उसका सिहांसन (तख्त) ऊपर शुन्न स्थान में है जो अमर आसन है अर्थात् अविनाशी ठिकाना है। वह परम अक्षर ब्रह्म अति ल्यौलीन है अर्थात् संसार के धारण-पोषण करने में व्यस्त है। वह बेदीन है अर्थात् कभी पृथ्वी पर लीला करने आता है, कभी ऊपर के अमर लोक में बैठकर दुनिया (संसार) को देखता है। परमात्मा का कोई दीन (धर्म) नहीं है, वह सर्व धर्म के व्यक्तियों का धारण-पोषण करता है। {वह परमात्मा ऐसे स्थान पर ऊपर के लोक में रहता है जिसे हम देख नहीं सकते। जिस कारण से उसको अलख पुरूष कहते हैं। लख का अर्थ है देखना, जो देखा ना जाए, वह अलख कहलाता है।} संत गरीबदास जी कह रहे हैं कि ऐसे कादिर (समर्थ) परमात्मा को मैं कुर्बान हूँ, बलिहारी हूँ।(11)

वाणी :- है निरसिंघ अबंध अबिगत, कोटि बैकण्ठ नखरूप है।
अपरंपार दीदार दर्शन, ऐसा अजब अनूप है।।12

❖ सरलार्थ :- परमात्मा सीमा रहित, बंधन रहित है जिसकी गति को कोई नहीं जानता(अविगत है)। उसके नाखून जिसके स्थान पर करोड़ों स्वर्ग स्थापित हैं। भावार्थ है कि परमात्मा की अध्यात्मिक शक्ति जिसे निराकार शक्ति कहते हैं, इतनी

विशाल तथा शक्तियुक्त है कि उसके अंश मात्र पर करोड़ों स्वर्ग स्थापित हैं। जैसे सत्य लोक (सतलोक) में जितने भी ब्रह्माण्ड हैं, वे सर्व स्वर्ग हैं अर्थात् सुखदायी स्थान है। स्वर्ग नाम सुखमय स्थान का है। काल लोक के स्वर्ग की तुलना में सत्यलोक का स्वर्ग असँख्य गुणा अच्छा है। वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्यपुरूष अपरमपार है। उसकी लीला का कोई वार-पार अर्थात् सीमा नहीं है। उसका दीदार करने से (देखने से) पता चलता है कि वह ऐसा अजब (अनोखा) अर्थात् अनूप है।

नोट :- संत गरीबदास जी का दृष्टिकोण रहा है कि वाणी में सभी भाषाओं का समावेश किया जाए ताकि पृथ्वी के सब मानव तत्वज्ञान से परीचित हो सकें। इस वाणी में दीदार शब्द के साथ दर्शन शब्द भी लिखा है। दोनों का अर्थ एक ही है 'देखना', दोहे में लिखा है दीदार दर्शन, यह पद्य भाग है। इसमें कोष्ठ (Baract) का प्रयोग नहीं होता। यदि गद्य भाग में कहानी की तरह लिखते समय दीदार (दर्शन) लिख सकते हैं। इससे दीदार का अर्थ 'दर्शन' है, स्पष्ट हो जाता है। 'दीदार' शब्द उर्दू भाषा का है और 'दर्शन' शब्द हिन्दी भाषा का। इसी प्रकार 'अजब' शब्द उर्दू भाषा का है जिसका अर्थ है अनोखा और 'अनूप' शब्द हिन्दी भाषा का है जिसका अर्थ भी अनोखा होता है।(12)

वाणी :- घुरैं निसान अखण्ड धुन सुन, सोहं बेदी गाईये।
बाजैं नाद अगाध अग है, जहां ले मन ठहराइये।।13

❖ सरलार्थ :- सतलोक में निशान (झण्डे=पताका) फहरा रहे हैं तथा वहाँ पर अखण्ड (निरंतर) धुन बज रही है। हे साधक! उसको सुनकर सोहं मन्त्र की स्तुति करना। भावार्थ है कि 'सोहं' मंत्र पृथ्वी के किसी ग्रन्थ में नहीं है। यह शब्द परमात्मा कबीर जी ने पृथ्वी पर प्रकट किया है। कहा भी है कि :-

सोहं शब्द हम जग में लाए। सार शब्द हमने गुप्त छिपाए।।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मन्त्र 2 में भी कहा है कि परमात्मा पृथ्वी पर प्रकट होकर अपनी वाणी बोलकर मानव को भक्ति करने की प्रेरणा करता है। परमेश्वर भक्ति के गुप्त नामों का आविष्कार करता है। इसलिए कहा है कि सोहं मन्त्र के बिना साधना अधूरी थी। यदि साधक को सोहं मंत्र मिल जाता है तो साधक परमेश्वर के सतलोक में पहुँच सकता है। इसलिए सोहं नाम की बेदी (स्तुति) कीजिए कि यह न मिलता तो मोक्ष सम्भव नहीं था। उस सतलोक में और भी अनेकों नाद (शब्द) गूँज रहे हैं जो अगाद अर्थात् दुर्लभ और आगे के (सतलोक के) हैं। वहाँ पर अर्थात् उन शब्दों की आवाज पर अपने मन को रोकना।(13)

वाणी :- सुरति निरति मन पवन पलटे, बंकनाल सम कीजिए।
सरबै फूल असूल अस्थिर, अमी महारस पीजिए।।14

❖ सरलार्थ :- उस अमर स्थान को प्राप्त करने के लिए सुरति (ध्यान की प्रक्रिया) निरति (ध्यान में वस्तु का निरीक्षण करने की प्रक्रिया) जैसे आप जी दूर स्थान पर कोई पशु देखते हैं तो सुरति ने अन्दाजा लगाया कि शायद वह पशु गाय है। फिर निकट जाने पर निरति ने निर्णय किया कि वह गधी है। सुरति ध्यान में किसी पदार्थ

को देखती है, निरति निरीक्षण करती है, मन निर्णय करता है।

मानव की रीढ़ की हड्डी के अंदर की ओर एक नाड़ी टेढ़ी-मेढ़ी (बांकी) है, वह रीढ़ की हड्डी के निचले सिरे से त्रिकुटी तक जाती है। कमर को सीधा करने से उसका बंक कम हो जाता है, अवरोध समाप्त हो जाता है। जैसे रबड़ की पाईप मुड़ जाने से तरल पदार्थ आगे नहीं जाता। सीधी करने से अवरोध समाप्त हो जाता है। इसलिए वाणी में कहा है कि बंकनाल (बंक नली) को सम् अर्थात् समकोण 90॰ के कोण पर करके सतनाम के मंत्र का जाप कर। सुरति-निरति, मन तथा पवन अर्थात् श्वांस को संसार के चिंतन से उल्टकर नाम पर केन्द्रित करके स्मरण करो। जिससे आपकी भक्ति रूपी बगीची के फूल खिल जाएंगे तथा असूल अर्थात् काँटों रहित जीवन हो जाएगा। सतलोक में जन्म-मरण रहित होकर अस्थिर (स्थाई) जीवन प्राप्त होगा। फिर वहाँ पर महासुख रूपी अमी (अमृत जीवन) का महारस अर्थात् महान सुख को पीजिए अर्थात् आनन्द लीजिए।(14)

वाणी :- सप्त पुरी मेरूदण्ड खोजो, मन मनसा गह राखिये।
उड़हैं भंवर आकाश गमनं, पांच पचीसों नाखिये।।15

❖ **सरलार्थ :-** वाणी सँख्या 2 से 8 तक कहे गए सात कमलों को इस वाणी में सांकेतिक सप्तपुरी (सात नगरी) कहा है। इन सप्त पुरियों को खोजने का भावार्थ है इनको पार करना है। इसलिए मरूदण्ड अर्थात् रीढ़ की हड्डी को मरूदण्ड कहा है। मेरू का पूरा शब्द सुमेरू पर्वत है। वास्तव में सर्व पूर्वोक्त देवताओं की नगरियाँ (लोक) सुमेरू पर्वत पर स्थित माने गए हैं। परंतु वे नगरियाँ शरीर में बने चक्रों में दिखाई देती हैं। जब कमल (चक्र) खुल जाते हैं। ये कमल रीढ़ की हड्डी पर चिपके हैं, इसलिए रीढ़ की हड्डी को मरूदण्ड कहा जाता है। मरू का अर्थ है सुमेरू पर्वत तथा डण्ड का अर्थ है डण्डा अर्थात् वह वास्तविक सुमेरू पर्वत शरीर में डण्डे के समान सीधा दिखाई देता है।

उदाहरण :- जैसे टेलीविजन (T.V.) में चैनल बने हैं। कार्यक्रम दिल्ली के स्टूडियो में चलता है, दिखाई देता है बरवाला (जिला-हिसार) में टी.वी. में। प्रधानमंत्री भाषण दे रहे हैं मुंबई में, दिखाई दे रहे हैं T.V. चैनल पर। ठीक इसी प्रकार शरीर को T.V. जानें तथा शरीर में बने कमलों (चक्रों) को चैनल समझें। जिस टी.वी. का जो चैनल ऑन (On) अर्थात् शुरू हो जाता है, उसी का कार्यक्रम (Program) दर्शक देखते हैं। ठीक इसी प्रकार वाणी सँख्या 15 में कहा है कि अपने शरीर के चक्रों अर्थात् चैनलों को खोजो (सर्च करो)। उसके लिए कमर सीधी करके ध्यान द्वारा शरीर में देखो। आप जी का जो कमल विकसित हो जाएगा (जो चैनल ऑन हो जाएगा) तो आप उसका नजारा देख सकोगे, कमल खुलेंगे। कमलों के मन्त्रों से जो वाणी सँख्या 2 से 5 तक बताए हैं, कुछ ओर भी हैं जो साधक को प्रथम बार दी जाने वाली दीक्षा में दिए जाते हैं। मन्त्रों का जाप करते समय तथा कमलों को खोजने के लिए अन्तर्मुख होने के समय मन मनसा (मन की कल्पनाओं) को गह राखिए अर्थात् रोककर नाम पर लगाकर रखिएगा। फिर आपका भंवर (भंवरा) अर्थात् आत्मा

आकाश मण्डल में बने सतलोक की ओर नाम जाप से प्राप्त भक्ति की शक्ति से उड़कर गमन करेगा अर्थात् प्रस्थान करेगा। साधना काल में तथा सतलोक प्रस्थान के समय पाँच तत्व तथा इनकी 25 प्रकृति अर्थात् उन लक्षणों से बने सांसारिक परिवार, अपना शरीर तथा अन्य कार-कोठी संपत्ति का मोह नाखिए अर्थात् भूल जाईये, समाप्त कर दीजिए (छोड़ दीजिए), तब ही आप ऊपर सुख स्थान पर पहुँच पाओगे।(15)

वाणी :- गगन मण्डल की सैल कर ले, बहुरि न ऐसा दाव है।
चल हंसा परलोक पठाऊँ, भौ सागर नहीं आव है।।16

❖ सरलार्थ :- मानव शरीर में सत्य भक्ति करके आप आकाश में बने लोकों का भ्रमण भी कर सकते हैं। यह दॉव अर्थात् अवसर मानव शरीर में ही प्राप्त है। फिर अन्य प्राणियों के शरीर में यह सुविधा नहीं है। हे हंस अर्थात् निर्विकार भक्त! हमारे कहे अनुसार चल अर्थात् भक्ति की साधना कर ले, तेरे को सत्यलोक में भेज दूँगा। फिर इस संसार सागर में नहीं आएगा अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त हो जाएगा। भावार्थ है कि गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहे परमेश्वर के उस परम धाम को प्राप्त हो जाता है जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आता।(16)

वाणी :- कन्द्रप जीत उदीत जोगी, षट करमी यौह खेल है।
अनभै मालनि हार गूदें, सुरति निरति का मेल है।।17

❖ सरलार्थ :- कंदर्प जीत अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करके उदीत योगी {जिस साधक का कंदर्प(शुक्राणु=वीर्य) उर्धव=ऊपर की ओर चलकर शरीर में समाने लगता है, उसको उदीत योगी कहते हैं। उसके लिए सिद्ध आसन पर बैठकर साधना करनी होती है। षट कर्म अर्थात् धोती, नेती, न्यौली, गज करनी, प्रणायाम तथा ध्यान आदि छः क्रिया करके उदीत योगी बनता है।} बनता है। यह क्रियाऐं तो भक्ति मार्ग में बच्चों के खेल के तुल्य कर्म हैं। मोक्ष मार्ग तो सहज क्रियाओं (नाम स्मरण-पाँचों यज्ञों) द्वारा प्राप्त होता है। जिससे अनभय मालन अर्थात् निर्भय हुई आत्मा हार गुदें अर्थात् सत्य मंत्रों का स्मरण सुरति-निरति अर्थात् विधिवत् ध्यानपूर्वक करती है। उससे परमात्मा से मिला जाता है।(17)

वाणी :- सोहं जाप अजाप थरपो, त्रिकुटी संयम धुनि लगै।
मान सरोवर न्हान हंसा, गंग् सहंस मुख जित बगै।।18

❖ सरलार्थ :- कमलों को छेदकर अर्थात् प्रथम दीक्षा मंत्र के जाप से कमलों का अवरोध साफ करके सत्यनाम के मंत्र का जाप करके उससे प्राप्त भक्ति शक्ति से साधक त्रिकुटी पर पहुँच जाता है। त्रिकुटी के पश्चात् ब्रह्मरंद्र को खोलना होगा जो त्रिवैणी (जो त्रिकुटी के आगे तीन मार्ग वाला स्थान है) के मध्यम भाग में है। ब्रह्मरंद्र केवल सतनाम के स्मरण से खुलता है। इसलिए कहा है कि सोहं नाम का जाप विशेष कसक के साथ जाप से (थरपने) ब्रह्मरंद्र खुलता है। सोहं जाप की शक्ति त्रिकुटी तथा त्रिवैणी के संजम (संगम) पर बने ब्रह्मरंद्र को खोलने की धुन अर्थात् विशेष लगन लगे तो वह द्वार खुल जाता है। हे हंस अर्थात् सच्चे भक्त! उसके पश्चात् ब्रह्म लोक में बने मानसरोवर पर स्नान करना, वहाँ से गंगा हजारों भागों में बहती है, निकलती है, अन्य लोकों में जाती है।(18)

त्रिकुटी तथा त्रिवेणी का चित्र

इस चित्र को कबीर सागर के अध्याय 'भवतारण बोध' पृष्ठ 57, अध्याय 'कबीर बानी' पृष्ठ 111 तथा अध्याय 'पंच मुद्रा' पृष्ठ 190-191 से प्रमाण से बनाया है। इनके अतिरिक्त कमलों का वर्णन अध्याय 'अनुराग सागर' पृष्ठ 151 पर भी है जो अस्पष्ट है। चित्र में मेरा (संत रामपाल दास का) अनुभव भी विशेष है।

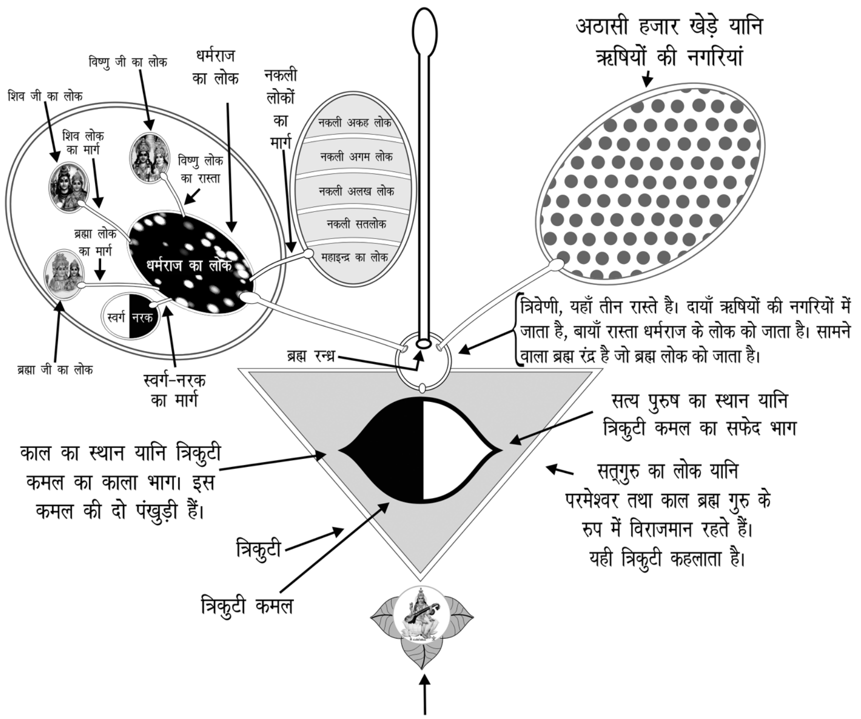

यह छठा कमल सरस्वती का निवास है। वास्तव में दुर्गा ही सरस्वती रुप में रहती है। तीन पंखुड़ी हैं। यहाँ पर धर्मराज ने जीवों को काल जाल में फंसाए रखने के लिये 72 करोड़ उर्वशी (सुन्दर परियाँ) रखी हैं। सरस्वती मधुर आवाज में स्वयं भी गाती हैं तथा सब उर्वशियां भी गाती हैं तथा अर्धनग्न शरीर में विचरण करती रहती हैं। यहाँ भक्तों की कठिन परिक्षा होती है। बहुत बड़ा बाड़ा है। कई एकान्त स्थान हैं। यहाँ पर अज्ञानी मार खा जाता है। इसकी एक पंखुड़ी में काल अन्य रूप में निवास करता है जो उन भक्तों को पकड़ लेता है जो सुंदर स्त्रियों को देखकर भ्रमित होते हैं। इसके साथ करोड़ों की संख्या में युवा रहते हैं जो भक्तमतियों को अपनी ओर आकर्षित करके काल-जाल में रखते हैं। इसी छठे कमल की तीसरी पंखुड़ी जो दाईं ओर है। उसमें सतपुरूष भी अन्य रूप में रहते हैं जो भक्तों को वाणी सुनाकर काल-जाल से सचेत करते हैं और उनको अपनी ओर आने का संकेत करते हैं। भक्त सैन (ईशारा-संकेत) समझ जाते हैं और दौड़कर उनके पक्ष में चले जाते हैं। फिर दो दल के कमल में भक्त-भक्तमति जाते हैं।

वाणी :- कालइंद्री कुरबान कादर, अबिगत मूरति खूब है।
छत्र श्वेत विशाल लोचन, गलताना महबूब है।।19

❖ **सरलार्थ :- काल इन्द्री का अर्थ है कि परमेश्वर कबीर जी के लिए काल अर्थात् 21 ब्रह्माण्ड के स्वामी ब्रह्म जैसे तो इन्द्र जैसे हैं। जैसे काल लोक में एक ब्रह्माण्ड में**

एक इन्द्र का लोक है जिसके आधीन 33 करोड़ देवता हैं, इन्द्र उनका राजा है। जिस कारण से देवराज भी कहा जाता है। परंतु ब्रह्म 21 ब्रह्माण्डों का राजा है। जैसे ब्रह्म की तुलना में इन्द्र की महिमा कुछ नहीं है। इसी के आधार से संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की उपमा की है कि उस कादिर (समर्थ) परमात्मा की शक्ति-महिमा के सामने काल ब्रह्म की महिमा उस इन्द्र के तुल्य है जो काल लोक में इन्द्र बना है। इसलिए परमेश्वर को कालइन्द्री अर्थात् काल ब्रह्म जैसे जिसके सामने इन्द्र तुल्य हैं। जैसे चार भुजा वाले को चतुर्भुजी कहते हैं। ऐसे ही परमेश्वर को कालइन्द्री कहा है। ऐसे कादिर यानि समर्थ परमात्मा पर मैं (संत गरीबदास जी) कुर्बान हूँ। उस अविगत (जिसकी गति अर्थात् स्थिति से कोई परीचित न होने से उसे अविगत कहा जाता है) परमात्मा की मूर्ति अर्थात् जीवित साकार तस्वीर खूब है अर्थात् वास्तव में परमेश्वर सुन्दर शक्ल में है। वह परमात्मा विशाल लोचन अर्थात् बड़ी-बड़ी नेत्रों वाला है, मस्त महबूब है अर्थात् आत्मा का प्रेमी है। जिस सिंहासन (तख्त) पर परमात्मा विराजमान है, उसके ऊपर सफेद छत्र लगा है। जैसे राजा-महाराजाओं के सिर पर छातानुमा चाँदी या सोने का छत्र लगाया जाता था। उसी प्रकार परमेश्वर की स्थिति आँखों देखकर संत गरीबदास जी ने बताई है।(19)

वाणी :- दिल अन्दर दीदार दर्शन, बाहर अन्त न जाइये।
काया माया कहां बपुरी, तन मन शीश चढाइये।।20

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा के दर्शन आप अपने हृदय में कर सकते हैं। भावार्थ है कि जिस समय आप सच्चे दिल से भक्ति करके परमात्मा को पुकारोगे तो आपको हृदय कमल में परमात्मा दर्शन देंगे क्योंकि परमात्मा सर्व कमलों में भी विद्यमान है। जैसे किसी कमरे के द्वार पर किसी पात्र में जल रखा है और द्वार के ऊपर बल्ब या ट्यूब लगी है और दिन में जग रही है। उधर से सूर्य भी उदय है तो उस पात्र में सूर्य तथा ट्यूब-बल्ब दोनों का प्रतिबिंब दिखाई देता है। ट्यूब का प्रतिबिंब तो केवल कमरे में रखे पात्र के जल में दिखाई देता है परंतु सूर्य का प्रतिबिंब बाहर व अंदर के सर्व पात्रों में दिखाई देता है। इसलिए कहा है कि परमात्मा प्राप्ति के लिए शरीर से साधना करके दर्शन कर लो, कहीं अन्य स्थानों-तीर्थों आदि पर न जाईये। परमात्मा प्राप्ति के लिए शरीर तो क्या वस्तु है, सर्वस्व अर्पण कर दो।(20)**

वाणी :- अबिगत आदि जुगादि जोगी, सत पुरुष ल्यौलीन है।
गगन मंडल गलतान गैबी, जात अजात बेदीन है।21

❖ **सरलार्थ :- सत्यपुरूष परमात्मा गगन मण्डल अर्थात् आकाश में बने सतलोक में रहता है, वह आदि से ही विद्यमान है। वही सच्चा जोगी अर्थात् साधु-बाबा है जो तत्वज्ञान देने के लिए पृथ्वी पर आता है।(21)**

वाणी :- सुखसागर रतनागर निर्भय, निज मुखबानी गावहीं।
झिन आकर अजोख निर्मल, दृष्टि मुष्टि नहीं आवहीं।22

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर सुख रूपी रत्नों का आगार अर्थात् डिपो (खान) है। इसलिए सुख सागर कहा जाता है। वह वास्तव में निर्भय है और अपने निजी मुख कमल से**

तत्वज्ञान की वाणी कविताओं, भजनों, चौपाईयों, दोहों को राग बनाकर गाता है। उस परमात्मा का सूक्ष्म आकार है। जिस कारण से चर्मदृष्टि से नहीं दिखता। उस परमात्मा का सूक्ष्म शरीर अजोख अर्थात् जिसको कोई जोखिम (खतरा) नहीं है, उनका शरीर नष्ट नहीं होता। उनका शरीर अविनाशी है, निर्मल है अर्थात् निर्विकार है।(22)

वाणी :- झिल मिल नूर जहूर जोति, कोटि पद्म उजियार है।
उल्ट नैन बेसुन्य बिस्तर, जहाँ तहाँ दीदार है।।23

❖ सरलार्थ :- उस परमेश्वर का शरीर झिलमिल-झिलमिल करता है। उसके नूर (प्रकाश) का जहूर (नजारा) तथा ज्योति इतनी है कि करोड़ पद्मों का प्रकाश है। जैसे श्री कृष्ण जी के पैर में पद्म था। उसका प्रकाश सौ (100) वॉट के बल्ब जितना था। परमात्मा के शरीर की ज्योति दूर से करोड़ों पद्मों जैसी दिखाई देती है। उसको देखने के लिए अपने नैनों (नेत्रों) को संसार से उल्टकर (हटाकर) ऊपर उस सुन्न रूप आकाश में लगा जहाँ परमात्मा का बिस्तर अर्थात् निवास है। वहाँ उस परमेश्वर का वास्तविक दर्शन होता है। जिसके एक रोम अर्थात् शरीर के बाल का प्रकाश करोड़ों सूर्यों तथा करोड़ों चन्द्रमाओं से भी अधिक है।(23)

वाणी :- अष्ट कमल दल सकल रमता, त्रिकुटी कमल मध्य निरख हीं।
स्वेत ध्वजा सुन्न गुमट आगै, पचरंग झण्डे फरक हीं।।24

❖ सरलार्थ :- जैसे वाणी सँख्या 20 के सरलार्थ में स्पष्ट किया कि कमरे का बल्ब तो केवल कमरे में रखे पात्रों के जल में ही दिखाई देता है। परंतु सूर्य कमरे के बाहर भी जल में दिखाई देता है। उसी का प्रमाण इस वाणी सँख्या 24 में स्पष्ट किया है कि एक आठवाँ कमल दल (समूह) है जो काल के लोकों से बाहर अक्षर पुरूष के लोक में है। उसमें भी परमात्मा है। इसके साथ-साथ सकल अर्थात् सर्व स्थानों पर उसकी सत्ता है। उसको त्रिकुटी कमल में भी देखा जाता है। सुन्न अर्थात् आकाश में सुन्न स्थान वाले सतलोक में परमात्मा के गुमट (स्तुय) के ऊपर सफेद (White) ध्वजा फरक रही है, लहरा रही है। उस गुमटनुमा महल में परमेश्वर सिहांसन (तख्त) पर विराजमान है। उस गुमट के आगे ऊँचे स्तंभ पर पाँच रंग का झंडा अलग से फरक रहा है।(24)

वाणी :- सुन्न मंडल सतलोक चलिये, नौ दर मुंद बिसुन्न है।
दिव्य चिसम्यों एक बिम्ब देख्या, निज श्रवण सुनिधुनि है।।25

❖ सरलार्थ :- ऊपर सुन्न रूप आकाश में बने सतलोक में चलो, उसके लिए बाहर के नौ दर (द्वारों) को मूंदकर (बंद करके) दिव्य चिसम्यों (नेत्रों) से एक बिम्ब अर्थात् चमकता चेहरा देखा। अपने कानों से सतलोक की धुन अर्थात् शब्द की आवाज सुनी है।(25)

वाणी :- चरण कमल में हंस रहते, बहुरंगी बरियाम हैं।
सूक्ष्म मूरति श्याम सूरति, अचल अभंगी राम हैं।।26

❖ सरलार्थ :- उस परमेश्वर के चरण कमलों में अर्थात् उनके लोक में (उनकी शरण में) हंस (निर्विकार भक्तजन) रहते हैं। वह परमात्मा बहुत भांति से बरीयाम् अर्थात् श्रेष्ठ है, महिमा करने योग्य है। वह सूक्ष्म मूर्ति अर्थात् स्वरूप में श्याम सुरति है। यहाँ

पर शाम सुरति है, जिसका अर्थ है कि शाम के समय सूर्य का प्रकाश धीमा रहता है। उसी प्रकार जब परमात्मा पृथ्वी लोक में आता है तो उनके शरीर का तेज हल्का रहता है। इसलिए श्याम (शाम) सुरति (स्वरूप) कहा है। वह परमात्मा अचल अर्थात् कभी न चलने वाला, सदा रहने वाला है। अभंगी जो कभी भंग न हो, कभी टूटे ना अर्थात् जिसका किसी समय में विनाश न हो अर्थात् अविनाशी राम है।(26)

वाणी :- नौ सुर बन्ध निसंक खेलो, दसमें दर मुखमूल है।
माली न कुप अनूप सजनी, बिन बेली का फूल है।।27

❖ **सरलार्थ :- भक्त को हिदायत दी है कि नौ सुर (जो शरीर में नौ सुराख हैं जैसे - दो नाक, दो कान, दो आँखें, एक मुख, पेशाब इन्द्री तथा मल द्वार, ये नौ सुराख नौ द्वार कहे हैं।) को बंद करके अर्थात् इनसे हटकर दसवाँ द्वार (सुषमणा द्वार) है। उस दसवें द्वार में मुख अर्थात् मुख्य मूल अर्थात् मोक्ष की जड़ें हैं। वहाँ से ऊपर की कठिन चढ़ाई प्रारम्भ होती है। हे सजनी अर्थात् सखी अर्थात् आत्मा! सतलोक में न कोई माली अर्थात् बाग लगाने वाला तथा ना सिंचाई के लिए कूप (कुंआ) है क्योंकि जिस समय यह वाणी संत गरीबदास जी ने बोली थी (सन् 1730 से 1778 तक) उस समय उस क्षेत्र में सिंचाई कुओं से होती थी। सतलोक में अपने आप प्रभु कृपा से बाग लगे हैं। सिंचाई भी अपने आप होती रहती है। सतपुरूष किसी माता से नहीं जन्मा है, वह बिन बेल का फूल है, अजन्मा है।(27)**

वाणी :- स्वांस उस्वांस पवन कुं पलटै, नाग फुनी कुं भूंच है।
सुरति निरति का बांध बेड़ा, गगन मण्डल कुं कूंच है।।28

❖ **सरलार्थ :- श्वांस जो बाहर छोड़ते हैं तथा उश्वांस जो अन्दर लेते हैं, इस विधि से जो नाम के जाप को करके वायु को अर्थात् श्वांस को सूक्ष्म करके नागफनी अर्थात् सर्पनुमा नाड़ी जो नाभि के चारों ओर 2½ लपेटे लगाए है, उसका ढ़ीला (Loose) करना है। तब ऊपर चलने का मार्ग मिलता है। फिर सतनाम का श्ंवास से स्मरण करता है, आकाश में बने सतलोक की ओर प्रस्थान करना होता है। सुरति-निरति का बेड़ा बाँधने का अभिप्राय है कि सतनाम का जाप श्वांस से मन तथा सुरति-निरति का समूह बनाकर करने को बेड़ा बाँधना कहा है। पुराने समय में दरिया को पार करने के लिए सुखी लकड़ियों को इकट्ठा करके लगभग 20 फुट चौड़ा तथा 3 फुट मोटा बेड़ा बनाते थे, दरिया में डालकर उसके ऊपर बैठकर नदी को पार करते थे। उसी का प्रमाण देकर कहा है कि आत्मा भव सागर से पार होने के लिए सुरति-निरति, मन तथा पवन (श्वांस) को इकट्ठा करके बेड़ा बाँध ले। भावार्थ है कि स्मरण करते समय मन, सुरति, निरति और श्वांस मन्त्र के जाप पर लगी रहे। ऐसा स्मरण सफल होता है। मन कहीं गया है, श्वांस चल रहा है, माला हाथ में चल रही है, यह स्मरण सफल नहीं होता।(28)**

परमेश्वर कबीर जी ने भी कहा है :-

कबीर, माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहीं।
मनवा तो दशों दिशा फिरे, यह तो सुमिरन नाहीं।।

वाणी :- सुन ले जोग विजोग हंसा, शब्द महल कुं सिद्ध करो।
योह गुरुज्ञान विज्ञान बानी, जीवत ही जग में मरो।।29

❖ **सरलार्थ :- हे हंस अर्थात् भक्त! ध्यान से जोग अर्थात् सामान्य साधना तथा विजोग अर्थात् विशेष साधना दोनों को सुन, इनमें शब्द अर्थात् नाम महल अर्थात् सम्पूर्ण मंत्रों के समूह को सिद्ध करो। भावार्थ है कि मन को सांसारिक विषय विकारों से हटाकर नाम-स्मरण पर लगाकर अभ्यास करके साध ले। मन का स्वभाव बदल ले। यह है गुरू ज्ञान और विज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान की वाणी अर्थात् वचन और जीवित ही जग में मर ले। जीवित जग में मरने का भाव है कि मन की कल्पनाओं को रोककर इच्छाओं का दमन कर। जैसे व्यक्ति की अचानक मृत्यु हो जाती है, उसके मन की सारी योजना फैल हो जाती है। साधक पहले से ही यह धारणा बनाकर संसार में निर्वाह करता है, लम्बी-चौड़ी योजनाऐं न बनाकर इच्छाओं को सीमित रखता है। वह यह विचार करके सत्संग में जाता है कि मान लें मेरी आज मृत्यु हो जाती तो भी घर, ऑफिस (कार्यालय) का कार्य नहीं कर सकते थे। इसलिए मान लें हमारी मृत्यु हो गई, हम चले सत्संग में। तीन-चार दिन के लिए जीवित मर गए। विचार करें मृत्यु तो किसी की भी कभी भी हो सकती है, तब भी कार्य से सब्र करना पड़ता है। सर्व कार्य सदा के लिए छुट जाता है। वह हानि भी हो जाती है जो मरने वाले की कमाई (मेहनत-व्यापार) न करने से होनी है। उसकी क्षतिपूर्ति कभी नहीं हो सकती। जो भक्त जीवित मरकर सत्संग में तीन-चार दिन के लिए गया था। उसके अभाव में तीन-चार दिन में जो व्यवसाय में हानि होनी थी, उसकी क्षतिपूर्ति तो वह फिर से कर सकता है क्योंकि वह परमानेंट नहीं मरा है, वह तो जीवित मरा है। वैसे तो भक्तों के सत्संग में जाने से कभी हानि नहीं होती, लाभ ही होता है। इसको कहते हैं जीवित मरना। संत गरीबदास जी ने कहा है कि गुरूजी द्वारा बताए ज्ञान तथा तत्वज्ञान का सारांश यह है कि यदि भक्ति करना तथा मोक्ष पाना चाहता है तो जीवित मर ले।(29)**

वाणी :- उजल हिरम्बर स्वेत भौंरा, अक्षै वृक्ष सत बाग है।
जीतो काल बिसाल सोहं, तर तीवर बैराग है।।30

❖ **सरलार्थ :- सतलोक को अक्षै वृक्ष सतबाग कहा है। श्वेत भौंरा आत्मा को कहा है क्योंकि सतलोक एक अविनाशी स्थान है। भक्त काल लोक में मैले विचारों वाला काला भंवरे जैसा हो चुका है। यह भक्त उत्तम कर्म करके सत्य साधना करके उज्जवल सफेद हंस बनकर जाता है अर्थात् पवित्र होकर सतलोक में जाता है। उसके लिए बताया है कि सोहं आदि-२ जो भक्ति के सम्पूर्ण मंत्र हैं, उनको तरतीवार प्राप्त करके (जैसे पहली बार दीक्षा में 7 नाम मंत्र दिए जाते हैं। दूसरी बार में सतनाम की दीक्षा दी जाती है। फिर तीसरी बार में सारनाम देकर दीक्षा क्रम पूरा किया जाता है। इसको तरतीवार बैराग धारण करना कहते हैं।) मोक्ष के लिए वैराग्य कर ले। संसार के अस्थाई सुख तथा सम्पत्ति-संतान से मोह कम करके वास्तविकता को ध्यान में रखकर साधना करने को सन्त जी ने कहा है। जिससे काल के जाल से मुक्त हुआ जा सकता है, इसे काल जीतना कहा है।(30)**

वाणी :- मनसा नारी कर पनिहारी, खाखी मन जहां मालिया।
कुभंक काया बाग लगाया, फूले हैं फूल बिसालिया।।31

❖ **सरलार्थ :- इस साखी में उपमा अलंकार है। मन की कल्पनाओं को उस औरत की तरह भक्ति तथा शुभ कर्म में लगाए रख जैसे पहले के समय में पानी लाती थी, उसको सारा दिन पानी लाने में ही व्यस्त रहना पड़ता। उसको 'पनिहारी' कहा जाता था। खाखी मन जो अज्ञान से प्रेरित होकर संसारिक चौंचलों (वैभव) को प्राप्त करने के लिए मनसा अर्थात् कल्पनाऐं करता रहता है,यह कल्पनाओं का बाग लगाने वाला माली है, उस मनसाधारी अर्थात् कल्पनाओं को श्वांस-उश्वांस से नाम का जाप का पानी लाने वाली पनिहारी नारी बना ले अर्थात् व्यस्त रख।**

कुम्भक काया अर्थात् श्वांस के स्मरण से मानव शरीर में भक्ति का बाग लगा लिया है। उस भक्ति बाग में फिर मोक्ष रूपी फूल खिलते हैं जो विशाल अर्थात् बहुत बड़ा लाभ जीव को होता है।(31)

वाणी :- कच्छ मच्छ कूरम्भ धौलं, शेष सहंस फुन गावहीं।
नारद मुनि से रटैं निशदिन, ब्रह्मा पार न पावहीं।।32

❖ **सरलार्थ :- पौराणिक लोग मानते हैं कि मतस्य अवतार, कछप अवतार अर्थात् कुरंभ, धौल, शेषनाग ये सर्व सृष्टि को सहारा दिए हुए हैं। संत गरीबदास जी ने इन पौराणिक धारणाओं का खण्डन किया है। पारख के अंग में कहा है कि :-**

गरीब, कुरम्भ ऊपर शेष है, शेष शीश पर धौल।
धौल धरतरी ले रहा, यह पड़ी ज्ञान की रौल।।

❑ **सरलार्थ :- पौराणिक व्यक्तियों की धारणा है कि सृष्टि इस प्रकार ठहरी है। कुरम्भ (कछवा) के ऊपर शेषनाग बैठा है, शेषनाग के सिर पर धौल अर्थात् बैल खड़ा है, बैल ने अपने सींग पर पृथ्वी उठा रखी है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि यह तो ज्ञान में रौल (भूल-भूलइया) लगी है। वाणी में खण्डन किया है :-**

गरीब, कुरम्भ किसके आसरे, कौन शरण है शेष।
बटक बीज विस्तार है, समझै ज्ञान नरेश।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

❑ **सरलार्थ :- प्रथम वाणी की प्रथम पंक्ति में प्रश्न किया है तथा प्रथम वाणी की दूसरी पंक्ति तथा दूसरी वाणी में उत्तर दिया है कि :-**

आप कहते हो कि कुरंभ के ऊपर शेष है तो कुरम्भ किसके सहारे रूका है। जब कुरम्भ को कहीं से सहारा नहीं तो शेष किसकी शरण है अर्थात् शेषनाग को किसने रोका है? उत्तर दिया है कि यह सर्व रचना ऐसे है जैसे बटक (बड़) अर्थात् वट वृक्ष की उत्पत्ति राई जैसे दाने अर्थात् वट के बीज से होती है। फिर वह आगे-आगे बढ़ता और फैलता चला जाता है। इसका रहस्य कोई ज्ञान नरेश अर्थात् महाज्ञानी तत्वदर्शी संत जानता है।

वास्तव में असंख्य ब्रह्माण्डों के सरजनहार परमेश्वर कबीर जी ही हैं और सतगुरू

रूप में प्रकट होकर उन्होनें यह ज्ञान स्वयं ही बताया है। अनन्त ब्रह्माण्डों को एक-दूसरे से आकृति (आकर्षित) करके रोका है। यह परमात्मा की शक्ति से ही गुरूत्व आकर्षण सर्व ग्रहों तथा ब्रह्माण्डों में कार्य कर रहा है। परमेश्वर ने सर्व संसार की रचना करके अपनी शक्ति से चला रखा है। जैसे वैज्ञानिकों ने रॉकेट बनाकर प्लूटो ग्रह पर भेजा है जो 9 वर्ष तक चलकर उसकी कक्षा में चक्कर लगा रहा है। इसी प्रकार परमात्मा कबीर जी ने सर्व ब्रह्माण्डों की संरचना ऐसी की है कि ये अपने आप चल रहे हैं तथा चक्कर लगा रहे हैं। इनका समय निर्धारित कर रखा है, तब तक ये चलते रहेंगे। परमेश्वर पर इनका कोई भार नहीं है। जैसे कि मानव ने हवाई जहाज बना रखा है जो आकाश में उड़ता है, मानव उसके ऊपर सवार है। इसी प्रकार परमेश्वर ने सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करके चला रखा है, उड़ा रखा है तथा स्वयं भी उसी पर बैठे हैं। वाणी सँख्या 32 (ब्रह्म बेदी) का सरलार्थ चल रहा है, उसी प्रसंग पर आता हूँ। आपके अनुसार मानें तो जिन कच्छ-मच्छ, कुरम्भ, धौल तथा शेषनाग को आप इतने शक्तिमान मानते हो तो वे भी किसी अन्य समर्थ की भक्ति कर रहे हैं। परंतु सर्व प्राणी शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कर रहे हैं। जिस कारण से सफलता नहीं मिल रही। शेष नाग के हजार मुख हैं और प्रत्येक मुख में दो-दो जीभ हैं। शेषनाग भी नाम जाप करता है। उसको भी आज तक परमात्मा की महिमा का ज्ञान नहीं, उसको परमात्मा का पार अर्थात् मोक्ष स्थान नहीं मिला है। इसके अतिरिक्त शास्त्रविधि विरूद्ध साधना नारद जी जैसे ऋषि भी नाम की रटना लगाते हैं, वे भी असफल रहे हैं। उनके पिता श्री ब्रह्मा जी को भी परमात्मा का पार नहीं पाया है, मोक्ष प्राप्ति नहीं हुई है।(32)

वाणी :- शम्भू जोग बिजोग साध्या, अचल अडिग समाध है।
अबिगत की गति नाहिं जानी, लीला अगम अगाध है।।33

❖ **सरलार्थ :- श्री शंकर जी ने जोग अर्थात् सामान्य साधना द्वारा तथा परमेश्वर के केवल सोहं नाम प्राप्त करके उसको विजोग अर्थात् विशेष साधना मानकर अचल अडिग अर्थात् लम्बे समय तक निश्चलता से समाधि लगाई। परंतु अविगत अर्थात् पूर्ण परमात्मा की गति यानि स्थिति नहीं जान सके क्योंकि उस परमेश्वर की लीला अगम अगाध यानि सबसे भिन्न आगे की है।(33)**

वाणी :- सनकादिक और सिद्ध चौरासी, ध्यान धरत हैं तास का।
चौबीसौं अवतार जपत हैं, परम हंस प्रकास का।।34

❖ **सरलार्थ :- सनकादिक अर्थात् सनक, सनन्दन, संत, कुमार ये चार ब्रह्मा जी के मानस पुत्र हैं जिन्होंने वरदान प्राप्त कर रखा है कि हमारी आयु जितनी है, हमारी शरीर 5 वर्ष के बालक जैसा रहे, हम ना जवान हों और ना वृद्ध हों। वे अपनी उम्रभर 5 वर्ष के रहेंगे। इनको भी आध्यात्म ज्ञान में विद्वान माना जाता है। परंतु तत्वज्ञान के अभाव से ये सनकादिक तथा 84 सिद्ध परमात्मा का ध्यान धरते हैं। कहते हैं कि हम पूर्ण परमात्मा की भक्ति करते हैं और चौबीस अवतार माने गए हैं। वे भी पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने का दावा करते हैं और कहते हैं कि परमात्मा का प्रकाश देखते हैं,**

परमात्मा (परम हंस) तो निराकार है। ये सब भ्रमित साधना करके काल जाल में ही हैं।(34)

वाणी :- सहंस अठासी और तैतीसों, सूरज चन्द चिराग हैं।
धर अम्बर धरनी धर रटते, अबिगत अचल बिहाग हैं।।35

❖ सरलार्थ :- अठासी हजार ऋषि तथा 33 करोड़ देवता तो सूरज तथा चन्द्र की तरह हैं जैसे देवताओं को सूरज जानो जो ऋषि रूपी चान्द से अधिक उज्जवल हैं। धर जो काल के अवतार धारी हैं, वे धरती पर तथा आकाश में अन्य द्वीपों में जाकर शास्त्रविरूद्ध नामों को रटते हैं। वह अविगत अर्थात् परमेश्वर अचल विहाग यानि यथावत स्थिर है, उसकी भक्ति विधि में कोई परिवर्तन नहीं है। तत्वज्ञान के अभाव में मनमाना आचरण करके साधक बने हैं, सब काल जाल में ही हैं।(35)

वाणी :- सुर नर मुनिजन सिद्ध और साधिक, पार ब्रह्म कूं रटत हैं।
घर घर मंगलाचार चौरी, ज्ञान जोग जहाँ बटत हैं।।36

❖ सरलार्थ :- सर्व देवता तथा ऋषिजन भ्रमवश मान रहे हैं कि हम पारब्रह्म अर्थात् पूर्ण परमात्मा की भक्ति कर रहे हैं। घर-घर में मंगलाचार अर्थात् शुभकामनाऐं देते हैं और ज्ञान भी सुनाते हैं जो अधूरा ज्ञान है।(36)

वाणी :- चित्र गुप्त धर्म राय गावैं, आदि माया ओंकार है।
कोटि सरस्वती लाप करत हैं, ऐसा पारब्रह्म दरबार है।।37

❖ सरलार्थ :- चित्र तथा गुप्त तथा धर्मराज भी ओंकार अर्थात् काल का जाप करके उसकी आदि माया जाल में उलझे हैं। काल लोक में शारदा (सरस्वती) जो ब्रह्मा जी की पुत्री है, उसकी आवाज अत्यंत सुरीली बताते हैं। उसके गाने सुनकर देवता लोग आनन्द लेते हैं। संत गरीबदास जी ने बताया है कि सतलोक जो पारब्रह्म का दरबार है, उसमें ऐसी-ऐसी करोड़ों सरस्वती अपनी सुरीली आवाज में गाने गाती हैं।(37)

वाणी :- कामधेनु कल्पवृक्ष जाकैं, इन्द्र अनन्त सुर भरत हैं।
पार्बती कर जोर लक्ष्मी, सावित्री शोभा करत हैं।।38

❖ सरलार्थ :- सत्य पुरूष (परमेश्वर) के सत्यलोक में काल लोक में बने स्वर्ग-महास्वर्ग (जो ब्रह्म लोक में हैं) की तरह कामधेनु (सर्व सुख पदार्थ खाने के लिए उपलब्ध कराने वाली गाय जो कामना यानि इच्छा करते ही वस्तु प्रकट (प्रस्तुत) कर देती है, ऐसा मानना है।) तथा कल्पवृक्ष (सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाला वृक्ष जो स्वर्ग-महास्वर्ग में माना जाता है।) हैं जो काल लोक के कल्प वृक्ष तथा कामधेनु से कई गुणा अधिक सुविधादायक हैं। उस परमात्मा के दरबार में इन्द्र सर्व गाने-बजाने वालों की टीम के साथ वहाँ सुर भरता है अर्थात् गाने गाता है। भावार्थ है कि इस काल लोक में स्वर्ग का राजा इन्द्र है। उसके सामने उसको खुश करने के लिए एक गायक मंडली स्त्री-पुरूषों का समूह गाने-नाचने का प्रोग्राम करते हैं। परंतु सतपुरूष के दरबार में उस इन्द्र जैसे स्वयं उस मण्डली समेत गाने-नाचने का प्रोग्राम करते हैं, ऐसे-ऐसे अनन्त प्रोग्राम सतपुरूष के सतलोक में होते हैं तथा यहाँ की महान देवियाँ पार्वती, लक्ष्मी तथा सावित्री जैसी सुन्दर देवियाँ परमपुरूष के दरबार की शोभा बढ़ा रही हैं।(38)

वाणी :- गंधर्व ज्ञानी और मुनि ध्यानी, पांचों तत्व खवास हैं।
त्रिगुण तीन बहुरंग बाजी, कोई जन बिरले दास हैं।।39

❖ **सरलार्थ :- गन्धर्व एक देव श्रेणी है, वे विद्वान भी माने जाते हैं तथा मुनि ध्यानी अर्थात् ऋषिजन ध्यान बहुत करते हैं, ऐसे-ऐसे सतलोक में अनेकों हंस हैं और पाँचों तत्व उस सतलोक में नौकर हैं। काल लोक में तो पाँच तत्व प्रधान हैं क्योंकि यहाँ सर्व रचना पाँच तत्व से बनी है। त्रिगुण यानि ब्रह्मा रजगुण, विष्णु सतगुण तथा शिव तमगुण हैं, ये तीनों यहाँ काल लोक में प्रधान हैं। इन्हीं पाँचों तत्वों तथा तीन गुणों से काल की सर्व बाजी अर्थात् रचना व्यवस्थित है, परंतु यहाँ पर सब अभिमानी हैं, दास अर्थात् नम्र भक्त तो कोई-कोई है।(39)**

वाणी :- ध्रुव प्रहलाद अगाध अग है, जनक बिदेही जोर है।
चले विमान निदान बीत्या, धर्मराज की बन्ध तौड़ हैं।।40

❖ **सरलार्थ :- काल की भक्ति करने वाले ध्रुव तथा प्रहलाद जैसे बहुत अगाध यानि सर्वोपरि भक्ति वाले अगह यानि आगे पहुँचे हुए माने जाते हैं और जनक विदेही को भी इसी श्रेणी में लेते हैं जो विमान में बैठकर स्वर्ग गए थे। रास्त में नरक में 12 करोड़ प्राणी कष्ट झेल रहे थे। राजा जनक विदेही ने अपनी भक्ति से आधे पुण्य उनको संकल्प करके दे दिए, जिस कारण से वह नरक खाली हो गया। धर्मराज का विधान है कि जिसका जितना नरक समय है, वह नरक में कष्ट भोगेगा और जिसका जितना स्वर्ग समय है, वह उतने समय स्वर्ग का सुख भोगेगा। परंतु राजा जनक जी ने वह बन्द तोड़ दिया। अपने पुण्यों का आधा हिस्सा देकर उनका वह नरक समय समाप्त कर दिया, जिस कारण से वे 12 करोड़ प्राणी स्वर्ग चले गए। परंतु राजा जनक को काल ने लूट लिया, उसके आधे पुण्य समाप्त करा दिये। जिस कारण से वह पुण्यात्मा शीघ्र पुण्यहीन होकर पुनर्जन्म को प्राप्त हुई और सिक्ख गुरू नानक जी के रूप में श्री कालूराम महता (खत्री) के घर पंजाब की धरती पर जन्में। दूसरी ओर 12 करोड़ आत्माओं को नरक से निकलवाकर स्वर्ग ले गए। इस कारण से वाह-वाह (प्रसंशा) के पात्र बने, परंतु अपना भक्ति धन लुटा दिया। फिर वे 12 करोड़ प्राणी राजा जनक द्वारा दिए पुण्यों का समय स्वर्ग में भोगकर फिर उसी नरक में डाले गए। उनका जो नरक भोगने का समय शेष बचा था, वह तो भोगना ही पड़ा। तत्वज्ञान न होने के कारण राजा जनक ने उपकार भी किया, परंतु उन 12 करोड़ आत्माओं को कोई लाभ नहीं हुआ क्योंकि उनको नरक तो भोगना ही पड़ा। कुछ समय स्वर्ग में रहकर क्या लाभ हुआ? कुछ नहीं क्योंकि आम व्यक्ति यह मानता है कि कुछ समय तो सुख मिला उन 12 करोड़ प्राणियों को। परमेश्वर कबीर जी ने संत गरीबदास जी को तत्वज्ञान दिया था। उसके आधार से वह कुछ समय के लिए मिला सुख व्यर्थ है। यदि पुनः नरक में न आना पड़ता तो राजा जनक जी का उपकार सराहनीय था। वह सतनाम, सारनाम की सत्य साधना से संभव है। इसलिए कहा है कि राजा जनक भी लूटे गए और उन 12 करोड़ प्राणियों को भी पुनः नरक भोगना पड़ा। राजा जनक ने जो कार्य किया वह 'जोर है' अर्थात् खूब है। (प्रंशसा के योग्य है) ऐसे-ऐसे और भी बहुत-से**

धर्मात्मा हुए हैं। परंतु तत्वज्ञान में कहा है कि :-

आत्म प्राण उधारहीं, ऐसा धर्म नहीं और।

भावार्थ है कि यदि जीवात्मा का जन्म-मरण (कभी स्वर्ग-कभी नरक) का चक्कर कोई छुड़वाता है तो उससे बढ़कर कोई धर्म नहीं है। यह कार्य परम संत ही कर सकते हैं।(40)

वाणी :- गोरख दत्त जुगादि जोगी, नाम जलन्धर लीजिये।
भरथरी गोपी चन्दा सीझे, ऐसी दीक्षा दीजिए।।41

❖ सरलार्थ :- बड़े साधकों के नामों में गोरख, दत्तात्रे, जालन्धर नाथ जैसे एक युग तक योगी अर्थात् साधक बनकर साधना करके सिद्ध बने। उनको जैसा ज्ञान था, उसके आधार से उन्होंने सच्चे मन से साधना की। परमात्मा प्राप्ति के लिए सर्व न्यौछावर कर दिया। भले ही उनको पूर्ण मोक्ष प्राप्त नहीं हुआ, परंतु उनका प्रयत्न एक सच्चे संत तथा साधक वाला था। इस वाणी में संत गरीबदास जी ने समझाया है कि गुरू को ऐसी शिक्षा तथा दीक्षा अपने शिष्य को देनी चाहिए जैसी श्री गोरखनाथ जी ने अपने शिष्यों गोपीचंद तथा भरतरी को दी थी और जैसे ये दोनों सीझे (खरे उतरे), यह गोरखनाथ जी की शिक्षा का परिणाम था।(41)

वाणी :- सुलतानी बाजीद फरीदा, पीपा परचे पाइया।
देवल फेरया गोप गोसांई, नामा की छान छिवाइया।।42

❖ सरलार्थ :- जो भी साधक परमात्मा प्राप्ति का प्रयत्न करता है, वह पूर्व जन्म के भक्ति संस्कारों के कारण प्रेरित होकर साधना करता रहा होता है। उसके साथ पूर्व जन्मों में की हुई भक्ति की कुछ शक्ति भी शेष होती है। जिस कारण से उस साधक के जीवनकाल में पूर्व जन्म की भक्ति शक्ति के प्रभाव से कुछ चमत्कार (अनोखा कार्य) भी हो जाते हैं। जिस कारण से वह भी अपने आपको परम संत मान लेता है तथा अन्य जनता जन भी उसके फैन होकर उसकी पूजा करने लग जाते हैं जो दोनों के लिए ही हानिकारक होता है। इस अमृतवाणी में बताया है कि एक अब्राहिम सुल्तान अधम, एक बाजीद, एक फरीद तथा एक पीपा नामक महापुरूषों को पूर्वजन्म की भक्ति के परिणामस्वरूप पर्चा (चमत्कार) प्राप्त हुए थे। एक नामदेव जी महाराष्ट्र प्रान्त में हुए हैं, परमात्मा ने उनकी पूर्व भक्ति के कारण स्वयं अपने हाथों से नामदेव जी की छान (झोंपड़ी) की छत (घास-फूस, डण्डों से बनाकर) तैयार की थी। एक दिन नामदेव जी मन्दिर के पास से जा रहे थे। मन्दिर में आरती चल रही थी। भावनावश वे उन ब्राह्मणों में घुस गए जो आरती उतार रहे थे। नामदेव जी छींपा जाति से थे तथा धूल भरे वस्त्र धारण किए थे। शुद्र जानकर पंडितों ने नामदेव जी को पकड़कर मन्दिर के पीछे पटक दिया। नामदेव जी फिर भी हाथों से तालियाँ बजा-बजाकर आरती बोल रहे थे। परमात्मा में उनकी सुरति सच्चे मन से लगी थी। परमेश्वर जी ने मन्दिर का द्वार नामदेव जी की ओर कर दिया, पण्डितजन मन्दिर के पीछे घण्टियाँ बजा रहे थे। इस प्रकार के पर्चे (चमत्कार) भक्त की पूर्व जन्म की भक्ति शक्ति से परमात्मा कर दिया करते हैं।

❑ एक बार नागौर शहर (राजस्थान) में पीपा ठाकुर था। संतों के विचार सुनकर उसमें वैराग्य हो गया। राज को त्यागकर अपनी एक पत्नी सीता सहित अपने गुरू स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में काशी शहर में भक्ति करने लगे। एक दिन धार्मिक स्थानों को देखने की इच्छा से गुरू जी की आज्ञा लेकर चल पड़े। एक स्थान पर द्वारका नाम से संत आश्रम था जो दरिया के किनारे बना था। द्वारकादास कोई सन्त था, उसके नाम पर श्रद्धालुओं ने 'द्वारका' आश्रम नाम रखा था। पीपा जी के गुरूजी सुनाते थे कि द्वारका नगरी समन्दर ने अपने अन्दर ले ली, वह फिर भी सुरक्षित है। स्वामी रामानन्द जी श्री विष्णु अर्थात् श्री कृष्ण जी के दृढ़ भक्त थे। वे उसी कारण से अपने इष्टदेव की महिमा को चार चाँद लगाने के उद्देश्य से कहा करते कि द्वारका में अभी भी श्री कृष्ण तथा सर्व ग्वाल-बाल, गोप तथा गोपियाँ, राधा, रूकमणी सहित विराजमान हैं। भक्त पीपा जी तथा भक्तिमति सीता जी अंधविश्वासी सच्चे श्रद्धालु थे जो अपने गुरू जी के एक-एक शब्द को सत्य मानते थे। उस आश्रम से आधा कि.मी. दूर एक वृक्ष के नीचे दोनों भक्त बैठे थे। वहाँ एक पाली (गौवें चराने वाला) आ गया। वह शरारती था। पीपा भक्त ने उस पाली से जानना चाहा कि हे भाई! सुना है कि द्वारका नगरी जल में समाई है। उसमें श्री कृष्ण जी तथा सर्व गोपाल, राधा-रूकमणी तथा गोपियाँ आज भी रहते हैं, वह कहाँ पर है? ग्वाले (पाली) ने कहा कि जहाँ आप बैठे हो, उसके ठीक सामने इसी दरिया में द्वारका नगरी है। वे कहने लगे कि क्या आपने देखा है? ग्वाले ने कहा कि मैं तो कल ही भगवान तथा द्वारकावासियों से मिलकर आया हूँ। उस शरारती ग्वाले तथा अपने गुरू जी से सुनी फोकट महिमा को सुनकर उनका विश्वास और भी दृढ़ हो गया। दोनों ने आपस में एक राय करके श्री कृष्ण जी की द्वारका को देखने तथा भगवान के दर्शन करने की इच्छा से दरिया में कूद गए अर्थात् छलांग लगा दी और दरिया के जल में ओझल हो गए। ग्वाला वहाँ से चलने लगा तो खेतों में कार्य कर रहे किसान ने पूछा कि ये दोनों भक्त किस कारण से दरिया में डूब मरे? ग्वाले ने सर्व बात बताई कि मैंने तो मजाक किया था, उन्होंने सत्य मानकर प्रभु दर्शन के लिए दरिया में छलांग ही लगा दी। किसान ने उस ग्वाले को बहुत धिक्कारा और कहा कि तुझे बहुत पाप लगेगा। आसपास के गाँव में उस दुर्घटना की खबर आग की तरह फैल गई। फिर 7 दिन के बाद उसी दिन वे दोनों नदी से बाहर निकले और किनारे पर खड़े हो गए। उन दोनों को दरिया से जीवित निकला देखकर खेतों के किसान तथा ग्वाले दौड़कर आए और उनसे जीवित रहने का कारण जानना चाहा। भक्त पीपा जी व भक्तिमति सीता जी ने बताया कि हम डूबे नहीं, हम तो भगवान श्री कृष्ण जी से मिलने, उनके दर्शन करने द्वारका नगरी में गए थे। हमारे गुरू जी ने बताया था कि भगवान की द्वारका जो वास्तविक नगरी है, वह जल में समा गई है। भगवान तथा सर्व द्वारकावासी आज भी उसमें आनन्द से रह रहे हैं। जो द्वारका जल से बाहर है, वह तो बाद में बनाई गई है, वह वास्तविक द्वारका नहीं है। हम सात दिन तक भगवान श्री कृष्ण जी के साथ उनके महल में रहे, हमारी सेवा भगवान श्री कृष्ण जी ने सुदामा जी की तरह की। राधा तथा रूकमणी जी, श्री कृष्ण

जी की सर्व रानियों से मिले। गोपी तथा ग्वालों से भी बातें की। जब हमने चलने की आज्ञा चाही तो श्री कृष्ण जी ने अपनी अंगुली से निकालकर मेरे को (पीपा जी को) अंगूठी (छाप) दी। देखो! इस पर 'कृष्ण' अक्षर लिखा है, शुद्ध सोने की है। उपस्थित व्यक्तियों ने बड़ा आश्चर्य किया कि ये क्या कह रहे हैं, बातें विश्वसनीय नहीं हैं, परंतु उनको अपनी आँखों से दरिया में डूबते तथा बाहर आते देखा है। अविश्वास को स्थान नहीं है। जब वे अपने गुरू रामानन्द जी के आश्रम काशी (बनारस) में पहुँचे तो उनको भी श्री कृष्ण जी से मिलने और सात दिन तक उनके साथ रहने की बात कही तो उनको भी विश्वास नहीं हुआ। कहने लगे कि क्या कह रहे हो, तुम्हारा दिमाग तो नहीं चल गया है। जल में जीवित कैसे रह सकते हो? जल में जो द्वारका है, वह तो खण्डहर हो चुकी है, भगवान श्री कृष्ण जी तो गोलोक में ऊपर जा चुके हैं, उस समन्दर में थोड़े ही हैं। जब पीपा-सीता ने बार-बार भोलेपन से कहा तथा सर्व गोपाल-गोपियों, राधा, रूकमणी, श्री कृष्ण जी से हुई बातें बताई तथा श्री कृष्ण द्वारा दी गई छाप (अंगूठी-Ring) दिखाई जिस पर 'कृष्ण' नाम खुदा हुआ था देवनागरी लिपि में। यह सब पीपा-सीता से सुनकर तथा छाप देखकर स्वामी रामानन्द जी को विश्वास करना पड़ा। वह छाप वर्तमान में बनारस के श्री द्वारकाधीश मन्दिर में सुरक्षित है। इसलिए वाणी में कहा है कि पीपा पर्चा पाईया अर्थात् पीपा जी को परमात्मा का चमत्कार प्राप्त हुआ।

❑ जैसाकि इसी में स्पष्ट किया है कि परमात्मा भक्त की पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति के आधार से इस तरह की लीला करता है ताकि भक्त की तथा अन्य जनताजनों की परमात्मा में आस्था बनी रहे। परंतु जब तक तत्वदर्शी संत नहीं मिलता, तब तक आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता।(42)

वाणी :- छान छिवाई गऊ जिवाई, गनिका चढी बिमान में।
सदना बकरे कुं मत मारै, पहुँचे आन निदान में।।43

❖ **सरलार्थ :-** भक्त नामदेव को हुए चमत्कारों में से ही परमात्मा ने बताया है कि संत नामदेव जी की झोंपड़ी की छान (घासफूस की छत) छवाई अर्थात् डाली थी। एक समय दिल्ली के बादशाह को नामदेव की ख्याति का पता चला। परीक्षार्थ दिल्ली बुलवाया। राजा मुसलमान था। दरबार में एक गाय को तलवार से काटकर मार दिया तथा संत नामदेव जी से कहा कि यदि तेरे कृष्ण में शक्ति है तो इसे जीवित कर दे नहीं तो तेरी जीवन लीला भी यहीं समाप्त हो जाएगी। नामदेव जी ने गाय के पैर छुए और परमात्मा से अर्ज की। गाय उसी समय जीवित हो गई। राजा ने भक्त से क्षमा याचना की। यह तो पूर्व जन्म की भक्ति से चमत्कार हो रहे थे। फिर परमात्मा अपने विद्यानानुसार अच्छी भक्तात्माओं को मिलता रहता है। भक्त नामदेव जी को परमात्मा संत रूप में मिले, उनको तत्वज्ञान समझाया और सतनाम रूपी चार्जर लगाकर उनकी बैटरी चार्ज करने की विधि बताई अर्थात् सत्य साधना के लिए सत्य मंत्र देकर भक्ति शक्ति बढ़ाने को कहा।

❑ गणिका चढ़ी विमान में :- एक वैश्या थी। जब उसको आध्यात्म ज्ञान हुआ तो

अपने पाप कर्म से ग्लानि हुई और सतगुरू से दीक्षा लेकर बुराई त्यागकर सत्य भक्ति की जिस कारण से विमान में बैठकर मोक्ष धाम को गई।

भावार्थ :- जैसे नामदेव, पीपा आदि संतों से पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति से चमत्कार हो रहे थे और वैश्या तो पापकर्म में मग्न थी, दोनों का कल्याण पूर्ण संत से प्राप्त सत्य साधना से हुआ।

फिर कहा है कि :- ''सदना बकरे को मत मारै, पहुँचे आन निदान में''

❑ एक सदना नाम का कसाई था जो बकरे काटा करता था। एक दिन परमात्मा ने बकरे से ही उस आत्मा को चेतावनी दिला दी। सदना ने कहा कि एक मेहमान आया है, उसके लिए बकरे का माँस ला, हम तो खाना खा चुके हैं। सदने के पास माँस नहीं बचा था। पूरा बकरा काटना उचित न समझा कि यह शेष माँस सुबह तक खराब हो जाएगा, फिर मालिक क्रोध करेगा। यह विचार करके एक बकरे को पकड़कर चारों पैर बाँधकर उसके अण्डकोष काटने का इरादा किया। उसी समय अचानक (निदान) बकरा बोला कि हे भाई कसाई! पहले जन्म में मैं कसाई था, आप बकरे थे। मैंने तेरा गला काटा था, आज आप मेरा गला ही काट लो। मेरा अण्डकोष काटकर नया वैर शुरू मत कर। मैं सारी रात तड़फ-तड़फकर मरूँगा। फिर अगले किसी जन्म में मैं कसाई बनूंगा, तू बकरा बनेगा। फिर मैं तेरे अण्डकोष काटूंगा, फिर तू भी तड़फ-तड़फकर मरेगा। यह बात एक मूक पशु के मुख से सुनकर सदन कसाई ने परमात्मा का संदेश जानकर वह कसाई कर्म त्यागकर सत्य साधना करके जगन्नाथपुरी में प्राण त्यागे और मुक्ति को प्राप्त हुआ। संत गरीबदास जी ने अमृतवाणी में गूढ़ रहस्य भरा है। इसको समझने के लिए तत्वज्ञान रूपी कुंजी (चाबी) की आवश्यकता होती है। वह चाबी मुझ दास (संत रामपाल दास) के पास है। जिससे यह खजाना खोला जा रहा है।(43)

वाणी :- अजामेल से अधम उधारे, पतित पावन बिरद तास है।
केशो आन भया बनजारा, षट दल कीनी हास है।।44

❖ **सरलार्थ :-** एक अजामेल नाम का ब्राह्मण एक नगरी में रहता था। संयोगवश वह एक वैश्या से प्रेम करने लगा। ब्राह्मण समाज ने उन दोनों को नगरी से निकाल दिया। वह शराब भी पीता था, माँस भी खाता था। दोनों जंगल में झोंपड़ी डालकर रहने लगे। जंगल से पशु-पक्षी मारकर लाता और खाता। एक दिन एक सन्त उनको मिले, आध्यात्म ज्ञान समझाया। दोनों ने माँस-शराब सेवन न करने की प्रतिज्ञा की और संत से दीक्षा लेकर दोनों मोक्ष को प्राप्त हुए। इसलिए वाणी में कहा है कि परमात्मा स्वयं ही अजामेल तथा उसकी पत्नी को मिले, उन पापियों का उद्धार किया। परमात्मा का बीरद (स्वभाव तथा महिमा) पतित पावन है अर्थात् पापियों को पवित्र करने वाला है।

केशव आन भया बनजारा षट्दल किन्ही हाँस है।

भावार्थ :- जिस समय पूर्ण ब्रह्म कबीर जी बनारस शहर में जुलाहे की भूमिका तथा तत्वज्ञानी संत की भूमिका कर रहे थे। काशी शहर के जितने भी हिन्दू धर्म गुरू (ब्राह्मण, ऋषि, नाथ, गिरी, पुरी, सरस्वती अखाड़ों वाले) परमेश्वर के सामने

निरूत्तर हो गए। जनता के सामने अपनी बेइज्जती (Insult) मानने लगे। ज्ञान का उत्तर तो बचा नहीं था, फिर कबीर जी को मार्ग से हटाने के लिए कई बार बदमाशों से मराने की योजना बनाई जो विफल रही। इसी प्रकार मुसलमानों के काजी-मुल्ला, पीर भी परमेश्वर कबीर के तत्वज्ञान के सामने बौने लगने लगे। सबने मिलकर परमेश्वर कबीर जी की हत्या की योजना कई बार बनाई। परंतु वे तो अमर पुरूष थे, उनको कौन मार सकता था। सब षड़यंत्र फैल हो गए तो सब काशी के पंडित, काजी-मुल्लाओं ने सभा करके निर्णय लिया कि कबीर एक निर्धन जुलाहा है। हम इसके नाम से पूरे हिन्दुस्तान में चिट्ठी भिजवा देते हैं कि कबीर सेठ पुत्र नीरू जुलाहा कॉलोनी बनारस वाला एक तीन दिन का भोजन-भण्डारा (धर्म यज्ञ) करने जा रहा है। सब अखाड़े वाले बाबा, साधु-संत आमंत्रित हैं। साथ में अपने सर्व शिष्यों को अवश्य लाऐं। तीनों दिन प्रत्येक भोजन के पश्चात् प्रत्येक साधु-संत, ब्राह्मण, काजी-मुल्ला, पीर-पैगम्बर, औलिया को एक दोहर, एक मोहर तथा जो कोई सुखा-सीधा (आटा, मिठाई, घी, दाल, चावल) भी लेना चाहे तो वह भी दिया जाएगा। 'दोहर' एक लोई होती थी जो उस समय की सबसे मँहगी तथा उपयोगी कम्बल मानी जाती थी जिसको अमीर लोग ही ओढ़ते थे। 'मोहर' लगभग 10 ग्राम सोने (Gold) से बना वर्तमान कीमत लगभग 30 हजार रूपये है। उस लोई की कीमत वर्तमान में 10 हजार से कम नहीं है।

सर्व सम्मति से यह निर्णय लेकर पत्र भिजवा दिए, दिन निश्चित कर दिए। निश्चित दिन को 18 लाख साधु-संत, ब्राह्मण, मण्डलेश्वर अपने-अपने सर्व शिष्यों सहित पहुँच गए। सबको लालच था कि प्रत्येक भोजन के पश्चात् उपरोक्त दक्षिणा मिलेगी। इसलिए अपने-अपने सर्व शिष्यों को मण्डलेश्वर ले आए कि अच्छा माल मिलेगा, सूखा-सीधा भी लेंगे। महीनों का खाने का तथा कई-कई हजार का सोना तथा लोई मिलेगी। बेचकर काम चलाऐंगे।

कबीर परमेश्वर ने दो रूप में अभिनय किया। एक रूप तो अपनी कुटिया में बैठे रहे। दूसरे रूप में अपने सतलोक से 9 लाख बैलों पर थैले रखकर पका-पकाया सामान तथा सूखा सामान तथा दोहर-मोहर भरकर ले आए। (बोरे जो वर्तमान में गधों पर रखते हैं। उस समय बनजारे अर्थात् व्यापारी बैलों पर रखकर माल एक मण्डी से दूसरी मण्डी में ट्रान्सपोर्ट करते थे।) काशी के बाजार में टैंट लगाकर सारा सामान टैंटों में रख दिया और कुछ सेवादार भी सतलोक से साथ आए थे जो सर्व व्यवस्था संभाल रहे थे। भण्डारा शुरू कर दिया, तीन दिन तक चिट्ठी में लिखे अनुसार सर्व दक्षिणा दी गई। उस समय भोजन-भण्डारे में दिल्ली का राजा सिकन्दर लोधी भी आया था तथा उसका निजी पीर शेखतकी भी आया था। शेखतकी उपरोक्त षड़यंत्र का मुख्य सदस्य था। उसने सिकंदर लोधी को भी पत्र भिजवाया। वह चाहता था कि किसी तरह सिकंदर लोधी के दिल से कबीर जी उतरें और मेरी पूर्ण महिमा बने। उस शेख का अनुमान था कि अबकी बार कबीर काशी से भाग जाएगा और भण्डारे में पहुँचे साधु कबीर को गालियाँ दे रहे होंगे। राजा भी कबीर जी का फैन नहीं रहेगा।

परंतु जब भण्डारे के स्थान पर पहुँचे तो देखा, लंगर चल रहा है, सर्व दक्षिणा दी जा रही है। सब साधु तथा अन्य व्यक्ति भोजन खाकर दक्षिणा लेकर कबीर सेठ की जय-जयकार कर रहे हैं। बादशाह सिकंदर लोधी ने पता किया कि भण्डारा करने वाला कहाँ है? बताया गया कि उस सामने वाले बड़े टैंट (तम्बू) में है। राजा तथा शेखतकी उस तम्बू में गए और पहले अपना परिचय दिया, फिर उसका परिचय पूछा। तम्बू में बैठे सेठ ने परिचय बताया कि मेरा नाम केशव है, मैं बनजारा हूँ। कबीर जी मेरे मित्र हैं। उनका मेरे पास संदेश गया था कि एक छोटा-सा भण्डारा करना है, कुछ सामान लेकर आना। मेरा भी निमंत्रण भेजा था। राजा सिकंदर लोधी ने पूछा कि कबीर जी क्यों नहीं आए? केशव रूपधारी परमेश्वर ने कहा मैं जो बैठा हूँ उनका नौकर, वे मालिक हैं, इच्छा होगी, तब चले आएंगे। उनकी कृपा तथा आदेश से सब ठीक चल रहा है। आप जी भी भोजन करें। राजा ने कहा पहले उस शुभान अल्लाह के दर्शन करूंगा, बाद में भोजन करूंगा। यह कहकर हाथी पर बैठकर राजा सिकंदर कबीर जी की कुटिया पर पहुँचे। साथ में कई अंगरक्षक भी थे।

कबीर परमेश्वर जी को संत रविदास जी ने सुबह ही बता दिया था कि हे कबीर जी! आज तो विरोधियों ने बनारस छोड़कर भगाने का कार्य कर दिया। आपके नाम से पत्र भेज रखे हैं और ऐसा-ऐसा लिखा है। लगभग 18 लाख व्यक्ति साधु-संत लंगर खाने पहुँच चुके हैं। कबीर जी ने कहा कि मित्र आजा बैठ जा! दरवाजा बंद करके सांगल लगा ले। आज-आज का दिन बिताकर रात्रि में अपने परिवार को लेकर भाग जाऊँगा। कहीं अन्य शहर-गाँव में निर्वाह कर लूंगा। जब उनको कुछ खाने को मिलेगा ही नहीं तो झल्लाकर गाली-गलौच करके चले जाएंगे। हम सांकल खोलेंगे ही नहीं, यदि किवाड़ तोड़ेंगे तो हाथ जोड़ लूंगा कि मेरा सामर्थ्य आप जी को भण्डारा कराने का नहीं है। गलती से पत्र डाले गए, मारो भावें छोड़ो। इतनी चर्चा चल रही थी, दोनों संत माला लेकर भक्ति कर रहे थे। मुँह बोले माता-पिता तथा मृतक जीवित किए हुए लड़का तथा लड़की सुबह सैर को गए थे। इतने में दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी ने दरवाजा खटखटाया। संत रविदास जी ने कहा प्रभु! लगता है कि अतिथि यहाँ पर भी पहुँच गए हैं। कबीर जी ने कहा कि देख सुराख से बच्चे तो नहीं आ गए हैं। रविदास जी ने देखकर बताया कि नहीं, कोई और ही है। दो-तीन बार दरवाजा खटखटाकर राजा सिकंदर ने अपना परिचय देकर बताया कि आपका दास सिकंदर आया है, आपके दर्शन करना चाहता है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा राजन! आज दरवाजा नहीं खोलूंगा। मेरे नाम से झूठी चिट्ठियाँ भेज रखी हैं, लाखों संत-भक्त पहुँच चुके हैं। रात्रि होते ही मैं अपने परिवार को लेकर कहीं दूर चला जाऊँगा। सिकंदर लोधी ने कहा परवरदिगार! आप मुझे नहीं बहका सकते, मैं आपको निकट से जान चुका हूँ। आप एक बार दरवाजा खोलो, मैं आपके दर्शन करके ही जलपान करूंगा। परमेश्वर की आज्ञा से रविदास जी ने दरवाजा खोला तो सिकंदर लोधी मुकट पहने-पहने ही चरणों में लोट गया और बताया कि आप अपने आपको छिपाकर बैठे हो, आपने कितना सुंदर भण्डारा लगा रखा है। आपका मित्र केशव आपके संदेश

को पाकर सर्व सामान लेकर आया है। आपके नाम का अखण्ड भण्डारा चल रहा है। सर्व अतिथि आपके दर्शनाभिलाषी हैं। कह रहे हैं कि देखें तो कौन है कबीर सेठ जिसने ऐसे खुले हाथ से लंगर कराया है। मेरी भी प्रार्थना है कि आप एक बार भण्डारे में घूमकर सबको दर्शन देकर कृतार्थ करें। तब परमेश्वर कबीर जी उठे और कुटिया से बाहर आए तो आकाश से कबीर जी पर फूलों की वर्षा होने लगी तथा आकाश से आकर सिर पर सुन्दर मुकुट अपने आप पहना गया। तब हाथी पर बैठकर कबीर जी तथा रविदास जी व राजा चले तो सिकंदर लोधी परमेश्वर कबीर जी पर चंवर करने लगे और पीलवान से कहा कि हाथी को भण्डारे के साथ से लेकर चल। जो भी देखे और पूछे काशी वालों से कि कबीर सेठ कौन-सा है, उत्तर मिले कि जिसके सिर पर मोरपंख वाला मुकुट है, वह है कबीर सेठ जिस पर सिकंदर लोधी दिल्ली के बादशाह चंवर कर रहे हैं। सब एक स्वर में जय बोल रहे थे। जय हो कबीर सेठ की, जैसा लिखा था, वैसा ही भण्डारा कराया है। ऐसी व्यवस्था कहीं देखी न सुनी। भोजन खाने का स्थान बहुत लम्बा-चौड़ा था। उसमें घूमकर फिर वहाँ पर आए जहाँ पर केशव टैंट में बैठा था। हाथी से उतरकर कबीर जी तम्बू में पहुँचे तो अपने आप एक सुंदर पलंग आ गया, उसके ऊपर एक गद्दा बिछ गया, ऊपर गलीचे बिछ गए जिनकी झालरों में हीरे, पन्ने, लाल लगे थे। टैंट को ऊपर कर दिया गया जो दो तरफ से बंद था। खाना खाने के पश्चात् सब दर्शनार्थ वहाँ आने लगे, तब परमेश्वर कबीर जी ने उन परमात्मा के लिए घर त्यागकर आश्रमों में रहने वालों तथा अन्य ग्रहस्थी व्यक्ति व ब्राह्मणों को आपस में (केशव तथा कबीर जी ने) आध्यात्मिक प्रश्न-उत्तर करके सत्यज्ञान समझाया। 8 पहर (24 घण्टे) तक सत्संग करके उनका अज्ञान दूर किया। कई लाख साधुओं ने दीक्षा ली और अपना कल्याण कराया। विरोधियों ने तो परमेश्वर का बुरा करना चाहा था, परंतु परमात्मा को इकट्ठे करे-कराए भक्त मिल गए अपना ज्ञान सुनाने के लिए। उन भक्तों को सतलोक से आया हुआ उत्तम भोजन कराया जिसके खाने से अच्छे विचार उत्पन्न हुए। उन्होंने परमेश्वर का तत्वज्ञान समझा, दीक्षा ली तथा एक वर्ष का खर्चा भी दे दिया। सब भण्डारा पूरा करके सर्व सामान समेटकर बैलों पर रखकर जो सेवादार आए थे, वे चल पड़े। तब सिकंदर लोधी, शेखतकी, कबीर जी, केशव जी तथा कई अंगरक्षक भी खड़े थे। अंगरक्षक ने आवाज लगाई कि बैल धरती से छः इन्च ऊपर चल रहे हैं। पृथ्वी पर पैर नहीं रख रहे। यह लीला देखकर सब हैरान थे। फिर कुछ देर बाद देखा तो आसपास तथा दूर तक न बैल दिखाई दिए और न बनजारे सेवक। सिकंदर लोधी ने पूछा हे कबीर जी! बनजारे और बैल कहाँ गए? परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया कि जिस परमात्मा के लोक से आए थे, उसी में चले गए। उसी समय केशव वाला स्वरूप देखते-देखते कबीर जी के शरीर में समा गया। सिकंदर राजा ने कहा हे अल्लाहु अकबर! मैं तो पहले ही कह रहा था कि यह सब आप कर रहे हो, अपने आपको छिपाए हुए हो। शेखतकी तो जल-भुन रहा था। कहने लगा कि ऐसे भण्डारे तो हम अनेकों कर दें। यह तो महौछा-सा किया है। हम तो जग जौनार कर देते।

महौछा कहते हैं वह धर्म अनुष्ठान जो किसी पुरोहित द्वारा पितर दोष मिटाने के लिए थोपा गया हो। उसमें व्यक्ति बताए गए नग (Items) मन मारकर सस्ती कीमत के लाकर पूरे करता है, हाथ सिकोड़कर लंगर लगाता है।

जग जौनार कहते हैं जिसके घर कई वर्षों उपरांत संतान उत्पन्न होती है तो दिल खोलकर खर्च करता है, भण्डारा करता है तो खुले हाथों से।

संत गरीबदास जी ने उस भण्डारे के विषय में जिसकी जैसी विचारधारा थी, वह बताई :-

गरीब, कोई कहे जग जौनार करी है, कोई कहे महौछा।
बड़े बड़ाई कर्या करें, गाली काढ़ै औछा।।

भावार्थ है कि जो भले पुरूष थे, वे तो बड़ा कह रहे थे कि जग जौनार करी है। जो विरोधी थे, ईर्ष्यावश कह रहे थे कि क्या खाक भण्डारा किया है, यह तो महौछा-सा किया है। जब शेखतकी ने ये वचन कहे तो गूंगा तथा बहरा हो गया, शेष जीवन पशु की तरह जीया। अन्य के लिए उदाहरण बना कि अपनी ताकत का दुरूपयोग करना अपराध होता है, उसका भयंकर फल भोगना पड़ता है।

केशव आन भया बनजारा षट्दल किन्ही हाँस है।

परमेश्वर कबीर जी स्वयं आकर (आन) केशव बनजारा बने। षट्दल कहते हैं गिरी-पुरी, नागा-नाथ, वैष्णों, शैव पंथों के व्यक्तियों को जिन्होंने हँसी-मजाक करके चिट्ठी डाली थी। परमात्मा ने यह सिद्ध किया है कि भक्त सच्चे दिल से मेरे पर विश्वास करके चलता है तो मैं उसकी ऐसे सहायता करता हूँ।(44)

वाणी :- धना भक्त का खेत निपाया, माधो दई सिकलात है।
पण्डा पांव बुझाया सतगुरु, जगन्नाथ की बात है।।45

❖ सरलार्थ :- सच्चे मन से साधना करने वाले भक्तों की परमात्मा महिमा बनाता है। वह उनके पूर्व जन्म के संस्कार तथा भक्ति की शक्ति जो संग्रह की होती है। उसके परिणामस्वरूप भक्त में परमेश्वर के प्रति न्यौछावर होने की प्रवृति आम बात की तरह हो जाती है। एक धना नाम का जाट जाति में राजस्थान राज्य में भक्त हुआ है। वह किसान कार्य करता था। अपनी जमीन में खेती करता था। परमात्मा में अटूट श्रद्धा थी। राजस्थान में वर्षा होना किसी वरदान से कम नहीं है क्योंकि उस समय वर्षा के अतिरिक्त सिंचाई का कोई साधन नहीं था। वर्षा के बाद सब किसान अपने-अपने खेतों में ज्वार का बीज बोने के लिए गए। धना भक्त जी भी ज्वार का बीज लेकर अपने खेत में जा रहा था। रास्ते में चार साधु मिले, भक्त ने राम-राम किया तो साधुओं ने कहा भक्त दो दिन से कुछ भी खाने को नहीं मिला है, भूख बहुत लगी है। भक्त ने विचार किया कि बीज नहीं बोया तो बच्चे भूखे मरेंगे। यदि साधुओं को कुछ नहीं खिलाया तो ये चारों भूखे मरेंगे। धना भक्त की पत्नी बहुत सख्त थी। वह किसी को घर पर खाना नहीं खिलाती थी। भक्त धना से भी लड़ाई किया करती थी। धना भक्त ने विचार किया कि यदि मैं ज्वार बौ दूँगा और वर्षा नहीं हुई तो यह बीज वैसे भी व्यर्थ जाएगा। परमात्मा को साक्षी रखकर इन साधुओं की जीवन रक्षा करता हूँ। यह

विचार करके ज्वार का बीज अर्थात् साफ-सुथरी ज्वार साधुओं के समक्ष रखकर कहा कि मेरे पास बस ये ज्वार का बीज है, यह खा लो। साधु भूखे थे, सब खा गए और भक्त का धन्यवाद करके चले गए। धना जी ने सोचा कि यदि खेत में कुछ नाटक नहीं किया तो खेत वाले पड़ोसी घरवाली को बताएंगे कि आप ने ज्वार क्यों नहीं बीजी। फिर वह लड़ाई करेगी। इसलिए कुछ कंकर इकट्ठी करके थैले में डालकर खेत में बैलों के साथ जैसे ज्वार का बीज बोते हैं, वैसे अभिनय करके घर आ गया। किसी को पता नहीं चला। परमेश्वर सब देखता है। फिर वर्षा हुई नहीं, सबकी ज्वार समाप्त हो गई। किसी की एक फुट खड़ी थी, किसी की दो फुट। धना भक्त के खेत में मतीरों की बेल उग गई। सारा खेत बेलों से भर गया। मतीरे-तूम्बों की बेल धना जी के खेत में उग गई और मोटे-मोटे तूम्बे लगे। पड़ोसी खेत वालों ने धना भक्त जी की पत्नी से बताया कि आपके ज्वार नहीं बोई थी क्या? सबके खेतों में ज्वार उगी है, आपके खेत में तूम्बों की बेल बेशुमार उगी हैं। भक्तमति ने खेत देखना चाहा, सोचा कि भक्त से फिर लड़ूंगी, पहले खेत देखकर आती हूँ। धना जी को पता चला कि भाग्यवान को किसी ने बता दिया है और आते ही जमीन-आसमान एक करेगी। धना जी की पत्नी ने अन्य किसानों के खेतों में ज्वार खड़ी देखी और अपने खेत में तूम्बों की बिना बोई खेती। राजस्थान में तुम्बे, बलसुम्बे आदि बिना बोए ही वर्षा होते ही अथाह उग जाते हैं। उसने एक तुम्बा तोड़ा। उसको सिर पर रखकर घर आई और धना भक्त जी से तेज आवाज में बोली कि ज्वार का बीज किसे खिला दिया। सबके खेतों में ज्वार खड़ी है, तेरे खेत में तुम्बे उगे हैं, बच्चे तेरे को खाएंगे क्या? झुंझलाकर तुम्बा हाथों में उठाकर भक्त के सिर में मारने के उद्देश्य से फैंका और बोली देख तेरे कारनामे। भक्त ने सिर बचा लिया, तुम्बा जमीन पर लगकर फूट गया। उसमें 5 कि.ग्रा. ज्वार निकली जैसी बीज बोने के लिए साफ-सुथरी तैयार की जाती है। पहले तो भक्तमति लाल-पीली हो रही थी, जब देखी ज्वार तो पानी-पानी हो गई और ज्वार घर पर रखकर चद्दर और सोटा लेकर खेत में गई। चद्दर बिछाकर लगी तुम्बे फोड़ने, ज्वार का ढ़ेर लग गया। भक्त भी पीछे-पीछे चला गया, सोचा परमात्मा ने दया कर दी, जान बचा दी। सब किसानों की फसल नष्ट हो गई क्योंकि फिर वर्षा नहीं हुई थी। तुम्बों से ज्वार निकल रही है, यह सुनकर पूरा गाँव देखने के लिए पहुँच गया। धना भक्त ने अपने खाने के लिए एक वर्ष की ज्वार रखकर शेष सब गाँव वालों में बाँट दी। उसके पश्चात् भक्तमति भी परमात्मा पर विश्वास करने लगी और भक्ति व सेवा भी करने लगी।

माधो दई सिकलात है का मतलब है कि एक माधो नाम का भक्त वृद्ध था। उसको अतीसार (दस्त) लग गए, बहुत निर्बल हो गया। उठकर बाहर फ्रैश होने भी नहीं जा सका। घर पर ही टट्टी करने लगा। परमात्मा एक शुद्र रूप बनाकर आए और उसका सिकलात अर्थात् पारवाना (टट्टी) उठाकर बाहर डाले। भक्त को स्वस्थ किया। जिस शुद्र का रूप परमात्मा ने बनाया था, स्वस्थ होने के बाद भक्त माधो दास उसको धन्यवाद तथा कुछ मजदूरी के तौर पर अन्न तथा पैसे देने के लिए उसके घर

गया तो उस शुद्र ने आश्चर्य किया कि मैं तो आज आया हूँ। मैं अपनी बहन की ससुराल गया था, मैं तो एक महीना वहाँ रहकर आया हूँ, आप क्या कह रहे हो? उस शुद्र के आसपास के व्यक्तियों ने भी यही कहा कि यह तो एक महीने में आज ही लौटा है। भक्त माधो दास को समझते देर नहीं लगी कि वह कौन था। परमेश्वर स्वयं आए थे। भक्त बहुत रोया हे परमेश्वर! मैं कितना मंदभागी कर्महीन हूँ, आपको कष्ट दिया। इस प्रकार परमेश्वर अपने भक्त की सब प्रकार से सहायता करता है।

''जगन्नाथ मंदिर के पांडे के पैर को जलने से बचाया''

एक दिन शाम के समय परमेश्वर कबीर जी अपने साथ संत रविदास जी को लेकर राजा बीरदेव सिंह बघेल के दरबार में गए। उस दिन राजा सिकंदर लोधी भी वहाँ गए हुए थे। सिकंदर लोधी पूरे भारत का शासक था, वह महाराजा था। काशी नरेश बीरदेव सिंह बघेल छोटे राजा थे जो दिल्ली के बादशाह के आधीन होते थे। दोनों संतों को बैठने के लिए आसन दिया गया। कुछ देर दोनों राजाओं के साथ परमात्मा की चर्चा की। फिर अचानक शीघ्रता से कबीर परमेश्वर जी ने अपने लोटे का जल अपने पैर के ऊपर डालना प्रारम्भ कर दिया। सिकंदर ने पूछा प्रभु! यह क्या किया अपने पैर के ऊपर पानी डाला, इसका कारण बताईये। कबीर जी ने कहा कि पुरी में जगन्नाथ के मन्दिर में एक रामसहाय नाम का पाण्डा पुजारी है। वह भगवान का खिचड़ी प्रसाद बना रहा था। उसको उतारने लगा तो अति गर्म खिचड़ी उसके पैर के ऊपर गिर गई। वह चिल्लाकर अचेत हो गया था। यह बर्फ जैसा जल उसके जले हुए पैर पर डाला है, उसके जीवन की रक्षा की है अन्यथा वह मर जाता। जगन्नाथ जी का मंदिर उड़ीसा प्रान्त में पुरी शहर में है जो बनारस से लगभग 1500 कि.मी. है। यह बात राजा सिकंदर तथा बीरदेव सिंह बघेल के गले नहीं उतरी। उसकी जाँच करने के आदेश दे दिए। दो सैनिक ऊँटों (Camels) पर सवार होकर पुरी में गए। 10 दिन जाने में लगे। पुरी में जाकर पूछा कि रामसहाय पाण्डा कौन है? उसको बुलाया गया। सिपाहियों ने पूछा कि क्या आपका पैर खिचड़ी से जला था? उत्तर मिला-हाँ। प्रश्न किया कि किसने ठीक किया? उत्तर मिला कि कबीर जी यहाँ पास ही खड़े थे, उन्होंने करमण्डल से हिमजल डाला था। उससे मेरी जलन बंद हो गई। यदि वे जल नहीं डालते तो मेरी छुट्टी हो गई थी, मैं अचेत हो गया था। प्रश्न-क्या समय था? शाम के समय सूर्य अस्त से लगभग एक घण्टा पहले। अन्य उपस्थित व्यक्तियों ने भी साक्ष्य दिया। सिपाहियों ने कहा सब लिखकर दस्तखत-अंगूठे लगाओ। रामसहाय पाण्डे ने तथा वहाँ के अन्य पुजारियों ने बताया कि कबीर जी तो नित्य-प्रतिदिन मन्दिर में आते हैं। सर्व प्रमाण लेकर-सुनकर दोनों सिपाही वापिस आए और सच्चाई बताई। दोनों राजा कबीर जी की कुटिया पर गए। दण्डवत प्रणाम किया तथा अपने अविश्वास रूपी अपराध की क्षमा माँगी। बताया कि आप सत्य कह रहे थे। आप जी ने ही जगन्नाथ मंदिर के रामसहाय पाण्डे के पैर को जलने से बचाया था। हमने अपनी तसल्ली के लिए दो सैनिक भेजकर पता कराया है। आप स्वयं वह खुदा हो जो सातवें

आसमान पर बैठा है। आप नर रूप धारण करके पृथ्वी पर लीला करने आए हो। परमेश्वर कबीर जी ने कहा महाराज! आपको यहाँ भी गलती लगी है। मैं तो अल्लाहु अकबर हूँ। मैं करोड़ों आसमानों के पार सत्यलोक (सतलोक) में तख्त पर विराजमान हूँ। वहीं मैं आपके सामने खड़ा हूँ। मैं पैगम्बर मुहम्मद को भी मिला था। उन्होंने भी मुझे पहचानने में भूल की थी। ''पाण्डा पाँव बुझाया सतगुरू, जगन्नाथ की बात है।'' **इस अर्धवाणी का सरलार्थ ऊपर किया है।(45)**

वाणी :- भक्ति हेतु केशो बनजारा, संग रैदास कमाल थे।
हे हर हे हर होती आई, गून छई और पाल थे।।46

❖ **सरलार्थ :- इसका सरलार्थ वाणी नं. 44 में कर दिया है। भावार्थ है कि परमेश्वर ने भक्ति की महिमा बनाए रखने के लिए केशव रूप में बनजारा बनकर अभिनय किया। बैलों के ऊपर गूण (थैला जैसा गधों पर रखकर सामान भरा जाता है छई (तम्बू) और पाल (त्रिपाल जो नीचे बिछाए गए थे, टाट, फर्श) थे। सर्व सेवादार जो सतलोक से साथ आए थे, वे बैलों को चलाने के लिए हे हर, हे हर करके हाँक (चला) रहे थे।**

इस वाणी में बताया है कि उस भण्डारे के समय रविदास जी थे तथा कमाल जी भी बाद में शामिल हो गए थे।(46)

वाणी :- गैबी ख्याल बिसाल सतगुरु, अचल दिगम्बर थीर हैं।
भक्ति हेत आन काया धर आये,अबिगत सतकबीर हैं।।47

❖ **सरलार्थ :- ब्रह्म बेदी में सर्व देवताओं तथा ब्रह्म काल की स्थिति बताकर अब निम्न 8 वाणियों में पूर्ण परमात्मा की नाम बताकर महिमा की है। कहा है कि सतगुरू अर्थात् जो संत गरीबदास जी को सतगुरू रूप में स्वयं परमेश्वर कबीर जी मिले थे, वह गैबी अर्थात् गुप्त ख्याल (विचार) हैं। यही परमात्मा सतलोक में सिंहासन (तख्त) पर विराजमान हैं। वह अचल सदा रहने वाला अविनाशी तथा वास्तव में दिगम्बर अर्थात् उनके शरीर पर वस्त्र नहीं हैं, केवल एक लंगोट (कोपीन) पहने है। वे इस रूप में दृढ़ अर्थात् स्थाई हैं। वही परमेश्वर कबीर जी भक्ति को प्रोत्साहन देने के लिए आन (अन्य) देह अर्थात् शरीर धारण करके पृथ्वी पर आए थे, वे अगिवत (जिसकी गति कोई नहीं जानता) सत् (अविनाशी) कबीर जी ही हैं।(47)**

वाणी :- नानक दादू अगम अगाधू, तेरी जहाज खेवट सही।
सुख सागर के हंस आये, भक्ति हिरम्बर उर धरी।।48

❖ **सरलार्थ :- इसी परमात्मा ने मेरे की तरह संत नानक जी, संत दादू जी को दर्शन दिए थे। ये दोनों संत बहुत अगम अगाधु (पहुँचे हुए थे तथा काल ब्रह्म से आगे की भक्ति के अधिकारी) थे। उस परमात्मा ने तेरी अर्थात् आप जी (श्री नानक जी तथा श्री दादू जी) की जहाज अर्थात् भक्ति के जहाज के सही (वास्तविक) खेवट (नौका तथा जहाज को चलाने) परमेश्वर कबीर जी हैं। संत नानक साहेब तथा संत दादू दास साहेब जैसे हँस अर्थात् निर्विकार भक्त सुखसागर (जिस लोक में सुखों का समुद्र लहरा रहा है अर्थात् सत्यलोक) से आए थे। उनके हृदय में हिरंबर (स्वर्ण तुल्य बहुमुल्य) भक्ति की चाह थी अर्थात् ये हँस आत्माऐं सत्य भक्ति के अधिकारी थे।**

इसलिए इन अच्छी आत्माओं को परमेश्वर स्वयं आकर मिले थे।(48)

संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

हम सुल्तानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी मांही कबीर हुआ।।

भावार्थ है कि संत गरीबदास जी ने बताया है कि हम सब, मैं अब्राहिम सुल्तान, संत नानक जी तथा संत दादू जी को उपदेश-दीक्षा देकर तारा अर्थात् पार किया।

वाणी :- कोटि भानु प्रकाश पूरण, रूंम रूंम की लार है।
अचल अभंगी है सतसंगी, अबिगत का दीदार है।।49

❖ **सरलार्थ :- उस सतपुरूष परमेश्वर कबीर जी के सतलोक में विराजमान शरीर के प्रत्येक बाल (रोम) का प्रकाश करोड़ों सूर्यों के प्रकाश के बराबर है। वह परमात्मा अचल (अविनाशी) अभंगी (कभी खण्डन न होने वाला) है, वह सत्संगी अर्थात् सत्य का साथी है जिसकी गति को कोई नहीं जानता, वह साकार है। उसका दीदार (दर्शन) किया जाता है।(49)**

वाणी :- धन सतगुरु उपदेश देवा, चौरासी भ्रम मेटहीं।
तेज पुञ्ज आन देह धर कर, इस विधि हम कुं भेंट हीं।।50

❖ **सरलार्थ :- धन्य हैं मेरे कबीर सतगुरू जी जिन्होंने मुझे तत्वज्ञान का उपदेश किया, जिससे बार-बार जन्म मरण 84 लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में भ्रमण करने का चक्कर मेट अर्थात् समाप्त कर दिया। वह सतगुरू तेजपुंज अर्थात् तेज तत्व का शरीर धारण करके हल्के प्रकाश युक्त शरीर धारण करके इस विधि (तरीके) से हमको मिलता है।(50)**

वाणी :- शब्द निवास आकाशवाणी, योह सतगुरु का रूप है।
चन्द सूरज ना पवन ना पानी, ना जहां छाया धूप है।।51

सरलार्थ :- सतलोक में शब्द निवास अर्थात् नाम की भक्ति करने से निवास अर्थात् स्थाई वास होता है। परमात्मा की आकाशवाणी (अन्तःकरण में गुप्त प्रेरणा) जो होती है, वह सतगुरू का रूप समझना चाहिए। उस सतलोक में इस काल लोक वाले नाशवान चान्द-सूर्य, पवन, जल नहीं हैं। वहाँ स्वप्रकाशित सतलोक है। परमात्मा के शरीर का भी अद्भुत प्रकाश है। जब वहाँ सूर्य नहीं है तो धूप-छाया तो होनी ही नहीं। धूप का अर्थ है गर्मी युक्त प्रकाश।(51)

वाणी :- रहता रमता, राम साहिब, अवगत अलह अलेख है।
भूले पंथ बिटम्ब वादी, कुल का खाविंद एक है।।52

❖ **सरलार्थ :- रहता (एक स्थान सतलोक में स्थाई रहने वाला) रमता (स्थान-स्थान पर भ्रमण करने वाला रमता राम) स्वयं साहेब (परमेश्वर) अविगत अल्लाह है और वह अलेख है (जिसका लिखकर सर्व वर्णन नहीं किया जा सकता व उसकी महिमा को कलमबंद नहीं किया जा सकता) सब पंथों अर्थात् अखाड़ों के भक्त संत जैसे सच्चा सौदा पंथ, राधास्वामी पंथ, राम दास पंथ, कबीर पंथ, वैष्णव पंथ, गिरी-पुरी, नाथ पंथ आदि सबको भूल लगी है। ये विटम्बवादी हैं अर्थात् मिथ्या ज्ञान प्रचारक हैं।**

विटम्बवादी का अर्थ है शास्त्रविरूद्ध ज्ञान का वादी (बोलने वाला प्रचारक) जो आडम्बर को अधिक महत्व देता है। अपने इष्ट तथा गुरू को सर्व शक्तिमान तथा ज्ञानी मानता है। उनसे कहा है कि कुल का खाविंद (मालिक) एक सतपुरूष कबीर जी हैं।(52) संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

वाणी :- रूंम रूंम में जाप जप ले, अष्ट कमल दल मेल है।
सुरति निरति कुं कमल पठवो, जहां दीपक बिन तेल है।।53

❖ **सरलार्थ :- हे भक्त! यदि मोक्ष चाहता है तो रूम-रूम में जाप जप ले अर्थात् ऐसी कसक से परमात्मा के नाम का स्मरण कर कि जिससे आपके शरीर के बाल भी खड़े हो जाएं, शरीर में सरण-सरण होने लगे। फिर अष्ट कमल दल (जो परब्रह्म का निवास स्थान है) में आपको परमात्मा गुरू रूप को बदलकर अपने वास्तविक रूप में अष्ट कमल में दर्शन होगा। अपनी सुरति तथा निरति को उस कमल में भेजो जहाँ पर स्वप्रकाशित स्थान है। उसको प्रकाशित करने के लिए तेल तथा दीपक की आवश्यकता नहीं है।(53)**

वाणी :- हरदम खोज हनोज हाजर, त्रिवेणी के तीर हैं।
दास गरीब तबीब सतगुरु, बन्दी छोड़ कबीर हैं।।54

❖ **सरलार्थ :- उपरोक्त भक्ति करके परमात्मा की खोज करो। वह परमात्मा सतगुरू रूप में त्रिकुटी में बने राजदूत भवन में रहता है जो स्थान त्रिवेणी के किनारे पर है। आदरणीय संत गरीबदास जी ने कहा है कि तबीब अर्थात् सर्व रोगनाशक वैद्य सतगुरू बन्दी छोड़ कबीर जी हैं।**

शारीरिक रोग तथा जन्म-मरण के रोगों के वैद्य परमेश्वर कबीर जी ही हैं। उनके बताए भक्ति मार्ग से असाध्य रोग जो शरीर के हैं, वे समाप्त हो जाते हैं तथा जन्म-मृत्यु का दीर्घ रोग जो श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी को भी लगा है, वह भी कबीर तबीब अर्थात् वैद्य रूपी कबीर परमेश्वर से समाप्त हो जाता है। कबीर जी बन्दी छोड़ हैं। अमर करूं सतलोक पठाऊँ, ताते बन्दी छोड़ कहाऊँ। कर्म बन्धनों से मुक्ति मिलने पर प्राणी अमर मोक्ष प्राप्त करता है। परमेश्वर कबीर जी की सत्य साधना करने से सर्व पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं। तब भक्त अमर होता है, परमात्मा उसको सतलोक भेज देते हैं।(54)

गरीब, जम जौरा जासें डरें, मिटें कर्म के लेख।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सतगुरू एक।।

यह ब्रह्म बेदी का सरलार्थ किया है जिससे परमेश्वर की महिमा का स्पष्ट ज्ञान हो सकेगा। अमृतवाणी के गूढ़ गहरे अर्थों का ज्ञान होगा।

''असुर निकंदन रमैणी का सरलार्थ''

सरलार्थ :- असुर का अर्थ है राक्षस, निकन्दन अर्थात् नाश करने वाली, रमैणी का अर्थ है स्तुति, विनती।

असुर निकंदन रमैणी में विश्व की सर्व शक्तियों, देवताओं तथा पूर्ण परमात्मा की स्तुति की गई है जिसको पढ़ने से वैश्विक शक्तियाँ प्रसन्न होकर अपने स्तर का लाभ साधक को देने लगती है।

विशेषता :- इस रमैणी में सर्व सद्ग्रन्थों का सार है। जैसे जंगल में जड़ी-बूटियों के पौधे-पेड़ उगे होते हैं। सद्ग्रन्थ तो वन के समान हैं, इसमें आध्यात्मिक रोगों की जड़ी-बूटियाँ हैं। वैद्य (डॉक्टर) को ज्ञान होता है, परंतु वह जड़ी-बूटियाँ इकट्ठी कूट-काटकर, उबालकर औषधि बनाकर बोतल में भरकर रख लेता है। रोग के अनुसार एक या दो चम्मच पिला देता है, रोग समाप्त हो जाता है। इस रमैणी में आध्यात्मिक वैद्य संत गरीबदास जी ने सद्ग्रन्थों से सार निकाल रखा है। जैसे शिवपुराण पूरी पढ़ने से जो फल मिलता है, वह इस असुर निकंदन रमैणी में लिखी 19 वाणी श्रद्धा से पढ़ने से प्राप्त हो जाता है जो श्री शिव जी की महिमा लिखी है। इसी प्रकार श्री विष्णुपुराण को पूरा पढ़ने से जो फल मिलता है, वह श्री विष्णु जी की लिखी 19 वाणियों से मिल जाता है। इसी प्रकार श्री ब्रह्मा जी की महिमा की 14 वाणी पढ़ने से श्री ब्रह्मापुराण जितना फल मिलता है। इसी प्रकार अन्य जानें।

यह अमरवाणी परमात्मा से साक्षात्कार किए हुए संत गरीबदास जी के मुख कमल से बोली गई हैं। जिस कारण से उनकी वाणी मंत्र की तरह कार्य करती है, शीघ्र लाभ भी देती है।

वाणी :- सतपुरूष समर्थ ओंकारा। अदली पुरूष कबीर हमारा।।1
आदि युगादि दया के सागर। काल कर्म के मोचन आगर।।2
दुःख भंजन दर्वेश दयाला। असुर निकन्दन कर पैमाला।।3

❖ सरलार्थ :- इन तीन वाणियों में पूर्ण परमात्मा की स्तुति की है तथा कहा है कि ओंकार का वास्तविक अर्थ है काल ब्रह्म क्योंकि यह ॐ नाम का पर्याय है। ॐ मंत्र ब्रह्म का है। ब्रह्मज्ञानी कहलाने वाले ऋषियों का दावा है कि ब्रह्म अर्थात् ओंकार नाम वाला प्रभु हमारा पूज्य है। ओंकार (ॐ) नाम के जाप से ब्रह्म प्राप्ति होती है। ब्रह्म को वे निराकार बताते हैं, समर्थ सिरजनहार बताते हैं। संत गरीबदास जी ने कहा है कि सतपुरूष समर्थ ओंकार है। समर्थ ब्रह्म है। {ब्रह्म का अर्थ परमात्मा होता है, परंतु काल अधूरा परमात्मा यानि ब्रह्म है, इसे भी ब्रह्म कहने लगे। समर्थ परमात्मा को पूर्ण ब्रह्म कहते हैं। इस भाव से कहा है कि समर्थ ओंकारा अर्थात् ब्रह्म तो कबीर परमेश्वर हैं।} वह अदली (न्यायकारी) पुरूष (परमात्मा) हमारे कबीर जी हैं।(1)

❖ आदि-युगादि अर्थात् सृष्टि की रचना के आदि से जुग (युग) से ये दया के समुद्र हैं और काल तथा पाप कर्म का मोचन (नाश) करने वाले हैं।(2)

❖ कबीर परमात्मा दुःखों का भंजन (नाश) करने वाले दर्वेश (महात्मा रूप में प्रकट होने वाले) दयालु हैं। ये परमात्मा असुर (राक्षसों) का निकन्दन (नाश) करके उनको

पैमाल (पूर्ण रूप से मिटा देते हैं) कर देते हैं।(3)

वाणी :- आब खाक पावक और पवना। गगन सुन्न दरियाई दौना।।4

❖ **सरलार्थ :- पाँचों तत्व यहाँ पर सर्व रचना के जिम्मेवार हैं।**

आब(पानी), खाक(पृथ्वी), पावक(अग्नि), पवन(वायु), गगन(आकाश) दरियाई दौना का अर्थ है सतलोक को तो दरिया जानो और काल लौक दौना अर्थात् कुण्ड जानें।(4)

वाणी :- धर्मराय दरबानी चेरा। सुर–असुरों का करै निबेड़ा।।5
सत का राज धर्मराय करहीं। अपना किया सबहै डण्ड भरहीं।।6

❖ **सरलार्थ :- काल लोक का धर्मराय (न्यायधीश जो सबको पाप-पुण्यों के अनुसार कर्म फल देता है) परमेश्वर कबीर जी का दरबानी अर्थात् ड्योडी में कार्यरत कर्मचार जैसा है। यह तो कर्मानुसार यह निबेड़ा (निर्णय) करता है कि इसके कर्म ऐसे हैं, यह राक्षस है और यह ऐसे कर्मों वाला देव स्वरूप आत्मा है।(5)**

❖ **सत का राज अर्थात् जैसा जिसका कर्म है, उसको वैसा ही फल देकर धर्मराय तो सत का राज करता है अर्थात् जैसे पहले भारत देश गुलाम था और यहाँ का शासन एक वायसराय करता था जो इंग्लैंड के राजा का नौकर होता था। इसलिए धर्मराय को कहा है कि यह राज करता है, जो जैसा कर्म करता है, उसका दण्ड प्राणी भोगता है, आदेश धर्मराय का होता है।(6)**

वाणी :- शंकर शेष और ब्रह्मा विष्णु। नारद–शारद जा उर रसनं।।7

❖ **सरलार्थ :- काल ब्रह्म की महान शक्तियों की जानकारी दी है, उनके नाम बताए हैं। श्री शंकर जी के साथ शेषनाग का नाम जोड़ा है। शेषनाग भी महान शक्ति मानी है। शेषनाग के वंशज साँप श्री शंकर जी के गले की शोभा बढ़ाते हैं। शारद कहा शारदा जी को जो ब्रह्मा जी पुत्री है, वह अच्छी गायक मानी गई। इसी को सरस्वती भी पुराणों में कहा है। उर रसनं का अर्थ सरस्वती जी की मीठी वाणी उर (हृदय) को छू जाती है।(7)**

वाणी :- गौरज और गणेश गोसांईं। कारज सकल सिद्ध हो जाईं।।8

❖ **सरलार्थ :- गौरज (गिरजा अर्थात् पार्वती जी) तथा गणेश जी अपने स्तर के सर्व कार्य सिद्ध कर देते हैं जो इनकी सच्चे नामों से साधना करते हैं।(8)**

वाणी :- ब्रह्मा, विष्णु और शंभू शेषा। तीनों देव दयालु हमेशा।।9
सावित्री और लक्ष्मी गौरा। तीनों देवा सिर कर हैं चौरा।।10

❖ **सरलार्थ :- श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी ये तीनों देवता दयावान हैं।(9)**

इनके सिर पर इनकी पत्नियाँ चंवर करती हैं। श्री ब्रह्मा जी के सिर पर सावित्री जी, श्री विष्णु जी के सिर पर लक्ष्मी जी तथा शिव जी के सिर पर पार्वती जी सत्कार करते हुए चंवर ढुराती हैं।(10)

वाणी :- पाँच तत्व आरम्भन् कीन्हा। तीन गुणों मध्य शाखा झीना।।11
सतपुरूष से ओंकारा। अविगत रूप रचै गैनारा।।12

❖ **सरलार्थ :- काल ब्रह्म की सर्व रचना पाँच तत्वों तथा तीन गुणों से हुई है।(11)**

❖ **ओंकार शब्द काल ब्रह्म का बोधक है। कहा है कि काल ब्रह्म की उत्पत्ति सतपुरूष**

से हुई है। उसी अविगत रूप परमेश्वर जी ने गैनारा अर्थात् सर्व पर्वतों की रचना की है।(12)

वाणी :- कच्छ, मच्छ, कूरंभ और धौला। सिरजनहार पुरूष है मौला।।13

❖ **सरलार्थ :- जो पौराणिक व्यक्ति मानते हैं कि कच्छ-मच्छ आदि अवतार तथा कूरंभ तथा धौल जिनको पौराणिक मानते हैं कि इनके ऊपर पृथ्वी रखी है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि इनको उत्पन्न करने वाला भी मौला (सतपुरूष) है।(13)**

वाणी :- लख चौरासी साज बनाया। भगलीगर कूं भगल उपाया।।14

❖ **सरलार्थ :- इस वाणी में परमात्मा को भगलीगर (जादूगर) की उपमा देकर समझाया है कि कोई तो कहता है कि बीज था। पहले उससे वृक्ष उत्पन्न हुआ। कुछ कहते हैं कि बीज किसने उत्पन्न किया, बीज कहाँ से आया? संत गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि जैसे जादूगर हाथ की मुट्ठी में कभी गेहूँ बना देता है, कभी रूपया। इसी प्रकार परमात्मा ने 84 लाख प्रकार के जीव उत्पन्न किए हैं, फिर विधान बना दिया। उस आधार से अपने आप उत्पत्ति-विनाश होता रहता है।(14)**

वाणी :- उपजैं—विनशैं आवैं जाहीं। मूल बीज कूं संशय नाहीं।।15

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा ने संसार को जादूगर की तरह उत्पन्न किया है। फिर विधान बना दिया, अपने-अपने कर्मानुसार जन्मते-मरते रहते हैं। आते हैं अर्थात् जन्म लेते हैं, जाते हैं अर्थात् संसार छोड़कर चले जाते हैं, परंतु मूल बीज अर्थात् आत्मा को कोई संशय नहीं है। भावार्थ है कि आत्मा तो अमर है। उसको कोई खतरा नहीं है।**

परमात्मा ने अपने वचन से अपने अंदर से अपने अंश उत्पन्न किए जो परमात्मा वाले अमर गुण युक्त हैं जो आत्मा कहलाते हैं। आत्मा ही काल लोक में आकर जीव रूप धारकर जीवात्मा कहलाती है। आत्मा अविनाशी है, जीव अविनाशी नहीं है। जीव शरीरधारी प्राणी है। यह जन्मता-मरता है। आत्मा जब मोक्ष प्राप्त कर लेती है तो जीव का भाव समाप्त हो जाता है, तब समझें जीव मर गया अन्यथा जीवात्मा अन्य प्राणियों के शरीर धारण करता है। वह जीव का जन्म तथा शरीर छोड़ता है, वह मृत्यु कहलाती है, परंतु जीवात्मा को केवल जीव भी कहते हैं क्योंकि आत्मा जीव के अंदर विराजमान है, बाहर का सूक्ष्म आदि शरीर जीव कहा जाता है। मुक्ति प्राप्त होने पर सर्व शरीरों का आवरण उतरकर केवल आत्मा ही शेष रह जाता है। आत्मा के ऊपर स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, कैवल्य आदि-आदि शरीर रूपी वस्त्र हैं। जिनके रहते आत्मा को जीव तथा जीवात्मा कहा जाता है। जब कुत्ते का स्थूल शरीर प्राप्त है तो कुत्ता (Dog) रूपी जीव कहा जाता है। इसी प्रकार मानव स्थूल शरीर धारण करके मानव रूपी जीव का दर्जा जीवात्मा को मिलता है। सर्व प्राणी (जीव) के शरीर धारण करके जन्मते-मरते हुए भी आत्मा को कोई खतरा नहीं है।(15)

वाणी :- नील नाभ से ब्रह्मा आए, आदि ओम् के पुत्र कहाए।।16

❖ **सरलार्थ :- श्री ब्रह्मा (रजगुण) का जन्म पुराणों के आधार से माना जाता है कि नील (नीले रंग के भगवान विष्णु) की नाभि से कमल में उत्पन्न हुआ। वास्तव में वह जो श्री विष्णु जी के रूप में थे, वे स्वयं काल प्रभु थे और उसकी नाभि से कमल उत्पन्न हुआ था। उसमें ब्रह्मा जी को युवा अवस्था में अचेत अवस्था में रखा गया था। वाणी**

का भावार्थ है कि ओम् मन्त्र श्री ब्रह्मा जी की भक्ति का भी है, परंतु इससे आदि यानि पहले जो ओम् मंत्र वाला काल ब्रह्म है, उसके पुत्र हैं श्री ब्रह्मा जी।(16)

वाणी :- स्वयंभू मनु ब्रह्मा की शाखा। ऋग यजु साम अथर्वन भाषा।।17
पीवरत भया उत्तानं पाता। जा कै ध्रूव हैं आत्म ज्ञाता।।18
सनक सनन्दन संत कुमारा। चार पुत्र अनुरागी धारा।।19
तेतीस कोटि कला विस्तारी। सहंस अठासी मुनिजन धारी।।20

❖ सरलार्थ :- महर्षि स्वयंभू मनु जी श्री ब्रह्मा जी के पुत्र हुए हैं जिनके विषय में प्रसिद्ध है कि उन्होनें श्री ब्रह्मा जी से चारों वेदों को सुना और कण्डस्थ कर लिया। उनको समझा तथा अनुभव किया। फिर अपने अनुभव को मनुस्मृति नामक पुस्तक में लिखा।(17)

❖ प्रियवर्त (पीवरत) श्री ब्रह्मा जी का वंशज है और उसका पुत्र उतानपात हुए हैं। उतानपात के पुत्र ध्रुव भक्त हुए हैं।(18)

❖ श्री ब्रह्मा जी के ही चार पुत्र और हुए हैं। 1. सनक 2. सनन्दन 3. सनातन 4. संत कुमार जिन्होनें वरदान माँगा था कि हम कभी युवा न हों क्योंकि युवा होने के पश्चात् वासनाऐं प्रबल हो जाती हैं। जिस कारण से जीव भक्ति नहीं कर पाता, परिवार बन जाता है। सारी आयु सांसारिक कार्यों में व्यतीत हो जाती है। मानव का मूल कार्य पूर्ण नहीं हो पाता जो भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करना है। इन्होंने वरदान माँगा कि हमारी आयु केवल पाँच वर्ष की ही रहे। वे पाँच वर्ष के बच्चे के रूप में हैं, परंतु बहुत बुद्धिमान हैं। इन्होंने विवेक से पाँच वर्ष की अवस्था में रहने का वरदान माँगा है। जिस कारण से इन महापुरूषों को अनुरागी धारा कहा है कि इनको संसार से वैराग्य हो गया, भगवान भक्ति की प्रबल प्रेरणा बनी है।(19)

❖ श्री ब्रह्मा जी की महिमा का गुणगान करते हुए संत गरीबदास जी ने बताया है कि श्री ब्रह्मा जी की संतान कितनी महान हुई है। जैसे 33 करोड़ देवता भी श्री ब्रह्मा जी (रजगुण) के कुल में जन्मे हैं और 88 हजार ऋषि जी भी श्री ब्रह्मा जी का कुल है। यह सब विस्तार श्री ब्रह्मा जी के वंशजों का है।(20)

वाणी :- कश्यप पुत्र सूरज सुर ज्ञानी। तीन लोक में किरण समानी।।21

❖ सरलार्थ :- श्री ब्रह्मा जी के पुत्र श्री कश्यप ऋषि हुए हैं। श्री कश्यप ऋषि के पुत्र श्री सूरज देवता हुए हैं जो एक ब्रह्माण्ड में सर्व प्रकाश स्रोतों के मुखिया हैं जिसके आधीन सूर्य (Sun) आदि प्रकाश के स्रोत हैं। श्री सूरज देवता को कहा है कि वे बहुत बुद्धिमान हैं।(21)

वाणी :- साठ हजार संगी बाल खेलं। बीना रागी अजब बलेलं।।22
तीन कोटि योधा संग जाके। सिकबंदी है पूर्ण साके।।23

❖ सरलार्थ :- सूरज देवता रथ में बैठकर जब चलते हैं तो उनके साथ 60 हजार बाल्यखेल तथा तीन करोड़ योद्धा संग चलते हैं जो आगे-पीछे चलते हैं। सूर्य के रथ के आगे 60 हजार बाल्यखेल चलते हैं जो बीना आदि-आदि वाद्ययंत्र बजाने में कुशल हैं तथा राग भी अच्छा गाते हैं। सूरज देवता के रथ के पीछे तीन करोड़ योद्धा चलते हैं

जो सिकबंदी अर्थात् पूर्ण रूप से शूरवीर हैं। पूर्ण साकै अर्थात् उनकी शूरवीरता की साक (साख) अर्थात् महिमा यानि सनन्द है।(22-23)

वाणी :- हाथ खड़ग गल पुष्प की माला। कश्यप सुत है रूप विशाला।।24
कौसत मणि जड़या विमान तुम्हारा। सुरनर मुनिजन करत जुहारा।।25

❖ सरलार्थ :- सूरज देवता अपने हाथ में खड़ग (तलवार) लिए रथ में बैठता है। उनके रथ के चारों ओर कौस्तभ मणि लगी है और सूर्य देव के गले में फूल माला है। हे कश्यप सुत अर्थात् श्री कश्यप ऋषि के पुत्र! आपका रूप (शरीर) बहुत विशाल है। आपकी जुहारी अर्थात् सत्कार आरती अन्य सुर (देवता) तथा नर (भक्तजन) तथा ऋषि जी करते हैं। आपका सर्व सम्मान करते हैं।(24-25)

वाणी :- चंद सूर चकवै पृथ्वी मांही। निस–वासर चरणों चित लाहीं।।26

❖ सरलार्थ :- पृथ्वी आदि लोकों में सूर्य तथा उसके उपग्रह चाँद का प्रकाश चकवै है अर्थात् चक्रवर्ती हैं।(सब जगह हैं।) भक्तों को संदेश दिया है कि ऐसे महापुरूष सूर्य देव का निस (निशा=रात्रि) और वासर (वासुर=दिन) सत्कार करना चाहिए। इसकी महिमा को चित्त (ध्यान) में रखना चाहिए।(26)

वाणी :- पीठै सूरज सनमुख चंदा। काटैं त्रिलोकी के फंदा।।27

❖ सरलार्थ :- पीठै सूरज सनमुख चंदा अर्थात् आगे-पीछे सब स्थानों पर सूर्य तथा चाँद मिलकर तीनों लोकों के अँधकार का फंदा काटते हैं अर्थात् अधेरे का नाश करके प्रकाश फैलाते हैं जो सूर्य देवता के आधीन है।(27)

वाणी :- तारायण सब स्वर्ग समूलं। पखे रहैं सतगुरू के फूलं।।28

❖ सरलार्थ :- उपरोक्त प्रकाश स्रोत जो सूरज देवता के आधीन हैं, उन सहित जितने भी तारे तथा स्वर्ग आदि-आदि हैं, वे समूल अर्थात् सृष्टि के मूल (सतलोक आदि-आदि ऊपर के लोकों समेत) सहित सतगुरू अर्थात् कबीर परमेश्वर जो संत गरीबदास जी को सतगुरू रूप में मिले थे। फूल पखे हैं अर्थात् खिले हैं अर्थात् सर्व सृष्टि कबीर परमेश्वर जी की फुलवाड़ी में फूल है।(28)

वाणी :- जय जय ब्रह्मा समर्थ स्वामी। येती कला परम पद धामी।।29

❖ सरलार्थ :- हे ब्रह्मा जी! आप समर्थ हैं, आपकी जय हो, जय हो। आपकी इतनी महिमा है जो वाणी सँख्या 16 से 27 में बताई है, आप इतने समर्थ हैं। जन-साधारण की ताकत तो कुछ भी नहीं है। श्री ब्रह्मा जी की तो शूरवीर संतानें हैं। आप काल लोक में रजगुण विभाग का परम पद अर्थात् श्रेष्ठ पदवी प्राप्त हो तथा आप ब्रह्मालोक रूपी धाम (लोक) के स्वामी हैं।(29)

❑ उपरोक्त महिमा श्री ब्रह्मा जी (रजगुण) की बताई है। अब श्री शिव जी (तमगुण) की महिमा बताई है :-

वाणी :- जय जय शम्भू शंकर नाथा। कला गणेश रू गौरज माता।।30

❖ सरलार्थ :- हे शिव जी! आपकी जय हो। हे नाथ! आपकी जय हो। श्री गणेश जी की माता जी गौरज (गिरिजा=पार्वती) है जिसने अपनी कला अर्थात् शक्ति से गणेश को उत्पन्न किया।(30)

वाणी :- कोटि कटक पैमाल करंता। ऐसा शम्भू समर्थ कंता।।31

❖ **सरलार्थ :- हे शंकर जी! आप कोटि कटक अर्थात् करोड़ों सेना को पैमाल यानि नष्ट कर देते हो। हे शंकर जी! आप ऐसे समर्थ कंत (स्वामी) हो।(31)**

वाणी :- चंद लिलाट सुर संगीता। जोगी शंकर ध्यान उदीता।।32

❖ **सरलार्थ :- आपके लिलाट (मस्तिक) के ऊपर चाँद सुशोभित है और आपके साथ आपके सुर अर्थात् गणदेव रहते हैं। आपका ध्यान ऊपर त्रिकुटी की और रहता है। {उदीता=जो ऊपर की ओर जाने वाला है।}(32)**

वाणी :- नील कण्ठ सोहे गरूड़ासन। शम्भू जोगी अचल सिंहासन।।33

❖ **सरलार्थ :- भगवान शिव जी ने सागरमंथन में निकला विष पी लिया और उसको अपने गले में ठहरा लिया था। जिस कारण से उनका कण्ठ नीला हो गया था। उसी कारण से शिव जी को नीलकण्ठ के नाम से पुकारा जाता है। हे नीलकण्ठ! आप गरूड़ पक्षी की तरह आसन पर शोभामान भी होते हो। जैसे योग के आसनों में मयूर आसन है। जैसे मोर पक्षी अपने दो पैरों के ऊपर इतने लंबे पंखों को संतुलित करके चलता रहता है। इसी को नकल योगी करते हैं। दोनों हाथों की कोहनियों को पेट में लगाकर हाथों को जमीन पर रखकर शरीर को मोर की तरह कर लेते हैं, उसको मोर आसन कहते हैं, परंतु भगवान शंकर देवता हैं। उनको सम्मान देते हुए गरूड़ पक्षी जो श्री विष्णु भगवान का वाहन है, उसकी तरह योग क्रिया करने वाला। भगवान शिव को बताया है कि आप महान योगी हैं, आप गरूड़ आसन पर शोभा पाते हैं। हे शंकर! आपका सिहांसन अचल है अर्थात् अन्य देवताओं से लंबी आयु होने के कारण अचल (जो नष्ट नहीं होता) सिहांसन कहा है।(33)**

वाणी :- गंग तरंग छूटैं बहु धारा। अजपा तारी जय जय कारा।।34

❖ **सरलार्थ :- आपके शिवलोक में गंगाजल की बहुत-सी धाराऐं बह रही हैं। अजाप अर्थात् आप सोहं नाम के अजपा अर्थात् मानसी जाप में तारी अर्थात् लौ लगाए हैं। आपको ऐसा कारगर मंत्र परमात्मा से प्राप्त है, आप धन्य हैं। आपकी जय हो, जय हो।(34)**

वाणी :- रिद्धि–सिद्धी दाता शंभू गोसांई। दालीदर मोच सभै हो जाई।।35

❖ **सरलार्थ :- भगवान शिव जी के पास आठ रिद्धि तथा सिद्धी शक्तियाँ हैं जो लंका के राजा रावण ने भगवान तमोगुण शिव की भक्ति करके दो प्राप्त की थी। 1. आकाश में उड़ जाने की सिद्धी तथा 2. धनी बनने के लिए रिद्धि। इस वाणी में कहा है कि भगवान शंकर जी रिद्धि-सिद्धी के दाता हैं और इनकी पूजा करने से दालीदर (दरिद्र) अर्थात् निर्धनता से मोच अर्थात् मुक्ति मिल जाती है।(35)**

वाणी :- आसन पदम लगाए जोगी। निःइच्छा निर्बानी भोगी।।36

❖ **सरलार्थ :- आप महान योगी भी हैं। आप योगासन करते हैं तथा पदम आसन लगाकर समाधिस्थ होते हैं। आप निःस्वार्थ निर्बानी भोगी अर्थात् मोक्ष के लिए प्रयत्नशील होकर ऊपर के मण्डलों में ध्यान लगाकर आनन्द लेते हो।(36)**

वाणी :- सर्प भुवंग गले रूंड माला। वृषभ चढ़िए दीन दयाला।।37

❖ सरलार्थ :- आपके गले में सर्प भुवंग अर्थात् फन उठाए हुए साँप लिपटे हैं और आप जी कभी-कभी अपने गले में पार्वती जी के रूंडों (गर्दन से ऊपर के हिस्से की हड्डी को रूंड कहा है) की माला बनाकर पहनते हैं।

❑ पुराणों में कथा है कि भगवान शिव ने पार्वती जी को अमर मंत्र नहीं बताया क्योंकि उसकी रूचि भक्ति करने की नहीं थी। वह कहा करती थी कि मुझे भगवान मिल ही गए हैं तो भक्ति करने का क्या औचित्य रह गया है। भगवान पाने के लिए ही तो भक्ति करते हैं। इस कारण से शिव जी ने अमर मंत्र नहीं बताया था। जिस कारण से पार्वती जी मरती और जन्मती थी। उसका शरीर दफना दिया जाता है। भगवान शिव कुछ दिन बाद उसके रूंड (सिर) को निकाल लेता था। बहुत प्यार करता, फिर धागे में डाल लेता जिसमें पहले के रूंड डाले होते थे। पार्वती बार-बार जन्म लेकर भगवान शिव को ही पति रूप में वरती थी। भगवान शिव को अमर मंत्र पूर्ण परमात्मा से प्राप्त हुआ था, जब परमात्मा प्रथम सत्ययुग में संत वेश में प्रकट हुए थे जिसका जाप करके शिव जी लम्बी आयु प्राप्त किए हैं। जब माता पार्वती जी का 108वां जन्म हुआ और भगवान शिव से विवाह किया। कुछ समय उपरांत ऋषि नारद जी के समझाने तथा 107 रूंडों की माला का ज्ञान कराने के पश्चात् भगवान शिव से अमर मंत्र की याचना की जो भगवान शिव ने उस स्थान पर प्रदान किया जिसको अमरनाथ धाम के नाम से पूजा जाता है। जब तक पार्वती की प्रबल इच्छा मंत्र लेने की नहीं हुई, तब तक भगवान शिव जी ने वह मंत्र दान नहीं किया। श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 18 में कहा है कि अर्जुन! इस अनमोल गीता शास्त्र को उसको न सुनाना जिसकी रूचि सुनने की न हो। इसलिए प्रत्येक आध्यात्मिक क्रिया प्रबल जिज्ञासा करने वाले को समझाई-बताई जाती है।

इसलिए कहा है कि आपके गले की शोभा सर्प तथा रूंडों की माला बढ़ाते हैं। हे दीन दयाल! आप वृषभ (नंदी बैल) पर बैठकर यात्रा करते हो। आपका वाहन वृषभ अर्थात् नादिया बैल है।(37)

वाणी :- बामै कर त्रिशूल विराजै। दहनै कर सुदर्शन साजै।।38

❖ सरलार्थ :- आप कभी-कभी बाऐं हाथ में त्रिशूल धारण करते हो तथा दाऐं हाथ में सुदर्शन चक्र धारण करते हो जो आपकी शक्ति को दर्शाता है।(38)

वाणी :- सुन अरदास देवन के देवा। शम्भू जोगी अलख अभेवा।।39

❖ सरलार्थ :- हे देवताओं में प्रमुख देवता! हमारी अर्ज सुनो। हे शंकर योगी! आपकी महिमा अलख है, जिसे कोई नहीं लख (देख-जान) सकता। आपकी महिमा अभेवा (जिसका जन-साधारण को भेद न हो, वह अभेव है) है।(39)

वाणी :- तू पैमाल करै पल मांही। ऐसे समर्थ शम्भू सांई।।40

❖ सरलार्थ :- हे शिव जी! सृष्टि को पल में पैमाल (नष्ट) कर देते हो। आप इतने समर्थ हैं।(40)

वाणी :- एक लख योजन ध्वजा फरकै। पंचरंग झण्डे मोहरे रखै।।41

❖ सरलार्थ :- आप अपने निवास के सामने पाँच रंग का ध्वज रखते हो जिसकी

ऊँचाई एक लाख योजन अर्थात् 12 लाख कि.मी. है।(एक योजन=4 कोस, एक कोस=3 कि.मी.) आपके निवास पर ध्वज फरके रहे हैं।(41)

वाणी :- काल भद्र कृत देव बुलाऊँ। शंकर के दल सब ही ध्याऊँ।।42

❖ **सरलार्थ :- काल भद्र की उत्पत्ति :- जिस समय माता पार्वती जी अपने पिता दक्ष के हवन कुण्ड में जलकर मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। जब शिव जी को पता चला कि दक्ष ने सती जी का अपमान किया, जिस कारण से उसने आत्मदाह किया है। शिव ने अपनी जटा (सिर के बालों का समूह) से बाल उखाड़कर काल भद्र को प्रकट किया। उसको सब भूत-गण आदि सेना देकर दक्ष को मारने के लिए भेजा था। इसलिए वाणी में काल भद्र को कृत (बनावटी) देव कहा है। संत गरीबदास जी हम साधकों को संकेत कर रहे हैं कि भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए ऐसे स्तुति करो कि आप प्रत्येक साधक की रक्षा करते हो तथा भक्त के शत्रु का नाश करते हो। हमारा कोई भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष शत्रु है, उससे रक्षथि। आपको तथा आप सर्व शूरवीर योद्धाओं के दल (सेना) को आमन्त्रित करता हूँ। आपके द्वारा रचे (कृत) काल भद्र को भी बुलाता हूँ।(42)**

वाणी :- भैरों खेत्रपाल पलीतम्। भूत और दैत्य चढ़े संगीतम्।।43

❖ **सरलार्थ :- आपके सेनापति भैरव तथा क्षेत्रपाल पलीतं (बड़े खुंखार है), उनके साथ भूत और दैत्य (राक्षस) भी लड़ाई में चढ़ाई करते हैं।(43)**

वाणी :- राक्षस भंजन बिरद तुम्हारा। ज्यों लंका पर पदम अठारा।।44

❖ **सरलार्थ :- हे शिव जी! आप बिरद (स्वभाव=विशेषता) राक्षसों का नाश करना है। उदाहरण के लिए जैसे आपने श्री रामचंद्र की स्तुति से खुश होकर रावण के साथ युद्ध करने के लिए अपनी 18 पदम सेना भेजी थी।(44)**

वाणी :- कोट्यों गंधर्व कमंद चढ़ावैं। शंकर दल गिनती नहीं आवै।।45

❖ **सरलार्थ :- रावण के साथ लंका में युद्ध के समय श्री रामचंद्र जी के सहयोग के लिए करोड़ों तो गंधर्व कमंद चढ़ा रहे थे अर्थात् तीरों से लड़ रहे थे और शंकर जी की सेना की तो गिनती ही नहीं हो रही थी जो रावण की सेना के साथ युद्ध कर रहे थे।(45)**

वाणी :- मारैं हाक दहाक चिंघारैं। अग्नि चक्र बानों तन जारैं।।46

❖ **सरलार्थ :- आपकी सेना रावण की सेना से लड़ते समय हल्ला बोलकर लड़ रहे थे, हाक (हुंकार) भर रहे थे। दहाक चिंघारैं अर्थात् चिंघाड़ मारकर सबके दिल दहला रहे थे। अग्नेय शस्त्रों से वार कर रहे थे। अग्नि चक्र तथा अग्नि बानों से शत्रु की सेना के शरीर जला रहे थे।(46)**

वाणी :- कंप्या शेष धरनी थर्रानी। जा दिन लंका घाली घानी।।47

❖ **सरलार्थ :- जिस दिन आपकी 18 पदम सेना ने लंका में श्री रामचन्द्र जी के पक्ष में होकर लंका में घानी घाली अर्थात् लंका नाश करने का चक्र चलाया। (घानी घालना=सरसों का तेल निकालते समय सरसों को पीड़ने के लिए कोल्हू में कुछ मात्रा में डालते थे, उसके पिड़ जाने के पश्चात् दूसरी मात्रा डालते थे, उसको घानी**

घालना कहते थे। उसमें सरसों या तिल पीड़े जाते थे।) तिल तथा सरसों की तरह रावण की सेना को पीड़ रहे थे, कचूमर निकाल रहे थे। उस समय आपकी सेना के घमासान युद्ध से धरती भी काँप गई थी।(47)

वाणी :- तुम शम्भू ईशन के ईशा। वृषभ चढ़िए विशवे बीसा।।48

❖ **सरलार्थ :- हे शिव शम्भू जी! आप तो गणों के स्वामी गणपति के भी ईश अर्थात् स्वामी हैं। आप वृषभ के ऊपर चढ़कर यात्रा करते हैं। यह विशवे बीसा है अर्थात् शत प्रतिशत सच है। विशवे बीसा का भावार्थ है कि पहले समय में जमीन की पैमाइस एकड़ों में नहीं थी, बीघों में थी। एक बीघे में 20 बीसे होते थे, उसको पूर्ण बीघा मानते थे। जो कोई खेत 20 बीसे का नहीं होता, उसको अधूरा मानते थे, कच्चा मानते थे। फिर यह कहावत बन गई कि जो कोई व्यक्ति किसी अन्य के विषय में बता रहा हो कि उसने ऐसा कहा है, उस व्यक्ति की बात को सत्य मानते हुए कहते थे कि बीस बीसे है अर्थात् शत प्रतिशत सत्य है।**

इस वाणी में भी संत गरीबदास जी ने यही कहावत कही है कि आप वृषभ अर्थात् अपने नंदी बैल पर चढ़कर चलते हैं। यह अति सत्य है। कृपा हमारे को भी वृषभ पर चढ़कर चलकर दर्शन दें।(48)

वाणी :- इन्द्र कुबेर वरूण बुलाऊँ। रापति सेत सिंहासन ल्याऊँ।।49

❖ **सरलार्थ :- रापति का अर्थ है हाथी, सेत=सफेद, इन्द्र=देवताओं का स्वामी स्वर्ग का राजा, कुबेर=धन का देवता, वरूण=जल का देवता।**

असुर निकंदन रमैणी में विश्व के सर्व देवताओं तथा साधु-संतों की स्तुति है। उसी आधार से यहाँ कुछ विशेष विभाग के प्रधान देवताओं की महिमा बताई है, स्तुति की है। जैसे गाँव में विवाह में फेरों के समय औरतें इकट्ठी होकर गीत (गाने) गाती थी। दुल्हन का हौंसला बढ़ाने के लिए, उसको खुश करने के लिए कहती थी :-

अपनी सखी को हाथी देदूं, और घोड़ों की लादूं लार।
आगलियां की तील चार सौ, तेरी ल्याऊँ हजार।।

जो औरतें या लड़कियाँ उस विवाह के समय में गीत गाने आती थी। वे लगभग घर से बाहर की गाँव की होती थी जो केवल गीत गाने के लिए बुलाई जाती थी। लेना-देना कुछ नहीं होता था, परंतु कहने में कसर नहीं छोड़ती थी। उससे कुछ लाभ नहीं था तो हानि भी नहीं था। जो गीता गाती थी, उनका सामर्थ्य एक काटड़ा दान करने का भी नहीं था, परंतु नीयत तथा भावना ऊँची तथा अच्छी थी। यही भावार्थ इस वाणी की स्तुति का है। कहा है कि इन्द्रदेव का वाहन सफेद हाथी (White Elephant) है। इनके लिए कहा है कि मैं (भक्त) आप इन्द्र जी को पुकारता हूँ। आइए! आपके लिए श्वेत हाथी लाऊँगा, अच्छे सिहांसन लाकर आपको तथा कुबेर जी तथा वरूण जी को उन पर बैठाकर सम्मान करूँगा। इन देवताओं की स्तुति करने से ये प्रसन्न होकर स्तुतिकर्ता को अपने कोटे से सहायता कर देते हैं।(49)

वाणी :- इन्द्र दल बादल दरियाई। छ्यानवैं कोटि की हुई चढ़ाई।।50
सुरपति चढ़े इन्द्र अनुरागी। अनन्त पदम गंधर्व बड़भागी।।51

❖ सरलार्थ :- स्वर्ग के राजा के पास जल विभाग है जिसमें 96 करोड़ मेघमाला हैं। एक मेघमाला में एक करोड़ बादल हैं। एक बादल दरिया के समान है। भक्त की पुकार सुनकर इन्द्र जी अपने बादल दल के साथ पहुँचते हैं। सुरपति इन्द्र जी स्तुतिकर्ता के अनुराग में अर्थात् उनके मोह में चढ़ते हैं। संत गरीबदास जी हम भक्तों को विश्वास दिला रहे हैं कि मेरी सहायता के लिए इन्द्र जी, अनन्त गंधर्व बड़े भाग वाले हैं। वे भी भक्त की सहायता करने चढ़ते हैं अर्थात् पहुँचते हैं। मेरे लिए भी आए थे।

उदाहरण :- 1. एक समय गाँव छुड़ानी (जिला-झज्जर) के आसपास सूखा (अकाल) गिर गया था। आसपास के गाँव के व्यक्ति संत गरीबदास जी के पास आए तथा वर्षा के बिना हुई आपदा से बचाने की प्रार्थना की। संत गरीबदास जी ने इन्द्र जी से विनय की और वर्षा हो गई।

2. संत गरीबदास जी के समय में (वर्तमान हरियाणा प्रांत में) एक गलत परम्परा थी कि एक गोत्र के जाट दूसरे गोत्र के अल्प सँख्यक गोत्र वाले जाटों के गाँव पर धावा बोलकर उनके बैल, भैंस, गाय, धन लूट ले जाते थे। जो समूह लूटने जाता था, उसको ''धाड़य'' कहा करते थे। वर्तमान जिला झज्जर में गाँव छारा है, उसमें दलाल गोत्र के जाट रहते हैं। अन्य कई आसपास के गाँव में राठी गोत्र के जाट रहते हैं। राठी गोत्र वाले जाट ज्यादा थे, वे छारा गाँव के दलाल गोत्र वालों को धाड़य बनाकर लूट लेते थे। राजा तथा नवाब से भी अर्ज की गई, परंतु कोई समाधान नहीं हुआ। कुछ समझदार तथा भगवान को मानने वाले छारा गाँव के व्यक्ति अपने पड़ोसी गाँव छुड़ानी में संत गरीबदास जी के पास गए तथा राठियों से पीछा छुड़वाने की अर्ज की। संत गरीबदास जी को अहसास हुआ कि दलालों के साथ गलत हो रहा है और राठियों के कर्म बिगड़ रहे हैं। आज दलालों का धन लूटकर खुश हो रहे हैं। अगले जन्म में इनके बैल-भैंस बनकर पूरे करने पड़ेंगे। संत गरीदास जी ने कहा कि अबकी बार जब राठियों की ''धाड़य'' आए, तुम भी लाठी-जेली लेकर मुकाबला करना। छारा गाँव वाले बोले, महाराज! वे सँख्या में अधिक हैं, हम उनके साथ मुकाबला नहीं कर सकते। जब ''धाड़य'' किसी अन्य गोत्र चढ़ाई करती थी तो पहले तिथि बताई जाती थी। संत गरीबदास जी ने कहा कि जैसा मैं कहूँ, वैसा आप अवश्य करना। आप लड़ना मत, खड़े रहना। वे आगे बढ़ जाऐंगे, शेष मुझ पर छोड़ो। ऐसा ही किया गया। जिस दिन ''धाड़य'' आनी थी, गाँव के व्यक्ति लाठी-जैली लेकर सीमा पर खड़े हो गए जिस रास्ते से राठियों ने आना था। जब दोनों आमने-सामने हुए तो राठियों ने दलालों के पक्ष में अनगिनत सेना सशस्त्र खड़ी दिखाई दी और लगा कि सेना ने धावा बोल दिया है और उनकी ओर चल पड़ी है। सर्व राठी भाग खड़े हुए। अपने जूते, लाठी, चद्दर भी छोड़कर भाग गए। दलाल देखते ही रह गए कि हमने कुछ कहा ही नहीं, ये कैसे भाग खड़े हुए? छारा गाँव वाले दलालों ने उनके जूते, जेली, लाठी, चद्दर उठा ली और अपने गाँव में ले आए। कई वर्षों तक जूते और चद्दर प्रयोग की। लाठी-जैली भी काम में ली। गाँव के वे व्यक्ति जो संत गरीबदास जी के पास गए थे, उन्होंने सारे गाँव वालों को यह बात बताई थी। वे डरते-डरते तैयार हुए थे और

सीमा पर भी भागने की तैयारी में थे। सर्व दलालों को विश्वास हुआ कि यह करिश्मा संत गरीबदास जी का किया हुआ। उसके पश्चात् राठी गोत्र वालों ने कभी दलालों को नहीं सताया। गाँव छारा के सैंकड़ों बड़े-छोटे व्यक्ति गाँव छुड़ानी में संत गरीबदास जी का धन्यवाद करने गए। संत गरीबदास जी ने कहा कि अब के बाद वे कभी आपको तंग नहीं करेंगे, आपका आपस में प्रेम बनेगा। ऐसा ही हुआ। आज तक दलालों और राठियों में आपसी भाईचारा कायम है। यह संत गरीबदास जी के आशीर्वाद का परिणाम है। कुछ दिनों के पश्चात् दलाल गोत्र वाले कुछ व्यक्तियों को राठी गोत्र वाले वे व्यक्ति मिले जो उस दिन ''धाड़य'' में गए थे। उन्होंने कहा कि अबकी बार तो दलालों ने सेना बुला रखी थी, सशस्त्र सेना का कोई अंत दिखाई नहीं दे रहा था। हम तो जान बचाकर भागे। आगे से कभी दलालों को लूटने नहीं जाऐंगे। भगवान ने जीवन दान दिया है, नहीं तो एक भी जीवित नहीं बचना था।

इस घटना के बाद पूरे छारा गाँव के व्यक्ति संत गरीबदास जी की शरण में चले गए। आज तक भी गाँव छारा में संत गरीबदास जी की मान्यता (पूजा) चल रही है। वे छुड़ानी के मंदिर में पूर्णमासी की धोक खाने जाते हैं।

संत गरीबदास जी ने इस वाणी में यही महिमा गंधर्वों की बताई है कि मेरी अर्जी सुनकर अनन्त पदम गंधर्व सहायता के लिए चढ़े जो बड़े भाग वाले हैं क्योंकि वे असहायों की सहायता करते हैं और पुण्य के भागी बनते हैं।(50-51)

वाणी :- किसन भण्डारी चढ़े कुबेरा। अब दिल्ली मण्डल बहुर्यों फेरा। ।52

❖ सरलार्थ :- एक समय गाँव छुड़ानी में नौ योगेश्वर आकाश मार्ग से आकर संत गरीबदास जी के खेत में उतरे। उनको किसी ने बताया था कि गाँव छुड़ानी में सिद्धी वाले महात्मा गरीबदास जी रहते हैं,वे गृहस्थ हैं, बाल-बच्चेदार जाट किसान हैं। योगेश्वरों ने परीक्षा लेने की योजना बनाई और चले आए। शाम का समय था। वैशाख मास की शुकल पक्ष की चतुर्दशी (चौदस) की शाम को संत गरीबदास जी के पास संदेश भिजवाया कि आपसे मिलने के लिए योगेश्वर आए हैं।

संदेश मिलते ही संत गरीबदास जी अपने 4-5 सेवकों के साथ योगेश्वरों के पास खेत में पहुँचे तथा प्रणाम करके दर्शन देने का धन्यवाद किया और प्रार्थना की कि दास के लिए क्या आदेश है? नौ योगेश्वरों ने कहा कि हम आप से आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा के लिए आए हैं। कल सुबह चर्चा करेंगे। संत गरीबदास जी ने कहा कि आप तो ज्ञान से परिपूर्ण हैं, आपके साथ ज्ञान चर्चा करना तो सूर्य के सामने दीपक जलाना मात्र है। फिर भी जो आपका आदेश है, वैसा ही होगा। आप बताऐं कि आप खाना स्वयं बनाकर खाओगे या घर से बनाकर लाऊँ। योगेश्वरों ने कहा कि हम शाम का खाना नहीं खाते। केवल दिन में एक बार सुबह खाते हैं और स्वयं बनाते हैं। आप सुबह सूखा आटा, चावल, घी, दूध आदि भिजवा देना। संत गरीबदास जी ने उनके आसन लगवाए, कोरा घड़ा पानी का भरकर रखवा दिया और गाँव लौट आए। सुबह वक्त से संत गरीबदास जी अपने कई सेवकों के साथ खाने का सारा सामान लेकर उपस्थित हुए। योगेश्वरों ने खाना तैयार किया और पंक्ति में बैठकर थाली

अपने-अपने आगे रख ली और खड़े होकर शंख बजाया। देखते ही देखते आकाश मार्ग से 33 करोड़ देवता आ गए और पंक्ति बनाकर खाना खाने की स्थिति में बैठ गए। यह पहले से बनाई सुनियोजित योजना थी। कारण था कि संत गरीबदास जी श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी की महिमा का ज्ञान तो यथार्थ रूप में बताते ही थे, परंतु समर्थ शक्ति इनसे ऊपर अन्य है। वह कबीर परमेश्वर हैं जो काशी में जुलाहे के रूप में 120 वर्ष (सन् 1398 से सन् 1518 तक) प्रकट रहे।

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।
गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद नहीं पाया, काशी मांही कबीर हुआ।।

जब सर्व देवताओं ने आसन लगा लिया तो 9 योगेश्वर खड़े होकर कहने लगे कि पहले इन्हें भोजन कराओ, हम बाद में खाऐंगे अन्यथा तेरे को तथा तेरे छुड़ानी गाँव को नष्ट कर देंगे।

संत गरीबदास जी ने कहा कि हे महापुरूषो! आपके श्रीमुख से गाँव नष्ट करने की बात शोभा नहीं देती। महात्मा तो गाँव बसाते हैं, उजाड़ते नहीं। फिर भी यदि आप गाँव छुड़ानी को भस्म करने की बात कहते हैं तो सुनो! आप तो गाँव छुड़ानी का घास भी भस्म नहीं कर सकोगे। पहले अतिथियों को भोजन कराता हूँ। यह कहकर संत गरीबदास जी ने अपने परमेश्वर तथा सतगुरू कबीर जी को प्रणाम किया, याद किया। फिर अपने सेवक धारीदास के कमर पर हाथ मारा और कहा एक थाली में बचा हुआ भोजन डाल दे जो योगेश्वरों ने बनाया था। भोजन योगेश्वरों ने अपनी थाली में डाल लिया था तथा शेष को कहा था कि हे गरीबदास! आप अपनी थाली में डालकर हमारे साथ अलग बैठकर खाओ। संत गरीबदास जी ने कहा था कि पहले आप खाओ, आप हमारे अतिथि हैं। मैं बाद में डालकर खा लूँगा। उस अपने भाग की थाली के ऊपर अपनी स्वच्छ चद्दर डाल दी और धारीदास शिष्य से कहा कि भण्डारा (लंगर) शुरू करो। धारीदास चद्दर के नीचे से हाथ से थाली निकाले, वह थाली अपने आप उड़कर पंक्ति में बैठे देवताओं के आगे रखी जाए। एकदम हजारों थालियाँ निकलें और देवताओं के आगे भोजन से भरी रखी जाऐं। धारीदास जी को संत गरीबदास जी ने आशीर्वाद दे ही दिया था। वह तो चद्दर के नीचे हाथ डाले बैठा था, सारा कार्य संत गरीबदास जी की दया से हो रहा था।

सब उपस्थित महान आत्माओं ने भोजन कर लिया। नौ योगेश्वर तो कभी संत गरीबदास जी को देख रहे थे, कभी थालियों की उड़ान देख रहे थे। संत गरीबदास जी ने कहा महात्मा जी! और क्या चाहिए? तब उनका स्वपन-सा टूटा, भोजन खाने लगे। सबको भोजन कराकर भी चद्दर के नीचे थाली वैसे ही भरी थी। सर्व देवता संत गरीबदास जी को धन्यवाद-आशीर्वाद देकर चले गए। नौ योगेश्वर भी कुछ देर चर्चा करके आकाश मार्ग से चले गए तथा कहा कि जैसा आपके विषय में सुना था, आप उससे कहीं अधिक सिद्धी वाले हो।

इस विषय में कहा है कि श्री कृष्ण अर्थात् श्री विष्णु के जो भण्डारी कुबेर जी भी मेरी सहायता के लिए छुड़ानी में दिल्ली मण्डल में दोबारा आए हैं। पहले भी कई बार हमारी सहायता की थी। भावार्थ है कि :-

उदाहरण :- एक 1½ वर्ष का लड़का दीवार के साथ कोने में खड़े मूसल को (काष्ठ का डण्डा जो गोलाकार में 1½ फुट परीधि वाला छः फुट लम्बा जो बाजरा कूटने के काम लिया जाता है।) को उठाने की कोशिश करने लगा। दादा जी ने देखा और शीघ्रता से जाकर लड़के को गोद में उठाया कि कहीं मूसल इसके ऊपर न गिर जाए, परंतु लड़का रोने लगा और मूसल उठाने की जिद करने लगा। दादा जी ने लड़के को मूसल के पास छोड़ दिया और लड़के ने दोनों हाथों से मूसल पकड़ा और उठाना चाहा। दादा जी ने मूसल को ऊपर से पकड़कर उठा लिया। लड़का सोच रहा था कि मैंने ही मूसल उठा रखा है। दादा जी यह भी कह रहा था कि देखो! मेरे पोते ने मूसल उठा लिया। जिस कारण से वह लड़का भी अपनी महिमा सुनकर फूला नहीं समा रहा था। वह अपनी बुद्धि से तो पक्का मान रहा था कि मैंने ही मूसल उठा रखा है, परंतु वास्तविकता तो इससे हटकर थी। तो यही उदाहरण यहाँ समझना चाहिए कि कर तो स्वयं परमेश्वर कबीर जी रहे थे, संत गरीबदास जी भी समझते थे। परंतु वहाँ पर तो सारा देव समूह श्री विष्णु, श्री शिव जी की महिमा जानने वाला था। इसलिए कहा है कि यह कार्य श्री विष्णु जी की कृपा से कुबेर भण्डारी ने किया है। ये भी उस लड़के की तरह मानते हैं कि हम ही सब कुछ कर रहे हैं, परंतु करने वाले का प्रमाण तो गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में है। कहा है कि :-

उत्तम पुरूष यानि पुरूषोत्तम तो गीता अध्याय 15 के ही श्लोक 16 में कहे क्षर पुरूष और अक्षर पुरूष से अन्य ही है जिसको परमात्मा कहा जाता है, जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है जो गीता ज्ञान दाता से भी अन्य है।(गीता अध्याय 15 श्लोक 17)(52)

वाणी :- वरूण विनोद चढ़े ब्रह्म ज्ञानी। कला सम्पूर्ण बारह बानी।।53

❖ सरलार्थ :- जिस समय संत गरीबदास जी ने 33 करोड़ देवताओं तथा नौ योगेश्वरों को भोजन खिलाया। उसमें जल भी थाली में रखे गिलासों में भरा था। उसका श्रेय संत गरीबदास जी वरूण जल के देवता को दे रहे हैं कि वरूण देव ने चढ़कर अर्थात् प्रेरित होकर जल की पूर्ति की। वे बहुत ब्रह्म ज्ञानी तथा नम्र बोलचाल वाले हैं। जल के मामले में पूर्ण कला (शक्ति) वाले हैं। बारह बानी का अर्थ है पूर्ण मालिक। यहाँ पर भी उस 1½ वर्ष के लड़के वाला उदाहरण समझें। संत गरीबदास जी को सब पता होते हुए भी कह रहे हैं कि मूसल लड़का उठाकर चल रहा है। यदि उस बच्चे को कोई कह देता है कि मूसल तो तेरा दादा जी उठा रहा है। जब वह ऊपर देखता है तो कहता है छोड़ दे दादा जी। दादा जी कैसे छोड़े? उसको पता है कि छोड़ते ही मूसल गिर जाएगा और चोट मार देगा। बच्चा भी घायल हो जाएगा। एक-दो का और सिर फोड़ेगा। यदि दादा जी मूसल नहीं छोड़ता है तो लड़का अपनी बेइज्जती समझकर रोने लगता है। इसलिए उस बच्चे को बताया नहीं जाना चाहिए

कि मूसल तेरे दादा जी ने सम्भाल रखा है। पता होते हुए भी यही कहना पड़ता है कि मूसल को लड़के ने ही उठा रखा है। ठीक यही सटीक अर्थ समझना चाहिए इन देवताओं के सामर्थ्य और पूर्ण परमात्मा कबीर जी की शक्ति में।(53)

वाणी :- धर्मराय आदि युगादि चेरा। चौदह कोटि कटक दल तेरा।।54

❖ **सरलार्थ :- धर्मराय अर्थात् काल ब्रह्म का न्यायधीश भी परमात्मा (सतपुरूष) का चेरा (नौकर) है। धर्मराय की सेना में 14 करोड़ धर्मदूत हैं जो मृत्यु के समय मनुष्य के जीव को निकालकर पकड़कर धर्मराज के दरबार में पेश करते हैं। धर्मराज की महिमा बताई है कि आपके 14 करोड़ तो सैनिक हैं।(54)**

वाणी :- चित्रगुप्त के कागज मांही। जेता उपज्या सांई।।55

❖ **सरलार्थ :- चित्र तथा गुप्त दो धर्मराय के दूत लेखाकार हैं। सर्व मनुष्यों का गुप्त लेखा रखते हैं। प्रत्येक मानव के साथ रहते हैं। वे सर्व जीवों का हिसाब रखते हैं। पूरी सृष्टि (काल लोक) का हिसाब चित्र-गुप्त के पास है। ये गुप्त फिल्म बनाते रहते हैं। उसकी एक कॉपी धर्मराज के दरबार में फैक्स कर देते हैं, E-mail कर देते हैं। जो चित्र-गुप्त के कागज अर्थात् कॉपी में लिखा है। यह सब सतगुरू अर्थात् कबीर परमेश्वर ने उत्पन्न किया है।(55)**

वाणी :- सातों लोक पाल का रासा। उर में धरिए साधु दासा।।56

❖ **सरलार्थ :- काल ब्रह्म के एक ब्रह्माण्ड 7 लोक पाल माने गए हैं जो 7 द्वीपों के स्वामी हैं। संत गरीबदास जी कहते हैं कि और सब रासा अर्थात् झंझट है। अधिक ज्ञान ग्रहण करने की बजाय नम्र भाव से संत का दास (चेला) बनकर भक्ति करके मोक्ष कराकर धन्य हों।(56)**

वाणी :- विष्णु नाथ हैं असुर निकन्दन। संतों के सब काटैं फन्दन।।57

❖ **सरलार्थ :- श्री विष्णु नाथ जी राक्षसों का नाश करने वाले हैं तथा अपने संतों-साधकों के सर्व फन्द (बन्धन) काट देते हैं।(57)**

वाणी :- नरसिंघ रूप धरे गुरूराया। हिरणाकुश कूं मारण धाया।।58

❖ **सरलार्थ :- आप जी प्रहलाद भक्त की रक्षा करने के लिए नरसिंह रूप धारण करके शेर की धुराये और हिरण्यकशिपु राक्षस राजा को मारने के लिए दौड़े, उसका नाश किया। जनता सुखी हुई।(58)**

वाणी :- शंख चक्र गदा पदम विराजै। भाल तिलक जाकै उर साजै।।59

❖ **सरलार्थ :- आप जी हाथों में शंख, चक्र, गदा तथा पदम लिए हो। आप जी के मस्तक के उर अर्थात् हृदय (मध्य) में तिलक सजा है, शोभामान हो रहा है।(59)**

वाणी :- वाहन गरूड़ कृष्ण असवारा। लक्ष्मी ढ़ौरै चंवर अपारा।।60

❖ **सरलार्थ :- आप जी का वाहन गरूड़ है। आप श्री विष्णु जी ही कृष्ण रूप में जन्मे थे। आप जी का सत्कार आपकी धर्मपत्नी लक्ष्मी जी विशाल चंवर आपके सिर पर ढ़ूरा कर (घुमाकर) करती हैं। भावार्थ है कि जिस व्यक्ति की पत्नी ऐसी सेवा करती हो तो उसमें गुण भरपूर होते हैं।(60)**

वाणी :- रावण महारावण से मारे। सेतु बाँध सेना दल तारे।।61

जरासिंघ और बाली खपाए। कंश केशी चाणुर हराए।।62

❖ **सरलार्थ :- हे विष्णु जी! आप जी ने रावण के भाई महारावण को मारा तथा समंदर पर सेतु (पुल) बनाकर रावण से लड़ने के लिए सेना की टुकड़ियाँ परले पार उतारी।(61)**

❖ **आप जी ने जरासिंघ और बाली (सुग्रीव का भाई त्रेतायुग में) का नाश किया। केशी नामक राक्षस जो घोड़े का रूप धारकर बालक रूप श्री कृष्ण जी को मारने गया था, उसको मारा तथा कंश को मारा तथा श्री कृष्ण जी! कंश केसरी चाणुर पहलवान को आपने मारा।(62)**

वाणी :- कालीदह में नागी नाथा। शिशुपाल चक्र से काटा माथा।।63

❖ **सरलार्थ :- हे विष्णु जी! आप जब श्री कृष्ण रूप में जन्मे थे। उस समय कालीदह नामक दरिया में कालिया नाग के फनों पर चढ़कर नृत्य किया। फिर उस नाग की नाक में डोरी डाली जैसे बैल की नाम में रस्सा डालते हैं और शिशुपाल अनाड़ी का मस्तक सुदर्शन चक्र से काटकर मौत के घाट उतारा।(63)**

वाणी :- कालयवन मथुरा पर धाये। 18 कोटि कटक दल चढ़ि आए।।64
मुचकन्द पर पीताम्बर डार्‌या। कालयवन जहाँ बेग सिंघार्‌या।।65

❖ **सरलार्थ :- कहते हैं कि कंश की मृत्यु जब श्री कृष्ण ने कर दी तो उसका ससुर कालयवन बदला लेने की भावना से श्री कृष्ण को मारने के लिए 18 करोड़ सेना लेकर मथुरा की ओर शीघ्रता से दौड़ा तथा चढ़ाई कर दी।(चढ़ाई करना=हमला करना) उस समय राजा अग्रसैन (कंश का पिता) ने अपने दोहते (देवकी के पुत्र) श्री कृष्ण को मथुरा राजा नियुक्त कर दिया था। मथुरा में सेना कम थी। जिस कारण से श्री कृष्ण जी ने सेना को युद्ध करने के लिए तैयार किया, मैदान में खड़ा कर दिया। दूसरी ओर कालयवन की सेना खड़ी हो गई। कुछ दिन पहले नारद मुनि जी ने श्री कृष्ण जी को बताया था कि थोड़ी दूर पर एक गुफा है। एक मुचकन्द नाम का राजा सो रहा है। वह छः महीने सोता और छः महीने जागता है। यदि उसको सोते हुए को छः महीने होने से पहले जगा देता है तो मुचकन्द की आँखों से अग्नि बाण छूटते हैं, जगाने वाला मारा जाता है। श्री कृष्ण जी भी रथ पर सवार होकर लड़ाई के लिए तैयार होकर कालयवन के सामने गए। श्री कृष्ण जी ने देखा कि कालयवन की सेना हमारी सेना से कई गुणा अधिक है तो लड़ाई से विजय सम्भव न जानकर नारद जी की बात याद आई और कालयवन को मुचकन्द से मरवाने की योजना बनाई। कालयवन को युद्ध के लिए ललकारा। सेना लड़ने लगी। कालयवन भी श्री कृष्ण के साथ युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा तो श्री कृष्ण जी रण छोड़कर रथ सहित भाग लिए। जिस कारण से श्री कृष्ण को रणछोड़ भगवान कहा जाने लगा। श्री कृष्ण जी ने रथ को गुफा के सामने छोड़ा, स्वयं गुफा में प्रवेश कर गए। कालयवन सब देख रहा था। वह भी पीछे-पीछे गुफा में गया। श्री कृष्ण जी ने अपना पीताम्बर (पीला वस्त्र=चद्दर जो पीले रंग की थी) मुचकन्द के ऊपर डाल दी और स्वयं गुफा में थोड़ा आगे जाकर अन्धेरे में छिप गया। कालयवन ने मुचकन्द को श्री कृष्ण जानकर पैर पकड़कर मरोड़ा और कहा, कायर! उठ यहाँ क्यों**

छिप गया? आज तेरा काम-तमाम कर दूँगा। मुचकन्द की नींद खुल गई। आँखों से अग्नि बाण छूटे और कालयवन मारा गया। श्री कृष्ण जी ने कालयवन के शव को घसीटकर दोनों सेनाओं के बीच में डाल दिया। जब कालयवन की सेना को पता लगा कि उनका राजा मारा गया तो अपनी हार मान ली, हथियार डाल दिए। राजा का शव लेकर चले गए, परंतु चेतावनी दे गए कि दूसरा राजा नियुक्त होने के पश्चात् फिर लड़ाई करने आऐंगे। श्री कृष्ण जी ने सोचा कि यहाँ रहना उचित नहीं है। इसलिए मथुरा-वृन्दावन को त्यागकर वहाँ से 1600 (सोलह सौ) कि.मी. दूर गुजरात प्रान्त में समुद्र के अंदर एक लंबा-चौड़ा टापू था जिसके तीन ओर समुद्र था, केवल एक ओर खाली था। उसका एक द्वार होने के कारण उस टापू का नाम द्वारिका (द्वार इका=एक द्वार वाली नगरी) पड़ा। श्री कृष्ण जी ने सब सेना को उस द्वार पर रख लिया और मथुरा की सब जनता को लाकर उस एक रास्ते वाले टापू (द्वारिका) में बस गए। यह टापू लगभग 100 (सौ) मील लम्बा तथा 12 मील चौड़ा था, परंतु आगे वाला हिस्सा केवल 4 मील चौड़ा तथा तथा छः मील लंबा था। इसके साथ-साथ बाहर का क्षेत्र भी श्री कृष्ण के आधीन था। द्वारिका में नगर बनाकर रहने लगे। अंत में द्वारिका में 56 करोड़ यादव हो गए थे। लगभग एक अरब की जनसँख्या श्री कृष्ण के वंशज यादवों की हो गई थी। पुरूष 56 करोड़ थे, स्त्रियाँ भी लगभग बराबर थी।(64-65)

वाणी :- परसुराम बावन अवतारा। कोई ना जाने भेद तुम्हारा।।66

❖ सरलार्थ :- परसुराम जी ने पृथ्वी के सब अभिमानी क्षत्रियों को फरसे से (लाठी के एक सिरे पर लोहे का गंडासा जड़ा होता है, जिसका आकार उस समय 3 फुट लम्बा, एक फुट चौड़ा और 2 इंच मोटा था, सामने का तीन फुट लम्बाई वाला पैनी धार वाला चाकू की तरह था, उससे) काटकर मारा था। श्री परसुराम जी को श्री विष्णु जी का अवतार माना गया है। इसलिए कहा है कि आप ने परसुराम तथा बामन रूप में अवतार लिया। आपके भेव (भेद) अर्थात् रहस्य को कोई नहीं जान सका।

❑ बामन अवतार :- भक्त प्रहलाद का पुत्र बैलोचन हुआ तथा बैलोचन का पुत्र राजा बली हुआ। राजा बली ने अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया। इन्द्र की गद्दी प्राप्त करने के लिए सौ मन घी एक यज्ञ में खर्च करना होता है जिसमें हवन तथा भण्डारा करना होता है। ऐसी-ऐसी सौ निर्बाध यज्ञ करने के पश्चात् वर्तमान इन्द्र को तख्त (गद्दी) से हटा दिया जाता है और जिसने नई साधना पूरी कर ली, उसको इन्द्र की गद्दी दी जाती है। इन्द्र स्वर्ग लोक का राजा होता है। गद्दी पर विराजमान इन्द्र के लिए शर्त होती है कि यदि उसके शासनकाल में किसी ने निर्बाध सौ अश्वमेघ यज्ञ पूरी कर दी तो गद्दी पर विराजमान इन्द्र को पद से उतारकर नया इन्द्र (स्वर्ग का राजा) नियुक्त किया जाता है। इसलिए पद पर विराजमान इन्द्र (स्वर्ग लोक के राजा) को चिंता लगी रहती है कि कोई उसके पद को प्राप्त न कर ले। इसलिए इन्द्र अपने नौकर-नौकरानी या देवी आदि को भेजकर इन्द्र प्राप्ति के लिए की जा रही यज्ञ को खण्डित करा देता है, परंतु राजा बली की 99 यज्ञ निर्बाध पूर्ण हो गई। इन्द्र उसमें बाधा उत्पन्न नहीं कर पाया। जब सौवीं यज्ञ प्रारम्भ की तो इन्द्र का सिहांसन (तख्त)

डोल गया। इन्द्र स्वयं चलकर भगवान विष्णु जी के पास गया और विनय की कि हे प्रभु! आपने मुझे इन्द्र की गद्दी पर बैठाया था। अब मेरा राज जाने वाला है। मेरे राज की रक्षा आपके हाथ में है। पृथ्वी राजा बली 100वीं (सौवीं) यज्ञ सम्पूर्ण करने जा रहा है। कृप्या उसका यज्ञ खण्ड कराओ। श्री विष्णु जी ने कहा कि आप निश्चिंत होकर राज्य करो, मैं कोई उपाय करता हूँ। श्री विष्णु जी ने इन्द्र को वचन तो दे दिया, परंतु कोई उपाय नहीं निकल रहा था। श्री विष्णु जी भी परमात्मा से अर्ज करते हैं। तब पूर्ण परमात्मा एक बामन (बौना व्यक्ति) का रूप बनाकर ब्राह्मण वेश बनाकर यज्ञ स्थल पर पहुँचे। राजा बली ने सत्कारपूर्वक आसन दिया और भोजन कराया तथा दक्षिणा देने लगा तो बामन ब्राह्मण ने कहा कि पहले प्रतिज्ञा करो, जो मैं मांगू, आप दोगे। राजा बली ने प्रतिज्ञा कर ली। तब बामन ब्राह्मण ने कहा कि मुझे तीन कदम (तीन डंग) पृथ्वी दान दे दो बस। बली ने कहा, हे ब्राह्मण! आपने माँगा भी तो क्या माँगा? मैं तो आपको बहुत कुछ देता। बामन ब्राह्मण ने कहा कि मेरे भाग्य में यही लिखा होगा, तभी तो इतनी जुबान खुली। आप पृथ्वी दान करो। बली राजा लगा अपने पैरों से तीन कदम नापने। तब बामन वेश में प्रभु ने कहा कि आपके तीन कदम नहीं, मेरे तीन कदम पृथ्वी दे, मैं मापूँगा। यह वार्ता सुनकर राजा बली के धार्मिक गुरू शुक्राचार्य (शुक्राचार्य राक्षसों का गुरू माना जाता है) ने राजा बली को एक ओर ले जाकर कहा कि आप अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दो। यह बामन रूप में विष्णु खड़े हैं, ये इन्द्र के कहने से छल कर रहे हैं, परंतु बली राजा बोला, गुरूवर! जब भगवान भिखारी बनकर आया है और मैं दान ना करूँ तो मेरे जैसा अपराधी पृथ्वी पर नहीं होगा। इन्हीं के पृथ्वी इन्हीं को देने से मना करना महादुष्ट व्यक्ति का कार्य है। वह आपका शिष्य नहीं कर सकता क्योंकि शास्त्रों में कहा है कि यदि कोई किसी से वस्तु माँगकर प्रयोग कर रहा हो और स्वामी माँगे तो तुरंत दे देना चाहिए अन्यथा समाज में निंदा का पात्र बनता है। राजा बली ने कहा, माप लो स्थान विप्रजी! बामन भगवान इतने बढ़ गए कि आकाश को छूने लगे। एक डंग (कदम) से पूरी पृथ्वी माप दी और दूसरी डंग से अन्य दोनों लोकों (स्वर्ग तथा पाताल) को माप दिया और कहा कि एक डंग (कदम) शेष है, इसको कहाँ रखू? राजा बली बोला, भगवन! मेरी पीठ पर रख लो। संतों ने शरीर को पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड भी कहा है। यह कहकर बली भक्त पेट के बल पृथ्वी पर लेट गया। उसी समय पूर्ण परमात्मा ने सामान्य नर रूप धारण किया और एक घण्टे तक सत्संग किया तथा समझाया कि इन्द्र का राज्य 72 चतुर्युग तक रहता है। श्री ब्रह्मा जी का एक दिन 1008 (एक हजार आठ) चतुर्युग का होता है जिसमें 14 साधक इन्द्र का शासन करके मृत्यु के उपरांत गधे का जीवन भोगते हैं। जिनको गुरू पूर्ण नहीं मिलते, वे भक्त ही ऐसी घटिया साधना करके अपना मानव जीवन व्यर्थ करके पाश्चाताप् करते हैं जब धर्मराज के दरबार में उनको गधा बनकर पृथ्वी पर जाने का आदेश मिलता है। पूर्ण मोक्ष के लिए साधना करनी चाहिए जिससे जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है। वेदों में प्रमाण है कि तत्वज्ञानी संत की खोज करके वह साधना करनी चाहिए जिससे परमात्मा का वह परम पद प्राप्त होता है जहाँ जाने के पश्चात्

साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। उस स्थान पर इन्द्र के स्वर्ग से करोड़ों गुणा सुख है, ऐश्वर्य है। वहाँ पर वृद्धावस्था नहीं है। वहाँ मृत्यु नहीं होती। सदा युवा शरीर रहता है। इस प्रकार सत्संग सुनाने के पश्चात् परमात्मा ने कहा कि हे बली भक्त! मैं आपकी भक्ति तथा समर्पण भाव से प्रसन्न हूँ। चल तुझे पाताल लोक का राज्य देता हूँ। वर्तमान इन्द्र को अपना शासन पूरा करने दे। फिर तेरे को इन्द्र की पदवी दी जाएगी। बली ने कहा हे प्रभु! आपने ऐसा ज्ञान सुना दिया, अब तो तीनों लोकों के राज्य की भी चाह नहीं रही। मुझे तो वह परम स्थान प्राप्त करा दो जहाँ जाने के पश्चात् फिर कभी संसार में लौटकर नहीं आते। भगवान बोले, वह भक्ति मार्ग बताने वाला कोई संत मिले, उससे दीक्षा लेकर भक्ति करना। अब तो आपको पाताल का राजा बनाता हूँ क्योंकि जो भक्ति आपने की है, इस लोक का विधान है कि जैसा कर्म किया, वैसा अवश्य भोगना पड़ेगा। इतना कहकर परमात्मा अंतर्ध्यान हो गए। इन्द्र की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इन्द्र भगवान विष्णु का धन्यवाद करने विष्णु जी के लोक में गया तो भगवान विष्णु अभी समस्या का हल खोज रहे थे। इन्द्र को आते देखकर श्री विष्णु ने सोचा कि इन्द्र फिर से आ गया सहायता के लिए, बात समझ से बाहर है। कैसे यज्ञ खण्ड की जाए? इन्द्र ने दण्डवत् प्रणाम किया और अपनी गद्दी की रक्षा करने के लिए धन्यवाद किया। इन्द्र ने बताया भगवान आपका बामन रूप बहुत सुन्दर था। जब आपने अपना शरीर दीर्घ किया तो आसमान को छू रहा था। आपने दो कदमों से तीनों लोक नाप दिए, आपकी महिमा अपरमपार है। बली को पाताल का राजा बनाकर आपने मेरी गद्दी की रक्षा कर दी। आपका धन्यवाद।

पाठकों से निवेदन है कि जैसा पूर्व में उदाहरण दिया है, लड़के का मूसल उठाने की जिद तथा मानना कि मैं ही मूसल उठा रहा हूँ। अन्य भी जो देखते हैं, वे भी उस 1½ वर्ष के लड़के की प्रशंसा करते हैं कि वाह-भाई-वाह! लड़के ने इतना भारी (वजनदार) मूसल उठा रखा है। यदि सच्चाई बताऐं कि उठा तो दादा जी रहा है तो वह बच्चा रोने लगे या दादा जी से मूसल छोड़ने की जिद करके चोट खाएगा। यही दशा इन भगवानों की जानों। इसलिए यही कहने में सब ठीक है कि हे विष्णु जी! आपने परशुराम तथा बामन रूप धारण करके लीला की आप का रहस्य कोई नहीं जानता।(66)

वाणी :- संखासुर मारे निर्बाणी। बराह रूप धरे परवानी।।67

❖ **सरलार्थ :-** पौराणिक कथा है :- एक शंखासुर नामक राक्षस था। उसने देवताओं को भक्तिहीन करने के लिए वेदों को चुरा लिया और वेदों को समुद्र में ले गया। सर्व देवताओं ने परमात्मा से विनय की और उनकी विनय सुनकर पूर्ण परमात्मा सूअर (बराह) रूप बनाकर प्रकट हुए और संखासुर को मारकर वेद वापिस पृथ्वी पर लाकर रख दिए। महिमा श्री विष्णु जी की बनाकर अन्तर्ध्यान हो गए। (निर्बाणी=मुक्त, परवानी=कार्य को सिरे चढ़ाने वाले, अधूरा नहीं छोड़ते।) आप पूर्ण रूप से मुक्त हैं तथा सर्व कार्यों को पूर्ण करने वाले हो।(67)

वाणी :- राम अवतार रावण की बेरा। हनुमत हाका सुनी सुमेरा।।68

❖ **सरलार्थ :- हे विष्णु जी! आप राक्षस बुद्धि वाले रावण का नाश करने के लिए श्री रामचन्द्र रूप में राजा दशरथ के घर जन्में थे। आपका परम भक्त हनुमान भी रावण के वध में सहयोगी रहा। श्री हनुमान जी जब रावण की सेना को हल्ला बोलकर दौड़े तो उनकी हुँकार सुमेरू पर्वत पर रहने वाले देवगणों ने भी सुनी थी।(68)**

वाणी :- आदि मूल वेद ओंकारा। असुर निकंदन कीन्ह सिंघारा।।69

❖ **सरलार्थ :- वेदों का आदि से अर्थात् प्रारम्भ से ही मूल मंत्र ओंकार अर्थात् ओम् (ॐ) मंत्र है। यदि कोई साधक ॐ नाम का जाप करता है तो उसके शत्रुओं (राक्षसकर्मी व्यक्ति जो भक्ति बाधा करते हैं, उनका) का नाश काल ब्रह्म करता है तथा भक्ति की रक्षा करता है। वह भी विष्णु, शिव या ब्रह्मा जी के रूप में दिखाई देता है। जिस कारण से इन देवताओं की महिमा सब कष्टों का निवारणकर्ता के रूप में बनी है। उन्होंने भी मान रखा है कि हम ही सब कर्ता-धरता हैं, परंतु पाठको! लड़के तथा दादा जी वाले मूसल के उदाहरण से सब स्पष्ट हो जाता है।**

इस वाणी सँख्या 69 के उपरोक्त सरलार्थ की सत्यता के प्रमाण में पढ़ें गीता अध्याय 9 श्लोक 22 में :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो अनन्य भक्तजन अर्थात् अन्य देवताओं की भक्ति न करके केवल ब्रह्म साधनाओं अर्थात् ॐ नाम के जाप से करता है, (ओं=ॐ नाम ब्रह्म का जाप है अर्थात् गीता ज्ञान दाता का जाप है, प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में) उसको अनन्य भक्तजन कहा है। जो अनन्य भक्तजन मुझको भजते हैं, उन सदा मेरे में योग रखने वाले भक्तों का योग क्षेम (योग माने भक्ति साधना तथा क्षेम का अर्थ है परमात्मा की साधना की रक्षा करना) मैं (गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म काल) वहन करता हूँ अर्थात् यह मेरी जिम्मेदारी है। यही अर्थ इस वाणी नं. 69 का है।(69)

वाणी :- वशिष्ठ विश्वामित्र आए। दुर्वासा और चुणक बुलाए।।70
कपिल कलन्दर कीन्ह जुहारा। फौज नकीब सबन सरदारा।।71
गोरख दत्त दिगम्बर बाला। हनुमंत अंगद रूप विशाला।।72
ध्रुव प्रहलाद और जनक विदेही। सुखदे संगी परम स्नेही।।73
पारासर और व्यास बुलाए। नल–नील मौहर चढ़ धाए।।74
सुग्रीव संग और लक्ष्मण बाला। जोर घटा आए घन काला।।75
जैदे पायल जंग बजाए। अजामेल और हरिचन्द्र आए।।76
ताम्रध्वज मोरध्वज राजा। अम्बरीष कर हैं पूर्ण काजा।।77

❖ **सरलार्थ :- जैसाकि पूर्व में बताया है कि इस रमैणी की रचना विश्व के सर्व देवताओं, देवियों, साधु-संतों, ऋषियों, गणों तथा गंधर्वों तथा महान पुरूषों की महिमा तथा स्तुति करके उनका सम्मान करके उनको प्रसन्न करने के लिए की है।**

{ऊपर दिए उदाहरण को ध्यान रखें तो इस रमैणी का सार आसानी से समझा जा सकता है। उस 1½ वर्ष के बच्चे को यह कह दें कि देखो! लड़के ने मूसल उठा रखा है। वाह-भाई-वाह! तो वह खुश रहेगा। यदि उसकी प्रशंसा नहीं करेंगे, उसको नहीं सरहाऐंगे तो वह रोने लगेगा। अन्य व्यक्तियों को बाधा कर देगा जो कोई खास

बातें कर रहे होते हैं। लड़का और कुछ हानि नहीं कर सकता, लेकिन शोर मचाकर शांति तो भंग कर ही देता है।}

इसीलिए उपरोक्त महात्माओं की प्रशंसा की है तथा स्तुति की है कि मैं उपरोक्त सब महापुरूषों का सत्कार करता हूँ। इन्होंने अपने जीवन काल में बड़े शक्ति प्रदर्शन किए हैं जो आज भी प्रशंसा के लिए मिशाल (उदाहरण) हैं।

श्री वशिष्ठ ऋषि, श्री विश्वामित्र ऋषि, श्री दुर्वासा ऋषि, श्री चुणक ऋषि, श्री कपिल ऋषि जी जो विष्णु जी के अवतार माने जाते हैं। सघड़ राजा के 60 हजार पुत्रों को मारा था, इतनी शक्ति थी। दुर्वासा जी ने 56 करोड़ यादवों (श्री कृष्ण जी का वंश) को नष्ट कर दिया था। चुणक ऋषि ने राजा मानधाता की 18 क्षौणी (18 करोड़) सेना का नाश किया था। ये सब काल ब्रह्म की भक्ति में प्रमुख माने गए हैं। वाणियों में नामांकित हैं। ये सब महान साधक तथा बलवान हुए हैं। इन सबका मैं सत्कार करता हूँ, स्तुति करता हूँ। ये सब महान आत्माऐं भक्तों के सम्पूर्ण कार्य कर देते हैं जो इनकी क्षमता के अंतर्गत आते हैं। जैसे किसी विभाग में किसी कार्यवश जाते हैं तो यदि छोटे-बड़े अधिकारियों तथा अन्य कर्मचारियों को प्रणाम करके सत्कार करेंगे तो हमारे कार्य में सहायता करेंगे। यदि कार्य किसी एक-दो से होना है तो वे भी कार्य खुश होकर करेंगे तथा अन्य कोई बाधा नहीं करेंगे। यही सारांश उपरोक्त वाणियों के पठन-पाठन का है।

वाणी :-सूरज बंसी पांचों पांडो। काल मीच सिर देवै डांडो।।78
धर्म युधिष्ठिर धरे धियाना। अर्जुन लख संघानी बाना।।79
सहदे भीम नकुल और कौंता। द्रोपदी जंग का दीना न्यौंता।।80
हाथ खप्पर अरु मस्तक बिंदा। ठारह खूहनीं मेलै दुंदा।।81
देवी शिव शिव करे सिंघारै। खड़ग बान चकरों सैं मारैं।।82
चोंसठ जोगनि बावन बीरा। भक्षण बदन करैं तदवीरा।।83
असुर कटक धूमर उड़ जाई। सुरौं रक्षा करै गोसाई।।84
पचरंग झण्डे लंब लहरिया। दक्खन के दल उतर उतरिया।।85
पचरंग झण्डे लंब चलाये। दक्खन के दल उत्तर धाये।।86
मौहरै हनुमंत गोरख बाला। हरि के हेत हरौल हमाला।।87
चिंहडोल चुणक दुर्वासा देवा। असुर निकंदन बूड़त खेवा।।88
बलि अरु शेष पतालौं साखा। सनक सनन्दन सुरगों हाका।।89
दहुं दिश बाजु ध्रु प्रहलादा। कोटि कटक दल कटा प्यादा।।90

❖ सरलार्थ :- उपरोक्त वाणियों का सारांश है कि महाभारत के युद्ध में किस-किसका क्या-क्या योगदान रहा? जैसे द्रोपदी जंग का दीन्हा न्यौता।

इसका वर्णन इस प्रकार है कि जिस समय पाण्डवों ने शीशमहल बनाया तो दुर्योधन देखने गया तो उसका सिर शीशे की दीवार से टकरा गया जो उसे दिखाई न देने के कारण हुआ। द्रोपदी यह सब देख रही थी। उसने देवर समझकर मजाक कर दिया कि अँधों की संतान अँधी ही होती है और हँसती रही। इस उपहास से चिड़कर

दुर्योधन ने द्रोपदी को बेइज्जत करने के लिए राजा युद्धिष्ठर के साथ जुवा खेलकर सर्व राज्य जीता तथा द्रोपदी को जीता, जूए में छल करके सब जीत प्राप्त की थी। द्रोपदी के उसी मजाक ने महाभारत के युद्ध का न्यौता दिया अर्थात् आप ही काल बुला लिया। कोई देवी का पुजारी था, कोई शिव का। सैनिक अपने-अपने ईष्ट का स्मरण भी कर रहे थे और आपस में लड़ भी रहे थे। चौंसठ (64) योगनि हैं जो शक्तियुक्त देवियाँ हैं तथा 52 बीर हैं जो शक्तियुक्त देव हैं, ये 33 करोड़ से अन्य हैं जो पांडवों के पक्ष में लड़ रहे थे। हनुमान जी, गोरखनाथ जी, चुणक, दुर्वासा जी आदि सब ऋषि तथा बलवान योद्धा पाण्डवों के पक्ष में थे क्योंकि पाण्डव भक्त थे, कौरव राक्षस रूप धारण किए थे। इसलिए जो स्वर्ग-पाताल में थे, वे सब पाण्डवों के पक्ष में कुरूक्षेत्र के मैदान में गुप्त रूप में आकर कौरवों की सेना का नाश कर रहे थे। बली पाताल से आए तथा सनक, सनन्दन, सनातन और संत कुमार स्वर्ग से आए। वहीं से हुंकार भर कर आए।

द्रोपदी ने हाथ में खप्पर (मृत व्यक्ति के सिर का ऊपर की कटोरानुमा खोपड़ी) लेकर मस्तिक के ऊपर बिंदी लगाकर दुर्योधन को कुबोल बोलकर 18 क्षोणी (18 करोड़) सेना का (दुंदा) नाश कर दिया। अर्जुन ने लक्ष संघानी अर्थात् जिसको लक्ष्य बनाकर बाण छोड़ा जाता था, उसी के संहार करने वाले बाण से शत्रुओं की सेना को मारा। राक्षसों की सेना अर्थात् कौरवों के पक्ष में तथा पाण्डवों के पक्ष में जो भी राक्षस (दुष्ट) सैनिक थे, वे सेना दल (कटक दल) शस्त्रों से मारे जा रहे थे। उनकी धुम (धुन्ध की तरह) राख हवा में उड़ रही थी तथा सुरों (अच्छे देव स्वरूप सैनिकों) की रक्षा गोसांई (परमेश्वर) कर रहे थे। कुरूक्षेत्र के मैदान में उत्तर-दक्षिण में दोनों सेनाऐं थी। उत्तर में पाण्डवों की तथा दक्षिण में कौरवों की। जो देव तथा महान आत्मा स्वर्ग से वहाँ पाण्डवों के पक्ष में आए थे, वे दक्षिण में खड़े हो गए। जब पांडवों के पक्ष उत्तर में पाँच रंग के झण्डे ऊपर उठाकर लहराए, तब उनको ज्ञान हुआ। तो वे दौड़कर उत्तर वाले मैदान में आ गए। ऐसा दो बार हुआ था। पाँचों पाण्डव सूर्यवंशी कहलाते थे। यदि परमात्मा पाण्डव भक्तों की रक्षा नहीं करते तो काल ब्रह्म उनको भी मीच (मृत्यु) रूपी डांडो (डंडा) मारता। ध्रुव तथा प्रहलाद ने भी पांडवों के पक्ष में आकर करोड़ों सैनिकों को मारा था।

❑ विचार विमर्श :- यदि वर्तमान में कोई भक्त गलत भक्ति कर रहा है या भक्ति ही नहीं करता। उस पर आपत्ति आती है तो पूर्व जन्म की भक्ति यदि शेष है तो पूर्ण परमात्मा उनकी रक्षा करता है। इससे उनको यह भ्रम हो जाता है कि हम जो वर्तमान में भक्ति कर रहे हैं, उसी से लाभ मिल रहा है।(78-90)

वाणी :- बज्र बान की बोऊँ बाड़ी। सतगुरु संत जीत है राड़ी।।91
जे कोई माने शब्द हमारा। राज करे काबुल कंधारा।।92
अरब खरब मक्के कुं ध्याऊँ। मदीना बांध हद्द में ल्याऊँ।।93
ईरा तुरा कहां शिकारी। गढ गजनी लग है असवारी।।94
दिल्ली मंडल पाप की भूमा। धरती नाल जगाऊँ सूमा।।95

हस्ती घोरा कटक सिंघारौं। दृष्टि परै असुरों दल मारौं।।96
संख पंचायन नादू टेरं। स्वर्ग पतालों हाक सुमेरं।।97
बालमीक सुर बाचा बंधा। पांडो जग्य द्वापर की संधा।।98
नारद कुम्भक ऋषि कुर्बाना। मारकण्डे रूमी रिषि आना।।99
इन्द्ररिषि अरू बकतालब स्वामी। और संत साधू घणनामी।।100
नाथ जलंधर और अजैपाला। गुरु मछंदर गोरख बाला।।101
भरथरी गोपी चन्दा जोगी। सुलतान अधम है सब रस भोगी।।102
नर हरिदास पखै बलि भीषम। व्यास बचन परमानी सीखं।।103
नामा और रैदास रसीला। कोई न जानै अबिगत लीला।।104
पीपा धन्ना चढ़े बाजीदा। सेऊ समन और फरीदा।।105
दादू नानक नाद बजाये। मलूक दास तुलसी चढ आये।।106
कमाल मल्ल और सुर ज्ञानी। रामानन्द के हैं फुरमानी।।107
मीराबाई और कमाली। भिलनी नाचै दे दे ताली।।108

❖ सरलार्थ :- ऊपर महाभारत के नाश का वर्णन तथा भक्तों की रक्षा का विवरण बताया है। इन वाणियों में यह समझाना चाहा है कि जिन शस्त्रों से लड़कर अर्जुन-भीम जैसे योद्धाओं ने ख्याति प्राप्त की थी, परंतु अंत में हिमालय पर्वत पर जाकर गले। भक्ति की नहीं, सदा कष्ट बना रहेगा, परंतु सतगुरू अर्थात् परमात्मा जो तत्वज्ञान बताने आता है। फिर उनके ज्ञान को समझकर अन्य संतजन तत्वज्ञान तथा भक्ति रूपी बज्र (शस्त्र) की बाड़ी (बाग-बगीची) बोते हैं। (बीजते हैं।) जिससे सर्व राड़ी (राड़=झगड़ा, झंझट) मिट जाता है। न जन्म होता है। जन्म ही नहीं होगा तो झगड़ा किससे होगा?(91)

❖ जो राज का इच्छुक भी है, यदि वह हमारे बताए अनुसार साधना करेगा तो उसको भारत तो क्या काबुल तथा कंधार देशों के साथ-साथ सारे अरब देशों और खरब (यूरोप देशों) तक जिनमें मक्का-मदीना आदि पवित्र स्थान स्थापित हैं। मदीना बांध हद में लाऊँ का भावार्थ है कि सत्य ज्ञान से सब भ्रम दूर होकर मन को बाँधकर एक परमात्मा की हद (सीमा) में लाऊँ तथा सर्व देश ईरान, तुर्कीस्तान, शिकारी (इराक), गढ़ गजनी (मोहम्मद गजनवी जिस देश से आया था, उसके गढ़ अर्थात् मूल क्षेत्र) अर्थात् पुराने भारत में उस राज के इच्छुक की असवारी हो जाए अर्थात् वहाँ तक वह अपने राज्य में राजा बनकर यात्रा करे।(92-94)

❖ दिल्ली शहर तथा उसके आसपास के गाँव व शहर दिल्ली मण्डल कहलाता है। हरियाणा का पुराना रोहतक जिला (वर्तमान में रोहतक, सोनीपत, झज्जर, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़) दिल्ली मण्डल कहा जाता है। यह स्थान किन्हीं कारणों से पाप की भूमि बन गई है, उसका उद्धार करने के लिए उस धरती नाल (के साथ) अर्थात् उस क्षेत्र में तत्वज्ञान प्रचार करके सूम (कंजूस) व्यक्तियों को दानी बनाऊँगा।(95)

❖ जो हमारे बताए अनुसार दान-धर्म भक्ति करके राज्य की कामना करेगा तो हम उसके पक्ष होकर विपक्षी सेना के हाथी-घोड़ों की कटक (सेना) मारूं तथा जहाँ तक

हमारी दृष्टि पड़ेगी, वहाँ तक के राक्षसों का नाश कर दूंगा।

इन वाणियों में उपमालंकार है। समझाया है कि हम तो भक्ति शक्ति के शस्त्र चलाते हैं।उससे उस भक्त के घर पर या खेत, दुकान पर भूत-प्रेत, पित्तर, भैरो, बैतालों की सेना है, उसको भगा देते हैं।(96)

❖ जैसे द्वापर के अंत में पाण्डवों की यज्ञ में सुदर्शन वालमीकि संत ने शंख बजाकर पाप नाश किए थे। उसकी आवाज पाताल लोक तथा स्वर्ग लोक तक सुनी थी। उसी प्रकार हमारे मंत्रों से साधक पापरहित हो जाता है।(97-98)

❖ वाणी नं. 99 से 108 तक काल ब्रह्म की भक्ति करने वाले शांत ऋषियों, नाथों, भक्तों की नाम लिखकर महिमा की है। नारद ऋषि, कुम्बक ऋषि, मारकण्डेय ऋषि, रूमी ऋषि, इन्द्र ऋषि, बकतालब ऋषि और अन्य साधु, जलन्धर नाथ, अजयपाल नाथ, मछन्दर नाथ जो गोरखनाथ जी के गुरू थे। भरतरी, गोपीचंद, अब्रहम अधम सुल्तान आदि तो शादीशुदा थे, सर्व विषय विकार करते थे, ज्ञान हुआ। फिर भक्ति करके जीवन धन्य किया। नरहरि सन्त थे तथा भीष्म जी बल में परवै (प्रसिद्ध) थे। भीष्म आजीवन ब्रह्मचारी रहे, परंतु भक्ति ठीक न करके अपराधियों (कौरवों) का पक्ष लेकर दुर्गति को प्राप्त हुए। भावार्थ है कि कुछ न कुछ अलग-सा करके सब महिमा पाए हैं, परंतु संत ही जीवन सफल करते हैं। जिन्होंने जीवन सफल किए हैं, उनका वर्णन वाणी नं. 104 से 108 तक है। इनको पूर्ण संत रूप में स्वयं परमेश्वर कबीर जी मिले थे।

भावार्थ है कि इस रमैणी के उद्देश्य से हम सर्व महापुरूषों का नाम ले-लेकर सम्मान तथा स्तुति करते हैं।

वाणी :- नासकेतु नकीब हमारा। उद्यालक मुनि करत जुहारा।।109

❖ **सरलार्थ :-** इस वाणी में संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की महिमा बताई है तथा स्वयं को उनका भक्त होने के नाते कहा है कि नासकेतु नकीब ऋषि जैसे तो हमारे नकीब (आदेश को आगे बताने वाले हलकारे=संदेशवाहक) है तथा उद्यालक मुनि परमेश्वर कबीर जी की जुहार (सत्कार) करते हैं।(109)

वाणी :- साहेब तख्त कबीर खवासा। दिल्ली मंडल लीजै वासा।।110

सतगुरू दिल्ली मंडल आयसी। सूती धरती सूम जगायसी।।111

काग भुसण्ड छतर कै आगै। गन्धर्व करत चलत है रागै।।112

ऐता गुफ्तार रासा पढ़ैगा सो चढ़ैगा।।113

❖ **सरलार्थ :-** परमेश्वर (साहेब) कबीर के तख्त (राजगद्दी) अर्थात् कार्यालय का खवासा (नौकर=दास), दिल्ली मण्डल (हरियाणा प्रान्त का पुराना रोहतक जिला=रोहतक, सोनीपत, झज्जर, रेवाड़ी) में लेगा बासा अर्थात् दिल्ली मण्डल में जन्म लेकर बसेगा (निवास करेगा)।(110)

❖ सतगुरू अर्थात् तत्वज्ञान देने वाला संत दिल्ली मण्डल (पुराना जिला रोहतक) में आएगा। आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा आध्यात्म ज्ञान को भूलकर सांसारिक व्यवस्था में मस्त होकर सो रहे मानव को जो सूम (कंजूस) हो चुके हैं। धन संग्रह करने में रूचि है, दान करना छोड़ चुके हैं, उनको आध्यात्मिक ज्ञान से जगाएगा। उनको सत्य

भक्ति देकर उद्धार करेगा।(111)

❖ जिस समय सतगुरू पृथ्वी पर आएगा, दिल्ली मण्डल में उस समय कागभुसण्ड तथा बहुत-से गंधर्व भी उस क्षेत्र में मानव जन्म प्राप्त करेंगे। वे उस सतगुरू की शरण में आकर उनका सत्कार किया करेंगे। उनकी महिमा के गाने (भजन-शब्द) गाएंगे। उसके जुलूस में चलते समय राग सुनाऐंगे।(112)

❖ जो इतना गुफ्तार रासा (गहरा उलझा हुआ ज्ञान) जो गुप्त है, कोई विश्वास करने को तैयार नहीं है, परंतु जो इसको पढ़ेगा अर्थात् समझेगा, वह चढ़ैगा अर्थात् आध्यात्म की ऊँचाईयों को छूएगा। ज्ञान ग्रहरण करके अपने जीवन का कल्याण कराएगा।(113)

वाणी :- चम्पैगा पर भूमि सीम। साक्षीकृष्ण पाँचों पांडव भारथी भीम।।114

❖ सरलार्थ :- इस वाणी में सतर्क किया है कि यदि कोई व्यक्ति या राजा पर भूमि सीम चम्पैगा अर्थात् किसी दूसरे की जमीन तथा सीमा को चम्पैगा (कब्जा करेगा), उसकी वही दशा होगी जो कौरवों की हुई, इसके साक्षी अर्थात् गवाह पाँचों पाण्डव हैं,उनमें भीम भारथी (लड़ाकू योद्धा) हैं अर्थात् महाभारत की कथा इसी बात की जीवित तस्वीर है।(114)

वाणी :- द्रोपदी के खप्पर में मेदनी समायसी। चौसठ जोगनी मंगल गायसी।।115

❖ सरलार्थ :- महाभारत की घटना को फिर संक्षेप में बताया है कि जो राजा या प्रजाजन किसी की जमीन, राज पर कब्जा करेगा, जैसे द्रोपदी ने खप्पर ले रखा था, केश खोल दिए थे, अपने पाँचों पतियों से कह दिया था कि जिस दिन दुशासन का वध किया जाएगा, तब ये केश बाँधूंगी। उसकी जिद के कारण उसका खप्पर भरने के लिए मेदनी (सेना) मारी गई थी और सब सर्वनाश हो लिया था। उस समय 64 जोगनियों ने मंगल राग गाए थे, खुशी मनाई थी। इसी प्रकार यदि कोई गलती करेगा तो और द्रोपदी बनकर ऐसा नाश कराएगी। फिर 64 जोगनी मंगल गान करेंगी।(115)

वाणी :- बज्रबान का ताला राक्षस सिर ठोकसी। दखन के दल उत्तर कूं झौंक सी।।116

❖ सरलार्थ :- बज्र बान अर्थात् सत्यज्ञान रूपी शस्त्र का ताल यानि प्रहार राक्षस (अज्ञान) के सिर पर ठोकसी अर्थात् मारेगा। सतगुरू दक्षिण अर्थात् नीचे दबे हुए शुभ संस्कार उत्तर कूं झौकसी अर्थात् ऊपर की ओर उठाए जाऐंगे। भावार्थ है कि शुभ संसार ज्ञान द्वारा प्रेरित करके उभारेगा।(116)

वाणी :- दिल्ली मण्डल राज त्रिकुट कूं साध सी।
यह लीला प्रमाण जो सतगुरू कूं आराधसी।।117

❖ सरलार्थ :- दिल्ली मण्डल में जन्मा सतगुरू त्रिकुटी की साधना का राज (रहस्य) बताएगा। यह लीला तो प्रमाण है अर्थात् सबूत है, परंतु वही समझ सकेगा जो सतगुरू को आराधसी अर्थात् सतगुरू के बताए भक्ति मंत्रों से साधना करेगा।(117)

वाणी :- कजली बल कूं ज्यूं गोफन के गिलोल हैं।
राक्षस का रासा भंग खाली चंहडोल है।।118

❖ सरलार्थ :- यह वाणी उपमालंकार है। समझाया है कि जैसे कजली (कदली=केले) बनकर कुंजर (हाथी) मस्ती में आकर केलों के पेड़ों को खाते हैं और उन्हीं पर लेटते हैं, उनको तोड़ते हैं और जब उनको राजा के नौकर पकड़कर बंदी बनाकर रखते हैं, तब वह सिर धुनता है, रोता है। वह मस्ती अब कहाँ? ऐसे ही मानव शरीर को प्राप्त प्राणी पूर्व जन्म के पुण्यों से प्राप्त सुविधाओं को मस्ती से भोगता है, भक्ति करने को कहते हैं तो कानों पर टाल देता है, यम के दूत पकड़कर ले जाएंगे, तब रोता है।

गोफन कहते हैं एक पतली रस्सी से बनाई गई चिड़िया आदि पक्षियों को बाजरे-ज्वार की फसल को खाने से बचाने के लिए काम में लाई जाती है। उसके अंदर मिट्टी का बनाया लड्डू जैसा गोला रखा जाता है और उसकी लम्बी रस्सी के दोनों सिरों को पकड़कर घुमाकर एक सिरा छोड़ दिया जाता है। उस समय उससे आवाज भी होती है तथा गोला भी दूर तक जाकर गिरता है, पक्षी फसल से उड़ जाते हैं।

भावार्थ है कि आपका मानव जीवन रूपी फसल को विषय-विकार खा रहे हैं। आपकी गोफन नाम रूपी गोले बिना खाली है। आपका जीवन नष्ट हो रहा है। दूसरा उदाहरण गिलोल का दिया है, उसका भी यह उद्देश्य होता है।

फिर कहा है कि खाली चंहडोल है। चंहडोल कहते हैं हाथी के ऊपर रखे खोखे जैसी अलमारी को, उसको अम्बारी भी कहा जाता है। वह भी खाली है अर्थात् आपके पास मानव शरीर रूपी हाथी भी है। उसके ऊपर बुद्धि रूपी चंहडोल भी है, परंतु उस चंहडोल में बैठने वाला राजा अर्थात् मन तो गधों की सवारी कर रहा है। भावार्थ है कि तत्वज्ञान के अभाव से मानव भक्ति रूपी हाथी को छोड़कर संसार की अस्थाई महिमा प्राप्त करने में लगा है, उसके हाथी का चहंडोल खाली पड़ा है अर्थात् भक्ति बिना मनुष्य का वास्तविक कर्म अधूरा तथा व्यर्थ है।(118)

वाणी :- निहकलंक अंस लीला कालंदर कुं मार सी।
अर्ध लाख वर्ष बाकी दानें और दूतों को सिंघारसी।।119

❖ सरलार्थ :- कलयुग के अंत में मानव भक्तिहीन, चरित्रहीन, कृतघनी हो जाएगा कि निकलंक (कल्की) अवतार रूप में विष्णु जी का अंश आएगा। वह कालंदर नामक दुखदाई राक्षस को मारेगा। फिर 50 हजार वर्ष तक बाकी राक्षसों को तथा दूतों-निंदकों को मारेगा।(119)

वाणी :- कलयुग की आदि में चानौर कंस मारे थे।
त्रेता की आदि में हिरणाकुश पछारे थे।।120

❖ सरलार्थ :- श्री विष्णु जी की स्तुति करके पुनः महिमा दोहराई कि आप जी ने द्वापरयुग के अंत में जब कलयुग प्रभाव प्रारम्भ हो गया था, उस समय मथुरा के राजा कंस को मारा तथा कंस के राज्य का पहलवान जो मथुरा केसरी था, चमार जाति में जन्मा था। ये श्री कृष्ण रूप में मारे थे। सत्ययुग के अंत में त्रेतायुग का प्रभाव होने लगा था, उस समय हिरणाकुश को नरसिंह रूप धारकर मारा था।(120)

वाणी :- बलि की विलास यज्ञ सुरपति पुकारे थे।
बामन स्वरूप धर कीन्हीं सुरपति पुकार, बलि बैन निस्तारे थे।।121

❖ सरलार्थ :- इसमें भी श्री विष्णु जी की महिमा का गुणगान है। बलि राजा की यज्ञ वाला प्रकरण है जो वाणी सँख्या 66 का सरलार्थ पढ़ें।(121)

वाणी :- कलियुग की आदि में बारा सदी की अंत है।
दुलह दयाल देव जानत कोई संत भेव यौही बाला कंत है।।122

❖ सरलार्थ :- जैसाकि वाणी सँख्या 120 में बताया है कि प्रत्येक युग के अंत में अगले युग का प्रभाव गिरने लगता है। द्वापर युग में लगभग 1200 वर्ष पूर्व कलयुग का प्रभाव हो गया था। उसी के प्रभाव में कंस ने अत्याचार किए। महाभारत जैसा अनर्थ-अत्याचार हुआ। कभी पाण्डव जंगल में, कभी अज्ञातवास में। फिर महाभारत का युद्ध किया, फिर हिमालय में गलकर मरे। इसलिए कहा है कि द्वापर में 12 (बारह) सदी से कलयुग जैसा वातावरण रहा है जो द्वापर का अंत तथा कलयुग की आदि (शुरूआत) कहा है, परंतु दुलह दयाल देव अर्थात् सर्व आत्माओं को दुल्हा अर्थात् पति-परमेश्वर दयालु परमात्मा है। यौही वाला कंत है अर्थात् यह वाला (यह जिसकी महिमा संत गरीबदास वास्तव में करना चाहते हैं, लड़के-मूसल, दादा जी वाला उदाहरण है। इसलिए कहा है कि) वास्तव में कंत अर्थात् पति है, परमेश्वर है। इस भेव (रहस्य) को कोई तत्वदर्शी संत जानता है।(122)

वाणी :- दिल्ली के तख्त छत्तर फेर भी फिरायसी,
खेलत गुफ्तार सैन भंजन सब फौकट फैन,
महियल राज बाला पुरूष सतगुरू दिखलायसी।।123

❖ सरलार्थ :- भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली के तख्त अर्थात् गद्दी (सिंहासन) पर बैठेगा। उसके सिर पर पुराने राजा-महाराजाओं की तरह छत्तर फिरेगा अर्थात् छत्तर से शोभा की जाएगी। महियल (माहिर) अर्थात् राजकाज में निपुण (कुशल) राज बाला अर्थात् राजा बनने वाले पुरूष को सतगुरू दिखाएगा। यह गुप्त खेल संकेत से कहा है। उस सतगुरू के प्रकट होने के पश्चात् सब फोकट अर्थात् व्यर्थ फैन अर्थात् महिमा किसी अन्य की बताई है, वह भंजन यानि समाप्त हो जाएगी।(123)

वाणी :- आवैगा दक्खन सैं दिवाना।
काबुल का काल कील किलियं गल है तुरकाना।।124

❖ सरलार्थ :- यह भविष्यवाणी है। इसमें बताया है कि ''दक्खन (दक्षिण) का दिवाना'' शब्द है। इसका सम्पर्क भारत देश के दक्षिण दिशा से नहीं है। यदि कोई अन्दाजा (idea) लगाए कि कोई भारत के दक्षिणी हिस्से (गुजरात) से नेता आएगा, वह काबुल का नाश करेगा, यह उचित नहीं है क्योंकि एक व्यक्ति काबुल देश में जाकर उसका नाश नहीं कर सकता। इसका अर्थ यह है कि जैसे भारत वर्ष पूर्वी देशों में है तथा अमेरिका-इंग्लैंड आदि पश्चिमी देश हैं। इसी प्रकार कुछ उत्तरी देश हैं, कुछ दक्षिणी देश हैं। यहाँ पर दक्षिणी देश का वर्णन है कि कोई दक्षिणी देश काबुल देश पर आक्रमण करेगा। काबुल मुस्लिम देश है। उसकी सहायता के लिए अन्य मुस्लिम देश मिलकर दक्षिण वाले देश के साथ युद्ध करेंगे। इस प्रकार (गल है तुरकाना) तुर्कों अर्थात् मुसलमान देश गलेगा अर्थात् विनाश को प्राप्त होगा।(124)

वाणी :- कील किली किलियं औतार कला, जीतन जंग झुंझमला।
ऐसा पुरूष आया कहता है गरीबदास,
दिल्ली मंडल होय विलास, निहकलंक राया।।125

❖ सरलार्थ :- कलयुग के अंत में निःकलंक (कल्कि) नाम से 10वां अवतार आएगा। वह सम्भल नगरी में विष्णुदत्त शर्मा के घर जन्म लेगा। दिल्ली का राजा बनेगा तथा कृतघ्नी व्यक्तियों को मारेगा। अच्छे नेक व्यक्तियों को नैतिकता सिखाएगा। यह ज्ञान संत गरीबदास जी ने बताया है।(125)

''असुर निकंदन रमैणी'' का सरलार्थ सम्पूर्ण हुआ।

रक्षा मंत्र का सरलार्थ

सतगुरु शरण शरणाई, शरण गहे कछु भय
नहीं व्यापै, काल जाल भय मिट जाई।1
रोग शोग छल छिद्र न व्यापै, सन्मुख ना ठहराई।2
जहर अग्नि तन निकट न आवै, दूरी जात रंगाई।3
बीर बेताल बाण ना लागै, जम के कोट ढहाई।4
अठानवे पुण्य मूठ ना लागै, उल्ट ताही धरखाई।5
बैर करे सोए दुःख पावै, सुरति शब्द मिल जाई।6
कह कबीर हम जम दल पेल्या, सतगुरु लाख दुहाई।7

❖ सरलार्थ :- यह शब्द परमेश्वर कबीर जी का है। इसको असुर निकंदन रमैणी के साथ पढ़ते हैं। इसमें कहा है कि सतगुरू की शरण ग्रहण करने के पश्चात् कुछ भी डर नहीं रहता। यहाँ तक कि काल के जाल अर्थात् काल के षड़यंत्र का भी भय समाप्त हो जाता है।(1)

❖ रोग तथा शोग (दुःख) व कोई छल-छिद्र अर्थात् जन्त्र-मन्त्र नहीं लगेगा, वह सन्मुख नहीं ठहरता।(2)

❖ जहर तथा अग्नि भक्त के शरीर के निकट नहीं आती अपितु तुरंत दूर चली जाती है।(3)

❖ बीर-बैताल नाम के प्रेत प्रमुखों का कोई बाण अर्थात् आक्रमण प्रभाव नहीं करेगा अपितु यमराज का किला अर्थात् चक्र भी ढ़ह जाएगा। (समाप्त हो जाएगा)(4)

❖ अठानवें (98) प्रकार की मूठ मंत्र अर्थात् पाखण्ड पूजा हैं जिनके द्वारा भक्तिहीन प्राणियों को मन्त्र से कष्ट दिया जाता है। वे सतगुरू के भक्त पर असर नहीं करते, उल्टे उसी को हानि करते हैं जो भक्त के ऊपर मंत्र छोड़ता है।(5)

❖ जो भक्त से बैर करेगा, वही दुःख पावैगा, भक्त की तो भक्ति ओर बढ़ेगी। उसकी सुरति नाम मंत्र में लीन होकर मोक्ष प्राप्त करेगा।(6)

❖ परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि हम ही भक्त की रक्षा करते हैं और हम जम दल अर्थात् जम दूतों का समूह (14 करोड़ का झुण्ड) पेल्या अर्थात् भगा दिया। सतगुरू की शरण में कोई कष्ट नहीं रहता। सतगुरू को लाख-लाख दुहाई (बधाई) है।(7)

संध्या आरती का सरलार्थ

वाणी :- पहली आरती हरि दरबारे, तेजपुञ्ज जहां प्राण उधारे।।1
पाती पंच पौहप कर पूजा, देव निंरजन और न दूजा।।2
खण्ड खण्ड में आरती गाजै, सकलमयी हरि जोति विराजै।।3
शान्ति सरोवर मञ्जन कीजै, जत की धोति तन पर लीजै।।4
ग्यान अंगोछा मैल न राखै, धर्म जनेऊ सतमुख भाषै।।5
दया भाव तिलक मस्तक दीजै, प्रेम भक्ति का अचमन लीजै।।6
जो नर ऐसी कार कमावै, कंठी माला सहज समावै।।7
गायत्री सो जो गिनती खोवै, तर्पण सो जो तमक न होवैं।।8
संध्या सो जो सन्धि पिछानै, मन पसरे कुं घट में आनै।।9
सो संध्या हमरे मन मानी, कहैं कबीर सुनो रे ज्ञानी।।10

❖ आरती नं. 1 का सरलार्थ :- आरती का अर्थ है स्तुति, प्रार्थना।

भक्त सर्वप्रथम आरती हरिदरबार अर्थात् परमात्मा के सतलोक के निमत करता है, जहाँ परमेश्वर विराजमान हैं तथा जहाँ पर जीव का उद्धार होकर तेजपुंज का शरीर प्राप्त होता है।(1)

❖ आरती करते समय आम तौर पर पाँच ज्योति जलाते हैं। कहा है कि यह आरती पाँच पातियों (बत्तियों) से, पुष्प आदि से परमेश्वर की पूजा करें। देव निरंजन अर्थात् मायारहित परमात्मा एक ही है, कोई अन्य नहीं है।(2)

❖ जब सतगुरू का भक्त पृथ्वी पर आरती-स्तुति करता है तो उसकी गूँज अनेकों ब्रह्माण्डों में जाती है। सब जगह परमात्मा की ज्योति अर्थात् प्रकाश (उपस्थित) विराजमान है। भावार्थ है कि परमात्मा की शक्ति सर्व व्यापक है।(3)

❖ भक्त को शांतिप्रिय होना चाहिए, यह उसका सरोवर में स्नान है अर्थात् शांति रूपी सरोवर में मन का मंजन (सफाई) करना चाहिए और जत की धोती शरीर पर धारण करें। भावार्थ है कि यदि विवाह हुआ है तो अपनी पत्नी तक सीमित रहने वाला जति कहलाता है। उदाहरण :- दशरथ पुत्र लक्ष्मण। लक्ष्मण का विवाह जनकपुरी में श्री राम जी के साथ ही हुआ था। भरत का भी विवाह एक साथ ही हुआ था। लक्ष्मण की पत्नी का नाम 'उर्मिला' था तथा भरत की पत्नी का नाम 'मांडवी' था। विवाहित होने के पश्चात् भी लक्ष्मण जी जति कहलाए।{कहते हैं जति-सती का जोड़ा। जीवन में न रहे तोड़ा (कमी)}

दूसरा जो विवाह नहीं करता तथा परस्त्री के प्रति स्वपन में भी दुर्भावना नहीं आती, वह भी जति की श्रेणी में आता है। उदाहरण के लिए पवन तनय हनुमान जी। इसलिए कहा है कि जत की धोती अर्थात् आपकी महिमा बनी रहे। आप चरित्रवान की महिमा रूपी वस्त्र से अपने आपको ढ़ककर रखें।(4)

❖ तौलिये की जगह भक्तजन अंगोछा (परना) रखते थे, स्नान करके शरीर का मैल उस अंगोछे से रगड़-रगड़कर उतारा करते थे। कहा है कि आत्मा का मैल तत्वज्ञान

रूपी अंगोछे से धोइए। फिर मैल अर्थात् अज्ञान नहीं रहता। तत्वज्ञान का अंगोछा मैल नहीं छोड़ता और धर्म-पुण्य करना चाहिए। यह वास्तव में जनेऊ है। जो धागे का जनेऊ पहनकर भक्त का दिखावा करते हों तो आप धर्म करो। आपकी धार्मिकता अपने आप प्रत्यक्ष हो जाएगी और मुख से सच्चा ज्ञान और सच्चाई बोलनी चाहिए।(5)

❖ जो मस्तिक (माथे) के ऊपर तिलक लगाकर भक्त लक्षण दिखाते हो, यह भक्त लक्षण नहीं हैं। आपके हृदय में दयाभाव होना चाहिए। ये वास्तव में भक्त के लक्षण हैं जो केवल भक्त में ही हो सकते हैं। माथे पर तिलक तो कोई भी लगाकर भक्त दिखाई दे सकता है। धार्मिक क्रिया करते समय जल का आचमन करते हैं। उसके विषय में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि आप परमेश्वर में प्रेम बनाकर भक्ति करें। यह आचमन श्रेष्ठ है। परमेश्वर से प्रेम में जो आँसूं गिरते हैं, वह आत्मा का आचमन है।(6)

❖ जो व्यक्ति अर्थात् साधक (स्त्री-पुरूष) ऐसी क्रिया करता है, ऐसी कमाई (भक्ति धन को संग्रह) करता है, उसके गले में कंठी (एक मनके की बनी माला) तथा माला (108 मनके की माला मंत्र जाप के लिए प्रयोग करते हैं, उसके विषय में कहा है। पहले साधक मंत्र जाप करके उस 108 मनके की माला को भी गले में डालकर भक्त प्रसिद्ध होते थे) डालने की आवश्यकता नहीं है। उसको बाहरी आडम्बर करने की आवश्यकता नहीं है। उसकी उपरोक्त साधना से कण्ठी और माला उसी में विलीन हो जाती है।(7)

❖ कुछ साधक गायत्री मंत्र का जाप गिनकर करते हैं, कहते हैं कि एक लाख मंत्र जाप का अनुष्ठान करूंगा तथा तर्पण स्नान करके मोक्ष मानते हैं। उनको कहा है कि परमात्मा की भक्ति की सफलता उसमें है जो अनगिन जाप करता है तथा वास्तविक तर्पण वह है जिसमें क्रोध नहीं है।(8)

❖ संध्या का अर्थ है दो समय का मिलन। जैसे 1. सुबह=रात्रि और दिन की संधि, 2. दोपहर=दिन का पूर्व भाग तथा दिन के पिछले समय का मिलन दिन के 12 बजे, इसे दोपहर कहते हैं। (कुल 8 पहर का दिन-रात होता है, अमुमन 4 पहर का दिन और 4 पहर की रात्रि मानते हैं। सुबह से दिन के 12 बजे तक दिन के दो पहर बीत जाते हैं, उसको पूर्वार्ध अर्थात् दोपहर कहते हैं। इसे चढ़ता दिन भी कहते हैं। फिर दिन ढ़लने लगता है, उसको बाद दोपहर कहते हैं, दिन का उतरार्ध भी कहते हैं।) यह दूसरी संधि है। 3. शाम को दिन और रात्रि की संधि तीसरी संधि कहते हैं। इसलिए तीन ही संध्या आरती की जाती हैं। प्रचलन में केवल शाम की आरती को संध्या आरती कहते हैं, यह लोकवेद से प्रसिद्ध है। भावार्थ है कि संध्याओं का वास्तविक अर्थ है परमेश्वर से संधि, मित्रता करना, उसके लिए मन जो संसार की चाह में पसरा (फैला) है, उसको घट अर्थात् भक्ति करते समय शरीर में लाऐं। वेद में भी तीन समय परमात्मा की स्तुति करने को कहा है।(9)

❖ परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि ऐसी संध्या करना हमारे मन को मान्य है। कबीर जी कहते हैं कि सुन ले रहे विद्वान! अर्थात् जो इसके अतिरिक्त विधि से

आरती करते-कराते हैं, वे विद्वान प्रसिद्ध हैं, उनको संकेत किया है। अन्यथा ज्ञानी को ज्ञान देने की क्या आवश्यकता होती है?(10)

वाणी :- ऐसी आरती त्रिभुवन तारे, तेजपुञ्ज जहां प्राण उधारे।।1
पाती पंच पौहप कर पूजा, देव निरंजन और न दूजा।।2
अनहद नाद पिण्ड ब्रह्मण्डा, बाजत अहर निस सदा अखण्डा।।3
गगन थाल जहां उड़गन मोती, चंद सूर जहां निर्मल जोती।।4
तनमन धन सब अर्पण कीन्हा, परम पुरुष जिन आत्म चीन्हा।।5
प्रेम प्रकाश भया उजियारा, कहैं कबीर मैं दास तुम्हारा।।6

❖ आरती नं. 2 का सरलार्थ :- उपरोक्त विधि से की गई आरती तीनों लोकों से पार कर देती है। अमर लोक में तेजपुंज का अमर शरीर मिलता है। इस प्रकार की आरती प्राणी का उद्धार करती हैं।(1)

❖ वाणी नं. 2 का अर्थ आरती नं. 1 में कर दिया है, वहाँ से पढ़ें।(2)

❖ सतलोक (अमरलोक) में अनहद शब्द हो रहा है जो दिन-रात (अहः=दिन, निश=रात्रि) बजता है। सदा उसकी प्यारी-प्यारी आवाज हो रही है। वह शब्द पिण्ड अर्थात् शरीर (संतों ने शरीर को पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड की उपमा दी है क्योंकि जो कुछ एक ब्रह्माण्ड में है, वह शरीर में बने कमलों में टी.वी. चैनलों की तरह देखा जा सकता है। जिसका चैनल चालू (On) हो गया है, वह उस आवाज को शरीर में सुनता है।)(3)

❖ आकाश को एक थाली के समान कहा है तथा तारायण को उड़गन (चलते-फिरते) मोती कहा है और चाँद तथा सूर्य ब्रह्माण्ड की निर्मित ज्योति अर्थात् प्रकाश स्रोत हैं।(4)

❖ जिन साधकों ने तन-मन-धन परमात्मा के निमित करके साधना की है, वे परम भक्त हैं जिन्होंने अपने मानव जीवन के उद्देश्य को समझा, पहचाना है।(5)

❖ प्रेम प्रकाश भया उजियारा अर्थात् सत्य भक्ति करने से परमात्मा के प्रति प्रेम जागृत हो गया। परमेश्वर कबीर जी ने हमें भक्ति के गुर (दॉव-पेंच) बताते हुए कहा है कि भक्त ने अपने आपको परमात्मा का दास (नौकर=गुलाम) मानना चाहिए तथा कहे कि हे परमेश्वर जी! मैं आपका दास हूँ। चरण कमल में रखना जी।(6)

वाणी :- संध्या आरती करो विचारी, काल दूत जम रहैं झख मारी।।1
लाग्या सुषमण कूंची तारा, अनहद शब्द उठै झनकारा।।2
उनमुनि संयम अगम घर जाई, अछै कमल में रहया समाई।।3
त्रिकुटी संजम कर ले दर्शन, देखत निरखत मन होय प्रसन्न।।4
प्रेम मगन होय आरती गावैं, कहैं कबीर भौजल बहुर न आवै।।5

❖ आरती नं. 3 का सरलार्थ :- संध्या आरती करते समय आरती में बोले जा रहे ज्ञान को विचार करके अमल करना चाहिए। फिर उस साधक से काल के दूत दूर रहेंगे। वे हानि करने के लिए झख मारते रहेंगे अर्थात् सिर पटकते रहेंगे, परंतु निकट नहीं आ पाएंगे।(1)

❖ सत्यनाम रूपी कुंजी (चाबी=Key) जब सुषमणा नाड़ी पर लगे ताले को लगी तो

अनहद नाद (शब्द) की झनकार उठी। भावार्थ है कि जिनको सच्चा नाम जाप करने को मिला है, उससे सुषमणा द्वार खुल जाता है। फिर उस साधक को शरीर में शब्द की धुन सुनाई देती है। यह धुन नकली नामों से भी बनती है, परंतु वह वास्तविक न होने से व्यर्थ है। उदाहरण के लिए जैसे ढ़ोलक की वास्तविक धुन निकालने के लिए एक विशेष प्रकार का छोटा डण्डा होता है, उस डण्डे को ढ़ोल पर मारने से वह सही धुन निकालेगा। यदि उसी ढ़ोल पर जूते-चप्पल या अन्य वस्तु मारेंगे तो धुन तो उनसे भी निकलेगी, परंतु वह नकली आवाज होगी, वह व्यर्थ है क्योंकि ऐसी आवाज (नकली आवाज) निकालने वाले को कोई ध्याड़ी (मजदूरी) नहीं देता, उसको वापिस कर देते हैं। वास्तविक मंत्रों से जो धुन प्रकट होगी, वह सतलोक वाली धुन है।(2)

❖ जिन साधकों की स्थिति उनमुनी हो जाती है, वे ही अगम घर (सतलोक जो काल लोक तथा अक्षर पुरूष लोक से आगे है, उसमें) में जाते हैं अर्थात् उनका मोक्ष होता है।

उनमुनी स्थिति :- तत्वज्ञान से परीचित होकर भक्त का संसार के झूठे सुख से, गाने-बजाने से, कार-कोठियों तथा परिवार, रिश्ते-नातों से मन हटकर अर्थात् उदास होकर परमात्मा के चिंतन में रहता है। यह उनमुनी स्थिति कहलाती है। जैसे कोई व्यक्ति या स्त्री, बच्चा गुमशुम बैठा हो, बोलने पर हाँ-हम्भै करके चुप हो जाता हो तो कहते हैं, आज कैसा उनमुन-सा बैठा है? यह स्थिति उनमुनी गति कही जाती है। ऐसी स्थिति वाला भक्त अमर होकर अक्षय कमल अर्थात् अमर लोक में चला जाता है जिसमें सतपुरूष रहता है। अमर लोक नौवें कमल में दिखाई देता है।

सत्य साधना करने वाले भक्त के सब कमल खुल जाते हैं, तब परमेश्वर त्रिकुटी कमल में गुरू जी के रूप में दर्शन देता है। वहाँ काल भी अपने भक्त को नकली गुरू के रूप में दर्शन देता है। जैसे कई साधक कहते हैं कि हमारे गुरू जी भी ध्यान में दर्शन देते हैं। वे दर्शन दो स्थानों पर होते हैं :- 1. आँखें बंद होते ही गुरू का स्वरूप सामने दिखाई देगा। 2. या आँखों के ऊपर मस्तिष्क में। जैसे कई साधक आँखों को ऊपर चढ़ाने का अभ्यास करके बताते हैं, ऊपर प्रकाश दिखाई देता है। उस प्रकाश में गुरू का स्वरूप भी दिख जाता है, परंतु वह त्रिकुटी नहीं है, वह तो नीचे के सुन्न स्थान में है, जिसका आगे का रास्ता नहीं है। यह नकली गुरूओं के दर्शन की दशा है। यदि कोई पूर्व जन्म का सत्य साधक भटक गया हो और पुनः मानव जन्म मिला होता है तो उसकी त्रिकुटी का ताला खुल सकता है, परंतु वर्तमान में वह काल के पाले (पक्ष) में होने के कारण उसको त्रिकुटी में काल ही उसके नकली गुरू के रूप में दर्शन देकर भ्रमित करता है। यह पहचान करने के लिए कि हमारे को त्रिकुटी में काल दिखाई देता है (गुरू के रूप में) या दयाल परमेश्वर। आपका गुरू तत्वदर्शी संत है या नहीं। उसके पास तीन समय करने वाली संध्या (सुबह का नित्य नियम, दोपहर को असुर निकंदन रमैणी तथा शाम को आरती) है या नहीं। फिर वह तीन बार में दीक्षा देता है या नहीं। उसके पास सारनाम है या नहीं। अंत में नकली गुरू सारशब्द पर पकड़ा जाएगा। फिर उसको नाम दान करने की आज्ञा है या नहीं।

सौ बातों की बात है कि वर्तमान में और भविष्य में मेरे (रामपाल दास के)

अतिरिक्त किसी के पास सत्य साधना नहीं है। यदि कोई काल का दूत मेरे से तीनों दीक्षा मंत्र लेकर स्वयं गुरू बनकर आगे शिष्य बनाता है तो वह कपटी व्यक्ति है। उसको मेरा आदेश न होने से उससे दीक्षा लेने वाला काल जाल में रहेगा, उसको मंत्रों का कोई लाभ नहीं मिलेगा। आगे भविष्य में भी किसी को नाम दान का आदेश नहीं दिया जाएगा। तीनों बार के मंत्र C.D. या D.V.D. के माध्यम से यह दास (रामपाल दास) ही देगा। वह इलैक्ट्रोनिक शरीर है, यह पाँच तत्व का भौतिक शरीर है। ज्ञान दोनों में एक है। वचन शक्ति भी उतना ही कार्य करती है। सन् 2009 से उसी विधि से नाम दीक्षा दी जा रही है। सब भक्तों को पूरा लाभ मिल रहा है। अब तक सारनाम भौतिक शरीर से दिया जा रहा है। वैसे उसकी भी C.D. तथा D.V.D. तैयार हैं। आवश्यकता पड़ी तो सारनाम भी इलैक्ट्रोनिक (Electronic) शरीर से दान किया जाएगा।(3)

❖ जिन भक्तों को मुझ दास (रामपाल दास) से दीक्षा प्राप्त है, केवल उसी को त्रिकुटी में मेरे रूप में परमेश्वर के दर्शन होंगे, वहाँ उस स्वरूप का तेज भी अद्भुत दिखाई देगा। आत्मा को अत्यंत आनंद होगा। काल यदि मेरे रूप में त्रिकुटी पर आपके सामने होगा तो सारनाम के स्मरण से उसका वह स्वरूप समाप्त होकर काल दिखाई देगा, भक्त उससे दूर हो जाएगा।(4)

❖ जो साधक संध्या आरती को प्रेम-मग्न होकर गाएगा अर्थात् उसमें बताए नियमों का पालन करेगा, वह पूर्ण मोक्ष प्राप्त करेगा, फिर कभी संसार में लौटकर संसार में नहीं जन्मेगा। उसको गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में बताया परम पद प्राप्त हो जाएगा।(5)

वाणी :- हरि दर्जी का मर्म न पाया, जिन यौह चोला अजब बनाया।।1
पानी की सुई पवन का धागा, नौ दस मास सीमते लागा।।2
पांच तत्त की गुदरी बनाई, चन्द सूर दो थिगरी लगाई।।3
कोटि जतन कर मुकुट बनाया, बिच बिच हीरा लाल लगाया।।4
आपै सीवैं आपे बनावैं, प्राण पुरूष कुं ले पहरावैं।।5
कहै कबीर सोई जन मेरा, नीर खीर का करै निबेरा।।6

❖ आरती नं. 4 का सरलार्थ :- इस आरती में परमात्मा ने मानव शरीर की रचना की व्याख्या की है, यह कैसा करिश्मा है? न तो कोई वर्कशॉप, न कोई लेथ और औजार (यंत्र), माता के पेट में एक पानी जैसी बूँद से कितना शानदार शरीर बना दिया, हाथ-पैर की ऊंगलियाँ कितने स्थानों से मुड़ती हैं। हम तो पेट में भोजन डालकर निश्चिंत हो जाते हैं, कई बार तो फटाफट (शीघ्रता से) खाते हैं। उसके पश्चात् पेट में कई प्रकार की फैक्ट्रियाँ आरंभ हो जाती हैं। व्यर्थ हुआ पदार्थ भिन्न-भिन्न इकट्ठा होता है। कहीं रक्त बन रहा है, कहीं वसा, कहीं पर हड्डियों की मुरम्मत, कहीं त्वचा को सहारा आदि-आदि कार्य उस भोजन से शरीर में चल रही फैक्ट्रियों ने किया।

परमात्मा को एक दर्जी (टेलर=Tailor) बताया है। संत भाषा में शरीर को वस्त्र (चोगा=चोला) भी कहते हैं। इसलिए इसे बनाने वाले परमात्मा को दर्जी कहा है। उस परमात्मा का कोई रहस्य नहीं जानता जिसने यह शरीर रूपी चोला (पोषाक) कैसा

अद्भुत बनाया है।(1)

❖ पानी अर्थात् माता-पिता के शुक्र रूपी पानी की सूई और पवन (श्वांस) का धागा लेकर नौ-दस महीने तैयार करने में लगे।(2)

❖ उस पानी की सूई से पाँच तत्व की गुदरी (वैसे गुदड़ी रजाईनुमा खद्दर की बनी हुई सौड़ को भी कहते हैं, परंतु यहाँ गुदड़ी का भावार्थ शरीर से है) अर्थात् शरीर बनाया और इसमें चंद-सूरज अर्थात् दायें नाक की नाड़ी गर्म अर्थात् सूरज नाड़ी कही जाती है, इसको पिंगला नाड़ी भी कहते हैं तथा बायीं नाक की नाड़ी ठण्डी है, इसे चंद कहा है। वस्त्र फट जाने पर उसके ऊपर अन्य कपड़े का टुकड़ा सी देते हैं, उसे थिगरी (थेगली) कहते हैं। यह केवल परमात्मा की महिमा तथा शरीर के अंगों को रहस्यमयी तरीके से बताया है।(3)

❖ करोड़ों प्रयत्न करके सिर (मुकुट) लगाया और शरीर में दिल रूपी हीरा लगाया।(4)

❖ परमात्मा स्वयं ही शरीर रूपी वस्त को सीलता है और बनाता है, उसको आकार देता है और जीव को पहनाता है।(5)

❖ परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि मेरा भक्त वही है जो दूध-पानी को भिन्न-भिन्न कर लेगा अर्थात् कौन प्रभु पूर्ण है, कौन गुरू पूर्ण है, यह पहचान लेगा, वही मेरा हंस है, नहीं तो काल का गुलाम ही है।(6)

वाणी :- राम निरंजन आरती तेरी, अबिगत गति कुछ
समझ पड़े नहीं, क्यूं पहुंचे मति मेरी।।1
नराकार निर्लेप निरंजन, गुणह अतीत तिहूं देवा।
ज्ञान ध्यान से रहैं निराला, जानी जाय न सेवा।।2
सनक सनंदन नारद मुनिजन, शेष पार नहीं पावै।
शंकर ध्यान धरैं निषवासर, अजहूं ताहि सुलझावैं।।3
सब सुमरैं अपने अनुमाना, तो गति लखी न जाई।
कहैं कबीर कृपा कर जन पर, ज्यों है त्यों समझाई।।4

❖ आरती नं. 5 का सरलार्थ :- हे निरंजन राम! अर्थात् माया रहित परमात्मा! आपकी आरती करता हूँ। हे अविगत! आपकी स्थिति का कोई ज्ञान समझ में नहीं आता। मेरी बुद्धि वहाँ तक कैसे पहुँचे? परमेश्वर कबीर जी ने साधक को समझाने के लिए स्वयं भक्त का अभिनय करके समझाया है कि भक्त को ऐसे विनम्र भाव से विनय करनी चाहिए, तब परमात्मा (मैं=कबीर जी) प्रसन्न होता है। अपने को अज्ञानी मानें, परमात्मा तो विज्ञानी है ही, जीव को अभिमान नहीं होना चाहिए।(1)

नोट :- पाठकजनों को शंका उत्पन्न होगी कि निरंजन तो काल को कहते हैं। काल तो ज्योति निरंजन है। निरंजन का अर्थ है माया रहित अर्थात् निर्लेप प्रभु, परंतु काल ब्रह्म मायासहित है, यह गुप्त रहता है। इसलिए इसको भी निरंजन कहा जाने लगा। यह लोकवेद के आधार से निरंजन प्रसिद्ध है, वास्तव में निरंजन नहीं है। वास्तविक निरंजन तो परमेश्वर कबीर जी हैं जो पूर्ण ब्रह्म कहे जाते हैं। यही प्रमाण श्रीमद्भगवत गीता 15 श्लोक 18 में है। काल ब्रह्म ने स्वयं कहा है कि मैं तो लोकवेद में पुरूषोत्तम (उत्तम पुरूष) प्रसिद्ध हूँ क्योंकि मेरे अंतर्गत जितने प्राणी हैं, (21 ब्रह्माण्ड

में) मैं उन सबसे उत्तम अर्थात् प्रत्येक दृष्टिकोण से श्रेष्ठ हूँ। वास्तव में पुरूषोत्तम (उत्तम पुरूष) तो गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में गीता ज्ञानदाता ने बता दिया है कि :-

उत्तमः पुरूषः तु अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः।
यः लोकत्रयम् अविश्यः विभर्ति अव्ययः ईश्वरः।।

सरलार्थ :- उत्तम पुरूष (पुरूषोत्तम) अर्थात् श्रेष्ठ समर्थ परमात्मा तो ऊपर के गीता अध्याय 15 के श्लोक 17 में वर्णित क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य ही है जो परमात्मा इस प्रकार कहा जाता है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वह अविनाशी परमेश्वर है।

❖ पूर्ण परमात्मा आप निर्लेप निरंजन हैं। आप नराकार (मनुष्य के आकार में पुरूष रूप) हैं। आप तीनों गुण रूप देवताओं अर्थात् श्री ब्रह्मा (रजगुण), श्री विष्णु (सतगुण) तथा श्री शिव (तमगुण) से अतीत अर्थात् ऊपर हैं, भिन्न हैं। आप में तीनों गुणों का प्रभाव नहीं है। आपमें एक अविनाशी परम गुण है। आप अविनाशी, आपका लोक अविनाशी, आपके लोक का निवासी अविनाशी जो आपके परमगुण का प्रभाव है। संसार में प्रचलित ज्ञान (लोकवेद) तथा उसके आधार से किया जाने वाला ध्यान उससे आप निराले रहते हैं अर्थात् भिन्न हैं, आपकी सेवा (पूजा=भक्ति की विधि) कोई नहीं जान पा रहा।(2)

❖ आपको प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने पिता ब्रह्मा जी से प्राप्त आध्यात्म ज्ञान के आधार से सनकादिक अर्थात् चारों पुत्र (सनक, सनन्दन, सनातन तथा संत कुमार) तथा ब्रह्मा ही का पुत्र नारद ऋषि तथा शेषनाग भी ऋषियों से सुने ज्ञान के आधार से (लोकवेद के आधार से) साधना कर रहे हैं। उनको भी आपका पार नहीं पाया अर्थात् आप नहीं मिले और न ही आपकी महिमा का अंत पाया। काल लोक के महायोगी शिव शंकर जी भी निश (निशा=रात्रि) तथा वासर (दिन) ध्यान कर रहे हैं। आज तक आध्यात्मिक रहस्य की गुत्थी सुलझा रहे हैं, परंतु सफलता नहीं मिली।

विशेष :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि आध्यात्म ज्ञान सतगुरू के बिना ऐसा उलझ गया है (रहस्यमयी बन गया है) जैसे 9 मन सूत उलझा हो। उलझे हुए एक सेर (1 कि.ग्रा.) सूत (कच्चे धागे) को सुलझाने में जुलाहों को एक-एक सप्ताह लग जाता था। यदि धागा टूट जाता तो गाँठ लगती। गाँठ लगे कपड़े को ग्राहक नहीं लेता था या अति सस्ते भाव में लेता था। जिस कारण जुलाहे बहुत ध्यानपूर्वक सूत को सुलझाते (सरल करते) थे। विचार करें 9 मन सूत में (9×40) 360 कि.ग्रा. सूत होता है। भावार्थ है कि तत्वज्ञान 9 मन सूत की तरह उलझा हुआ है। इसको सुलझाने अर्थात् यथार्थ रूप से जानने के लिए ऋषिजन झख मार रहे हैं अर्थात् अपना-अपना अनुभव बता रहे हैं जो एक-दूसरे से भिन्न है तथा वेद आदि सद्ग्रन्थों के विरूद्ध है।

उदाहरण के लिए श्री देवी पुराण (सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के तीसरे स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 129-130 पर श्री ब्रह्मा जी ने अपनी माता दुर्गा जी से प्रश्न किया कि हे मातः! आप तो परमात्मा को निराकार बताती हैं। मैंने भी चार युग तक समाधि लगाकर वेदों में लिखे ओम् (ॐ) मंत्र का

जाप करके परमात्मा के दर्शन करने का प्रयत्न किया, परंतु दर्शन नहीं हुए। आप जी भी कहती हो कि वेद सत्य हैं, ये परमात्मा ने दिए हैं। इनमें परमेश्वर का यथार्थ स्वरूप तथा ज्ञान लिखा है। वेदों में परमात्मा नृवत अग्ने (मनुष्य तुल्य परमेश्वर) लिखा है। ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 86 मंत्र 26-27 में, सूक्त 82 मंत्र 1-2 में, सूक्त 96 मंत्र 16 से 20 तथा सूक्त 94 मंत्र 1, सूक्त 95 मंत्र 2 में, सूक्त 54 मंत्र 3 में, सूक्त 20 मंत्र 1 में तथा अनेकों स्थानों पर लिखा है कि परमेश्वर ऊपर के लोकों में रहता है। वहाँ से गति करके (चलकर सशरीर) पृथ्वी पर आता है, अच्छी आत्माओं को मिलता है, उनको तत्वज्ञान (सूक्ष्मवेद) सुनाता है। वह कवियों की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर विचरता (घूमता-फिरता) है। अपने मुख कमल से बोलकर वाणी द्वारा भक्ति करने की प्रेरणा करता है। वह भक्ति के गुप्त मंत्रों (नामों) को सार्वजनिक करता है। शंकर जी अपनी माता दुर्गा से कह रहे हैं कि इन वेद मंत्रों में स्पष्ट है कि परमात्मा साकार है, नर आकार है, परंतु अनुभव (अपना प्रैक्टिकल) इसके विरूद्ध है? यह क्या कारण है? श्री देवी जी ने इसका कोई उत्तर न देकर विषय बदल दिया। इस आध्यात्म ज्ञान को कबीर परमेश्वर जी ने स्वयं पृथ्वी पर कलयुग में सन् 1398 (विक्रमी संवत् 1455) में प्रकट होकर अपनी अच्छी आत्मा धर्मदास जी को बताया जो श्री धर्मदास जी ने लिखा। वह कबीर सागर, कबीर बानी नाम से है। उसे सूक्ष्मवेद भी कहते हैं। उसे तत्वज्ञान भी कहते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कवियों जैसा आचरण करके पृथ्वी पर विचरण करके अपने मुख कमल से वाणी बोलकर यह ज्ञान प्रचार किया, गुप्त मंत्रों को उजागर (सार्वजनिक) किया। संत गरीबदास जी को भी परमात्मा सन् 1727 (विक्रमी संवत् 1784) में छुड़ानी गाँव जिला-झज्जर (हरियाणा प्रान्त) में मिले थे। उनको भी यही तत्वज्ञान सुनाया था। कबीर परमेश्वर जी ने उनको कहा था कि :-

"सोहं शब्द हम जग में ल्याए। सार शब्द हम गुप्त छिपाए।।"

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झख मार।
सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझे न दूजी बार।।

परमेश्वर कबीर ने अपने तत्वज्ञान में आध्यात्मिक ज्ञान सुलझाकर (सरल करके) रखा हुआ है, परंतु इसको मेरे से पहले किसी कबीर पंथी ने नहीं समझा। वेदों तथा गीता व पुराणों को भी मेरे (रामपाल दास) से पहले किसी ऋषि या ब्राह्मण ने नहीं समझा। यह दास (रामपाल दास) अब तक एकमात्र सतगुरू है और एक ही रहेगा। आगे इस सुलझे हुए ज्ञान को प्रचार तो कर सकते हैं, परंतु अपनी मोहर (अपना नाम) नहीं लगा सकते, नाम तो कबीर परमेश्वर जी तथा उनके कृपा पात्र सतगुरू (रामपाल दास) का ही चलेगा।(3)

❖ वाणी नं. 4 का सरलार्थ :- जब साधक अपने-अपने अनुमान (अंदाजे या अनुभव) के अनुसार स्मरण कर रहे हैं तो भी परमात्मा की गति (स्थिति) देखी नहीं जा रही अर्थात् स्पष्ट नहीं हो रही। परमेश्वर कबीर जी एक जिज्ञासु भक्त का अभिनय करके

हम भक्तों को विनय-आरती करने का संकेत कर रहे हैं कि आप ऐसे अर्ज करना कि हे परमात्मा! हम कुछ नहीं समझ पा रहे हैं। कृप्या आप ही अपनी महिमा यथार्थ रूप से हमें बताऐं। मैंने (कबीर परमेश्वर ने) उस कृपा पात्र भक्त को ज्यों की त्यों अर्थात् यथार्थ रूप से समझाया।(4)

वाणी :- नूर की आरती नूर के छाजै, नूर के ताल पखावज बाजैं।।1
नूर के गायन नूर कुं गावैं, नूर के सुनते बहुर न आवैं।।2
नूर की बाणी बोलै नूरा, झिलमिल नूर रहा भरपूरा।।3
नूर कबीरा नूर ही भावै, नूर के कहे परम पद पावैं।।4

❖ आरती नं. 6 का सरलार्थ :- जीवात्मा में परमेश्वर का नूर (ऊर्जा) ही कार्य कर रहा है। उसी शक्ति से जीव कार्य करता है। परमात्मा स्वयं नूर (आध्यात्मिक ऊर्जा अर्थात् शक्ति) का स्रोत है। इसलिए कहा है कि नूर (परमात्मा) की आरती नूर (परमात्मा) के छाजै अर्थात् परमात्मा को समर्पित। सतलोक में सब पदार्थ एक नूर तत्व से बने हैं। इसलिए सर्व आरती में प्रयोग होने वाले वाद्य यंत्र भी नूर अर्थात् परमात्मा से उत्पन्न हैं। नूर के सुनते अर्थात् परमात्मा की महिमा सुनकर यथार्थ ज्ञान होने पर साधक फिर संसार में जन्म नहीं लेता, वह पूर्ण मुक्त हो जाता है। नूर की वाणी अर्थात् परमात्मा की महिमा की वाणी परमात्मा ही स्वयं बोलता है। परमात्मा में तो नूर (शक्ति) झिलमिल करती है, परमात्मा तो नूर से भरपूर (परिपूर्ण) है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि जिस साधक को नूर (परमात्मा) ही भावै अर्थात् अच्छा लगता है तो वह साधक नूर के कहे अर्थात् परमात्मा की भक्ति परमात्मा के कहे अनुसार करता है तो उसको वह परमपद प्राप्त होता है जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए, जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर संसार में कभी लौटकर नहीं आता।

वाणी :- तेज की आरती तेज के आगै, तेज का भोग तेज कुं लागै।।1
तेज पखावज तेज बजावै, तेज ही नाचै तेज ही गावै।।2
तेज का थाल तेज की बाती, तेज का पुष्प तेज की पाती।।3
तेज के आगै तेज विराजै, तेज कबीरा आरती साजै।।4

❖ आरती नं. 7 का सरलार्थ :- इस आरती का भी आरती नं. 6 वाला ही सरलार्थ है। तेज का अर्थ है कि जीव भी परमात्मा की शक्ति से सर्व गतिविधि करता है अर्थात् उसमें भी परमेश्वर का तेज (ऊर्जा-शक्ति) है। तेज का अर्थ ऊर्जा है। ऊर्जा परमात्मा से है, परमात्मा ऊर्जा स्रोत है। परमात्मा की आरती परमात्मा के सामने करते हैं। सर्व पदार्थ भी परमात्मा के तेज से बने हैं। उनमें भी तेज अर्थात् परमात्मा का अंश है। परमात्मा का भोग (खाद्य पदार्थों का भोजन) परमात्मा को लगता है। तेज (परमात्मा की शक्ति से बने परमात्मा के अंश) के पखावज (खड़ताल आदि बजाने-खड़काने के यंत्र) को तेज (जीव जो प्रभु का अंश है) बजाता है। तेज (प्रभु अंश स्त्री-पुरूष, बच्चे) ही नाचते, गाते हैं। आरती करने में प्रयोग होने वाली थाली तथा बाती, पुष्प तथा तुलसी आदि के पत्ते भी प्रभु के तेज से बने हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि तेज

अर्थात् प्रभु अंश जीव के सामने तेज (परमेश्वर तेज स्रोत) विराजमान होता है और तेज (जीव जो परमेश्वर अंश है, वह) आरती करता है। आरती नं. 8 में स्पष्ट किया है।

वाणी :- आपै आरती आपै साजै, आपै किंगर आपै बाजै।।1
आपै ताल झांझ झनकारा, आप नाचै आप देखन हारा।।2
आपै दीपक आपै बाती, आपै पुष्प आप ही पाती।।3
कहैं कबीर ऐसी आरती गाऊँ, आपा मध्य आप समाऊँ।।4

❖ आरती नं. 8 का सरलार्थ :- परमात्मा स्वयं नूर, तेज रूप में प्रत्येक प्राणी तथा पदार्थ, धातु में विद्यमान हैं। इस दृष्टिकोण से कहा है कि आपै आरती, आपै साजै (उतारै), आप ही खड़ताल आदि किंगर रूप में बजते हो। झांझ आदि की ताल, झंकार स्वयं ही हो। आपका अंश जीव नाच रहा है। आप तेज स्रोत प्रभु स्वयं दोनों और हो, आप नाच देख रहे हो। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि मैं ऐसी तत्वज्ञान की आरती गाऊँ अर्थात् पद्य भाग में सुनाऊँ जिसको समझकर जीव रूपी तेज सतलोक वाले तेज (परमात्मा) में समा जाए अर्थात् सतलोक में स्थाई स्थान प्राप्त करे।

वाणी :- अदली आरती अदल समोई, निरभै पद में मिलना होई।।1
दिल का दीप पवन की बाती, चित्त का चन्दन पांचों पाती।।2
तत्त का तिलक ध्यान की धोती,मन की माला अजपा जोती।।3
नूर के दीप नूर के चौरा, नूर के पुष्प नूर के भौरा।।4
नूर की झांझ नूर की झालरि, नूर के संख नूर की टालरि।।5
नूर की सौंज नूर की सेवा, नूर के सेवक नूर के देवा।।6
आदि पुरुष अदली अनुरागी, सुन्न संपट में सेवा लागी।।7
खोजो कमल सुरति की डोरी, अगर दीप में खेलो होरी।।8
निर्भय पद में निरति समानी, दास गरीब दरस दरबानी।।9

❖ आरती नं. 9 का सरलार्थ :- आरती नं. 1 से 8 तक परमेश्वर कबीर जी की अमृतवाणी से हैं और परमात्मा से साक्षात्कार के पश्चात् संत गरीबदास जी ने परमात्मा से प्राप्त तत्वज्ञान को अपने शब्दों में बोला है। आरती नं. 9 से 16 तक संत गरीबदास जी की अमृतवाणी है। आरती नं. 9 में कहा है कि अदली अर्थात् निर्णायक आरती (स्तुति) अदल (वास्तविक न्यायपूर्ण) समोई अर्थात् समझाई, आत्मा में समा दी(डाल दी)। तत्वज्ञान से आत्मा निर्भीक होकर साधना करती है, उस स्थिति में परमात्मा का मिलन होता है।(1)

❖ बाहरी आरती के पश्चात् अंदर की आरती ऐसे करनी है। दिल का दीप अर्थात् हृदय में प्रभु का प्रेम और श्वांस (पवन) की बाती (रूई से बनाई गई बॉत) बनाओ अर्थात् श्वांस से सत्यनाम का स्मरण करें। चित (ध्यान) का चंदन पाँचों पाती (बाती) अर्थात् भक्त में पाँच विशेष गुण होने अनिवार्य हैं :- दया, शील, संतोष, भाव-भक्ति तथा आधीनी, ये वास्तव में ज्योति जगानी हैं, तब अंदर की आरती होती है। तत् का तिलक अर्थात् तत्वज्ञान रूपी तिलक आत्मा का होना चाहिए। पल-पल परमात्मा का ध्यान रहे, वह शरीर की धोती वस्त्र है अर्थात् भक्त परमात्मा के ध्यान में लिप्त रहे। मन से जाप करें, यह वास्तविक माला है और अजपा जाप जो श्वांस-उश्वांस से किया

जाता है, वह आत्मा का प्रकाश (ज्योति) है अर्थात् उज्जवलता है।(2-3)

❖ वाणी नं. 4 से 6 का सरलार्थ वही है जो आरती नं. 6 से 8 तक किया है।

❖ आदि पुरूष यानि सनातन परमात्मा अदली (न्यायकारी) है, अनुरागी अर्थात् अच्छी आत्माओं के अनुराग (मोह) के कारण यहाँ आता है, इसलिए अनुरागी कहा है। आपकी साधना (सेवा) सुन्न संपट (आकाशमंडल) में ध्यान करके (की है) की जाती है।(7)

❖ हे साधको! शरीर में बने कमलों की डोर अर्थात् ऊपर चढ़ने की रस्सी जो कमल को कमल से बाँधे हुए है, उसको तत्वदर्शी संत से उपदेश लेकर खोजो और सुरति अर्थात् ध्यान से उसकी साधना करो। फिर अगर दीप अर्थात् आगे वाले स्थान (सतलोक) में खेलो होरी अर्थात् सच्ची खुशी मनाओ।(8)

❖ संत गरीबदास जी ने कहा है कि ऐसी साधना करने से सुरति अर्थात् विचारधारा से आत्मा निर्भीक हो गई। फिर दरबानी अर्थात् अपने सतलोक स्थान के दरबार में बैठे परमेश्वर के दर्शन हुए।(9)

वाणी :- अदली आरती अदल उचारा, सतपुरुष दीजो दीदारा।।1
कैसे कर छूटैं चौरासी, जूनी संकट बहुत तिरासी।।2
जुगन जुगन हम कहते आये, भौसागर से जीव छुटाये।।3
कर विश्वास स्वास कुं पेखो, या तन में मन मूरति देखो।।4
स्वासा पारस भेद हमारा, जो खोजै सो उतरै पारा।।5
स्वासा पारस आदि निशानी, जो खोजै सो होय दरबानी।।6
हरदम नाम सुहंगम सोई, आवा गवन बहुर नहीं होई।।7
अब तो चढै नाम के छाजे, गगन मंडल में नौबत बाजैं।।8
अगर अलील शब्द सहदानी, दास गरीब विहंगम बानी।।9

❖ आरती नं. 10 का सरलार्थ :- निर्णायक ज्ञानयुक्त आरती आदल यानि निष्पक्ष भाव से न्याय करके कही है अर्थात् साधना की है कि हे सत्यपुरूष! (परमेश्वर) दर्शन दीजिए।(1)

❖ प्रार्थना रूपी प्रश्न किया है, पूछा है कि हे प्रभु! चौरासी (84) लाख प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाने का चक्र कैसे छूटेगा अर्थात् पूर्ण मोक्ष कैसे होगा? 84 लाख प्रकार की जूनियों (योनियों) में संकट का कष्ट बहुत बार झेला है।(तिरासी=त्रासित हुए=कष्ट उठाए)(2) उत्तर जो परमात्मा ने दिया :-

चारों युग में संत पुकारे, कूक कहा हम हेल रे।
हीरे, माणिक, मोती बरसैं, यो जग चुगता ढ़ेल रे।।

भावार्थ है कि परमात्मा ने कहा है कि हम (मैं और मेरे से परीचित संत) पुकारे अर्थात् तत्वज्ञान प्रचार किया, गुपचुप नहीं कूक (चिल्ला-चिल्ला) कर कहा। हेल रे (हल्ला देकर-ऊँचे स्वर में) आवाज लगाकर कहा है कि हम तत्वज्ञान रूपी हीरे-मनके, मोती की वर्षा कर रहे हैं। यह संसार शास्त्र विधि रहित मनमाना आचरण करके डले (कंकर-पत्थर) चुग रहा है, इकट्ठे कर रहा है। यही प्रमाण आरती नं. 10 की वाणी नं. 3 में कहा है :-

जुगन–जुगन हम कहते आए।भवसागर से जीव छुटाए।।(3)

❖ परमेश्वर जी ने उत्तर दिया है कि हम प्रत्येक युग में आए और तत्वज्ञान तथा

सत्य भक्ति का ज्ञान कराकर भवसागर अर्थात् संसार रूपी समुद्र से अर्थात् काल के बँधन से जीव छुटाए हैं।(3)

❖ जो सच्चे नाम की साधना दी है, उसका श्वांसों द्वारा विश्वास के साथ स्मरण करो। (पेखो यानि बार-बार आवृति, श्वांस से स्मरण करो) इस शरीर में मन जो काल का ऐजेंट है, इसकी वास्तविकता देखो।(4)

❖ श्वांस के द्वारा किया जाने वाला जो सतनाम-सारनाम है, यह एक पारस पत्थर जैसा है। पारस पत्थर लोहे को छूते ही सोना बना देता है। इसी प्रकार जीव को लोहा कहा है और सतनाम को पारस कहा है। इस श्वांस रूपी पारस को छूने से स्वर्ण बन जाता है। कहा है कि मानसिक जाप एक हजार बार और श्वांस के द्वारा एक बार करना हजार मानसिक जाप से कहीं अधिक है और एक हजार बार मौखिक जाप से एक बार मानसिक जाप कहीं अधिक है। अब मौखिक जाप से श्वांस का जाप (1000×1000=1000000) दस लाख गुणा अधिक है। इस प्रकार यह श्वांस रूपी पारस से बहुमुल्य हो जाता है। इसलिए कहा है कि :-

''श्वांसा पारस भेद हमारा, जो खोजे सो उतरे पारा।।''(5)

❖ हमारा रहस्यमय जाप श्वांस से होता है। यह पारस का कार्य करता है। जो इस प्रकार भक्ति साधना करते हैं, उस संत को खोजते हैं जिसके पास यह पारस रूपी सतनाम मंत्र के जाप का भेद है, वह साधक पार उतर जाता है अर्थात् उसका मोक्ष हो जाता है।(5)

❖ श्वांस द्वारा स्मरण की विधि आदि अर्थात् पुरातन है। यह चिन्ह जो पहचानेगा तथा संत की खोज करेगा, वह दरबानी अर्थात् सतलोक के दरबार का सेवादार बन जाएगा।(6)

❖ प्रत्येक श्वांस के साथ सुहंगम (सोहम्) नाम का जाप जो गुरू से लेकर करेगा, उसका आवा (जन्म लेकर संसार में आगमन) तथा गमन (मृत्यु को प्राप्त होकर संसार से गमन) फिर कभी नहीं होगा अर्थात् वह पूर्ण मुक्त हो जाएगा।(7)

❖ इतना ज्ञान सुना दिया, अब तो इस ज्ञान की सीढ़ी से ऊपर चढ़ो। आकाशमण्डल में परमात्मा की नौबत बज रही है अर्थात् अनहद शब्द हो रहा है।(8)

❖ अगर अर्थात् आगे को ले जाने वाला, अलील अर्थात् अनोखा शब्द अर्थात् सतनाम सहदानी अर्थात् मोक्षदाता है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि यह हमारी विहंगम (आकाश में पक्षी बिना मार्ग के जाने का रास्ते का प्रतीक) वाणी है, हमारा ज्ञान है।(9)

वाणी :- अदली आरती असल बखाना, कोली बुनै बिहंगम ताना।।1
ज्ञान का राछ ध्यान की तुरिया, नाम का धागा निश्चय जुरिया।।2
प्रेम की पान कमल की खाड़ी, सुरति का सूत बुनै निज गाढी।।3
नूर की नाल फिरै दिन राती, जा कोली कुं–काल न खाती।।4
कुल का खूंटा धरनी गाडा, गहर गझीना ताना गाढ़ा।।5
निरति की नली बुनै जै कोई, सो तो कोली अविचल होई।।6
रेजा राजिक का बुन दीजै, ऐसे सतगुरु साहिब रीझै।।7

दास गरीब सोई सत्कोली, ताना बुन है अर्स अमोली।।8

❖ **आरती नं. 11 का सरलार्थ :- इस आरती में उपमा अलंकार है। भक्त को एक जुलाहा रूप बताया है। जुलाहा ताना (कपड़ा) बुनने के लिए जमीन में एक गढ़ढ़ा बनाता था, उसको खड्डी कहते थे। ताना बुनने के लिए प्रयोग किए जाने वाले औजारों (उपकरणों) के नाम बताए हैं :- 1. राछ 2. तुरिया 3. पान 4. खाड्डी=खड्डी 5. नाल 6. खुंटा जिससे धागे बाँधे जाते थे 7. नली। वाणी का सरलार्थ इस प्रकार है :-**

अदली (निर्णायक अर्थात् निष्पक्ष) आरती असल (सत्य भाव से) बखाना (वर्णन करता हूँ) कि कोली अर्थात् जुलाहा रूपी भक्त भक्ति का नाम स्मरण रूपी ताना (कपड़ा) बुनता है। वह विहंगम अर्थात् पक्षी की तरह आकाश में उड़ान भरता है। उसके लिए आकाश में सतलोक में धागा जोड़ें अर्थात् भक्त का ध्यान सतलोक में स्थिर हो और धरती के ऊपर खूंटा गाडै अर्थात् भजन-स्मरण की विधि का सांकेतिक विवरण बताया है। जैसे जुलाहा (धाणक) खड्डी में बैठता है। उससे पहले लंबा धागा खूंटे से बाँधकर खड्डी में लगे दूसरे खूंटे पर पूरता है। जितना चौड़ा कपड़ा बुनना होता था, उसी आकार के डण्डे दोनों ओर खूंटे से बाँधकर लंबे धागे पूरता था। भक्त के लिए कहा है कि भक्ति रूपी कपड़ा बुनने के लिए ज्ञान रूपी राछ बना, ध्यान रूपी तुरिया चला, जो धागा पूरना है, वह नाम का जाप समझो। सुरति का सूत बुनै अर्थात् गाढ़ा कपड़ा बुनना अर्थात् अधिक भजन करना है। नूर की नाल दिन-रात फेर। नाल एक पतली पाईप होती थी, उससे धागा चौड़ाई में बुनते थे, ताने के अंदर से चौड़ाई में निकालते थे। उस प्रकार भक्ति करने वाले कोली अर्थात् भक्त को काल नहीं खाता। कुल रूपी खूंटा धरती पर गाढ़ै अर्थात् कुल अपने स्थान रहे और हम अपनी भक्ति करें। निरति की नली बनावै, वह कोली यानि भक्त अविचल अर्थात् अमर हो जाएगा। भक्ति रूपी ताना गहरा गजीना (पूरी पैमाइस का) बनाए अर्थात् भक्ति अधिक करे। रेजा राजिक का बुन दीजै अर्थात् रेजा माने कपड़ा, राजिक माने मालिक जिसका कपड़ा बुनने के लिए आया है। उस मालिक के नाम का रेजा बुनो। ऐसे परमात्मा (साहेब) तथा सतगुरू रीझै। (प्रसन्न होवेगा)

दास गरीब सोई सतकोली = संत गरीबदास जी ने कहा है कि वह सच्चा कोली अर्थात् भक्त है जो ताना (कपड़ा) अर्थात् भक्ति रूपी ताना अर्श आकाश में तार जोड़कर बुनता है अर्थात् संसार से ध्यान पलटकर ऊपर सतलोक में बैठे परमात्मा की ओर ध्यान लगाता है, वह वास्तव में भक्त है।

वाणी :- अदली आरती असल अजूनी, नाम बिना है काया सूनी।1
झूठी काया खाल लुहारा, इला पिंगुला सुषमन द्वारा।2
कृतघ्नी भूले नरलोई, जा घट निश्चय नाम न होई।3
सो नर कीट पतंग भवंगा, चौरासी में धर हैं अंगा।4
उद्भिज खानी भुगतैं प्रानी, समझैं नाहीं शब्द सहदानी।5
हम हैं शब्द शब्द हम माहीं, हम से भिन्न और कुछ नाहीं।6
पाप पुण्य दो बीज बनाया, शब्द भेद किन्हें बिरलै पाया।7
शब्द सर्व लोक में गाजै, शब्द वजीर शब्द है राजै।8

शब्द स्थावर जंगम जोगी, दास गरीब शब्द रस भोगी ।9

❖ **आरती नं. 12 का सरलार्थ :- अदली आरती अर्थात् सत्य आरती (निर्णायक आरती) असल यानि वास्तव में वह है जिससे (अजूनी) जन्म-मरण समाप्त हो जाए, भक्त अजूनी अर्थात् किसी भी योनि को धारण न करे अर्थात् वास्तव में भक्ति वह असल है जिससे जन्म-मरण समाप्त हो जाए। यदि मानव शरीर धारी प्राणी नाम जाप नहीं करता है तो उसकी काया सुनी है अर्थात् लावारिश है, उसका कोई मालिक नहीं है।(1)**

❖ **बिना नाम जाप के यह मानव शरीर उस लौहार की धौंकनी की तरह है। {पुराने समय में जिससे अहरन की आग जलाने के लिए हवा लगाई जाती थी। वह पशु के चॉम की बनी होती थी। वर्तमान में पंखा चलाकर हवा लगाकर अहरन की अग्नि जलाते हैं। पुराने जमाने में प्रयोग की जाने वाली धौंकनी में हवा भरती थी, फिर हाथ से दबाकर हवा निकालते थे। फिर वह निकलती हुई हवा अहरन की अग्नि को तेज करती थीं। वह ऐसे काम करती थी जैसे मानव शरीर में हवा भरती (श्वांस अंदर लेते हैं) और बाहर निकलती (श्वांस छोड़ते हैं) है।} यदि मानव शरीर धारी प्राणी यानि मानव (स्त्री-पुरूष) अपने श्वांस से स्मरण नहीं करता तो उसकी काया मानव शरीर झूठा है अर्थात् मानव जीवन का वास्तविक लाभ नहीं उठा रहा। इस शरीर में तीन नाड़ियाँ हैं। वे नाम जाप करके ऊपर चलने की हैं :- इला/इड़ा जो बाएं नाक का छिद्र है और पिंगला, यह दाएं नाक का छिद्र है तथा सुषमणा जो दोनों नाकों के मध्य में छिद्र है जो सतनाम के श्वांस से किए अभ्यास से खुलता है। फिर साधक ऊपर के मण्डलों में जाता है। त्रिकुटी पर सतगुरू रूप में विराजमान परमात्मा से मिलता है।(2)**

❖ **जो व्यक्ति विश्वास के साथ भक्ति नहीं करते, वे नर-नारी कृतघ्नी हैं। वे अपना भी हित भूले हैं। वे किसी और का क्या हित कर सकते हैं?(3)**

❖ **ऐसे व्यक्ति जो सत्य साधना नहीं करते, वे मानव अगले जन्मों में कीट (कीड़े), पतंग अर्थात् तितली तथा पँखों वाली कीड़ी जैसे प्राणी तथा भवंगा अर्थात् सर्प योनि को प्राप्त करेंगे। वे चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाएंगे।(4)**

❖ **उद्भिज खानी अर्थात् जैसे सुरसी, ढ़ोरे आदि उद्भिज खानि के जीव हैं। चार खानि हैं :- 1. अण्डज 2. जेरज 3. श्वेतज 4. उद्भिज। इन चार खानियों (श्रेणियों) में 84 लाख प्रकार के जीव उत्पन्न होते हैं, मरते हैं। इस वाणी नं. 5 का अर्थ है कि जो भक्ति नहीं करते, वे उद्भिज आदि खानियों के प्राणियों का कष्ट भोगते हैं। वे सहदानी यानि मोक्षदायक शब्द अर्थात् नाम मंत्र को नहीं समझते।(5)**

❖ **हम हैं शब्द का अर्थ है कि हमारे पास वह मोक्षदायक मंत्र है। हमसे भिन्न किसी के पास नहीं है क्योंकि सतगुरू तो शब्द (नाम मंत्र) है। अन्यथा सतगुरू के बिना कुछ हाथ नहीं लगेगा।(6)**

❖ **पाप तथा पुण्य तो जन्म-मरण का बीज है अर्थात् मुख्य कारण है। पुण्यों के आधार से मानव शरीर मिलता है। पाप की अधिकता से पशु-पक्षियों आदि का शरीर प्राप्त होता है। पुण्यों से कुछ समय स्वर्ग, पापों से नरक, फिर जन्म-मरण का चक्र सदा बना रहेगा। जो इस चक्र को समाप्त करने वाला शब्द (नाम मंत्र) है, उसका रहस्य किसी बिरले को प्राप्त होता है।(7)**

❖ जब नाम जाप किया जाता है तो उसकी आवाज सब लोकों में गूंजती है। शब्द-शब्द में भेद है। वजीर भी शब्द है और राजा भी शब्द है। भावार्थ है कि नाम की शक्ति में अंतर होता है। पूर्ण मंत्र तो राजा जानो अर्थात् पूर्ण मोक्षदायक है।(8)

❖ शब्द अर्थात् नाम तो नकली भी हैं जिससे स्थावर अर्थात् जड़-जूनी के वृक्ष-घास, बेल आदि की योनि प्राप्त होती है और जंगम अर्थात् जल के जीव की योनि प्राप्त होती है। भावार्थ है कि नकली नाम देने वाले भी कहते हैं कि हम नाम देते हैं, हम भी मोक्ष कराते हैं, परंतु नाम (शब्द) में असली-नकली का भेद है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि मुझे परमात्मा मिले। उन्होंने वास्तविक शब्द दिया, मैं उस सत्यनाम का आनन्द ले रहा हूँ।(9)

वाणी :- अदली आरती असल जमाना, जम जौरा मेटूं तलबाना।।1
धर्मराय पर हमरी धाई, नौबत नाम चढ़ो ले भाई।।2
चित्र गुप्त के कागज कीरुं, जुगन जुगन मेंटू तकसीरूं।।3
अदली ग्यान अदल इक रासा, सुनकर हंस न पावै त्रासा।।4
अजराईल जोरावर दाना, धर्मराय का है तलवाना।।5
मेटूं तलब करुं तागीरा, भेटे दास गरीब कबीरा।।6

❖ **आरती नं. 13 का सरलार्थ :-** निर्णायक आरती वास्तव में सही जमाना अर्थात् जामण है। हरियाणवी भाषा में जामण कहते हैं जमानती को अर्थात् सत्य भक्ति ही जमानती है और मैं सत्य साधना करने वाले का जम (यमराज) तथा जौरा (मृत्यु) का तलबाना अर्थात् बुलावा (सम्मन) मेट दूँ (समाप्त कर दूँ।)(1)

❖ परमेश्वर कबीर जी से तत्वज्ञान प्राप्त संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी को साक्षी रखकर कहा है कि धर्मराय (काल लोक का न्यायधीश) पर हमारी धाई अर्थात् हुकूमत है। हम उसके आदेश को भी रद्द कर सकते हैं। हे भक्त भाई! आप सतनाम की नौबत अर्थात् सतनाम का उच्चारण रूपी नौबत बजाकर यमदूतों के ऊपर चढ़ाई (आक्रमण) करो। नौबत तथा नगारा उस समय बजाया जाता था जिस समय एक राजा दूसरे राजा पर चढ़ाई (आक्रमण) करता था। नौबत एक वाद्य यंत्र है जो मुख से बजाया जाता था।(2)

❖ मैं अपने शिष्य के पाप कर्म वाले कागज (Paper) फाड़ दूँ जो चित्र तथा गुप्त ने लिखे होते हैं अर्थात् पाप नाश कर दूँ। युगों-युगों की तकसीर अर्थात् अपराध (गलती) समाप्त कर दूँ। गलती से हुए पाप भी नष्ट कर दूँ।(3)

❖ अदली ज्ञान (न्यायकारी अर्थात् निर्णायक ज्ञान) एक अदल अर्थात् वास्तव में एक रासा अर्थात् अनसुलझी पहेली है, अब सुलझ गई है। उसको ठीक से समझने के पश्चात् हंस (निर्विकार भक्त) यम के लोक में त्रास अर्थात् कष्ट नहीं उठाता।(4)

❖ अजराईल नाम का एक जोरावर (शक्तिशाली) दाना (दानव=राक्षस) है जो धर्मराय (काल के न्यायधीश) का तलबाना (कोर्ट में हाजिर करने का आदेश) लेकर आता है।(5)

❖ संत गरीबदास जी ने कहा है कि मुझे पूर्ण परमात्मा कबीर जी मिले हैं। उनकी कृपा से मैं उस धर्मराय के तलब अर्थात् बुलाने के आदेश को मेटूँ अर्थात् रद्द कर दूँ

और भक्त को तागीर (मुक्त-बरी) कर दूँ।(6)

वाणी :- अदली आरती असल पठाऊं,जुगन जुगन का लेखा ल्याऊं।।1
जा दिन ना थे पिण्ड न प्राणा, नहीं पानी पवन जिमीं असमाना।।2
कच्छ मच्छ कुरम्भ न काया, चन्द सूर नहीं दीप बनाया।।3
शेष महेष गणेश न ब्रह्मा, नारद शारद न विश्वकर्मा।।4
सिद्ध चौरासी ना तेतीसों, नौ औतार नहीं चौबीसो।।5
पांच तत्त नाहीं गुण तीना, नाद बिंद नाहीं घट सीना।।6
चित्रगुप्त नहीं कृतिम बाजी, धर्मराय नहीं पण्डित काजी।।7
धुन्धू कार अनन्त जुग बीते, जा दिन कागज कहो किन चीते।।8
जा दिन थे हम तखत खवासा, तन के पाजी सेवक दासा।।9
संख जुगन परलो प्रवाना, सत पुरुष के संग रहाना।।10
दास गरीब कबीर का चेरा, सत लोक अमरापुर डेरा।।11

❖ आरती नं. 14 का सरलार्थ :- संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी का साक्षात्कार हुआ था। परमेश्वर ने अपने द्वारा रची सृष्टि का आदि से वर्तमान तक का सारा ज्ञान बताया। उसी ज्ञान को संत गरीबदास जी ने बताया है, कहा है कि 'अब मैं वास्तविक निर्णायक आरती अर्थात् पद्य भाग में वर्णित करके वास्तविक ज्ञान बताता हूँ।{अदली=न्यायकारी अर्थात् निर्णायक, असल=वास्तविक, आरती=पद्य भाग में अर्थात् स्तुति रूप में, पठाऊँ=भेजता हूँ अर्थात् संदेश देता हूँ।} युगों-युगों का लेखा (खाता) लाकर सृष्टि रचना का ज्ञान कराता हूँ।(1)

❖ मैं उस समय भी जिस समय न पिण्ड (शरीर), न प्राण (जीव), न पानी था, न पवन, न पृथ्वी तथा न आकाश था।(2)

❖ पौराणिक संतजनों की धारणा है कि कच्छ, मच्छ, कूरंभ आदि के ऊपर सृष्टि ठहरी (रूकी) है। उसके विषय में बताया है कि उस समय न तो कच्छ-मच्छ अवतार हुए थे, न कूरंभ उत्पन्न हुआ था और न चाँद तथा सूर (सूरज) तथा न कोई द्वीप जन्मा था।(3)

❖ न शेष नाग की उत्पत्ति हुई थी, न गणेश जी की, न ब्रह्मा जी की, न महेश जी (शिव जी) की उत्पत्ति हुई थी। न ऋषि नारद जन्मा था, न शारद (शारदा बेटी ब्रह्मा), न विश्वकर्मा (पुत्र ब्रह्मा) उत्पन्न हुआ था।(4)

❖ परमेश्वर कबीर जी द्वारा बताए सृष्टि रचना के ज्ञान को संत गरीबदास जी ने वर्णन करते हुए बताया है कि जो 84 सिद्ध माने जाते हैं और 33 करोड़ देवता महिमा के पात्र बने हैं और जिन नौ अवतारों तथा 24 अवतारों को भक्त समाज परमात्मा रूप मानकर पूज रहा है, उन सबका भी आस्तित्व नहीं था।(5)

❖ पाँच तत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन तथा आकाश तत्व) उत्पन्न नहीं हुए थे और न तीनों गुण (रजगुण, सतगुण तथा तमगुण) उत्पन्न हुए थे। न नाद जो वचन के शिष्य बनते हैं तथा जो बिंद अर्थात् महंत परंपरा भी नहीं थी तथा न घट (संतभाषा में शरीर को घट कहते हैं) अर्थात् शरीर तथा न शरीर का सीना यानि छाती आदि अंग नहीं थे। जो सीना ठोककर शरीर के बलवान होने का गर्व करते हैं, ये भी नहीं थे।(6)

❖ पहले समय में न तो चित्र तथा गुप्त दो लेखाकार थे जो मानव के शुभ-अशुभ कर्म लिखते थे। न उस समय यह कृत्रम (काल की बनी रचना) बाजी (सृष्टि) थी। उस समय काल का न्यायधीश (धर्मराय) तथा हिन्दुओं के गुरू पंडित तथा मुसलमानों के गुरू काजी-मुल्ला आदि भी नहीं थे।(7)

❖ संत गरीबदास जी ने कहा है कि आज आप ज्ञान प्रचार करते हो कि चित्र तथा गुप्त सबके शुभ-अशुभ कर्मों को लिखते हैं। जिस समय काल लोक नहीं बना था। अनन्त युग तक यहाँ अँधकार (धुन्धुकार) था। उस समय किसके शुभ-अशुभ कर्मों को कागज पर किसने लिखा (कागज चीता) था।(8)

❖ अपनी स्थिति भी स्पष्ट की है कि कहीं कोई प्रश्न उत्पन्न करे कि फिर गरीबदास जी कहाँ थे? उसका समाधान भी साथ के साथ कर दिया है। कहा है कि उस समय सतलोक आदि अमर लोकों की रचना परमेश्वर कबीर जी ने कर रखी थी। उन दिनों मैं परमेश्वर के तख्त (सिहांसन) के निकट अर्थात् उनके पास खवासा (नौकर) था। मैं उसी समय से अमर शरीर धारण किए था। मैं शरीर का पाजी (धारण करने वाला, पाजी का अर्थ अज्ञानी भी होता है) था तथा परमात्मा का (दास) गुलाम सेवक (सेवादार) था।(9)

❖ शंखों युगों तक यहाँ काल लोक में प्रलय रही, यह परवाना (लिखित प्रमाण) है। मैं सतपुरूष जी के साथ रहता था।(10)

❖ संत गरीबदास जी ने स्पष्ट कर दिया है कि मैं परमेश्वर कबीर जी का चेरा (नौकर) हूँ और मेरा सतलोक (अमर स्थान) डेरा (निवास स्थान) है।(11)

सोलह शंख पर हमरा तकिया (स्थान–लोक), हम गगन मंडल के जिन्दा।
हुकम हिसाबी हम चल आए, काटन जम का फंदा।।

भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि सतलोक यहाँ पृथ्वी से 16 शंख कोस (48 शंख कि.मी.) दूर है। वहाँ से परमेश्वर की आज्ञा से चलकर आया हूँ। भक्ति का सत्य ज्ञान तथा सच्चे नाम जाप से काल द्वारा रचा जन्म-मरण का फंदा काटने आया हूँ।

वाणी :- ऐसी आरती पारख लीजै, तन मन धन सब अर्पण कीजै।।1
जाकै नौ लख कुञज दिवाले भारी, गोवर्धन से अनन्त अपारी।।2
अनन्त कोटि जाकै बाजे बाजैं,अनहद नाद अमरपुर साजैं।।3
सुन्न मण्डल सतलोक निधाना, अगम दीप देख्या अस्थाना।।4
अगर दीप में ध्यान समोई, झिलमिल झिलमिल झिलमिल होई।।5
तातें खोजो काया काशी, दास गरीब मिले अविनासी।।6

❖ आरती नं. 15 का सरलार्थ :- जो आरती अर्थात् परमात्मा की महिमा करते हैं, उसकी परख करें। सत्य-असत्य की जाँच करें। फिर तन-मन-धन समर्पित करें अर्थात् परमात्मा की यथार्थ महिमा को जानने के पश्चात् साधक को चाहिए कि पूर्ण रूप से भक्ति पर लग जाए अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिए न्यौछावर हो जाए।(1)

❖ जिस पूर्ण परमात्मा के आधीन नौ लाख बड़े-बड़े कुंज अर्थात् महल हैं जो मन्दिरनुमा लगते हैं।(दिवाले=देवालय जिनमें मोक्ष प्राप्त देव स्वरूप आत्माऐं रहती

हैं) और गोवर्धन पर्वत जैसे तो सतलोक में अनन्त पवित्र परिक्रमा स्थान हैं।(2)

❖ उस पूर्ण परमात्मा के सच्चखण्ड में असँख्यों साज-बाजों की धुन हो रही हैं और अनहद नाद (निरंतर मीठी आवाज में होने वाला शब्द) भी वहाँ अमरपुर में साज रहा है अर्थात् शोभा बना रहा है।(3)

❖ सतलोक ऊपर सुन्न यानि खाली स्थान के पार है। क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष की सीमा के पास एक सुन्न स्थान है, वहाँ से आगे सतलोक है, उसे सुन्न मण्डल कहा है। उसमें जाने के पश्चात् अगम दीप अर्थात् अलख लोक देखा जो सतलोक से आगे का स्थान है।(4)

❖ अलख लोक से भी अगर अर्थात् आगे के स्थान में फिर ध्यान लगाया तो देखा वहाँ पर तो प्रकाश ही प्रकाश है और प्रकाश झिलमिल-झिलमिल हो रहा है। वहाँ अमर हँस रहते हैं।(5)

❖ संत गरीबदास जी ने कहा है कि ऊपर के लोकों में सुहावना दृश्य देखने को मिलता है। इसलिए काशी में परमात्मा खोजना व्यर्थ है। इस काया (मानव) शरीर की रचना जानों और भक्ति करो जिससे वह सतलोक आदि अमर लोकों का अविनाशी परमात्मा प्राप्त हो जाएगा।(6)

वाणी :- ऐसी आरती अपरम् पारा, थाके ब्रह्मा वेद उचारा।।1
अनन्त कोटि जाकै शम्भु ध्यानी, ब्रह्मा संख वेद पढैं बानी।।2
इन्द्र अनन्त मेघ रस माला, शब्द अतीत बिरध नहीं बाला।।3
चन्द सूर जाके अनन्त चिरागा, शब्द अतीत अजब रंग बागा।।4
सात समुन्द्र जाकै अंजन नैना, शब्द अतीत अजब रंग बैना।।5
अनन्त कोटि जाकै बाजे बाजें, पूर्णब्रह्म अमरपुर साजैं।।6
तीस कोटि रामा औतारी, सीता संग रहती नारी।।7
तीन पद्म जाकै भगवाना,सप्त नील कन्हवा संग जाना।।8
तीस कोटि सीता संग चेरी, सप्त नील राधा दे फेरी।।9
जाके अर्ध रूंम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्णब्रह्म हमारा।।10
दास गरीब कहे नर लोई, यौह पद चीन्है बिरला कोई।।11

❖ आरती नं. 16 का सरलार्थ :- इस आरती में सतपुरूष की विस्तृत महिमा बताई है। परमात्मा की आरती (स्तुति) ऐसी अपरमपार (अथाह) है कि श्री ब्रह्मा जी भी 4 युगों तक ध्यान समाधि लगाकर साधना करके थक गए, परमात्मा की प्राप्ति नहीं हुई और वेदों को सुना-सुनाकर महिमा बताने तथा जानने की कोशिश की, परंतु सफलता नहीं मिली।(1)

❖ जिस परमेश्वर के आधीन अनन्त करोड़ शिव शम्भु जैसे ध्यानी अर्थात् परमात्मा के खाजी हैं अर्थात् शिव जी जैसी अनेक महान आत्माऐं हैं तथा ब्रह्मा जी जैसे शंखों वेद वाणी पढ़ने वाले विद्वान उस परमात्मा के बच्चे सतलोक में हैं।(2)

❖ काल लोक में तो एक इन्द्र है तथा उसकी 96 करोड़ मेघमाला (बादलों का समूह) है। उस सतपुरूष के लोक में अनन्त इन्द्र हैं तथा अनन्त मेघमालाऐं हैं। वह परमात्मा शब्द अतीत अर्थात् अवर्णनीय है। वह न वृद्ध है, न बच्चा है अर्थात् वह युवा

है। वेदों में परमेश्वर को युवा कबीर कह के उपमा दी है।(3)

❖ उस परमात्मा के लोक में चाँद तथा सूर (सूर्य) जैसे तो अनन्त चिराग अर्थात् दीप समान हैं क्योंकि परमात्मा का स्वयं का प्रकाश बहुत तेज है। वह परमात्मा शब्द अतीत अर्थात् अवर्णनीय है। उसके शरीर का रंग अद्भुत (बागा) सफेद है।(4)

❖ उस परमात्मा की महिमा क्या कहूँ? काल लोक के 7 समुद्र तो उसकी आँखों के काजल के समान हैं। शब्द अतीत अर्थात् वह परमात्मा अवर्णनीय है तथा उसका अद्भुत रंग है। उसके बैना अर्थात् वचन भी अद्भुत हैं।(5)

❖ उस परमात्मा के अनन्त करोड़ अर्थात् असंख्यों बाजे बज रहे हैं और पूर्ण ब्रह्म अमरपुर अर्थात् सत्यलोक (सतलोक) में साजै अर्थात् शोभामान है।(6)

❖ जिनको आप श्री विष्णु अवतार श्री राम कहते हो, ऐसे-ऐसे तीस करोड़ राम अवतार धार चुके हैं और सीता उनकी पत्नी रूप में साथ रही है। उस अवतार को यहाँ क्या सुख मिला? वह उनके जीवन की घटनाओं से पता चलता है। फिर उसके पुजारियों को क्या सुख होगा?(7)

❖ उस परमात्मा के लोक में श्री विष्णु जी के अवतार रामचंद्र जी जैसी शक्ति वाले तो तीन पदम (3,00,00,00,00,00,00,000=30 लाख अरब) भगवान हैं और जिसके सप्त नील कन्हवा संग जाना अर्थात् श्री कृष्ण जी जैसे तो 7 नील (7,00,00,00,00,00,000) अच्छी आत्माऐं हैं। भावार्थ है कि वह पूर्ण परमात्मा कितना समर्थ है, यह इस व्याख्या से स्पष्ट हो जाता है।(8)

❖ पूर्ण परमात्मा की परिक्रमा सीता जैसी सती देवी आत्माऐं तीन करोड़ कर रही हैं और राधा जैसी महबूबा भी सात नील उस पूर्ण परमात्मा के प्रेम में चक्कर काट रही हैं।(9)

❖ जिस परमात्मा के अर्ध रूम अर्थात् बाल के आधे भाग के ऊपर शकल पसारा अर्थात् सर्व ब्रह्माण्ड बने हैं। (काल ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्ड, अक्षर पुरूष के 7 शंख ब्रह्माण्ड तथा अन्य असँख्यों ब्रह्माण्ड जिसके आधे बाल कर ठहरे हैं।) हमारा पूर्ण ब्रह्म ऐसा शक्तिशाली है। एक अन्य वाणी में भी स्पष्ट किया है कि :-

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।(10)

❖ संत गरीबदास जी ने सब नर-लोई (नर-नारी) से कहा है कि यह पद अर्थात् परम पद का रहस्य कोई बिरला (इक्का-दुक्का) ही चीन्हता है अर्थात् पहचान करता है।

भावार्थ :- जैसे गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तक तो तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की भक्ति करने वालों की स्थिति बताई है। उनको राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है। फिर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 के ही श्लोक 16 से 18 तक अपनी (गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म की) साधना करने वालों की जानकारी दी है। बताया है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के साधक करते हैं।

1. आर्त :- जो संकट निवारण के लिए वेद मंत्रों से अनुष्ठान करता है। उसको मोक्ष से कोई लेना-देना अर्थात् सरोकार नहीं है।

2. अर्थार्थी :- जो धन लाभ, व्यवसाय में लाभ के लिए अर्थात् धन प्राप्ति के लिए वेद मंत्रों से अनुष्ठान करता है। वह यहीं तक सीमित है, मोक्ष की तमन्ना नहीं होती।

3. जिज्ञासु :- जो परमात्मा की महिमा जानने की इच्छा से साधु-संतों, ऋषि-मंडलेश्वरों से आध्यात्म ज्ञान सुनता है। फिर स्वयं वक्ता-प्रचारक बन बैठता है। उसकी इतनी ही उपलब्धि है। वह बस इसी को पूजा मानता है। इन उपरोक्त तीनों को गीता ज्ञानदाता ने त्यागा (Reject किया) है और अपने चौथे प्रकार के ज्ञानी भक्त को श्रेष्ठ माना है।

4. ज्ञानी :- ज्ञानी उसको कहते हैं जिसको यह ज्ञान हो गया है कि :- 1. मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता। 2. मनुष्य जन्म मिलने के पश्चात् यदि सत्य साधना नहीं करता तो मानव जीवन सार्थक नहीं होता। 3. उसको यह भी ज्ञान होता है कि पूर्ण मोक्ष तो पूर्ण परमात्मा की भक्ति से ही प्राप्त हो सकता है। 4. अन्य देवताओं की भक्ति करना व्यर्थ है जिसको गीता ज्ञान दाता ने भी गीता अध्याय 7 के ही श्लोक 12 से 15 में अन्य देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की भक्ति को व्यर्थ कहा है। 5. उसको यह भी ज्ञान होता है कि परमात्मा की तथा उसकी भक्ति की साधना की जानकारी चारों वेदों में वर्णित है, अन्य किसी ग्रन्थ में नहीं है, परंतु ज्ञानी आत्माओं को तत्वदर्शी संत नहीं मिला जिसके विषय में यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में तथा वेदों के सारांश श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 32, 34 में कहा है। जिस कारण से यजुर्वेद के अध्याय 40 मंत्र 15 में लिखे ओम् (ॐ) नाम को पूर्ण परमात्मा का मंत्र मानकर साधना की जिससे परमात्मा नहीं मिला क्योंकि यह ओम् नाम तो ब्रह्म का जाप है। प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में तथा श्रीमद् देवीपुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी) के 7वें स्कंद में पृष्ठ 562-563 पर लिखा है। श्री देवी जी ने राजा हिमालय से ब्रह्म उपदेश किया है। कहा है कि तुम ब्रह्म की पूजा करो। उसका ओम् (ॐ) नाम है। उसका जाप करो। आप ब्रह्म को पा जाओगे। वह ब्रह्म, ब्रह्मलोक रूपी दिव्य आकाश में रहता है। इससे सिद्ध हुआ कि ओम् (ॐ) नाम का जाप ब्रह्म का है।

ज्ञानी आत्माओं (ऋषियों) ने गलती से ओम् नाम पूर्ण ब्रह्म का मानकर साधना की। जिस कारण से वे पूर्ण मोक्ष प्राप्त न करके ब्रह्म लोक में चले गए। ब्रह्मलोक में गए साधक भी पुनरावर्ती में हैं अर्थात् जन्म-मरण के चक्र में ही रहते हैं। जिसका प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में है। कहा है कि ब्रह्मलोक पर्यन्त सब लोक पुनरावर्ती में हैं अर्थात् ब्रह्मलोक में गए साधक भी संसार में जन्म लेते हैं। इसलिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम (सत्यलोक=अमर लोक) को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी संत मिलने के पश्चात् तत्वज्ञान को समझकर उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में नहीं आते। जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्माण्डों की रचना की है, उसकी ही भक्ति करो।

आरती नं. 16 की वाणी नं. 11 में दो रहस्य हैं जिनको समझाने के लिए यह वर्णन चल रहा है। 1. पद 2. बिरला कोई।

1. पद तो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 वाला परम पद है जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में नहीं आते।

2. जानत बिरला कोई :- जैसाकि उपरोक्त वर्णन में कहा है कि गीता ज्ञान दाता ने अपने चार प्रकार के साधकों में से ज्ञानी को अच्छा (उदार) बताया है। गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि ये ज्ञानी आत्मा हैं तो उदार अर्थात् नेक हैं। (तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण) ये मेरी (अनुतमाम् गति) अश्रेष्ठ अर्थात् घटिया गति में ही स्थित हैं अर्थात् जन्म-मरण वाली गति ही मिली। गीता ज्ञान दाता स्वयं भी जन्म-मरण के चक्र में है। प्रमाण गीता अध्याय 2 के श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5 तथा अध्याय 10 श्लोक 2 में है।

गीता अध्याय 7 श्लोक 19 में कहा है कि मेरी भक्ति कोई ज्ञानवान (ज्ञानी आत्मा) बहुत-बहुत जन्मों के किसी अंत के जन्म में करता है अन्यथा अन्य देवताओं की भक्ति करता रहता है। परंतु यह बताने वाला संत तो दुर्लभ है कि वासुदेव ही सब कुछ है। वही पूजा के योग्य है, वही सर्व उत्पत्ति करता है, वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह पापनाशक है। वही पूर्णमोक्षदायक तथा पूर्ण ब्रह्म है। यह ज्ञान तो कोई बिरला ही जानता है।

यही प्रमाण संत गरीबदास जी ने 'झूमकरा' के अंग में दिया है, कहा है कि :-

तत्वभेद कोई ना कहे रै झूमकरा, पैसे ऊपर नाच सुनो रै झूमकरा।
कोट्यों मध्य कोई नहीं रै झूमकरा, अरबों में कोई गरक सुनो रै झूमकरा।।

भावार्थ है कि तत्वभेद किसी के पास कहने को है नहीं, सब पैसा लूटने के लिए संत व गुरू का वेश बनाकर नाच रहे हैं। तत्वभेद को जानने वाला करोड़ों में नहीं मिलेगा, संपूर्ण संत तो अरबों में मिलेगा जो तत्वज्ञान व भक्ति में गरक होगा। गरक का अर्थ है ज्ञानवान। जैसे गाँव में धनी व्यक्ति को कहते हैं कि धन में गरक है तथा माल (पहलवान) को कहते हैं कि हांगे में गरक है (शक्ति में गरक है), ताकत बहुत है। यह वाणी नं. 11 का सरलार्थ है।(11)

❑ **आरती का सरलार्थ सम्पूर्ण हुआ। इसके साथ अन्य महिमा की वाणी भी है जो महत्वपूर्ण है, उनका भी सरलार्थ करता हूँ।**

वाणी :- गरीब, सत्वादी सब संत हैं, आप आपने धाम।
आजिज की अरदास है, सब संतन प्रणाम।।

❖ **सरलार्थ :- सर्व संतजन अपने-अपने स्तर पर सत्य हैं। सत्य भाषण करते हैं। सर्व संतों से मेरी प्रार्थना है कि मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए। संत होगा तो तत्वज्ञान वाला ही होगा, सतवादी ही होगा। असन्त झूठा प्रचार करता है।**

वाणी :- गुरू ज्ञान अमान अडोल अबोल है, सतगुरू शब्द सेरी पिछानी।
दास गरीब कबीर सतगुरू मिले, आन अस्थान रोप्या छुड़ानी।।

❖ **सरलार्थ :- यह एक शब्द की अन्तिम वाणी है। यहाँ प्रार्थना रूप में लिखी गई है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि गुरू जी का ज्ञान शांतिदायक (अमान) है। अडोल**

अर्थात् टिकाऊ है, डामाडोल नहीं है, सत्य है। अबोल अर्थात् अवर्णनीय है। सतगुरू को सत्य ज्ञान रूपी शब्द से पहचानो। मुझे कबीर परमेश्वर सतगुरू रूप में मिले। उनके ज्ञान-महिमा प्रचार के लिए गाँव-छुड़ानी (जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा) में अस्थान (भक्ति आश्रम) रोप दिया। अन्य शब्दों में स्थापित कर दिया है।

शब्द :- दीनन के जी दयाल भक्ति बिरद दीजिए,
खाने जाद गुलाम अपना कर लीजिए।टेक।।
खाने जाद गुलाम तुम्हारा है सही।
मेहरबान महबूब जुगन जुग पत रही।।1
बांदी का जाम गुलाम गुलाम गुलाम है।
खड़ा रहे दरबार, सु आठों जाम है।।2
सेवक तलबदार, दर तुम्हारे कूक ही।
अवगुण अनन्त अपार, पड़ी मोहि चूक ही।।3
मैं घर का बांदी जादा, अर्ज मेरी मानिये।
जन कहते दास गरीब अपना कर जानिये।।4

❖ सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने साधकों को अपने माध्यम से संकेत किया है कि परमात्मा से इस प्रकार आधीन भाव से विनय करनी चाहिए :-

हे परमेश्वर! आप दीन दुखियों पर दया करने वाले हैं। मुझ दीन को भक्ति का स्वभाव देने की कृपा करें। मैं खाने जाद (परंपरागत) गुलाम (दास) हूँ। मुझे अपना दास समझ लो।(टेक)

❖ मैं आपका खाने जाद गुलाम हूँ। {पहले गुलामों के कबीले होते थे। राजा लोग तथा बड़े पूंजीपति गुलाम (दास) रखते थे। राजा उन गुलामों को पसंद करते थे जो कबीलों के होते थे, उनको खानाबदोश भी कहते थे। वे खानदानी गुलाम माने जाते थे अर्थात् गुलाम खानदान (कुल) से होने के कारण खानेजाद कहा है जिनको विश्वसनीय माना जाता था} आधीन भाव को दर्शाने के लिए कहा है कि मुझे ऐसा आधीन समझना जैसा खानेजाद गुलाम होता है। मैं वास्तव में उसी खानेजाद गुलाम के भाव से आप जी से प्रार्थना कर रहा हूँ कि आपकी शरण में ही युगों-युगों भक्त की सनद रही है।(1)

❖ बांदी का जाम गुलाम हूँ, बार-बार कहता हूँ कि मैं आपका गुलाम हूँ। अब अन्य परिभाषा गुलाम की बताई है या राजा के सेठ बांदी (नौकरानियां) रखते थे जो उनकी स्त्रियों के लिए नौकरानी होती थी। उनके बच्चे भी उसी प्रकार गुलाम का जीवन जीने के लिए अभ्यस्त हो जाते थे। कहा है कि मुझे उस बांदी के बच्चे जैसा गुलाम जानना दाता! मुझे शक्ति देना कि मैं आपकी भक्ति करने के लिए आपके दरबार में सत्संग में या द्वार पर खड़ा रहूं, यह श्रद्धा भावना प्रकट करते हुए कहा है।(2)

❖ मैं आपका सेवक हूँ। आपका तलबदार है। (बुलाते ही दौड़ा आऊँ) मैं सत्य कह रहा हूँ। मैं आपके द्वार पर कूक (पुकार कर) रहा हूँ कि मेरे में अनन्त अवगुण हैं, बहुत दोष हैं।(3)

❖ मैं आपका पालतु (घर का) बांदीजादा (दासी का बच्चा) हूँ, मेरी अर्ज स्वीकार

कीजियो। संत गरीबदास जी हमें समझा रहे हैं कि ऐसे कहो कि हे प्रभु! आप मुझे अपना दास मान लो, मेरा उद्धार हो जाएगा। जब परमात्मा भक्त को अपना मान लेता है तो फिर इतना ध्यान रखता है जैसे गाय अपने बच्छे का रखती है। वाणी है कि:- ज्यों बच्छा गऊ की नजर मैं, यूं सांई कूं संत। भक्तों के पीछे फिरै, भक्त वच्छल भगवंत।।**(4)**

साखी

वाणी :- गरीब, जल थल साक्षी एक है, डुंगर डहर दयाल।
दसों दिशा कुं दर्शनं, ना कहीं जोरा काल।।1

❖ सरलार्थ :- हे परमात्मा! आप जल-थल (पृथ्वी) तथा डुंगर (ऊँचे स्थानों पर) डहर (नीचे स्थानों) पर तथा दसों दिशाओं में दिखाई देते हो, आप दयाल हो। आपकी शरण में भक्त को काल तथा जौरा (मृत्यु) का भय नहीं रहता।(1)

वाणी :- गरीब, जै जै जै करुणामई, जै जै जै जगदीश।
जै जै जै तूं जगत गुरु, पूर्ण बिश्वे बीस।।2

❖ सरलार्थ :- हे जगत के स्वामी (जगदीश)!, हे करूणामय! आपकी जय-जयकार हो। हे जगत गुरू अर्थात् विश्व को आध्यात्मिक ज्ञान देने वाले! आपकी जय-जयकार हो। आप पूर्ण सतगुरू हो, विश्वे बीस हो। {पहले जमीन की पैमाइस नाप (Measurement) बीघों में होती थी, एकड़ या किले में नहीं होती थी। एक कच्चा बीघा होता था, वह 12 बिसवे का होता था। पक्का बीघा 20 बिसवे का होता था। जो बीस बिसवे का होता था, वह पूर्ण होता था, पक्का बीघा होता था। उसी के आधार से यह मुहवरा हरियाणा प्रान्त में प्रचलित है। जैसे किसी व्यक्ति ने कोई समाचार बताया। उसके चले जाने के पश्चात् अन्य कोई उस समाचार को सुनाता तो पूछा करते कि कौन कह रहा था? बताया जाता कि अमूक व्यक्ति ने बताया है तो अन्य कहते थे कि बीस बिसवे बात है अर्थात् कोई कमी नहीं, वह सच्चा व्यक्ति है।} इस वाणी में उसी मुहावरे का प्रयोग करके संत गरीबदास जी ने परमेश्वर की महिमा बताई है कि आप बीस बिसवे पूर्ण जगत गुरू हो।(2)

वाणी :- राग रूप रघुवीर है, मोहन जाका नाम।
मुरली मधुर बजावही, गरीब दास बलि जांव।।3

❖ सरलार्थ :- सतलोक में शब्द-राग (गाने) चलते हैं जो आत्मा को मोहित करते हैं तथा सतलोक में जो मुरली परमेश्वर कबीर जी बजा रहे हैं, वैसी तो श्री कृष्ण जी भी नहीं बजा सकते थे। संत गरीबदास जी ने कहा है कि हे रघुबीर! (परमवीर अर्थात् श्रेष्ठ योद्धा) आप राग रूप हैं अर्थात् आपके लोक में मधुर राग हो रहा है। आप भी आकर्षित करते हैं। आपमें राग अर्थात् मोह होना स्वाभाविक है। आप मधुर मुरली बजाते हैं।(3)

एक मलूकदास नाम के महान संत हुए हैं। उनको परमेश्वर मिले थे जैसे संत गरीबदास जी को मिले। उनको सतलोक लेकर गए, फिर वापिस छोड़ा। उसके पश्चात् मलूक दास जी को विश्वास हुआ कि काशी वाला जुलाहा पूर्ण परमात्मा है।

संत मलूक दास जी ने परमेश्वर कबीर जी की महिमा अपने शब्दों में बताई है :-

शब्द :- जपो रे मन सतगुरु नाम कबीर।।टेक।।
एक समय गुरु बंसी बजाई कालंद्री के तीर।
सुर–नर मुनि थक गए, रूक गया दरिया नीर।।
काँशी तज गुरु मगहर आये, दोनों दीन के पीर।
कोई गाढ़े कोई अग्नि जरावै, ढूंडा न पाया शरीर।।
चार दाग से सतगुरु न्यारा, अजरो अमर शरीर।
दास मलूक सलूक कहत हैं, खोजो खसम कबीर।।

एक समय परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हम भी कालंद्री (यमुना) नदी के किनारे बाँसुरी बजाएंगे। बहुत सारे दर्शक इकट्ठे हो गए। परमेश्वर कबीर जी मुरली बजाने लगे तो स्वर्ग लोक के देवता भी आकर्षित होकर मुरली सुनने आ गए। सर्व दर्शक यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि जमना दरिया (यमुना नदी) का जल भी रूक गया। वरूण देवता तो जल में खड़े होकर मुरली की धुन सुनने लगे। यह तो संत मलूकदास जी ने भी साक्षी दी है और संत गरीबदास जी ने कहा है कि ऐसी मधुर मुरली बजाते हो। मैं (गरीबदास) आप पर बलिहारी जाऊँ।

वाणी :- गरीब, बांदी जाम गुलाम की, सुनियों अर्ज अवाज।
यौह पाजी संग लीजियो, जब लग तुमरा राज।।4

❖ सरलार्थ :- हे परमेश्वर! मुझे बांदी का पुत्र गुलाम जानकर मेरी अर्ज अर्थात् प्रार्थना की आवाज सुन लो। मुझ पाजी (मूर्ख) को अपने साथ रखना, जब तक आपका राज है। परमात्मा का राज तो अटल है, शाश्वत है। इसलिए साथ रहने वाला भी शाश्वत अर्थात् अविनाशी होगा। इस भाव से संत गरीबदास जी ने कहा है।(4)

वाणी :- गरीब, परलो कोटि अनन्त हैं, धरनी अम्बर धौल।
मैं दरबारी दर खड़ा, अचल तुम्हारी पौलि।।5

❖ सरलार्थ :- हे परमेश्वर! धरती, अम्बर (आकाश) तथा धौल (पौराणिक मानते हैं कि धौल यानि बैल के ऊपर पृथ्वी रखी है, भले ही यह असत्य है। वर्तमान में तो यह प्रमाणित हो चुका है कि धौल पृथ्वी नहीं उठाए है, परंतु जिस समय यह वाणी बोली गई, उस समय यह धारणा आमजन की थी) अर्थात् बैल भी प्रलय काल में नष्ट हो जाते हैं। ऐसी-ऐसी असँख्य परलो (प्रलय) हो चुकी है। मैं आपका दरबारी आपका नौकर लगकर आपके दर अर्थात् द्वार पर खड़ा हूँ। आपकी पौल (पौली) अर्थात् महल (सतलोक का सफेद गुमज वाला स्थान) अचल अर्थात् कभी न चलने (नाश न होने) वाला है। इसलिए मुझे कोई टेन्शन (चिंता) नहीं है।(5)

वाणी :- गरीब, समर्थ तूं जगदीश है, सतगुरु साहिब सार।
मैं शरणागति आईया, तुम हो अधम उधार।।6

❖ सरलार्थ :- हे जगदीश! आप समर्थ हैं। आप ही सार सतगुरू अर्थात् वास्तविक सतगुरू तथा वास्तविक साहेब (परमेश्वर) हैं। मैं आपकी शरण आ गया हूँ और आप तो अधम (नीच) का उद्धार करने वाले हो, इसलिए मेरा उद्धार निश्चित है।(6)

वाणी :- गरीब, सन्तों की फुलमाल है, वरणौं वित्त अनुमान।
मैं सबहन का दास हूं, करो बन्दगी दान।।7

❖ सरलार्थ :- हे परमेश्वर! आपके परम संत तो आपके गले की फूलों वाली माला के समान आपके पास शुशोभित हैं। मैं आपकी महिमा अपने वित्त अर्थात् सामर्थ्य के अनुसार वर्णन कर रहा हूँ। मैं सब संतों का भी दास हूँ। हे प्रभु! मुझे बंदगी (भक्ति की साधना) दान दीजियो अर्थात् मेरी भक्ति में रूचि बढ़ाईयो।(7)

वाणी :- गरीब, अरज अवाज अनाथ की, आजिज की अरदास।
आवण जाणा मेटियो, दीज्यो निश्चल वास।।8

❖ सरलार्थ :- हे परमेश्वर! मुझ अनाथ, आजिज (छोटे दास) की प्रार्थना वाली पुकार (अर्ज-आवाज) है कि मेरा आवण (संसार में जन्म लेकर आना) तथा जाणा (मृत्यु के उपरांत संसार छोड़कर जाना) मेटियो (समाप्त कीजिए) और निश्चल बास (स्थाई निवास सतलोक में) दीजियो।(8)

वाणी :- गरीब, सतगुरु के लक्षण कहूं, चाल विहंगम बीन।
सनकादिक पलड़ै नहीं, शंकर ब्रह्मा तीन।।9

❖ सरलार्थ :- सतगुरू के लक्षण कहता हूँ :- सतगुरू जब आकाश मण्डल यानि सतलोक में जाता है तो बिना मार्ग के विहंगम (पक्षी) की तरह चाल (गति) होती है। जैसे बीन की आवाज सुनकर शब्द के कारण उस स्थान पर सर्प पहुँच जाते हैं जहाँ बीन बज रही होती है। इसी प्रकार परमात्मा सतलोक जाने के लिए साधक को बताते हैं कि सतलोक की बीन (मुरली) के शब्द को आधार बनाकर उस ओर उड़ चलना। इस ज्ञान के समान ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव और सनकादिक चारों का ज्ञान पलड़े नहीं है अर्थात् बराबरी नहीं कर सकता।(9)

वाणी :- गरीब दूजा ओपन आपकी, जेते सुर नर साध।
मुनियर सिद्ध सब देखिया, सतगुरु अगम अगाध।।10

❖ सरलार्थ :- आपकी महिमा दूजा (द्वितीय) है। जैसे परमात्मा एक है। उसकी महिमा दूसरे स्थान पर इसलिए है कि अन्य को समझाने के लिए परमात्मा और परमात्मा शक्ति ऐसे दूसरे नम्बर की आपकी ओपन (महिमा) है। जितने सुर (देवता) नर (भक्तजन) तथा साधु हैं। इन सबसे अधिक आपकी महिमा है। मुनिश्रेष्ठ तथा सिद्ध कहलाने वाले सब देख लिये। सतगुरू कबीर जी अगम अगाध अर्थात् सबसे आगे हैं तथा गहरे ज्ञान युक्त हैं।(10)

वाणी :- गरीब, सतगुरु पूर्ण ब्रह्म हैं, सतगुरु आप अलेख।
सतगुरु रमता राम हैं, या में मीन न मेख।।11

❖ सरलार्थ :- सतगुरू कबीर जी ही पूर्ण ब्रह्म हैं, सतगुरू जी ही अलेख (अवर्णनीय) हैं। सतगुरू जी ही रमता राम अर्थात् कवियों की तरह आचरण करके पृथ्वी पर विचरण करने वाले तथा ऊपर के लोकों में भी रहने वाले रमते राम हैं। इसमें कोई मीन-मेख अर्थात् कमी नहीं है।(11)

वाणी :- पूर्ण ब्रह्म कृपानिधान, सुन केशो करतार।

गरीब दास मुझ दीन की, रखियो बहुत सम्भार।।12

❖ **सरलार्थ :- जिस समय काशी शहर में परमेश्वर कबीर जी ने अन्य केशव बनजारे का रूप बनाकर Double Roll (दो रूप बनाकर लीला की थी) किया था। उस समय कबीर रूप में अपने ही दूसरे रूप केशव की महिमा करके उपस्थित जनों को अपनी महिमा बता रहे थे। कहा है हे पूर्णब्रह्म कृपानिधान केशव करतार! मेरी अर्ज सुनो। गरीबदास जी ने बताया है कि कबीर जी ने कहा कि मुझ दीन (गरीब) अर्थात् निर्धन की आगे भी बहुत संभाल रखना।(12)**

वाणी :- गरीब, पंजा दस्त कबीर का, सिर पर राखो हंस।
जम किंकर चम्पै नहीं, उधर जात है वंश।।13

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी के कृपा पात्र संत से दीक्षा लेकर आजीवन मर्यादा में रहकर जो भक्ति करते हैं, उनके सिर पर परमेश्वर कबीर जी का आशीर्वाद भरा पंजा बना रहता है। संत गरीबदास जी ने राय दी है कि हे हंस! (निर्विकार भक्त) आप परमेश्वर कबीर जी के आशीर्वाद के पात्र बने रहना। फिर आपको यम किंकर अर्थात् यम के दूत नहीं चम्पैंगे अर्थात् उनकी पहुँच आप तक नहीं रहेगी और आप का वंश (कुल) भी आपका अनुसरण करके उद्धार को प्राप्त होगा।(13)**

वाणी :- अलल पंख अनुराग है, सुन्न मंडल रहै थीर।
दास गरीब उधारिया, सतगुरु मिले कबीर।।14

❖ **सरलार्थ :- इस वाणी का सरलार्थ गुरूदेव का अंग की वाणी नं. 100 के सरलार्थ में कर दिया है।**

वाणी :- शरणा पुरुष कबीर का, सब संतन की ओट।
गरीब दास रक्षा करैं, कबहु न लागै चोट।।15

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी की शरण में रहने वाले तथा सब संतों से सद्-व्यवहार करने वाले की परमात्मा रक्षा करते हैं। फिर उस सेवक भक्त को कर्म की चोट (मार) नहीं लगती। सब संतन की ओट का भावार्थ है, परमेश्वर ने कहा है कि :-**

संत दुखाए मैं दुखी, मेरा आपा (आत्मा) भी दुखी होय।
गरीबदास जुलाहा कहै, मेरा संत ना दुखाईयो कोय।।

❖ **यदि साधक परमात्मा के भक्तों (सन्तों) से व्यवहार अच्छा नहीं करेगा तो उनकी आत्मा दुखी होती है। संत दुखी तो परमात्मा दुखी, संत सुखी तो परमात्मा सुखी। जिस कारण सन्तों को ओट (रक्षा का साधन=आड़) बनी रहती है। सन्तों को सुखी रखने से परमात्मा रक्षा करता है। संत भी रक्षा के कारण हुए।(15)**

वाणी :- गरीब, सतवादी के चरणों की, सिर पर डारूं धूर।
चौरासी निश्चय मिटै, पहुंचै तख्त हजुर।।16

❖ **सरलार्थ :- सतवादी (सत्य ज्ञान बोलने वाले, सच्चे वक्ता) के चरणों की धूल सिर पर डालने योग्य होती है अर्थात् वे इतने सम्मान के पात्र हैं। उस सत्य वक्ता (सत्य वक्ता है तो साधना भी सत्य ही करेगा) का 84 लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में जन्म-मरण का चक्कर अवश्य मिट जाता है,(समाप्त हो जाता है) यह विश्वास की**

बात है। वह वहाँ पहुँच जाता है जहाँ तख्त हजूर अर्थात् परमेश्वर का सिहांसन है अर्थात् परमात्मा के अमर लोक वाले राज्य में चला जाता है।(16)

वाणी :- शब्द स्वरूपी उतरे, सतगुरु सत कबीर।
दास गरीब दयाल हैं, डिगे बंधावैं धीर।।17

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी शब्द स्वरूप अर्थात् अपने वचन से हल्के प्रकाश का अन्य शरीर बनाकर (शरीर एक वस्त्र के तुल्य है, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 96 मंत्र 20 में भी प्रमाण है कि परमात्मा भद्रा वस्त्रा अर्थात् पवित्र वस्त्र रूपी शरीर धारण करके आते हैं जैसे मनुष्य वस्त्र पहनता है) सतलोक से अवतरित होते हैं। (उतरते हैं) संत गरीबदास जी ने कहा है कि परमात्मा जिस समय मुझे खेतों में मिले, उस समय आकाश में बने सतलोक से उतरे थे। परमात्मा कबीर जी दयालु हैं, (दयावान हैं) डीगे बंधावैं धीर अर्थात् कोई भक्त आपत्ति के कारण परमात्मा पर अविश्वास कर लेता है, उसको तुरंत राहत (सुख) देकर उसकी आपत्ति का निवारण करके उसकी धीर बांधते हैं यानि धैर्य देते हैं।(17)

वाणी :- कर जोरूं विनती करूं, धरूं चरण पर शीश।
सतगुरु दास गरीब हैं, पूर्ण बिसवे बीस।।18

❖ सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा है कि मैं आपसे करबद्ध विनय करता हूँ तथा चरणों में सिर रखकर कहता हूँ कि परमेश्वर कबीर जी बिशवे बीस सतगुरू अर्थात् पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञानयुक्त हैं।(बिशवे बीस की परिभाषा साखी की वाणी नं. 2 में पढ़ें।)(18)

वाणी :- नाम लिये से सब बड़े रिंचक नहीं कसूर।
गरीब दास के चरणां की, सिर पर डारूं धूर।।19

❖ सरलार्थ :- यह वाणी संत गरीबदास जी की अपनी नहीं है। यह किसी प्रशंसक ने बनाई है जिसने आरती के साथ साखी जोड़ी है। फिर भी हमारे लिए संत गरीबदास जी आदरणीय हैं। हम इन्हीं की अमृतवाणी से ज्ञान ग्रहण करते हैं, साधना करते हैं। संत गरीबदास जी का मानव मात्र पर विशेष उपकार है। इसलिए संत गरीबदास जी को भुलाया नहीं जा सकता। जिस महान आत्मा को परमात्मा मिले हैं, उनका नाम बोलने से भी पुण्य होता है।(19)

वाणी :- गरीब, जिस मण्डल साधु नहीं, नदी नहीं गुंजार।
तज हंसा वह देसड़ा, जम की मोटी मार।।20

❖ सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा है कि जिस मण्डल (इलाके=क्षेत्र) में संत नहीं हैं और नदी अर्थात् जल स्रोत नहीं है तो हे हंस! (शुद्ध भक्त!) उस क्षेत्र को त्याग दे, वहाँ पर काल के यम की प्रताड़ना भारी है। वहाँ के व्यक्ति अच्छे नहीं हैं, उनके पुण्य नहीं हैं। जैसे मरूस्थल में जल का अभाव होता है, वहाँ जीवन नरक बन जाता है।(20)

वाणी :- गरीब, जिन मिलते सुख ऊपजै, मिटैं कोटि उपाध।
भुवन चतुर्दस ढूंढिये, परम स्नेही साध।।21

❖ सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने हिदायत दी है कि जिनके दर्शन मात्र से आत्मा

में खुशी उत्पन्न हो और मन के विकार समाप्त होते हैं अर्थात् जब तक संत के पास कोई श्रद्धालु रहता है तो यदि संत सच्चा होगा तो वह सद्विचार सुनाएगा जिससे मन में दोष उत्पन्न नहीं होते जो अनेकों उपाध अर्थात् उत्पातों का कारण होते हैं, वे समाप्त हो जाते हैं। यदि ऐसा महापुरूष 14 लोकों में कहीं पर भी हो, उसकी खोज करो और मानव जीवन धन्य बनाऐं। ऐसे परम स्नेही साध अर्थात् विशेष प्रिय संत को चौदह भुवन में भी खोज लो जो बहुत लाभदायक है।(21)

वाणी :- गरीब, बन्दी छोड़ दयाल जी, तुम लग हमरी दौड़।
जैसे काग जहाज का, सुझत और न ठौर।।22

❖ **सरलार्थ :-** हे बन्दी छोड़ दयावान परमेश्वर जी! हम तत्वज्ञान युक्त भक्तों (सन्तों) की दौड़ आप तक है अर्थात् प्राथमिक तथा अंतिम (First and Final) स्थान आप ही हैं। उदाहरण भी सटीक बताया है कि जैसे कोई कौवा (Crow) समुद्री जहाज (Ship) में बैठा-बैठा समुद्र में जहाज के साथ दूर चला जाता है। उस समय उसको जहाज के अतिरिक्त कोई सुरक्षित स्थान दिखाई नहीं देता। यदि उसको उड़ा भी दिया जाए तो वह फिर से उसी जहाज के ऊपर बैठता है। इसी प्रकार तत्वज्ञान प्राप्त साधक को अपने परमेश्वर कबीर जी तथा तत्वदर्शी गुरू जी के अतिरिक्त कोई संत, सत्संग तथा प्रभु दिखाई नहीं देता जो जन्म-मरण के चक्र तथा काल के जाल से रक्षा कर सके। इसलिए वाणी में भक्त अपनी सच्चाई व्यक्त करते हुए कह रहा है। हे बन्दी छोड़! मेरी दौड़ तो केवल आप परमेश्वर तक ही है। बन्दी छोड़ का अर्थ है बन्द यानि कर्मों के बंधन के कारण काल के लोक में फँसकर जीव अनेकों प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट भोगने के लिए विवश हैं, उससे छुड़ाने वाले।(22)

परमेश्वर कबीर जी ने कहा भी है कि :-

अमर करूं सतलोक पठाऊँ, तातै बन्दी छोड़ कहाऊँ।
बन्दी छोड़ हमरा नामम्, अजर–अमर है अस्थिर ठाठम्।।

व्याख्या :- परमेश्वर कबीर जी ने अपनी समर्थता बताई है कि काल के बंद (कारागार) से अपने भक्त को छुड़वाकर अमर करता हूँ अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्रदान करके उसको सतलोक भेज देता हूँ। {गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहे शाशवतम् स्थानम् अर्थात् सनातन परम धाम तथा परम शांति को जो प्राप्त कराता है, उस परमेश्वर की शरण में जा अर्जुन। वह परमेश्वर गीता ज्ञान देने वाले से अन्य है। वह परमात्मा शाशवत् स्थान प्राप्त कराता है।} इस अमृतवाणी में भी परमेश्वर कबीर जी ने स्वयं प्रमाण भी दिया है कि उस अपने भक्त को सतलोक पठाऊँ अर्थात् सतलोक में भेज देता हूँ। इसलिए मैं बन्दी छोड़ कहलाता हूँ। मेरा तथा मेरे कृपा पात्र संत (गुरू) का अर्थात् हमारा नाम बन्दी छोड़ है और हमारा ठाम यानि स्थान (लोक) अमर-अजर (पूर्ण रूप से अविनाशी) है।

यजुर्वेद अध्याय 4 श्लोक 32 में भी प्रमाण है :- उशिक् असि = परम शांति दायक है, वह कविरसि = कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है, वही अंघारि (अंघ+अरि=पाप का शत्रु) अर्थात् पापनाशक है। वही बम्भारि असि (बम्बर+अरि+असि = बम्बर माने

बंधन, अरि माने शत्रु, असि माने है) अर्थात् वह कविर्देव ही कर्म बंधनों का शत्रु है। हम उसको बन्दी छोड़ अर्थात् बंधनों का नाश करने वाला, काल की बंध से छुड़ाने वाला कहते हैं। वह परमात्मा स्वर्ज्योति=स्वयं प्रकाशित है, ऋतधामा=सतलोक वाला=सतलोकवासी अर्थात् अमरलोक में रहता है।

वाणी :- गरीब, साधु माई बाप हैं, साधु भाई बन्ध।
साधु मिलावैं राम से, काटैं जम के फन्द।।23

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी हम साधकों को सतर्क करने के लिए अपने को पात्र बनाकर कह रहे हैं कि जो तत्वज्ञान के आधार से साधना करते हैं, वे साधु मेरे वास्तव में सच्चे हितैषी हैं जैसे माता-पिता, भाई तथा मित्र होते हैं। ये स्वयं भी सत्य साधना करते हैं तथा जो उनके सम्पर्क में आता है, उसको भी सही (श्रेष्ठ) राय देते हैं कि आप पूर्ण संत से दीक्षा लो और सत्य साधना करके अपना मानव जीवन धन्य बनाओ। इस प्रकार वे साधु ही राम (परमात्मा) से मिलाने तथा यम (काल) के फंद (बंधन रूपी फाँस) को काटने में सहयोगी कहे हैं।(23)**

वाणी :- गरीब, सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्ध हैं तीर।
दास गरीब सतपुरुष भजो, अबिगत कला कबीर।।24

❖ **सरलार्थ :- इस अमृतवाणी में स्पष्ट ही कर दिया है कि जो परमेश्वर सब पदवी के मूल हैं अर्थात् जिस परमेश्वर में सर्व पद विद्यमान हैं। कवि की पदवी पृथ्वी पर प्राप्त करता है, उस परमपद का मालिक है जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है। बन्दी छोड़ की पदवी, परमेश्वर की पदवी, तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है।(गीता अध्याय 15 श्लोक 17) इस कारण से पालनकर्ता, धारणकर्ता की पदवी, वास्तव में पुरूषोत्तम है, यह पदवी, जो वास्तव में परमात्मा कहा जाता है, यह पदवी तथा सर्व का सिरजनहार की पदवी जिसके पास है जो सब पदवी का मूल है और जिसके पास सर्व सिद्धियां हैं। (काल लोक में तो केवल आठ सिद्धियां हैं, परंतु परमेश्वर कबीर जी के पास तो असंख्य सिद्धियां हैं।)**

संत गरीबदास जी ने कहा है कि हे मानव! आप सतपुरूष (अविनाशी परमेश्वर) की भक्ति करो और उसी अविगत (सतपुरूष) की कला (सर्व कला सम्पन्न अवतार) कबीर जी हैं अर्थात् कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की भक्ति करो।(24)

वाणी :- बिना धणी की बन्दगी, सुख नहीं तीनों लोक।
चरण कमल के ध्यान से गरीब दास संतोष।।25

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि बिना धनी की बंदगी अर्थात् सर्व के मालिक की भक्ति के बिना अन्य भक्ति करके चाहे तीनों लोकों में (स्वर्ग-पाताल-पृथ्वी) रहो, आपको कोई सुख नहीं मिलेगा जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में परम शांति कही है। परम पुरूष के चरणों में (परमेश्वर की शरण में) ध्यान लगाने से, स्मरण करने से ही संतोष अर्थात् संतुष्टि होती है।(25)**

यहाँ साखी सरलार्थ सम्पूर्ण हुआ। शब्दों का सरलार्थ प्रारम्भ करता हूँ, परमेश्वर तथा सतगुरू देव सफल करें।

शब्द :- तारैंगे तारैंगे तहतीक, सतगुरु तारैंगे।।टेक।।
घट ही में गंगा, घट ही में जमुना, घट ही में हैं जगदीश।।1
तुमरा ही ज्ञाना, तुमरा ही ध्याना, तुमरे तारन की प्रतीत।।2
मन कर धीर बांध लेरे बौरे, छोड़ दे न पिछल्यों की रीत।।3
दास गरीब सतगुरु का चेरा, टारैंगे जम की रसीद।।4

❖ शब्द नं. 1 का सरलार्थ :- तहकीक का अर्थ है निश्चय, अवश्य। इस शब्द में संत गरीबदास जी ने कहा है कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि संसार सागर से सतगुरू ही पार उतारेंगे।(टेक)

शरीर को संत भाषा में घट = घड़ा = पात्र भी कहा जाता है। यह उपमा अलंकार (शब्द) है। बताया है कि जो गंगा तथा यमुना आदि दरियाओं में स्नान करके परमात्मा प्राप्ति चाहते हैं, उनसे कहा है कि इस मानव शरीर से सत्य भक्ति करने से सर्व पवित्र नदियों वाला लाभ प्राप्त होता है। परमात्मा भी इसी शरीर के कमलों में निवास करता है। हे परमात्मा स्वरूप सतगुरू! आपका ज्ञान श्रेष्ठ है, आपका ध्यान ही परमात्मा का ध्यान है, आपसे ही तारन की प्रतीत (विश्वास) अर्थात् पार करने का विश्वास है। सतगुरू ने कहा है कि आप पहले वाली रीति-रिवाज तथा शास्त्रविरूद्ध साधना मन में हमारा विश्वास करके त्याग दें और सत्य साधना हमारे बताए अनुसार कर। संत गरीबदास जी ने कहा है कि मैं सतगुरू का चेरा (नौकर=सेवक=दास) हूँ। सतगुरू ही यम की यानि काल की रसीत (कर्माधार से दी जाने वाली पीड़ा) टारैंगे।(टालेंगे=बचाएंगे) इसलिए संकट टालेंगे क्योंकि मैं सतगुरू का शिष्य हूँ।

शब्द :- केशो आया है बनजारा, काशी ल्याया माल अपारा।।टेक।।
नौलख बोडी भरी विश्म्भर, दिया कबीर भण्डारा।
धरती उपर तम्बू ताने, चौपड़ के बैजारा।।1
कौन देश तैं बालद आई, ना कहीं बंध्या निवारा।
अपरम्पार पार गति तेरी, कित उतरी जल धारा।।2
शाहुकार नहीं कोई जाकै, काशी नगर मंझारा।
दास गरीब कल्प से उतरे, आप अलख करतारा।।3

❖ शब्द नं. 2 का सरलार्थ :- इस शब्द में वह वर्णन है जो काशी में परमेश्वर के विरोधी साधुओं-काजी-मुल्लाओं ने षड़यंत्र रचकर तीन दिवसीय भोजन-भण्डारे (लंगर) के झूठे पत्र परमेश्वर कबीर जी की ओर से डाले थे। जिस कारण से 18 लाख भक्त तथा संत व अन्य व्यक्ति लंगर खाने आ गए थे। परमेश्वर कबीर जी स्वयं दूसरा रूप एक केशव नाम के बनजारे का धारण करके नौ लाख बैलों के ऊपर बोरे (थैले) रखकर उनमें पका-पकाया भोजन (खीर, हलवा, लड्डू, जलेबी, कचौरी, पकौड़ी, समोसे, रोटी, चावल, दाल, सब्जी आदि) भरकर काशी नगर में अपने सतलोक से लेकर आए थे। उनके साथ सतलोक से ही हंस आत्माएं बैल तथा सेवादार बनकर आए थे। {काशी में भण्डारे (लंगर) का विशेष ज्ञान 'ब्रह्म बेदी' अंग की वाणी नं. 44 तथा 46 के सरलार्थ में पढ़ें।} इस शब्द में कहा है कि परमेश्वर कबीर जी केशव नाम

से बनजारे (व्यापारी-सौदागर) का रूप बनाकर आए और अपार माल तथा धन लेकर आए थे। इस शब्द में 'केशव आया है बनजारा' जो कहा है, यह संत गरीबदास जी को वह दृश्य वर्तमान में चलचित्र की तरह दिखाई दे रहा था। (सन् 1730 के आसपास जब वे यह शब्द बोल रहे थे) कहा है नौ लख बोड़ी यानि नौ लाख बैलों पर नौ लाख नग (थैले) भरकर आए, तब कबीर जी ने भण्डारा दिया। स्वयं ही Double Roll यानि दो पक्षीय अभिनय करके लीला की थी। पृथ्वी के ऊपर तम्बू (टैण्ट) लगाए। यह लंगर काशी नगर के चौपड़ बाजार के पास बहुत बड़ा खाली स्थान था, उस में किया था। विचार करें वह बालद अर्थात् बैलों सहित सेवादारों की सेना किस देश से आई (अचानक आ टपकी), कहीं पर निवारा भी नहीं लगा है। निवारा का अर्थ है पुल जो छोटे नालों पर लम्बे लक्कड़ों से बनाकर आने-जाने का रास्ता बनाते थे। उस भण्डारे (लंगर) में नौ लाख भोजन करने वालों को पानी भी मिट्टी के सकोरों में पिलाया जा रहा था जो उस समय प्रचलित थे। संत गरीबदास जी ने कहा है कि वह स्वच्छ पीने के पानी की धारा कहाँ से उतरी जो ऊपर से ट्यूबवैल की तरह गिर रही थी। मटके भर-भरकर रखे जा रहे थे। उन्हीं से भण्डारे में पानी पीने के लिए प्रयोग किया जा रहा था। परमेश्वर कबीर जी का किसी धनी व्यक्ति (साहूकार) से लेन-देन भी नहीं था जिससे उधार ही इतना सामान ले आते। काशी शहर में उस समय 7-8 हजार जनसंख्या रहती थी। फिर 18 लाख व्यक्तियों के भोजन की व्यवस्था काशी नगर से नहीं हो सकती थी। संत गरीबदास जी ने उत्तर भी बताया है कि वह अलख करतार (अविगत परमेश्वर) भक्ति को जीवित रखने के लिए स्वयं ही सर्व सामान लेकर उतरे थे अर्थात् सतलोक से अवतरित हुए थे। सारा माल (भोजन तथा दक्षिणा का सामान) वहीं से साथ लेकर आए थे।

एक अन्य करिश्मा जो उस भण्डारे में हुआ

वह जीमनवार (लंगर) तीन दिन तक चला था। दिन में प्रत्येक व्यक्ति कम से कम दो बार भोजन खाता था। कुछ तो तीन-चार बार भी खाते थे क्योंकि प्रत्येक भोजन के पश्चात् दक्षिणा में एक मौहर (10 ग्राम सोना) और एक दौहर (कीमती सूती शॉल) दिया जा रहा था। इस लालच में बार-बार भोजन खाते थे। तीन दिन तक 18 लाख व्यक्ति शौच तथा पेशाब करके काशी के चारों ओर ढ़ेर लगा देते। काशी को सड़ा देते। काशी निवासियों तथा उन 18 लाख अतिथियों तथा एक लाख सेवादार जो सतलोक से आए थे। उस गंद का ढ़ेर लग जाता, श्वांस लेना दूभर हो जाता, परंतु ऐसा महसूस ही नहीं हुआ। सब दिन में दो-तीन बार भोजन खा रहे थे, परंतु शौच एक बार भी नहीं जा रहे थे, न पेशाब कर रहे थे। इतना स्वादिष्ट भोजन था कि पेट भर-भरकर खा रहे थे। पहले से दुगना भोजन खा रहे थे। उन सबको मध्य के दिन टैंशन (चिंता) हुई कि न तो पेट भारी है, भूख भी ठीक लग रही है, कहीं रोगी न हो जाएं। सतलोक से आए सेवकों को समस्या बताई तो उन्होंने कहा कि यह भोजन ऐसी जड़ी-बूटियां डालकर बनाया है जिनसे यह शरीर में ही समा जाएगा। हम तो प्रतिदिन

यही भोजन अपने लंगर में बनाते हैं, यही खाते हैं। हम कभी शौच नहीं जाते तथा न पेशाब करते, आप निश्चिंत रहो। तब उनका भय समाप्त हुआ, परंतु फिर भी सबकी आँखों पर अज्ञान की पट्टी बँधी थी। परमेश्वर कबीर जी को परमेश्वर नहीं स्वीकारा।

शब्द :- समरथ साहिब रत्न उजागर,सतपुरुष मेरे सुख के सागर।
जुनी संकट मेट गुसांई, चरण कमल की मैं बली जाही।
भाव भक्ति दिज्यो प्रवाना, साधु संगती पूर्ण पद ज्ञाना।
जन्म कर्म मेटो दुःख दुंदा,सुख सागर में आनन्द कंदा।
निर्मल नूर जहूर जूहारं, चन्द्रगता देखो दिदारं।
तुमहो बंकापुर के वासी, सतगुरु काटो जम की फांसी।
मेहरबान हो साहिब मेरा, गगन मण्डल में दीजौ डेरा।
चकवे चिदानन्द अविनाशी,रिद्धि सिद्धि दाता सब गुण राशी।
पिण्ड प्राण जिन दीने दाना, गरीब दास जाकुं कुर्बाना।।

❖ शब्द नं. 3 का सरलार्थ :- यह परमेश्वर जी की विशेष महिमा का शब्द है। कहा है कि हे परमेश्वर! आप समर्थ परमात्मा हैं। आप हीरे की तरह उज्जवल हैं अर्थात् स्वप्रकाशित हो। आप सुख के सागर हैं। मुझ भक्त का जन्म-मरण का संकट समाप्त कीजियो, मैं आपके चरणों में (आपकी शरण में) न्यौछावर हूँ। श्रद्धा से भक्ति करूँ, ऐसा प्रवाना (सत्य संदेश) दीजियो। संतों का साथ दीजियो और सम्पूर्ण पद्यति वाला तत्वज्ञान प्रदान कीजियो। मुझ दास (दासी) का जन्म-मरण का कारण कर्म है। उस पापरूपी दुख-दुन्द अर्थात् भयंकर दुख को समाप्त कीजियो। आपके सतलोक रूपी सुखसागर में आनन्द से रहूँ। आपके निर्मल शरीर के नूर की जहूर (नजारे) की आरती करूँ और जैसे चकोर पक्षी चाँद को एकटक देखता रहता है, ऐसे में आपके चेहरे के दर्शन करूँ। आप बंकापुर (अद्भुत नगर) के रहने वाले हैं। हे सतगुरू उर्फ परमेश्वर! काल के जाल में पापकर्मों से हमारी जन्म-मरण रूपी फाँसी समाप्त करो। हे मेरे परमेश्वर(साहेब)! मुझ पर मेहरबान होइये। मुझे आप सतलोक में स्थान दीजियो जो आकाश में है। हे परमात्मा! आप चक्रवर्ती हैं अर्थात् आपकी सत्ता सर्वलोकों पर है।(You are all mighty) आप सच्चिदानंद, अविनाशी हो। आप ही साधकों को रिद्धि तथा सिद्धि देते हो। आप जी सर्व गुणों की रासी (रास=ढ़ेर) हो।{जैसे पहले गेहूँ को फलसी या बैलों से गाहकर (कूटकर) भूसा तथा गेहूँ भिन्न-भिन्न कर देते थे। उस ढ़ेर को गेहूँ की रास कहते थे। इसलिए रासी शब्द रास है, उसका अर्थ है स्वच्छ कणक का ढ़ेर।} परमात्मा सद्गुणों से भरे हैं। जिस परमेश्वर जी ने पिण्ड (शरीर) तथा प्राण (श्वांस) दान दिए हैं। मैं (गरीबदास जी) उस परमेश्वर के ऊपर कुर्बान (बलिहारी) हूँ।

वाणी :- कबीर, गुरुजी तुम ना बीसरौ, लाख लोग मिलिजाहिं।
हमसे तुमकूं बहुत हैं, तुमसे हमको नाहिं।।1
कबीर, तुम्हे बिसारे क्या बनै, मैं किसके शरने जाउँ।
शिव विरंचि मुनि नारदा, तिनके हृदय न समाउँ।।2

कबीर, औगुन किया तो बहु किया, करत न मानी हारि।
भावै बंदा बखशियो, भावै गरदन तारि।।3
कबीर, औगुन मेरे बापजी, बखशो गरीब निवाज।
जो मैं पूत कपूत हों, बहुर पिताकों लाज।।4
कबीर, मैं अपराधी जनमका, नख शिख भरे बिकार।
तुम दाता दुख भंजना, मेरी करो संभार।।5
कबीर, अबकी जो सतगुरु मिलै, सब दुःख आँखों रोइ।
चरणों ऊपर शिर धरों, कहूँ जो कहना होइ।।6
कबीर, कबिरा सांई मिलैंगे, पूछेंगे कुशलात।
आदि अंतकी सब कहूँ, अपने दिल की बात।।7
कबीर, अंतरयामी एक तू, आतमके आधार।
जो तुम छाडौ हाथ, तो कौन उतारै पार।।8

❖ **कबीर जी के दोहे का सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने चित्रार्थ किया है कि भक्त की कैसी श्रद्धा होनी चाहिए। भक्त की अपने गुरूजी के प्रति ऐसी श्रद्धा होनी चाहिए :-**

शिष्य कहे कि हे गुरूदेव! आप जी हमारे को ना भुलाना, चाहे आपके लाख अनुयाई हो जाएं क्योंकि हमारे जैसे शिष्य तो आपके बहुत हैं, परंतु हमारे को आप जैसा ज्ञान सम्पन्न गुरू पृथ्वी पर नहीं है।(1)

❖ **यदि आप मुझे बिसर (भूल) गए तो मेरा क्या होगा? मैं किसकी शरण में जाऊँ? आपका ज्ञान अन्य को सुनाता हूँ कि केवल एक परमात्मा की भक्ति-पूजा करो। अन्य देवताओं की पूजा मत करो।** {एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय। माली सींचै मूल को, फलै फूलै अघाय।।} **जिस कारण से सब देवता शिव, बिरंच (ब्रह्मा) आदि तीनों देवताओं तथा नारद मुनि जी भी मुझ से खफा (नाराज-अप्रसन्न) हैं। उनके हृदय में मेरे लिए स्थान नहीं। उनको मैं एक आँख अच्छा नहीं लगता। इसलिए कृपा आप न भूलना।(2)**

❖ **हे परमेश्वर! अनगिन पाप कर दिये, कभी हार नहीं मानी अर्थात् बिना ज्ञान के पाप भी उमंग के साथ करता रहा, कभी आलस नहीं किया। हे परमात्मा! हे गुरू जी! अब आपकी शरण में आ गया हूँ, चाहे इस बंदे (मनुष्य-भक्त) को क्षमा करो, चाहे गर्दन उतार लो, परंतु रखियो अपनी शरण में।(3)**

❖ **हे गुरू जी! आप मेरे ऊपर ऐसी मेहर (दया) करो दाता, जैसे पिता अपने पुत्र के सर्व अपराधों को क्षमा करता है, ऐसे ही गुरूदेव रूपी मेरे पिताजी मुझे क्षमा करो। हे गरीब निवाज! मेरे अवगुण बख्शो। यदि मैं अच्छा शिष्य नहीं हूँ, यदि मैं कपूत हूँ तो आप पिता के तुल्य हैं, यदि आप मेरे पाप क्षमा नहीं करोगे तो पिता होने के नाते शर्म लगेगी।(4)**

❖ **हे गुरूदेव! तत्वज्ञान न होने के कारण मैं तो जन्म से ही गलतियाँ (अपराध) करता आ रहा हूँ। मेरे में तो नख (पैर के नाखूनों) से लेकर सिख (शिखा=सिर की चोटी) तक विकार भरे पड़े हैं अर्थात् मैं तो पापों से सना पड़ा हूँ अर्थात् पापों से भरा**

पड़ा हूँ। हे दाता! आप तो दुख नाश करने वाले हो, मेरी ओर ध्यान दो। मेरी सम्भाल (care take) करो गुरूदेव।(5)

❖ तत्वज्ञान के पश्चात् भक्त की श्रद्धा ऐसी हो जाती है। भक्त कहता है कि यदि अबकी बार सतगुरू मिल गए तो अपना सर्व दुख रो-रोकर बताऊँगा। चरणों के ऊपर सिर रखकर सर्व बातें करूँगा।(6)

❖ परमेश्वर कबीर जी ने भक्त की सच्ची श्रद्धा के लक्षण बताए हैं कि भक्त कहता है कि सांई अर्थात् गुरूदेव मिलेंगे, कुशल-मंगल पूछेंगे। आदि-अंत अर्थात् शुरू से लेकर आखिर (Last) तक की अपने दिल की सब बातें कहूँगा।(7)

❖ हे गुरू भगवान! आप तो अंतर्यामी हैं और एकमात्र आप ही आत्मा के सहारा हैं। यदि आपने मेरा हाथ छोड़ दिया तो मुझे कोई पार नहीं कर सकता। आप इस भले-बुरे दास (दासी) को चरणों से दूर मत करना। अपनी शरण में रखना।(8)

परमेश्वर कबीर जी के दोहों का सरलार्थ सम्पूर्ण हुआ।

❑ शब्द नं. 5 ''मेरे गुरूदेव भगवान'' के सरलार्थ की आवश्यकता नहीं है, यह तो अपने आप ही सरल है।

अन्नदेव की छोटी आरती का सरलार्थ

आरती का अर्थ संध्या आरती में बताया है कि किसी देव की महिमा गाकर करना अर्थात् पद्य भाग में करना 'आरती' या 'स्तुति' कहा जाता है।

विशेषता :- जैसे वन होता है, उसमें जड़ी (औषधि) के पौधे तथा पेड़ होते हैं। वैद्य उस जंगल से जड़ी चुन लाता है। वह उनको पहचानता है तथा औषधि बनाना भी जानता है जो जन-साधारण के बस की बात नहीं होती। इसी प्रकार संत गरीबदास जी महाराज ने परमेश्वर कबीर जी के दर्शन करने के पश्चात् तत्वज्ञान में सर्व ग्रन्थों का सार निकालकर भक्त समाज के लिए औषधि बनाकर भिन्न-भिन्न बोतलों (नित्य-नियम, असुर निकंदन रमैणी, संध्या आरती-साखी तथा अन्नदेव की छोटी-बड़ी आरती) में भरकर रखी हैं। अब आप जी ने केवल सेवन (पाठ) करना है। जैसे आप जी रामायण का पाठ करते हैं तो महीनों में पूर्ण होता है। महाभारत ग्रन्थ पढ़ते हैं तो भी इतना ही समय लगता है। अन्य महापुरूषों की महिमा तथा उनको हुए प्रभु के चमत्कारों को पढ़ने-सुनने से भक्ति भाव बढ़ता है, भक्त को बल मिलता है, श्रद्धा बढ़ती है। उनको भी पढ़ने-सुनने में समय बहुत लगता है, परंतु उन कथाओं का लाभ इस पाँच मिनट में पढ़ी जाने वाली अन्नदेव की छोटी आरती से मिल जाता है। जैसे वाणी है कि :- ''रावण माँगन गया चून, ताते लंक भई बिरून''

इस वाणी को पढ़ते ही पूरी रामायण दिमाग में घूम जाती है। पूरी रामायण की कथा मानो पढ़ ली हो क्योंकि हम हिन्दू समाज के व्यक्तियों ने जन्म से ही ये कथाऐं सुन रखी हैं। सर्व घटनाओं का पूर्ण ज्ञान है। इसलिए इस वाणी को पढ़ते ही ऐसा हो जाता है जैसे कम्प्यूटर में क्लिक करते ही साईट (Site) खुल जाती है। सर्व विवरण समक्ष होता है। इसी प्रकार संत गरीबदास जी की अमृतवाणी को पढ़ने से ग्रन्थ का

ग्रन्थ दिमाग में साईट (Site) की तरह खुल जाता है। इस वाणी में कहा है कि रावण चून (आटा) माँगने गया था जिससे उसकी नगरी लंका बिरून (नष्ट) हो गई। इससे पूरी रामायण दिमाग में फैल जाती है, सैकिण्डों में सर्व घटनाऐं याद आ जाती हैं। श्री रामचन्द्र को बनवास, पंचवटी से सीता का रावण के द्वारा साधु रूप बनाकर आटा माँगने का ढ़ोंग करके अपहरण करना, श्री राम द्वारा राक्षस राजा रावण की लंका पर चढ़ाई (आक्रमण) करके लंका का नाश करना, रावण सहित सर्व कुल का नाश तथा सीता जी को वापिस लाना, 33 करोड़ देवताओं को रावण की बंध से छुटवाना आदि-आदि रामायण के सर्व अंग कुछ ही क्षणों में पढ़े जाते हैं जिससे ग्रन्थों के पठन-पाठन से ज्ञान यज्ञ का जो लाभ होता है, वह भी पाठक को मिलता है। अन्नदेव प्रसन्न होता है। यदि भक्त किसी के घर (मेहमान रूप में) खाना खाता है तो भक्त को उस घर के अन्न का भार नहीं बनता और भोजन कराने वाले को कथाओं का लाभ मिल जाता है तथा एक योगी यानि सत्य साधक को भोजन कराने का लाभ मिल जाता है।

इसलिए खाना खाने से पहले तथा बाद में बोली जाने वाली वाणी तथा आरती अवश्य पढ़नी चाहिए। याद होने के पश्चात् वैसे बोलनी चाहिए।

भोजन खाने से पहले बोली जाने वाली वाणी का सरलार्थ

वाणी :- गरीब, सुख देना दुःख मेटना, ताजा राखे तन।
सुर तेतीसों खुश किए नमस्कार तोहे अन्न।।1

❖ **सरलार्थ :-** अन्न का सत्कार किया है कि हे अन्नदेव! आपके खाने से भूख का दुख दूर होता है, सुख प्राप्त होता है और भोजन से प्राणी का शरीर ताजा तथा फुर्तीला होता है। आपका गुण भूख का दुख समाप्त करना तथा सुखी करके शरीर को ऊर्जा देकर फुर्तीला बनाना है। जिस समय मैंने (संत गरीबदास जी ने) नाथों का भ्रम निवारण करने के लिए उस समय उपस्थित हुए 33 करोड़ देवताओं तथा नौऊं नाथों को भण्डारा दिया तो आप (अन्नदेव) जी की कृपा से ही सम्भव हो सका। आपने उन 33 करोड़ देवताओं को प्रसन्न किया है अन्नदेव! आपको मेरा नमस्कार है।(1)

वाणी :- अन्न जल साहिब रूप है, क्षुध्या तृषा जाए।
चारों युग प्रवान हैं, आत्म भोग लगाए।।2

❖ **सरलार्थ :-** संत गरीबदास जी ने अन्न तथा जल की स्तुति की है। कहा है कि अन्न तथा जल परमात्मा (साहेब) का स्वरूप है क्योंकि प्रत्येक पदार्थ तथा प्राणी में परमेश्वर की शक्ति ही कार्य कर रही है। पदार्थ में जो आत्मा को सुख देने का अंश परमेश्वर का ही है। इसलिए अन्न तथा जल परमात्मा का रूप कहकर महिमा की है। जैसे प्यास या भूख से प्राण निकलने वाले हों, उस समय भूखे को अन्न तथा प्यासे को जल मिल जाए तो अन्न-जल ने प्राणों की रक्षा करके परमात्मा जैसा कार्य कर दिया। इसलिए कहा है कि हे अन्न तथा जल! आप परमात्मा स्वरूप हैं, आपके सेवन से क्षुधा (भूख)-त्रसा (प्यास) समाप्त हो जाती है। चारों युगों में प्रमाण है कि जीवात्मा आपका भोग लगाती है अर्थात् सेवन करती है।(2)

वाणी :- जो अपने सो ओर के, एकै पीड़ पिछान।
भुखियां भोजन देत हैं, पहुचेगें प्रवान।।3

❖ **सरलार्थ :- मानव को धर्म की प्रेरणा देते हुए संत गरीबदास जी ने कहा है कि जैसे आपको भूख या प्यास लगी हो, उस समय आपको कैसा लगता है? कैसा संकट सामने होता है? उस समय आप जी को कोई भोजन या पानी खिला-पिला दे तो आपको कितनी खुशी होगी? इसलिए बताया है कि जैसा कष्ट आपको था, वैसा ही अन्य भूखे-प्यासे को हुआ जानकर भोजन-पानी अवश्य खिलाना-पिलाना चाहिए। इससे आध्यात्मिक व भौतिक दोनों लाभ मिलते हैं जो भूखों को भोजन तथा प्यासे को जल देते हैं। वे प्रवान अर्थात् आध्यात्म की अन्तिम मंजिल तक पहुँचेंगे अर्थात् उनकी साधना प्रवान चढ़ेगी।(सफल होगी)(3)**

राबिया की कथा

एक राबिया नाम की मुसलमान बहन थी। उसकी आयु लगभग 50 वर्ष की हुई तो अपने पति से आज्ञा लेकर हज करने के लिए मक्का को पैदल रवाना हुई। कुछ यात्रा करने के पश्चात् उसे एक कुंआ दिखाई दिया। उस कुंए के पास एक कुतिया बहुत प्यासी खड़ी थी। राबिया को देखकर वह कुतिया उसकी ओर गई। फिर कुंए की ओर गई। कुतिया के बच्चे थे जिनकी आँखें भी नहीं खुली थी। राबिया को माजरा समझते देर नहीं लगी। झटपट कुंए पर गई तो देखा कोई जल निकालने का पात्र (रस्सा-बाल्टी) नहीं था। किसी के हाथ से छूट जाने के कारण कुंए में गिरी हुई थी। राबिया ने प्यासी कुतिया को पानी पिलाने के लिए अपने सिर के बाल उखाड़े और रस्सी बांटी (बनाई)। अपने शरीर के कपड़े उतारे जो खादी के बने मोटे कपड़े थे। अपनी चुनरी से शरीर को ढ़का और बालों से बनाई रस्सी से कपड़े बाँधकर पानी निकाला और कुंए के साथ में रखे ठीकरे में (मिट्टी के घड़े का टूटा आधा या छोटा-बड़ा भाग ठीकरा कहा जाता है।) कपड़े निचोड़कर पानी डाल दिया। ऐसा तीन-चार बार करके कुत्ती की प्यास बुझाकर उसके बच्चों तथा उसके प्राणों की रक्षा की। गीले कपड़े पहनकर मक्का की ओर चलना चाहा तो देखा कि मक्का तो कुएं के साथ खड़ा है। भक्तमति राबिया स्वपन की तरह मक्के में प्रवेश कर गई। पवित्र मक्का (मुसलमानों का मंदिर) हवाई जहाज की तरह उड़ चला। फिर अपने यथास्थान पर स्थापित हो गया। अपने स्थान से अचानक अंतर्ध्यान हुए 'मक्के' को देखकर हज यात्री आश्चर्यचकित थे कि यह क्या अपसगुन है? हमारी किस्मत खराब है। इस कारण से मक्का ही अदृश्य हो गया। कुछ देर में मक्का उसी स्थान पर आकर स्थापित हो गया। आकाशवाणी हुई कि मक्का अल्लाह के हुक्म (आदेश) से एक पवित्र आत्मा राबिया को लाने गया था। मक्का से वह कुंआ तीन मंजिल अर्थात् 60 मील (90 किमी) दूर था। आकाशवाणी में यह भी कहा गया कि राबिया ने प्यासों को पानी पिलाकर असली (वास्तविक) हज की है। भ्रमित व्यक्ति तो पशु-पक्षियों को मारकर खाते हैं, उसे धर्म मानते हैं। धर्म तो पशु-पक्षियों तथा अन्य जीवों-मानव के

प्राणों की रक्षा राबिया की तरह करने से होता है। यह वास्तव में हज है।(3)

वाणी :- अन्न देव तुं अलख दयालं, तेरे पलड़ै तुलै न लालं।
अन्न देव तुं जगमग ज्योति, तेरे पलड़ै तुलै न मोती।।4

❖ **सरलार्थ :- हे अन्नदेव! आप अलख दयाल अर्थात् परमात्मा की तरह दयालु हैं। जैसे अन्न एक जड़ रूप दिखाई देता है, ईश्वरीय गुण गुप्त है, इसलिए अलख कहा है। आपकी तुलना यानि बराबरी लाल (बहुमुल्य हीरा) भी नहीं कर सकता। जैसे तुला (Balance=तराजु) के एक पलड़े में अन्न रख दे, दूसरे पलड़े में लाल रखा हो। भूख से प्राण जाने को हों और व्यक्ति के सामने हीरा तथा भोजन रखकर कोई कहे कि आप इनमें से एक ले सकते हो तो भूखा व्यक्ति भोजन को ही उठाएगा।**

एक समय दुर्भिक्ष (अकाल) गिरा था। उस समय राजा तथा सेठ (धनी) हीरे, लाल तथा स्वर्ण से भरी अलमारियाँ छोड़कर भोजन की खोज में दूसरे स्थानों पर चले गए। इसलिए कहा है कि हे अन्नदेव! आपके बराबर लाल भी नहीं है। आप से ही संसार जगमगा रहा है। आप ही जीव को जीवन रूपी ज्योति प्रदान करते हो। आपके समान मोती भी नहीं है।(4)

वाणी :- वैरागर किस काम न आवै, अन्न देव तुं सब मन भावै।
वैरागर है पत्थर भारी, अन्न देव तुं आप मुरारी।।5

❖ **सरलार्थ :- वैरागर यानि हीरा भूखे व्यक्ति के कोई काम नहीं आता। अन्नदेव तो सबको अच्छा लगता है। बैरागर (हीरा) तो एक भारी पत्थर है। हे अन्नदेव! आप तो मुरारी (संकट मोचन) हैं।(5)**

वाणी :- खुध्या तृषा मेटैं पीड़ा, तेरै पलड़ै तुलै न हीरा।
दास गरीब ये अन्न की महिमा,
तीन लोक मैं जाका रहिमा।।6

❖ **सरलार्थ :- हे अन्नदेव! आप क्षुधा तथा त्रसा (प्यास) से उत्पन्न पीड़ा को हरने वाले हैं। आपकी तुलना में हीरा भी नहीं है। आपकी बराबरी हीरा नहीं कर सकता। संत गरीबदास जी ने कहा है कि अन्नदेव की यह महिमा है जिसका तीन लोक में बोलबाला है, प्रभुता (महिमा) है।(6)**

वाणी :- कबीर पों फाटि पगड़ा भया, जागी जीया जून।
सब काहू कूं देत है, वो चौंच समाना चून।।7

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने अपनी महिमा आप ही बताई है। (जैसे आपै आरती आपै साजै) पों फाटि (सूर्योदय के समय) पगड़ा भया (इतनी रोशनी जिससे रास्ता दिखाई देने लगे) जागी (नींद से उठी) जीया जून (पशु-पक्षी, कीट-पतंग) भावार्थ है कि प्रतिदिन सूर्योदय होते ही परमात्मा सर्व प्राणियों को उनकी क्षमता अनुसार {कण=चींटी को, मण (40 कि.ग्रा.)=हाथी को} चून (आटा) अर्थात् उनका भोजन देता है।(7)**

खाना खाने के पश्चात् की जाने वाली वाणी का सरलार्थ

वाणी :- पाया प्रसाद मन भया थीर। रक्षा करैं सतगुरु रूप में सत कबीर।।
पाया प्रसाद मन भया उल्लास। अमृतज्ञान दिया संत गरीबदास।।

❖ **सरलार्थ :- अर्थ वैसे ही स्पष्ट है।**

अन्नदेव की छोटी आरती का सरलार्थ

वाणी :- आरती अन्न देव तुम्हारी, जासैं काया पलैं हमारी।
रोटी आदि रु रोटी अंत, रोटी ही कुं गावैं संत।।1

❖ **सरलार्थ :- हे अन्नदेव! आपकी आरती (स्तुति) करता हूँ। आप से हमारे शरीर का पोषण होता है। अन्न से बनी रोटी आदि (सृष्टि के प्रारम्भ से) अंत (जब प्रलय होता है) तक जीवन बनाए रखने में सक्षम है। रोटी की महिमा सब संतजन भी करते हैं।(1)**

वाणी :- रोटी मध्य सिद्ध सब साध, रोटी देवा अगम अगाध।
रोटी ही के बाजैं तूर, रोटी अनन्त लोक भरपूर।।2

❖ **सरलार्थ :- रोटी अर्थात् अन्न की सीमा से बाहर संत महात्मा तथा साधनारत भक्त (साधक) भी नहीं हैं। उनकी साधना भी अन्न बिना नहीं हो सकती। जो भोजन खिलाता है, वह बहुत अगम-अगाध है।(उच्च विचारों वाला तथा ऊँची उपलब्धि प्राप्त करने वाला है।) सर्व लोकों में रोटी (अन्न से बना फुल्का) का बोलबाला है।(2)**

वाणी :- रोटी ही के राटा रंभ, रोटी ही के हैं रणखम्भ।
रावण मांगन गया चून, तातें लंक भई बेरून।।3

❖ **सरलार्थ :- अन्न से बनी रोटी के ही राटा रंभ (ठाठबाठ) हैं। रोटी पर्याप्त है तो युद्ध करने की शक्ति योद्धाओं में बनी रहेगी। इसलिए रणखम्भ (युद्ध का स्तंभ=सहारा) कहा है। लंका का राजा आटा (अन्न) माँगने का ढ़ोंग करके सीता का हरण करने गया था। उसने अन्न का अनादर किया। जिस कारण से उसकी लंका राजधानी बिरून (सर्वनाश को प्राप्त) हुई।(3)**

वाणी :- मांडी बाजी खेले जुवा, रोटी ही पर कैरों पांडो मूवा।
रोटी पूजा आत्म देव, रोटी ही परमात्म सेव।।4

❖ **सरलार्थ :- इंसान को पेटभर भोजन (रोटी) की आवश्यकता प्रथम है। उसके बिना राजपाट व्यर्थ है। दो समय की रोटी है तो सब कुछ है। कौरव तथा पाण्डवों को यदि ज्ञान होता तो महाभारत का युद्ध करके पाप के भागी नहीं बनते। जूवा खेलकर षड़यंत्र रचकर कौरवों ने राज्य लिया। फिर उसी राज्य को प्राप्त करने के लिए पाण्डवों ने युद्ध किया, करोड़ों व्यक्ति मारे गए। बात केवल दो समय की रोटी की थी। इससे हटकर जो किया वह कर्म बिगाड़ने के लिए किया जाता है। जिस दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) के लिए युद्ध किया, वह पृथ्वी यहीं रह गई। पाप को सिर पर धरकर चले गए। रोटी चाहिए थी, व्यर्थ में लड़कर मर गए। आत्मा को भोजन खिलाओ जो**

परमात्मा का अंश है तथा परमात्मा की पूजा है। आत्मा खुश कर दी तो परमात्मा प्रसन्न होता है।(4)

वाणी :- रोटी ही के हैं सब रंग, रोटी बिना न जीते जंग।
रोटी मांगी गोरख नाथ, रोटी बिना न चलै जमात।।5

❖ सरलार्थ :- यदि खाने को भोजन है तो सब आनन्ददायक वस्तु (कार-कोठी, बैंक में जमा धनराशि, बेटे-बेटी आदि) अच्छी लगती हैं। रोटी नहीं है तो जीवन संकट में होने के कारण कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा। भोजन बिना युद्ध भी नहीं जीता जा सकता। रोटी (भोजन) तो श्री गोरखनाथ जैसे सिद्धियुक्त महात्माओं ने भी माँगकर खाया। अपने जीवन की रक्षा की।(5)

वाणी :- रोटी कृष्ण देव कुं पाई, संहस अठासी खुध्या मिटाई।
तंदुल विप्र कुं दिये देख, रची सुदाम पुरी अलेख।।6

❖ सरलार्थ :- कथा से सरलार्थ होगा, महाभारत ग्रन्थ में कथा है :-

जिस समय पाण्डव 13 वर्ष का बनवास समय पूरा करने के लिए वन में थे। दुर्योधन को फिर भी संतोष नहीं था जबकि उसी के पास सारा राज्य भी था। एक दुर्वासा नाम के सिद्धियुक्त ऋषि थे। दुर्योधन ने उसको अपने बाग में रखा हुआ था। दुर्योधन उसकी सेवा करता था। दुर्वासा ऋषि जी 12 वर्ष से दुर्योधन के बाग में रह रहे थे। एक दिन दुर्वासा जी को वचनबद्ध करके दुर्योधन ने कहा कि आपकी मैंने 12 वर्ष तक सेवा की है, अच्छी-अच्छी मेवा खिलाई है। मेरा एक कार्य करो। आप पाण्डवों के नाश करने का शॉप दे दो। दुर्वासा ने कहा कि बिना किसी दोष के मैं शॉप नहीं दे सकता। यदि वे मेरे किसी अपराध में फँसे तो मैं शॉप दे सकता हूँ। दुर्योधन ने कहा आप उनके पास देर शाम से जाओ जिस समय वे भोजन खा चुके हों क्योंकि द्रोपदी ने भगवान सूर्य की पूजा करके एक ऐसा टोकना प्राप्त कर रखा है कि उस टोकने में बने भोजन से जब तक द्रोपदी भोजन नहीं खाती थी, तब तक चाहे तीनों लोकों के प्राणी भोजन खा लें, भोजन समाप्त नहीं होता था।

दुर्योधन ने कहा कि आप अपनी पूरी सेना (88 हजार ऋषि) लेकर जाना। आप उनके अतिथि होंगे, वे आपको भोजन नहीं करा सकेंगे। जिस कारण से पाण्डवों का नाश कर देना। ऋषि दुर्वासा ने ऐसा ही किया। शाम को देर से गए। द्रोपदी भोजन खा चुकी थी। ऋषि दुर्वासा ने कहा हम 88 हजार आए हैं, हमें भोजन कराओ नहीं तो मैं तुम्हें नष्ट होने का श्राप (शॉप) दूँगा। पाण्डव सकते में आ गए। द्रोपदी भोजन कर चुकी थी। सुबह तक उस टोकने में भोजन बनाया भी जाए तो पूरा कार्य नहीं करता था। सूर्योदय के बाद उसमें फिर शक्ति आती थी। पाण्डवों के गुरू श्री कृष्ण जी थे। वे द्रोपदी की कई चार चमत्कारी सहायता भी कर चुके थे। इसलिए द्रोपदी से कहा गया कि आप गुरू जी से विनय करें। द्रोपदी ने विनय की। उसी समय परमेश्वर श्री कृष्ण रूप धारण करके उपस्थित हुए तथा कहा कि पहले मुझे भोजन कराओ, तब मैं ऋषिओं का पेट भर सकता हूँ। पाण्डवों ने सब बताया कि द्रोपदी के भोजन करने के पश्चात् टोकने में कुछ नहीं बचता। प्रभु ने कहा चाहे एक कण भी हो, देखो द्रोपदी! देखा तो टोकने में साग (बथुए का पत्ता) चिपका था। प्रभु ने कहा कि टोकने में पानी

डालकर हिलाकर वह पत्ते सहित जल दो। उसे घोलकर प्रभु ने पीया। उधर सर्व ऋषियों के पेट भर गए। जैसे खीर, खाण्ड, अंगूर आदि खा लिये हों। ऋषि दुर्वासा ने शर्त रखी थी कि भोजन में खीर बने और वह भी आज ही धान बोये हों और आज ही चावल निकलें। इसी प्रकार आम-अंगूर आदि फल भी आज ही बीजो, आज ही फल लगें व तोड़कर खिलाओ। स्वर्ग से कामधेनु का दूध लाकर खीर बनाओ। यदि ऐसा नहीं किया तो मैं तुम्हें शॉप दूँगा। परमेश्वर जी ने भीमसैन से कहा कि जाओ ऋषियों को बुला लाओ। कहो, भोजन तैयार है। आप भोजन करने के लिए चलो। भीम ने जाकर ऋषियों को निमन्त्रण दिया कि ऋषिवर भोजन तैयार है, चलो भोजन करो। भीम ने देखा कि सब ऋषि गधे की तरह लोटपोट कर रहे हैं। भीम का वचन सुनकर दुर्वासा जी बोले भीम! हम तो इच्छित भोग से गले तक भरे हैं। उसको पचाने के लिए कसरत कर रहे हैं। हमारी आत्मा तृप्त हो गई। हम तुम्हारे अतिथि सत्कार से अति प्रसन्न हैं। यह बता तुम्हारे पास कौन आया है? भीम ने बताया कि श्री कृष्ण जी आये हैं। दुर्वासा जी बोले इन्हीं की लीला से हमारे पेट में अफारा हो गया है। बिना भोजन खिलाए ही तृप्ति कर दी। दुर्वासा की जान को बनी थी। पेट में अफारा था। फिर कहा मैं कहता हूँ ''भगवान करे, तुम्हारे शत्रुओं का नाश हो।'' दुर्वासा आया था पाण्डवों का नाश करने, परमात्मा ने उसी की बुद्धि बदल दी। बुलवा दिया कि तुम्हारे शत्रुओं का नाश हो। पाण्डवों के शत्रु थे कौरव। इस कारण से दुर्वासा का श्राप कौरवों को लगा। इसलिए कहा है :-

''रोटी कृष्णदेव कूं पाई, संहस अठासी क्षुधा मिटाई।।''

पाठकों से निवेदन है कि वह कहानी याद रखना। बच्चा मूसल उठाने की जिद कर रहा था। दादाजी ने उठाकर उसको शाबाशी भी दी थी। यह सब लीला सतपुरूष जी की है। श्री कृष्ण जी को पाण्डवों ने बताया कि ऐसे-ऐसे हुआ था, आपने ऐसे-ऐसे हमारी सहायता की थी।

दूसरी कथा वह है जो सुदामा जी ने श्री कृष्ण जी को चावल खिलाए थे। तब श्री कृष्ण द्वारिकाधीश ने सुदामा का मकान बनवा दिया था तथा धन भी दे दिया था। यह लीला श्री कृष्ण जी की थी।

भावार्थ है कि दान-धर्म, भोजन-भण्डारा श्रद्धा से किया जाए तो परमात्मा भोजन कराने वाले को उसका फल देता है।(6)

वाणी :- आधीन विदुर घर भोजन पाई, कैरों बूडे मान बड़ाई।
मान बड़ाई से हरि दूर, आजिज के हरि सदा हजूर।।7

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा उस भक्त से प्रसन्न होते हैं जो निर-अभिमानी होता है। जैसे भगवान श्री कृष्ण रूप में परमेश्वर ने विदुर जी के घर केवल शॉक (हरा साग) ही खाया था, रोटी भी नहीं थी। दुर्योधन का राजसी भोजन त्यागकर आधीन यानि निर-अभिमानी भक्त विदुर जी के घर केवल हरा शॉक खाया था। कौरव तो मान-बड़ाई के कारण नाश को प्राप्त हुए। परमात्मा अभिमानी और लोग दिखावा करने वाले से दूर रहते हैं, आधीन के पास मालिक रहते हैं।(7)**

वाणी :- बूक बाकला दिये विचार, भये चकवे कईक बार।

बीठल हो कर रोटी पाई, नामदेव की कला बधाई।।8

❖ **सरलार्थ :- एक समय अकाल (दुर्भिक्ष) गिरा था। भोजन उपलब्ध नहीं हो रहा था। हाहाकार मची थी। एक व्यक्ति ने पानी में चने उबालकर (बाकली बनाकर) भूखों को बाँटने शुरू किए। उसने अपने घर पर ही यह धर्म शुरू किया। भूखे व्यक्तियों को पता चला, वहाँ आने लगे। उसने नीयम बनाया कि एक व्यक्ति को एक बूक बाकली ही एक दिन में दिया जाएगा। (बूक=दोनों हाथों से बाकली भरकर देना, उसे बूक कहा जाता है, हरियाणा में बुगटा कहते हैं।) ऐसा दान करने से वह व्यक्ति अगले जन्म में चक्रवर्ती राजा बना। उसका सारी पृथ्वी पर शासन हुआ। एक बार नहीं कई बार चक्रवर्ती राजा बना।**

परमात्मा ने बीठल देव का रूप बनाकर संत नामदेव जी के साथ रोटी खाकर संत नामदेव जी की महिमा बनाई।(8)

वाणी :- धना भक्त कुं दिया बीज, जाका खेत निपाया रीझ।
द्रुपद सुता कुं दीन्हें लीर, जाके अनन्त बढ़ाये चीर।।9

❖ **सरलार्थ :- धन्ना भक्त जी ने कई दिन के भूखे साधुओं को ज्वार का बीज ही खिला दिया। उसके प्रतिफल में परमात्मा ने धन्ना भक्त के खेत में तुम्बों की खेती उपजा दी। धन्ना जी का खेत रीझकर अर्थात् अधिक खुश होकर खेत में तुम्बे तथा तुम्बों में ज्वार निपजाई थी। प्रत्येक तम्बु में 5 कि.ग्रा. बीज जैसी स्वच्छ ज्वार भर दी। धन्ना जी तो कंकड़ इकट्ठी करके बीजकर आए थे। द्रोपदी जी ने एक अँधे संत को अपनी साड़ी के टुकड़े दान किए थे। उसके प्रतिफल में परमात्मा ने उसके अनन्त गुणा चीर (साड़ी) बढ़ा दी।(9)**

वाणी :- रोटी चार भारिजा घाली, नरसीला की हुण्डी झाली।
सांवलशाह सदा का शाही, जाकी हुण्डी तत पर लही।।10

❖ **सरलार्थ :- जिस समय नरसी भक्त सर्व सम्पत्ति धर्म में लगाकर झोंपड़ी डालकर नगर के बाहर अपनी पत्नी के साथ रहने लगा। उस समय उसके पास एक रूपया भी नहीं था। पहले जब वह 56 करोड़ का मालिक था तो राजा ने उसको हुण्डी बनाने के लिए पंजीकृत कर रखा था।**

हुण्डी = जैसे वर्तमान में बैंक ड्राफ्ट बनाया जाता है। उसी प्रकार हुण्डी बनती थी। जिस समय नरसी महता जी निर्धन हो गए थे तो उनका पंजीकरण पत्र समाप्त कर दिया था। 5 सौ रूपये लेकर चार संत नरसी जी से हुण्डी बनवाने के लिए नगर में आए। नगर के व्यक्तियों ने मजाक करके कहा कि सेठ नरसी आजकल सीधे मुँह बात नहीं करता और बणी (वन) में बैठकर ड्रामा कर रहा है कि मैं निर्धन हो गया हूँ। अधिक जोर देकर कोई कहता है तो हुण्डी बनाता है। आप वहाँ जाईये। संतजन नरसी जी के पास आए तथा 500 रूपये सामने रखकर हुण्डी बनाने को कहा। नरसी ने मना करना ही था। संतों ने कहा कि नगर वाले ठीक ही कह रहे थे, सीधे मुँह बात नहीं करता। हम हुण्डी बनवाकर रहेंगे। नरसी जी को समझते देर नहीं लगी और डर गए कि संतजन भ्रमित हैं, कहीं मुझे शॉप न दे दें। उसी समय कागज मँगवाकर हुण्डी देने वाले के स्थान पर सांवरिया सेठ (शांवल शाह) नाम लिख दिया। सन्तों ने

द्वारिका में दर्शनार्थ जाना था। इसलिए शहर द्वारिका लिखकर 500 रूपये की हुण्डी बनाकर सन्तों को दे दी। संत लेकर द्वारिका चले गए। नरसी जी ने उन 500 रूपये का भण्डारा कर दिया। संतों ने द्वारिका में जाकर सेठ सांवल शाह का पता पूछा, हुण्डी के पैसे लेने का कारण बताया। द्वारिका के सेठों ने देखा यह हुण्डी तो नरसी निर्धन की है, अब तो वह दिवालिया हो गया है। आपको ठग लिया है। संतों ने सारी द्वारिका में पता किया, परंतु सांवल नाम का कोई सेठ नहीं था। संतों ने बड़ी कठिनाई महसूस की। धन बिना अन्य निकट के तीर्थों पर कैसे जाएंगे? नरसी जी ने ध्यान लगाकर देखा कि परमेश्वर जी ने मुझ गरीब की हुण्डी कैश (नकद) की है या नहीं? देखा कि संत बहुत दुखी हैं। उस कागज को बार-बार देख रहे हैं। नरसी जी ने अपनी पत्नी से पता किया कि उन 500 रूपये का जो सामान लाए थे, वह सब भण्डारे में लग गया या कुछ बचा है। पत्नी ने कहा थोड़ा-सा पलोथन (सूखा आटा जो हाथों से लगाकर आटे की गोली यानि लोई की रोटी बढ़ाते हैं) शेष है। नरसी जी ने कहा कि उसकी रोटी बना, मैं किसी भूखे यात्री को लाता हूँ। परमेश्वर स्वयं एक संत का रूप बनाकर नरसी जी को मिले। नरसी जी विनय करके संत को घर ले आए। उस पलोथन रूपी आटे की चार रोटियां बनी। वे चारों संतों को खिला दी। कुछ देर बाद परमेश्वर जी ने सांवल सेठ का रूप धारण किया और संतों से मिले। कहा कि मैं सांवल सेठ हूँ। लाओ आपकी हुण्डी, मैं 500 रूपये देता हूँ। संतों ने वह कागज दे दिया। परमेश्वर जी संतों को लेकर उसी बाजार में गए जहाँ के सेठ नरसी जी के बेइज्जती (Insult) कर रहे थे। चौराहे पर संतों की चद्दर बिछवाकर चाँदी के नए-नए रूपये लगे पटककर मारने और ऊँचे स्वर में गिन रहे थे, एक दो तीन....। सारे बाजार के सेठ इकट्ठे होकर देखने लगे कि यह सेठ द्वारिका का तो नहीं है। सर्व रूपये गिनकर देकर संतों से कहा कि नरसी जी से कहना चाहे लाख हुण्डी भेज देना, सब नकद (Cash) कर दूँगा। यह वचन बोलकर वहीं से अन्तर्ध्यान हो गए। वाणी नं. 10 का सरलार्थ इसी कथा से स्पष्ट हो जाता है।

(भारिजा, भार्या=पत्नी) सांवल शाह सदा का शाही अर्थात् परमेश्वर तो सदा का सेठ है। हुण्डी तत् पर लही का भावार्थ है कि हुण्डी को नकद कर दिया जैसे ड्राफ्ट कैश (Cash) करते हैं।(10)

वाणी :- जड़ कुं दूध पिलाया जान, पूजा खाय गए पाषाण।
बलि कुं जग रची अश्वमेघ, बावना होकर आये उमेद।।11

❖ **सरलार्थ :-** नामदेव जी ने एक बार भगवान बिठल की पत्थर की मूर्ति को पंचायत में दूध पिलाया था। उसका वर्णन है। दूसरा राजा बली ने यज्ञ की थी। धर्म के कारण परमात्मा को बावना (वामन) रूप बनाकर आना पड़ा।(11)

नोट :- बली के अश्वमेघ यज्ञ करने तथा परमात्मा का बावना रूप बनाकर आने का पूरा वर्णन पढ़ें।

वाणी :- तीन पैंड जग दिया दान, बावन कुं बलि छले निदान।
नित बुन कपड़ा देते भाई, जाकै नौलख बालद आई।।12

❖ **सरलार्थ :-** राजा बली की यज्ञ में बामन रूप बनाकर तीन पैड़ (कदम=डंग)

जमीन दान माँगने का वर्णन है तथा परमात्मा कबीर जी जुलाहे का अभिनय करते थे, कपड़ा बुनते थे। उस मजदूरी से अपने परिवार का खर्च भी चलाते थे तथा धर्म भी करते थे। जिस कारण से परमेश्वर कबीर जी के साथ षड़यंत्र करके झूठी चिट्ठी डाल दी थी कि कबीर जी तीन दिन का भण्डारा करेंगे। उस पत्र को पाकर 18 लाख व्यक्ति काशी में भोजन-भण्डारा खाने आ गए थे। स्वयं कबीर जी अपना दूसरा रूप बनाकर केशव नाम से 9 लाख बैलों के ऊपर बोरों (गधों पर थैला रखते हैं, वैसा) में कई प्रकार का पका-पकाया भोजन लेकर आए थे। अधिक विस्तार से ब्रह्म बेदी की वाणी नं. 44 तथा 46 के सरलार्थ में लिखा है, वहाँ पढ़ें।(12)

वाणी :- अबिगत केशो नाम कबीर, तातें टूटैं जम जंजीर।
रोटी तिमरलंग कुं दीन्हीं, तातैं सात बादशाही लीन्हीं।।13

❖ सरलार्थ :- परमात्मा कबीर जी अविगत प्रभु हैं। वे ही केशव नाम धरकर लीला करने आए थे। इनके सत्यनाम से जम (काल) की जंजीर (कर्मों के बँधन) टूट जाती है।(समाप्त हो जाते हैं)

रोटी तिमरलंग कुं दीन्हीं, तातैं सात बादशाही लीन्हीं।।

कथा के द्वारा सरलार्थ स्पष्ट होता है :-

एक तैमूरलंग नाम का मुसलमान नौजवान था। उसके पिता की मृत्यु युवा अवस्था में ही हो गई थी। माता ने अकेले पाला। निर्धनता आवश्यकता से अधिक थी। तैमूरलंग की माता बहुत धार्मिक विचारों की थी। घर पर आए अतिथि को भोजन किए बिना नहीं जाने देती थी। कई बार तो ऐसा भी हुआ था कि घर पर दो व्यक्तियों का भोजन होता, दो अतिथि आ जाते थे तो दोनों अतिथियों को भोजन कराकर स्वयं माँ-बेटा भूखे सो जाते थे। निर्वाह के लिए तैमूरलंग गाँव के धनी व्यक्तियों की भेड़-बकरियाँ चराता था। इसके बदले में अनाज लेते थे। इससे भी गुजारा नहीं चलता था। इसलिए शाम को (Overtime) एक लौहार के अहरण पर घण की चोट लगाने का भी काम किया करता था। इस प्रकार गुजारा चलता था। फिर भी गरीबी रेखा से बहुत नीचे थे।

तैमूरलंग का भाग उदय ऐसे हुआ :- एक दिन तैमूरलंग भेड़-बकरियों को गाँव के साथ वाले जंगल (बणी) में चरा रहा था। दोपहर के समय खाना खाकर बैठा ही था कि एक जिन्दा बाबा संत आए। तैमूरलंग ने खाने के लिए पूछा तो भोजन खाने की इच्छा व्यक्त की। बेटे में माँ के संस्कार थे। कहा बाबा जी, आप मेरी भेड़-बकरियों को सम्भालो, मैं घर से खाना लाता हूँ। तैमूरलंग ने अपनी माता से बताया कि एक संत भूखा है। माता ने कहा, बेटा भोजन बनाती हूँ, भोजन बनाकर मैं भी साथ चलती हूँ। संत के दर्शन भी कर आऊँगी और बर्तन भी ले आऊँगी। घर पर एक रोटी का आटा था। एक रोटी लेकर एक लोटे में पानी लेकर तैमूरलंग के साथ संत के पास वृक्ष के नीचे गई। संत जी से भोजन करने की प्रार्थना कर भोजन सामने रख दिया। संत खाना खाने लगे। तैमूरलंग की माता ने कहा, महाराज जी! हम पर कुछ कृपा दृष्टि करो। हम निर्धन हैं। कई बार तो भूखा सोना पड़ता है। जब तक संत ने रोटी खाई और पानी पीया, तब तक माई ने 4-5 बार अपनी गरीब की कथा सुना दी। जिन्दा बाबा के रूप में स्वयं कबीर परमेश्वर जी थे। वहीं पर एक बकरी बाँधने की बेल (लोहे

की चैन) पड़ी थी। उसको उठाकर संत जी ने चार बार मोड़ा तथा तैमूरलंग की कमर में सात बार मारा तथा फिर लात तथा घूँसे मारे। माई ने कहा कि संत जी मेरे बच्चे ने क्या गलती कर दी। क्षमा करें। परमेश्वर ने जिन्दा रूप में माई से कहा कि माई! तेरे बेटे को सात पीढ़ी का राज्य दे दिया है। जो सात लोहे की सांगल (चैन=बेल) मारी है, यह तेरी सात पीढ़ी राज्य करेगी। फिर जो लात-घूंसे मारे हैं। ये इसलिए हैं कि फिर वह राज्य छोटे-छोटे राज्यों में बँटकर समाप्त हो जाएगा। इतना कहकर जिन्दा रूप में परमेश्वर जी अन्तर्ध्यान हो गए। उस समय तो यह बात विश्वास के काबिल नहीं थी, परंतु 10 वर्ष के अंदर ही तैमूरलंग राजा बन गया था। परमेश्वर जी ने तैमूरलंग के स्वपन में दर्शन देकर बताया कि जिस अहरण पर तू शाम को नौकरी करता है, उसके नीचे खजाना दबा है, उस अहरण को मोल ले ले। तैमूरलंग ने कहा संत जी! पैसा तो एक भी नहीं, अहरण कैसे खरीदूँगा? परमेश्वर जी ने कहा यह मेरा काम है। तू अहरण के मालिक से एक वर्ष में अहरण के पैसे देने की बात कर। सुबह उठकर तैमूरलंग ने अपनी माता जी को स्वपन की बातें बताई। माता जी ने कहा, बेटा! मुझे भी संत रात में स्वपन में दिखाई दिया था। वह कुछ कह रहा था, मुझे भूल पड़ गई है। तैमूरलंग ने माता से स्वपन में हुई चर्चा बताई तो माता ने कहा, बेटा! यह संत परमात्मा का रूप है, इनकी बात असत्य नहीं हो सकती। तू संत के बताए अनुसार बात चला। उस अहरण वाले के मन में परमेश्वर कबीर जी ने प्रबल प्रेरणा कर दी कि यह स्थान कम है। इसको चाहे कोई एक वर्ष उधार पर मोल ले ले तो भी बेचकर अपने दूसरे प्लाट में अहरण लगा लूँ। तैमूरलंग ने बात की तो बात पक्की हो गई। दो-चार दिन में स्थान खाली कर दिया तो तैमूरलंग ने अपनी माता के सहयोग से उसकी चारदिवारी कच्ची ईंटों से बनाई। अहरण भी लगा लगाया छोड़ गया था क्योंकि वह बहुत पुराना था। इसलिए वह भी प्लाट के साथ ही बेच दिया था। चारदिवारी के बाद झोंपड़ी डाली। फिर खोदकर देखा तो खजाना दबा था। स्वपन में परमेश्वर कबीर जी दिखाई दिए, दिशा-निर्देश दिए कि धीरे-धीरे खजाना निकालना, पहले चार-पाँच भेड़-बकरियाँ लेना, फिर बेच देना चाहे सस्ते में बिके। फिर घोड़े ले आना, उनको बेचना। फिर अपनी सेना बनाना, जंगल में नए अहरण लगा, तलवार-ढ़ाल बना लो। ऐसा ही किया गया। एक हजार सेना बनाकर उसी नगरी को घेर लिया। राजा ने सेना अधिक देखकर समर्पण कर दिया। परमेश्वर ने एक हजार सेना की दस हजार दिखाई। इस प्रकार सन् 1392 में तैमूरलंग भारत में आया और दिल्ली के राजा को मारकर स्वयं गद्दी पर कब्जा कर लिया। वहाँ पर एक नवाब को दिल्ली का शासन सौंपा क्योंकि उसने कहा कि तैमूरलंग का नौकर बनकर दिल्ली का राज्य सम्भालूँगा और तैमूरलंग को टैक्स दिया करूँगा। जब दिल्ली का शासन हेमचंद हिन्दू राजा ने कब्जा किया और तैमूरलंग को टैक्स देना बंद किया तो तैमूरलंग के तीसरे पोते (परपोते) बाबर ने राजा हेमचंद को मारा और स्वयं दिल्ली की गद्दी पर विराजमान हो गया। बाबर से लेकर औरंगजेब तक छः पीढ़ी ने दिल्ली का राज्य किया। उसके पश्चात् उनका राज्य छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया। इस प्रकार एक रोटी खाकर तैमूरलंग को सात पीढ़ी का राज्य प्रदान किया था। उपरोक्त

वाणी का यह तात्पर्य है कि धर्म करने से सर्व लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं।(13)

वाणी :- रोटी ही के राज रू पाट, रोटी ही के हैं गज ठाठ।
रोटी माता रोटी पिता, रोटी काटैं सकल बिथा।
दास गरीब कहैं दरवेसा, रोटी बाटो सदा।।(14)

❖ **सरलार्थ :- भावार्थ है कि यदि रोटी समय पर मिलती है तो माता-पिता हैं अन्यथा सर्व नष्ट हो जाएंगे। रोटी मिलती है तो राजपाट भी है और हाथी आदि सब ठाठ हैं। संत गरीबदास जी ने बताया है कि हे दर्वेश! (साधु) प्रतिदिन रोटी दान अवश्य करना।(14)**

वाणी :- गरीब बुढिया और बाजीद जी, सुनही के आनन्द।
रोटी चारों मुक्ति हैं, कटैं गले फंद।।
एक दाने का निकास, सहंस्र दानों का प्रकास।
जिस भण्डारे से अन्न निकसा, सो भण्डारा भरपूर, काल कंटक दूर।
सती अन्नदेव संतोषी पावै, जाकी वासना तीन लोक में समावै।।(15)

❖ **सरलार्थ :- एक समय बाजीद राजा राज्य-घर त्यागकर जंगल में साधना कर रहे थे। एक कुतिया ने 8 बच्चों को जन्म दिया। उसको बहुत भूख लगी थी। एक बुढ़िया अपनी 4 रोटी कपड़े में बाँधकर खेत में काम के लिए जा रही थी। बाजीद ने कहा, माई! इस कुतिया को एक रोटी डाल दो, यह भूख से मरने वाली है, साथ में 8 बच्चे और मरेंगे। बुढ़िया चतुर थी, उसने कहा मेरे खून-पसीने की कमाई है, यह कैसे दे दूँ? संत ने कहा कैसे रोटी डालोगी? बुढ़िया ने कहा आप अपनी भक्ति का चौथा भाग मुझे दे दो, मैं रोटी डाल दूँगी। संत ने अपनी साधना का ¼ भाग संकल्प कर बुढ़िया को दे दिया। वृद्धा ने एक रोटी कुतिया को डाल दी। फिर भी कुत्ती भूखी थी। करते-करते चारों रोटी कुतिया को डाल दी और संत बाजीद जी ने अपनी सर्व भक्ति कमाई वृद्धा को संकल्प कर दी। जिससे कुतिया (सुनही) तथा उसके बच्चों का जीवन बचा। रोटी देने से माई को भक्ति की कमाई प्राप्त हुई और बाजीद जी भक्ति पुण्यहीन हो गया, परंतु कुतिया और उसके बच्चों को जीवन दान देने के कारण स्वर्ग प्राप्ति हुई।(15)**

भावार्थ है कि :-

धर्म तो धसकै (नाश) नहीं, धसकै तीनों लोक।
खैरायत में खैर है, कीजै आत्म पोख।।

।।सत साहेब।।

भक्ति बोध का सरलार्थ परमेश्वर कबीर जी तथा स्वामी रामदेवानन्द जी की कृपा से सम्पूर्ण हुआ।

-संत रामपाल दास